

वार्षिक प्रतिवेदन 2023-24



सम्पादक: अमित कुमार, विष्णुप्रिया कोलिपाकम, रितेश कुमार गौतम, अदिति मुखर्जी,
अमरजीत कौर, के.के. श्रीवास्तव एवं मनोहर पाठक
हिन्दी अनुवाद: के.के. श्रीवास्तव एवं मोहित कुमार गुप्ता
आवरण चित्रकीर्ति: हिम तेंदुआ, प्रसेनजीत उधमसिंह यादव
मुद्रण एवं अभिकल्पन: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वार्षिक प्रतिवेदन 2023-24



भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India



विषय सूची

निदेशक की कलम से	9
वर्ष एक नजर में	10
भूमिका एवं अधिदेश	11
अनुसंधान	12
• पूर्ण परियोजना	
भा.व.सं.	
1. भारत में हिम तेंदुए की जनसंख्या का आकलन	14
2. हिमालय क्षेत्र (1,000 मीटर से 3,500 मीटर) के लिए उत्तराखंड राज्य वन्यजीव जनसंख्या अनुमान	15
3. 2022–23 के दौरान भारत में 51 बाघ अभ्यारण्यों के लिए प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन का पांचवां चक्र	16
4. 783.275 हेक्टेयर वन भूमि जिसमें अंगुल जिले, ओडिशा की अंगुल वन प्रभाग के छेन्दीपाड़ा और कंकूरुपाल आरक्षित वन के 643.095 हेक्टेयर आरक्षित वन और 140.180 हेक्टेयर ग्राम वन भूमि शामिल है, के गैर-वानिकी उपयोग के लिए व्यापक वन्यजीव/हाथी प्रबंधन योजना की तैयारी	17
5. अंडमान द्वीपसमूह के मैंग्रोव वनों में कार्बन स्टॉक गतिशीलता पर टेक्टोनिक परिवर्तन (उत्थान और अवतलन) का प्रभाव	18
6. कमलांग नमदाफा परिदृश्य, भारत में उभयचर और सरीसृप अन्वेषण	18
7. राजाजी बाघ अभ्यारण्य, उत्तराखंड में प्रमुख अक्रामक विदेशी पौधों का स्थानीय वनस्पति पर पारिस्थितिक प्रभाव	19
8. भारत के तराई-आर्क परिदृश्य में बाघों की मेटापॉपुलेशन गतिशीलता	20
9. वन्यजीव के प्रभावी प्रबंधन के लिए पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र, चंद्रपुर के खनन क्षेत्रों के प्रभावों को समझना	21
10. उत्तराखंड में वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करने और सतत नदी तल सामग्री खनन प्रथाओं को सुनिश्चित करने की दिशा में राजाजी बाघ अभ्यारण्य के आसपास 10 किलोमीटर के दायरे के परिदृश्य क्षेत्र के लिए समग्र योजना	23
11. अंडमान द्वीप समूह के मैंग्रोव वनों के कार्बन स्टॉक डायनेमिक्स पर टेक्टोनिक शिफ्ट (उत्थान और अवतलन) का प्रभाव	24
12. लोअर सुबनसिरी जलविद्युत परियोजना के साथ पानीर आरक्षित वन और दुलुंग आरक्षित वन के बीच हाथी, (एलिफस मैक्सिमस) की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए त्वरित मूल्यांकन	25
13. हाथियों की जनसंख्या निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए विभिन्न जनसंख्या अनुमान विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन	25

14. एंथ्रोपोसीन और जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिक्रिया: भारतीय हिमालयी क्षेत्र में चयनित स्तनधारी प्रजातियों की विचरण पारिस्थितिकी	27
15. उत्तरी पश्चिमी घाट में तिनाघाट से कुलेम तक रेलवे ट्रैक के प्रस्तावित दोहरीकरण के कारण वन्यजीव आवास और पारिस्थितिकी मूल्यों पर संचयी पर्यावरणीय प्रभाव आकलन	28
16. राजाजी बाघ अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड से होकर गुजरने वाली 4 लेन वाली हरिद्वार बाईपास रोड (पैकेज – 2) के विकास के लिए वन्यजीव अध्ययन और शमन योजना	29
17. पारिस्थितिक संसाधनों के संबंध में प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों के सूक्ष्म-पैमाने पर स्थानिक और कालिक उपयोग का आकलन और हर्षवाला रेलवे स्टेशन के उन्नयन के कारण होने वाले प्रभावों को कम करने के लिए शमन योजना का सुझाव	32
18. भारत में बंदी हाथियों के कल्याण और प्रबंधन हेतु एक आनुवंशिक डेटाबेस का विकास	33
19. मिजोरम के संरक्षित क्षेत्रों में खुर वाले जानवरों में बीमारी के प्रसार का आकलन	34
20. हाथी अभ्यारण्यों में संरक्षण योजना – हाथी संरक्षण योजना की तैयारी के लिए रूपरेखा	35
21. थार रेगिस्तान के संकटग्रस्त पक्षियों की निगरानी: गोडावण के लिए आवास पुनर्निर्माण का सम्बंधित पक्षियों को कैसे प्रभावित करता है?	35

सैकोन

1. पूर्वी उत्तर प्रदेश की दस आर्द्रभूमियों के लिए एकीकृत प्रबंधन योजनाओं की तैयारी	37
2. वडूवर पक्षी अभ्यारण्य, तमिलनाडु में प्रवासी पक्षियों की जनसंख्या स्थिति और अस्थायी पैटर्न आकलन	का 38
3. माथिकेट्टन शोला राष्ट्रीय उद्यान का स्थानिक मानचित्रण	39
4. जंगली धब्बेदार बिल्ली का जीनोमिक अध्ययन	40
5. नवी मुंबई नगर निगम में होल्डिंग तालाबों और तूफानी पानी की नालियों का पुनर्जीवन	41
6. तमिलनाडु के चयनित क्षेत्रों में मानव-मोर संघर्ष का आकलन और संघर्ष कम करने के लिए कार्य योजना बनाना	42
7. देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करने के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजनाएं विकसित करना – नागालैंड	43
8. उत्तराखंड राज्य स्तरीय कार्य योजना: देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सैकोन की दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करना	44
9. देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सैकोन की दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करने के लिए राज्य-स्तरीय कार्य योजनाएं दिल्ली- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र	45
10. महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट, पश्चिमी तट, और तटीय द्वीपों में भारतीय स्विफ्टलेट की जनसंख्या स्थिति, पारिस्थितिकी और संरक्षण	46
11. भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के चयनित भारतीय नागरिक हवाई क्षेत्रों में पक्षियों से विमानों को खतरों का आकलन – चरण I (महाराजा बीर बिक्रम हवाईअड्डा, अगरतला, राजा भोज अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा, भोपाल, देवी अहिल्या बाई होल्कर हवाईअड्डा, इंदौर, जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा, पटना और सूरत अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा)	47
12. उपयुक्त पक्षी डायवर्टर का सुझाव देने के लिए ठाणे क्रीक फ्लेमिंगो अभ्यारण्य के 110 केवी खोपोली-मांखुर्द और खोपोली-चेंबूर प्रतिस्थापन ट्रांसमिशन लाइनों का पक्षी प्रजाति सम्बन्धी अध्ययन	47

जारी परियोजनाएँ

भा.व.सं.

1. उत्तर-पूर्व भारत में मिशमी ताकिन, *बुडोरकास टैक्सिकोलर टैक्सिकोलर* के संरक्षण के लिए एकीकृत दृष्टिकोण: प्रजाति पारिस्थितिकी को पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के साथ जोड़ना 49
2. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत शामिल की गई संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी: मालाबार सिवेट 50
3. पूर्व गोदावरी नदी मुहाना पारिस्थितिकी तंत्र, आंध्र प्रदेश में फिशिंग कैट, (*प्रियोनैलुरस विवरिनस*) की पारिस्थितिकी और संरक्षण परिप्रेक्ष्य 51
4. हजारीबाग वन्यजीव प्रभाग, हजारीबाग पश्चिम वन प्रभाग और कोडरमा वन प्रभाग के वन क्षेत्र में परिदृश्य दृष्टिकोण के साथ निवारण और क्षतिपूर्ति उपायों को शामिल करते हुए एकीकृत वन्यजीव कार्य योजना 51
5. उच्च ऊंचाई पारिस्थितिक तंत्र में निवास चयन और मध्यम शिकारी को छोड़ना 52
6. भारत में वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – कैराकल, *कैराकल कैराकल* 54
7. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – *बटागुर बास्का* (उत्तर नदी टेरापिन) 55
8. गोडावण के आवास में सुधार और संरक्षण प्रजनन 56
9. पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – नीलगिरि ताहर 57
10. कर्नाटक के अर्ध-शुष्क घासभूमि-झाड़ी-खेती प्रणाली में प्रमुख मांसाहारी और खुर वाले जानवरों की पारिस्थितिकी और संरक्षण 58
11. निकोबार द्वीपसमूह में जालीदार अजगर, *मलायोपायथन रेटिकुलैटस* (शनाइडर 1801) की संरक्षण पारिस्थितिकी 59
12. मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर बाघ रिजर्व में केन-बेतवा नदी लिंक परियोजना के संदर्भ में परिदृश्य प्रबंधन योजना का विकास और निगरानी 60
13. चांगथांग और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्यों, लद्दाख के लिए सीमाओं के तर्कसंगत नियोजन हेतु वन्यजीव मूल्यांकन और भूमि अधिकार का आकलन 61
14. मेघालय में संकटग्रस्त वनस्पतियों और जीवों का व्यापक अध्ययन और दस्तावेजीकरण 62
15. मानव तेंदुआ संघर्ष शमन के लिए महाराष्ट्र के जुन्नार तालुका में तेंदुओं की जनसंख्या गतिकी, स्थान उपयोग, विचरण और आहार को समझना 62
16. कांगड़ा जिला, हिमाचल प्रदेश में पोंग डैम संरक्षित क्षेत्र और इसके पर्यावरण संवेदनशील क्षेत्र में गंभीर संकटग्रस्त गिद्ध प्रजातियों की पारिस्थितिकी और पुनर्प्राप्ति 64
17. तमिलनाडु के चयनित जलाशयों में और उसके आसपास सामूहिक घोंसले बनाने वाले जलपक्षियों द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आकलन 64
18. भारत में गैंडे के शिकार से संबंधित खतरों का मुकाबला करने और गैंडे की जनसंख्या प्रबंधन में सहायता के लिए गैंडा डीएनए इंडेक्सिंग सिस्टम (रोडिस) का कार्यान्वयन – चरण II 66
19. भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वन्यजीव आवास विकास कार्यक्रम के तहत अरब सागर हम्पबैक व्हेल, *मेगाप्टेरा नोवांग्लिए* संकटग्रस्त प्रजाति का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी 67
20. वन्यजीव आवासों का एकीकृत विकास – चयनित संकटग्रस्त प्रजातियों के आवास की निगरानी 68
21. भारत के अत्यधिक खंडित तराई घासभूमि में हिस्पिड खरगोश, *कैप्रोलागस हिस्पिडस* के आवास, जनसंख्या और आनुवंशिक संरचना का परिदृश्य स्तर पर आकलन 68

22. उत्तराखंड राज्य में घरेलू गौरैया, <i>पासर डोमेस्टिकस</i> की पारिस्थितिकी और जनसंख्या स्थिति पर एक व्यापक अध्ययन	70
23. भारत में चीते को वापस लाना	71
24. भारत में डुगोंग और उनके आवासों की पुनर्प्राप्ति – एक एकीकृत सहभागी दृष्टिकोण	72
25. मणिपुर के ब्रो-एंटलर्ड हिरण या संगार्ई के लिए संरक्षण कार्य योजना: एकीकृत दृष्टिकोण	73
26. नदी डॉल्फिन की रेंज-व्यापी अनुमान	75
27. नदी डॉल्फिन के लिए संरक्षण कार्य योजना का विकास	77
28. हरिके आर्द्रभूमि की डी-सिल्टिंग के कारण होने वाले विभिन्न प्रभावों का अध्ययन	79
29. स्वच्छ गंगा के लिए गंगा नदी बेसिन में जलीय प्रजातियों के संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के रखरखाव के लिए योजना और प्रबंधन	80
30. रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र के लिए एकीकृत संरक्षण और प्रबंधन रणनीतियाँ: एक बहुआयामी दृष्टिकोण	82
31. बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र, पश्चिम बंगाल में बाघ संरक्षण और दीर्घकालिक निगरानी	83
32. सीमापार तराई आर्क परिदृश्य में विस्तृत बुनियादी रैखिक ढांचे पर स्थित महत्वपूर्ण गलियारों का संरक्षण	84
33. भारतीय हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के आकलन और निगरानी और अनुकूलन रणनीतियाँ विकसित करना – चरण II	85
34. नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व, उत्तराखंड में जैव विविधता संरक्षण के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण	86
35. गौर पुनर्वास योजना 2023-28: संजय – डुबरी बाघ अभ्यारण्य, मध्य प्रदेश में गौर, <i>बोस गॉरस गॉरस</i> की स्थापना	87
36. समृद्धि एक्सप्रेसवे वन्यजीव ओवरपास और अंडरपास की निगरानी	88
37. विदर्भ, महाराष्ट्र के बाघ वाले क्षेत्रों में बाघ, सह-शिकारियों और शिकार की दीर्घकालिक निगरानी	89
38. वन्यजीव आवास के एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी, क्लाउडेड लेपर्ड	91
39. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत लुप्तप्राय प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – रेड पांडा	92
40. दिल्ली-गुरुग्राम-अलवर-रेवाड़ी क्षेत्रीय रैपिड परिवहन प्रणाली सुरंग कार्य के कारण राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली में बंदी वन्यजीवों पर प्रभाव का आकलन	93
सैकोन	
1. वन्यजीव फॉरेंसिक में अनुप्रयोग के लिए पंख मापविज्ञान और डीएनए का उपयोग करके भारत के चयनित गैलिफोर्म्स का वर्गीकृत विश्लेषण	95
2. पश्चिमी घाट के स्थानिक और संकटग्रस्त लाफिंगथ्रश की जनसंख्या और आवासों की सुरक्षा के लिए संरक्षण योजना विकसित करने हेतु पारिस्थितिकी मूल्यांकन	96
3. भारत में दो चयनित स्थानों से भारतीय चट्टानी अजगर, <i>पाइथन मोलुरस</i> , के आवास उपयोग, गतिविधि स्वरूप, और विचरण पारिस्थितिकी को समझने के लिए गैर-आक्रामक दृष्टिकोण	97
4. अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में पक्षी विविधता और जनसंख्या की दीर्घकालिक निगरानी	98
5. भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के चयनित भारतीय नागरिक हवाई क्षेत्रों में विमानों को पक्षियों से खतरों का आकलन – चरण II (कोलिकोड अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, मलप्पुरम, लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, वाराणसी)	99
6. दक्षिणी भारत के नदी बेसिनों में चिकनी खाल वाले ऊदबिलाव और छोटी-पंजों वाले एशियाई ऊदबिलाव की स्थानिक-कालिक आवास पारिस्थितिकी	99

7. पूर्वोत्तर भारत के उष्णकटिबंधीय वनों में वानरों और चयनित पक्षी प्रजातियों के बीच अंतःप्रजातीय अंतःक्रियाएँ और निवास विभाजन	101
8. हरियाणा के अरावली पर्वतमाला में कशेरुकी जन्तुओं के शव परपोषण समुदाय की कार्यात्मक पारिस्थितिकी	102
9. बांदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक में बाहरी प्रजातियों और वनाग्नि पर विशेष ध्यान के साथ भारतीय गौर जनसंख्या के उपयुक्त आवास का मूल्यांकन	103
10. कॉर्मोरेंट महासागरीय विज्ञान परियोजना – वितरित, स्वायत्त, मापनीय, हाइड्रोग्राफिक चार्टिंग और मौसम विज्ञान और महासागर विज्ञान सैंपलिंग, प्रत्यक्ष अनुसंधान पहल के भाग के रूप में विस्तारित अनुसंधान	104

आरम्भ की गई परियोजनाएं

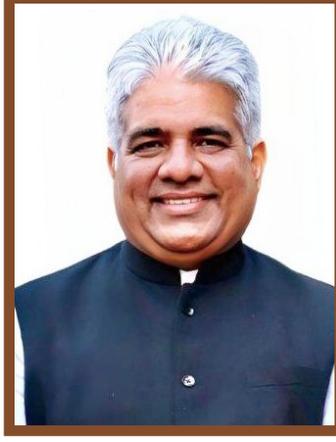
भा.व.सं.

1. भारत में राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों की प्रबंधन प्रभावशीलता का मूल्यांकन	105
2. कप्पाथगुड्डा वन्यजीव अभ्यारण्य और गडग प्रभाग के अन्य वन क्षेत्रों में भारतीय भूरे भेड़ियों और संबंधित मांसाहारी प्राणियों की स्थिति, आवास और संरक्षण पर अध्ययन	105
3. भारत में वन्यजीव आवास के एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – जेरडन का कोर्सर	107
4. हाथी संघर्ष मुद्दों को समझने और संघर्ष को कम करने के उपाय सुझाने के लिए अध्ययन (छत्तीसगढ़, झारखंड, असम)	108
5. पिट्टी द्वीप पक्षी अभ्यारण्य और लक्षद्वीप द्वीपसमूह के अन्य द्वीपों में घोंसला बनाने वाले समुद्री पक्षियों की गतिविधियों की ट्रैकिंग और जनसंख्या का आकलन – एक प्रारंभिक पहल	109
6. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – हिम तेंदुआ	110
7. गोवा राज्य की तटीय और समुद्री जैव विविधता प्रोफाइल	111
8. हिमालय के लिए धारा स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन प्रभावों की निगरानी के लिए एक संकेतक प्रजाति दृष्टिकोण – <i>अमोलोप्स फॉर्मोसस</i> का उपयोग करके परीक्षण	111
9. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – भारतीय गैंडा	112
10. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – बारहसिंगा	112
11. वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – जंगली जल भैंसा	113
12. मुकुंदरा हिल्स बाघ रिजर्व और रामगढ़ विषधारी बाघ रिजर्व की दीर्घकालिक पारिस्थितिक निगरानी	114

सैकोन

1. भारत और मध्य यूरोप के शीर्ष मांसाहारी जानवरों के परिदृश्यों में मध्यम आकार के मांसाहारियों के वितरण पर शीर्ष शिकारी और आवास के प्रभाव का मॉडलिंग	115
2. स्पॉट-बिल्ड पेलिकन के प्रजनन क्षेत्र में आर्द्रभूमि आवास का विश्लेषण	116
3. कच्छ, गुजरात, भारत में मानव-प्रभुत्व परिदृश्य से प्रजातियों-समृद्ध मांसाहारी समुदाय में सह-अस्तित्व के तंत्र	116
4. बोनाल पक्षी संरक्षण रिजर्व में पक्षियों की विविधता पर आधारभूत जानकारी विकसित करना	117
5. हिमाचल प्रदेश में रीसस मकाक, <i>मकाका मुल्ट्रा</i> , जनसंख्या और सामाजिक संगठन का आकलन	118

• अकादमिक एवं प्रशिक्षण गतिविधियां	120
• पेशेवर सहायता एवं गतिविधियां	138
• आगंतुक	159
• अभिशासन	163
• प्रकाशन	170
• लेखा	192



श्री भूपेन्द्र यादव

माननीय केन्द्रीय मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार



श्री कीर्तवर्धन सिंह

माननीय राज्य मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार



निदेशक की कलम से

भारतीय वन्यजीव संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गर्व हो रहा है। यह वर्ष एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में दर्ज हुआ क्योंकि सालिम अली पक्षीविज्ञान और प्रकृति विज्ञान केंद्र को भारतीय वन्यजीव संस्थान के दक्षिण-भारतीय केंद्र के रूप में जोड़ा गया। इस एकीकरण ने वन्यजीव संरक्षण, अनुसंधान और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में संस्थान की अग्रणी भूमिका को और अधिक सशक्त बनाया।

यह वर्ष शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के हमारे प्रमुख कार्यक्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। भारतीय वन्यजीव संस्थान ने 100 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य किया, जिनमें से 40 परियोजनाएँ सफलतापूर्वक पूर्ण की गईं, 20 नई परियोजनाएँ प्रारंभ हुईं और 50 अनुसंधान कार्य जारी हैं। इनमें कुछ महत्वपूर्ण पहलें सम्मिलित थीं, जैसे कि संपूर्ण भारत में संकटग्रस्त प्रजातियों का आकलन और निगरानी कार्यक्रम, जो वन्यजीव आवास के एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित था। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति वनीकरण कार्यक्रम और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित संकटग्रस्त प्रजाति पुनर्प्राप्ति कार्यक्रम भी इस वर्ष की महत्वपूर्ण परियोजनाओं में शामिल थे।

इस वर्ष की प्रमुख उपलब्धियों में पहली बार लद्दाख में हिमालयन मर्मोट नामक जीव को ग्लोबल पोर्जीशनिंग सिस्टम से टैग किया गया, जैसलमेर में गोडावण के चूजों का सफलतापूर्वक प्रजनन, और मध्यप्रदेश के संजय बाघ अभ्यारण्य में गौर पुनःस्थापन कार्यक्रम का सफल समापन शामिल है। इसके अतिरिक्त, हमने गैंडे के संरक्षण के लिए गैंडा डीएनए अनुक्रमण प्रणाली, रोडिस जैसी नवीन तकनीकों और कार्ययोजनाओं का विकास किया। भारतीय वन्यजीव संस्थान के दक्षिण भारत केन्द्र (सैकॉन)-सालिम अली केंद्र ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सहयोग से चुनिंदा भारतीय राज्यों में पक्षी विविधता संरक्षण हेतु राज्य स्तरीय कार्य योजनाएँ तैयार कीं। इसके अलावा, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के तहत चुनिंदा हवाई अड्डों पर विमान और वन्यजीव टकराव के जोखिम को कम करने के लिए विशेषज्ञ परामर्श प्रदान किया गया।

इस वर्ष हमारी शैक्षणिक गतिविधियों ने भी महत्वपूर्ण प्रगति की है। वन्यजीव विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के 18वें बैच ने उत्कृष्टता की परंपरा को बनाए रखा, जिसमें भारत की विविध प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों पर गहन अनुसंधान किया गया। इन अध्ययनों में एशियाई हाथी, मछली का शिकार करने वाली बिल्ली, चिकनी कोट वाली ऊदबिलावा, सिंहपूछ बंदर, नीलगिरी तहर, पल्लास फिश-ईगल और ओलिव रिडले कछुए जैसी प्रमुख प्रजातियाँ शामिल थीं। इन अनुसंधानों का दायरा ट्रांस-हिमालय से लेकर पश्चिमी घाट, थार मरुस्थल से लेकर मैग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र और पूर्वोत्तर भारत तक विस्तृत था। इस वर्ष 19वें बैच की भी शुरुआत हुई, जिसमें 20 छात्र शामिल हुए, जिनमें स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के आठ छात्र भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा प्रायोजित थे, जिससे इस कार्यक्रम में विविधता और प्रतिभा का समावेश हुआ।

उन्नत वन्यजीव प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के 43वें बैच के 10 प्रशिक्षुओं ने सफलता पूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण किया, जबकि 44वें बैच में 16 प्रतिभागियों ने अपनी यात्रा आरंभ की। इसी प्रकार, वन्यजीव प्रबंधन में 38वें प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंतर्गत 28 पेशेवरों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त, नवप्रारंभित विरासत प्रबंधन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के तहत सात अधिकारी प्रशिक्षुओं को जैव विविधता, विरासत स्थल प्रबंधन और जोखिम न्यूनीकरण रणनीतियों पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

यह वर्ष कई महत्वपूर्ण आयोजनों के लिए भी विशेष रहा, जिन्होंने वन्यजीव संरक्षण में भारतीय वन्यजीव संस्थान की अग्रणी भूमिका को रेखांकित किया। भारतीय संरक्षण सम्मेलन, जिसे बाघ परियोजना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया, का उद्घाटन भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया, जिन्होंने भारत में बाघ की न्यूनतम संख्या 3,167 घोषित की। एक अन्य ऐतिहासिक आयोजन के रूप में, पश्मीना प्रमाणन केंद्र का उद्घाटन भारतीय वन्यजीव संस्थान और हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के संयुक्त प्रयास से माननीय केंद्रीय मंत्री (पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) श्री भूपेंद्र यादव द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त, दो महत्वपूर्ण रिपोर्ट-भारत में हिम तेंदुओं की स्थिति (2023) और भारत में तेंदुओं की स्थिति (2022) के विमोचन के साथ ही संस्थान के विज्ञान प्लान का अनावरण केंद्रीय मंत्री द्वारा किया गया, जिससे वैश्विक संरक्षण प्रयासों को और बल मिला।

संस्थान के 34वीं वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में छह प्रमुख वार्ताएँ, 26 मौखिक प्रस्तुतियाँ, 11 संक्षिप्त वार्ताएँ और आठ विषयगत सत्रों में 31 पोस्टर प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं। इस दौरान छह तकनीकी प्रकाशनों का विमोचन किया गया, जिससे वन्यजीव अनुसंधान को और समृद्ध किया गया। हमारे शोधकर्ताओं ने वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और इस वर्ष 150 से अधिक समीक्षित शोधपत्र प्रकाशित किए। वैज्ञानिक संवाद को और अधिक बढ़ावा देने के लिए हमने जर्नल ऑफ वाइल्डलाइफ साइंस का शुभारंभ किया, जो एक डायमंड ओपन एक्सेस पत्रिका है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाले शोध विश्व स्तर पर निःशुल्क उपलब्ध होंगे।

भविष्य की ओर देखते हुए, मैं भारतीय वन्यजीव संस्थान के संकाय सदस्य, कर्मचारियों, छात्रों और सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अटूट समर्पण और उत्कृष्टता ने हमें इस मुकाम तक पहुँचाया है। हम सभी मिलकर भारत की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण और प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और अधिक सशक्त बनाए रखेंगे।


(वीरेन्द्र आर. तिवारी)

25 जनवरी, 2025

वर्ष एक नजर में

जैसे-जैसे हम 2023-24 के समापन की ओर बढ़ रहे हैं, हम गर्वपूर्वक वन्यजीव संरक्षण, शिक्षा और क्षमता निर्माण में हुई महत्वपूर्ण प्रगति को याद करते हैं। एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में, 25 अप्रैल 2023 को सलीम अली पक्षी विज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान केंद्र को भारतीय वन्यजीव संस्थान के दक्षिणी भारतीय केंद्र के रूप में शामिल किया गया। इस कदम ने वन्यजीव अनुसंधान और समग्र संरक्षण प्रयासों में हमारी अग्रणी भूमिका को और अधिक सशक्त किया।

इस वर्ष, संस्थान ने 100 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन करते हुए वैज्ञानिक अन्वेषण में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की। इनमें से 40 परियोजनाएँ सफलतापूर्वक पूर्ण की गईं, 20 नई परियोजनाएँ प्रारंभ हुईं, और 50 परियोजनाएँ जारी रहीं, जिससे भारत के विविध पारिस्थितिक तंत्रों की समग्र समझ को सुदृढ़ किया गया। समस्त भारत में लुप्तप्राय प्रजातियों के मूल्यांकन और निगरानी के तहत, वन्यजीव आवास के एकीकृत विकास कार्यक्रम (जो पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित है) एक प्रमुख पहल रही, जिसने विशेष रूप से कम ज्ञात प्रजातियों से जुड़े महत्वपूर्ण ज्ञान अंतराल को पाटने में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति वनीकरण निधि प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित लुप्तप्राय प्रजाति पुनर्प्राप्ति कार्यक्रम के अंतर्गत, संस्थान ने भारत की कुछ सबसे अधिक संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण को प्राथमिकता दी।

भारतीय वन्यजीव संस्थान-सलीम अली केंद्र ने चयनित जलक्षेत्रों के लिए एकीकृत प्रबंधन योजनाओं के विकास और राष्ट्रीय उद्यान प्रबंधन योजना के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष की प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियों में महाराष्ट्र में निकट जोखिमग्रस्त जंगली लाल-धब्बेदार बिल्ली का सम्पूर्ण आनुवंशिक अनुक्रमण अध्ययन शामिल रहा, जिसके तहत एक संदर्भ आनुवंशिक अनुक्रम का निर्माण किया गया और उसकी आनुवंशिक विविधता का विश्लेषण किया गया। अन्य उपलब्धियों में नागालैंड में पक्षी संरक्षण हेतु राज्य स्तरीय कार्य योजना का निर्माण तथा भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण के अंतर्गत चयनित विमानपथों पर पक्षी टक्कर के जोखिम का आकलन कर निवारण रणनीतियाँ प्रस्तुत करना शामिल है।

वर्ष 2023-24 के दौरान, भारतीय वन्यजीव संस्थान के शैक्षिक कार्यक्रमों ने निरंतर प्रगति की, जिससे वन्यजीव शिक्षा में इसकी प्रतिष्ठा और सुदृढ़ हुई। वन्यजीव विज्ञान में स्नातकोत्तर के 18वें बैच ने उत्कृष्टता की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए पार-हिमालयी, पश्चिमी घाट, थार मरुस्थल और पूर्वी मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक पारिस्थितिक अनुसंधान में सक्रिय भागीदारी निभाई। वर्ष के अंत में, संस्थान ने वन्यजीव विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के 19वें बैच का स्वागत किया, जिसमें 20 प्रतिभाशाली छात्र शामिल हुए। इनमें से आठ छात्रों को भारतीय वन्यजीव संस्थान की प्रतिष्ठित छात्रवृत्ति प्राप्त हुई, जिससे भविष्य के वन्यजीव नेतृत्व का एक विविध और प्रतिभाशाली समुदाय तैयार हुआ।

उन्नत वन्यजीव प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के 43वें समूह में 10 प्रशिक्षुओं ने पी.जी. डिप्लोमा प्राप्त किया, जबकि 44वें समूह के 16 प्रतिभागियों ने अपना पाठ्यक्रम आरंभ किया। वन्यजीव प्रबंधन में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के 38वें समूह ने 28 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया। 38वें वन्यजीव प्रबंधन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के तहत 28 पेशेवरों को प्रशिक्षित किया गया, जबकि हाल ही में शुरू किए गए विरासत प्रबंधन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम ने सात अधिकारी प्रशिक्षुओं को जैव विविधता और विरासत स्थलों के प्रभावी प्रबंधन के लिए तैयार किया। ये कार्यक्रम संरक्षण और प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत के प्रबंधन में उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संस्थान ने संरचित पाठ्यक्रमों से परे महत्वपूर्ण संरक्षण मुद्दों पर केंद्रित विशेष प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन किया। प्रमुख कार्यक्रमों में अप्रैल 2023 में कान्हा टाइगर रिजर्व में गौर पुनःस्थापना परियोजना की प्रारंभिक-सह-प्रशिक्षण कार्यशाला और देहरादून में आयोजित एशिया संरक्षित क्षेत्र साझेदारी (एपीएपी) की सातवीं तकनीकी कार्यशाला शामिल रही। एक महत्वपूर्ण उपलब्धि अक्टूबर 2023 में वैश्विक नदी डॉल्फिन घोषणा बैठक थी, जिसमें सभी नदी डॉल्फिन आवासीय देशों के प्रतिनिधि सहयोगात्मक संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए एकजुट हुए। अन्य प्रमुख आयोजनों में दिसंबर 2023 में सुंदरबंस राष्ट्रीय उद्यान में आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल था, जिसका उद्देश्य प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थलों के अद्वितीय सार्वभौमिक मूल्य की निगरानी पर केंद्रित था, तथा जनवरी 2024 में वन्यजीव सुरक्षा और विद्युतघात सम्बन्धी जोखिमों से निपटने हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गई।

संस्थान की वैश्विक संरक्षण में भूमिका 2023-24 के दौरान आयोजित कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के माध्यम से और अधिक स्पष्ट हुई। एक प्रमुख आकर्षण 9 अप्रैल 2023 को आयोजित प्रथम भारतीय संरक्षण सम्मेलन था, जो बाघ परियोजना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की शोभा माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने बढ़ाई, जिन्होंने भारत में बाघों की स्थिति – 2022 सारांश रिपोर्ट जारी करते हुए भारत में न्यूनतम बाघ जनसंख्या 3,167 घोषित की। यह उपलब्धि वन्यजीव संरक्षण में भारत की वैश्विक नेतृत्वकारी भूमिका को पुनः स्थापित करती है।

19 मई 2023 को भारतीय वन्यजीव संस्थान और निर्यात संवर्धन परिषद (हस्तशिल्प) के संयुक्त उपक्रम पश्मीना प्रमाणन केंद्र का उद्घाटन माननीय केंद्रीय मंत्री (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) श्री भूपेंद्र यादव द्वारा किया गया। इसके पश्चात, 30 जनवरी 2024 को भारत में हिम तेंदुए की स्थिति (2023) रिपोर्ट जारी की गई। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किए गए हिम तेंदुआ जनसंख्या आकलन कार्यक्रम के तहत किए गए इस अध्ययन में भारत में हिम तेंदुओं की पहली व्यापक वैज्ञानिक गणना प्रस्तुत की गई, जिसमें कुल 718 हिम तेंदुओं का अनुमान लगाया गया। उसी दिन, माननीय केंद्रीय मंत्री ने भारतीय वन्यजीव संस्थान का दृष्टि

योजना भी जारी किया, जिससे संस्थान को वैश्विक संरक्षण नेतृत्व की दिशा में अग्रसर करने की रूपरेखा तैयार हुई। इसके बाद, 29 फरवरी 2024 को भारत में तेंदुओं की स्थिति (2022) रिपोर्ट प्रकाशित की गई, जिसमें ज्ञात वितरण क्षेत्र के 70% हिस्से में तेंदुओं की अनुमानित जनसंख्या 13,874 बताई गई।

34वें वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में वैज्ञानिक विमर्श ने एक नई ऊंचाई प्राप्त किया, जहां छह प्रमुख व्याख्यान और आठ विषयगत सत्रों में 60 से अधिक प्रस्तुतियां दी गईं। इस अवसर पर छह महत्वपूर्ण तकनीकी प्रकाशन जारी किए गए, जिससे वन्यजीव अनुसंधान को उल्लेखनीय रूप से आगे बढ़ाने में सहायता मिली। भारतीय वन्यजीव संस्थान के शोधकर्ताओं ने वैश्विक वैज्ञानिक साहित्य में 150 से अधिक समीक्षित प्रकाशन योगदान स्वरूप दिए, जो इस क्षेत्र में उनके प्रभाव को दर्शाता है। उच्च गुणवत्ता वाले

अनुसंधान को और अधिक सुलभ बनाने के उद्देश्य से संस्थान ने जर्नल ऑफ वाइल्डलाइफ साइंस नामक एक डायमंड मुक्त अभिगम पत्रिका शुरू की, जिससे अग्रणी अनुसंधान का वैश्विक प्रसार संभव हो सके।

आने वाले समय में, भारतीय वन्यजीव संस्थान, भारत और इससे परे वन्यजीव संरक्षण एवं प्रबंधन को आगे बढ़ाने के अपने लक्ष्य के प्रति पूर्णतः समर्पित रहेगा। वर्ष 2023-24 की उपलब्धियों ने एक सुदृढ़ आधार तैयार किया है, जिससे अनुसंधान, प्रशिक्षण और शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने की हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है। हम सभी मिलकर इन सफलताओं को और सशक्त बनाएंगे तथा भारत के समृद्ध वन्यजीवों के रक्षा और संरक्षण हेतु नए मार्ग प्रशस्त करेंगे।

भूमिका एवं अधिदेश

परिचय

भारतीय वन्यजीव संस्थान दक्षिण एशिया में वन्यजीव विज्ञान और संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन के क्षेत्र में एक प्रमुख प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान है। वर्ष 1986 में, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस संस्थान को एक स्वायत्त संस्था का दर्जा प्रदान किया गया। अपनी स्थापना के बाद से ही संस्थान को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, खाद्य और कृषि संगठन, संयुक्त राज्य अमेरिका मछली और वन्यजीव सेवा, अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ तथा संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सहयोग का लाभ प्राप्त हुआ है। इन साझेदारियों ने संस्थान को कठोर प्रशिक्षण और आधुनिक अनुसंधान तथा विश्लेषणात्मक तकनीकों के माध्यम से योग्य संकाय सदस्य और कर्मचारी विकसित करने में सहायता प्रदान की है।

संस्थान के विविध क्षमता निर्माण कार्यक्रम वन्यजीव संरक्षण की अवधारणा और उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन को एक वास्तविक और व्यावहारिक दिशा प्रदान करते हैं। स्वयं के और अन्य के अनुभवों से सीखते हुए, भारतीय वन्यजीव संस्थान आशा और आकांक्षा के मार्ग पर अग्रसर है, जिससे देश और दक्षिण एशियाई क्षेत्र में वन्यजीव संरक्षण से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों के समाधान खोजने में सहायता मिलेगी।

हमारा ध्येय

भारतीय वन्यजीव संस्थान का ध्येय वन्यजीव विज्ञान का विकास करना तथा कार्यक्षेत्र में उसका अनुप्रयोग इस तरह से करना है, जो हमारे आर्थिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप हो।

लक्ष्य और उद्देश्य

- वन्यजीव, उनके आवास और संरक्षण के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान का निर्माण करना।
- वनकार्मिकों को वन्यजीवों के संरक्षण और प्रबंधन के विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण देना।
- भारतीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त तकनीकों के विकास सहित प्रबंधन के लिए प्रासंगिक अनुसंधान करना।
- विशिष्ट वन्यजीव प्रबंधन समस्याओं पर जानकारी और सलाह प्रदान करना।
- वन्यजीव अनुसंधान प्रबंधन तथा प्रशिक्षण में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना।
- वन्यजीव और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में विकसित होना।





© विनिता संगीला

शोध

भारत में हिम तेंदुए की जनसंख्या का आकलन

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार और हिम तेंदुए के निवास क्षेत्र वाले राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के वन/वन्यजीव विभाग

वन/वन्यजीव विभाग/यूटीएस, एनसीएफ (जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश) और डब्लू.डब्लू.एफ. भारत (सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश)

आरंभ होने की तिथि
जनवरी 2019

पूर्ण होने की तिथि
जनवरी 2023

समन्वयक

भारतीय वन्यजीव संस्थान
(राष्ट्रीय, लद्दाख और उत्तराखंड)

अन्वेषक

डॉ. एस. सत्यकुमार और सहयोगी

शोधकर्ता

हिमालयी पारिस्थितिकी संरक्षण हेतु राष्ट्रीय मिशन, यू.डब्लू.पी.ई. परियोजनाओं के सभी शोधकर्ता

सहयोगी

हिम तेंदुए के निवास क्षेत्र वाले राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के

उद्देश्य: भारत में हिम तेंदुए की जनसंख्या का अनुमान से संरक्षित क्षेत्रों के अंदर और बाहर उच्च ऊंचाई वाले आवासों में हिम तेंदुए की वैज्ञानिक रूप से मजबूत राष्ट्रीय और राज्यवार जनसंख्या का अनुमान लगाने की उम्मीद थी। इसका व्यापक लक्ष्य प्रभावी संरक्षण प्रयासों और नीतिगत निर्णयों का मार्गदर्शन करने के लिए विश्वसनीय डेटा एकत्र करना था।

प्रगति: इस परियोजना ने देश में संभावित हिम तेंदुओं की सीमा के 70 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र को व्यवस्थित रूप से शामिल किया, जिसमें वन और वन्यजीव कर्मचारी, शोधकर्ता, स्वयंसेवक और ज्ञान साझेदारों का योगदान शामिल था। लद्दाख और जम्मू-कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेशों और हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्यों सहित ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में महत्वपूर्ण हिम तेंदुओं के आवास के लगभग 1,20,000 वर्ग किमी को शामिल करते हुए, इस अभ्यास को 2019 से 2023 तक एक सावधानीपूर्वक दो-चरणीय ढांचे का उपयोग करके आयोजित किया गया था। पहले चरण में निम्न कार्य शामिल थे (i) हिम तेंदुए के स्थानिक वितरण का मूल्यांकन करना, (ii) विश्लेषण में आवास सहचरों को शामिल करना, और (iii) 2019 में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा

भारत में हिम तेंदुओं के राष्ट्रीय जनसंख्या मूल्यांकन के दिशानिर्देशों के साथ संरेखित करना दूसरे चरण में, प्रत्येक पहचाने गए स्तरीकृत क्षेत्र में कैमरा ट्रैप का उपयोग करके हिम तेंदुए की बहुतायत का अनुमान लगाया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: अभ्यास के दौरान, हिम तेंदुए के संकेतों को रिकॉर्ड करने के लिए 13,450 किमी के पगडंडियों के सर्वेक्षण किए गए और 1,80,000 ट्रैप रातों के लिए 1,971 स्थानों पर कैमरा ट्रैप तैनात किये गए थे।

हिम तेंदुए का अधिभोग 93,392 वर्ग किमी के क्षेत्र में दर्ज किया गया, जिसमें अनुमानित उपस्थिति 1,00,841 वर्ग किमी में थी। अलग-अलग हिम तेंदुओं की कुल 241 तस्वीरें खींची गईं।

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर, विभिन्न राज्यों में अनुमानित जनसंख्या का अनुमान इस प्रकार लगाया गया: लद्दाख – 477, उत्तराखंड – 124, हिमाचल प्रदेश – 51, अरुणाचल प्रदेश – 36, सिक्किम – 21, और जम्मू और कश्मीर – 9

मील का पत्थर: भारत में हिम तेंदुआ जनसंख्या आकलन कार्यक्रम पहला वैज्ञानिक अभ्यास है जो भारत में 718 हिम तेंदुओं की आबादी को प्रलेखित करता है। रिपोर्ट में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत भारतीय वन्यजीव संस्थान में एक समर्पित हिम तेंदुआ सेल की स्थापना की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें दीर्घकालिक जनसंख्या निगरानी पर प्राथमिक ध्यान दिया जाएगा, जिसे अच्छी तरह से संरचित अध्ययन डिजाइन और सुसंगत क्षेत्र सर्वेक्षणों द्वारा समर्थित किया जाएगा।



हिमालय क्षेत्र (1,000 मीटर से 3,500 मीटर) के लिए उत्तराखंड राज्य वन्यजीव जनसंख्या अनुमान

वित्त पोषण स्रोत
उत्तराखंड वन विभाग

सैयद मोहम्मद मुजम्मिल,
अंकिता दास, जनमेजय सहगल,
सुभेच्छा तपस्विनी और
अमृतेश रंजन दुबे

आरंभ होने की तिथि
अप्रैल 2021

अन्वेषक
डॉ एस. सत्यकुमार

पूर्ण होने की तिथि
जुलाई 2023

शोधकर्ता
डॉ रंजना पाल, शगुन ठाकुर,
शिव नारायण यादव,
गौरव सोनकर, सैली सावंत,
पूजा चौधरी, मनीषा माथेला,
पूजा पंत, रागिनी मुद्दा,
शिवांगी बेंद्रे, हेना ठाकुर,
आयुषी खंडूरी, हिमांशु बोरा,

उद्देश्य: इस राज्य-व्यापी अध्ययन का उद्देश्य मध्य-हिमालयी क्षेत्र (1,000–3,500 मीटर) में प्रमुख जानवरों की स्थानिक रूप से स्पष्ट प्रचुरता का अनुमान लगाना है। ऐसी जानकारी राज्य में कई लुप्तप्राय जीवों की स्थिति, प्रजाति-आवास संबंध और उनके प्राकृतिक पर्यावरण पर मनुष्यों के प्रभाव को समझने में मूल्यवान होगी।

प्रगति: इस परियोजना को मध्य-हिमालय क्षेत्र में बड़े स्तनधारियों की जनसंख्या का स्थानिक अनुमान उत्पन्न करने के लिए डिजाइन किया गया था। परियोजना में दो चरण शामिल हैं: चरण I। में प्रजातियों की उपस्थिति पर संकेत सर्वेक्षणों के माध्यम से आधारभूत जानकारी एकत्रित करना शामिल है, जबकि चरण-II में, चरण-I में पहचाने गए क्षेत्रों के उप-नमूनाकरण द्वारा लक्षित प्रजातियों के घनत्व का अनुमान लगाना शामिल है।

चरण-I। संकेत सर्वेक्षणों और चरण-II। कैमरा ट्रैप नमूना का संयुक्त प्रयास उत्तराखंड के मध्य-हिमालय क्षेत्र में बड़े स्तनधारियों की जनसंख्या पर डेटा सृजन किया गया। रिपोर्ट को पूरा कर वन विभाग को प्रस्तुत कर दिया गया है।

परिणाम और निष्कर्ष चरण-I। सर्वेक्षण टीम ने 20 डिवीजनों की 909 बीट्स में कुल 5,285.47 किमी की दूरी तय की और प्रजातियों के संकेत रिकॉर्ड किए। उत्तराखंड के मध्य-हिमालय क्षेत्र में बड़े स्तनधारियों की सापेक्ष प्रचुरता की जानकारी 4,051 संकेत रिकॉर्ड के रूप में एकत्र की गई। चरण-II। में, 31,582 ट्रैप रातों के कैमरा ट्रैपिंग प्रयासों में 22,873 जंगली प्रजातियों की तस्वीरें मिलीं, जिनमें से 694 सामान्य तेंदुए थीं।

उत्तराखंड के मध्य हिमालयी क्षेत्र में अनुमानित सामान्य तेंदुए की आबादी 17 ± 2 तेंदुआ / 100 वर्ग किमी के घनत्व पर 2,276 (एसई रेंज 2,018 से 2,534) थी। एसई रेंज ने संकेत दिया कि जनसंख्या 2,018 से 2,534 वयस्क के बीच हो सकती है।

उत्तराखंड के मध्य हिमालयी क्षेत्र में अनुमानित बार्किंग हिरण की आबादी 10,212 (एसई 9,063 – 11,361) दर्ज की गई, घनत्व 0.64 ± 0.17 बार्किंग हिरण: किमी²; हिमालयन गोरल: 3,314 (एसई 2,753 – 3,875), घनत्व 0.14 ± 0.06 हिमालयन गोरल: किमी²; सांभर: 3,915 (एसई 9,256 – 9,352), घनत्व 0.14 ± 0.07 सांभर: किमी²; भारतीय जंगली सुअर: 1,005 (एसई 563 – 1,447), घनत्व 0.02 ± 0.01 जंगली सुअर: किमी²; एशियाई काला भालू: 352 (एसई 250 – 454), घनत्व 0.002 ± 0.001 एशियाई काला भालू: किमी²।

चूंकि कैमरा ट्रैप के माध्यम से प्राप्त डेटा हिमालयन सीरो, हिमालयन तहर और हिमालयन मस्क मृग के लिए कैमरा ट्रैप-आधारित दूरी नमूना विश्लेषण करने के लिए पर्याप्त नहीं थे, इसलिए उत्तराखंड राज्य में इन प्रजातियों के संभावित वितरण को मॉडल करने के लिए केवल उपस्थिति डेटा और पर्यावरणीय चर के आधार पर प्रजातियों के वितरण का अनुमान लगाने के लिए मैक्सएंट (अधिकतम एन्ट्रॉपी) मॉडलिंग की गई थी।

मील का पत्थर: यह अध्ययन उत्तराखंड राज्य में जनसंख्या अनुमान के लिए एक अग्रणी प्रयास है और यह उत्तराखंड वन विभाग के तहत किया गया पहला ऐसा अध्ययन है। सामान्य तेंदुए और अन्य शिकार प्रजातियों के लिए आधारभूत अनुमान भविष्य के अनुसंधान, संरक्षण और प्रबंधन रणनीतियों की योजना बनाने में सहायक होंगे।

2022-23 के दौरान भारत में 51 बाघ अभ्यारण्यों के लिए प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन का पांचवां चक्र

वित्त पोषण स्रोत
राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण

आरंभ होने की तिथि
अगस्त 2022

अन्वेषक
डॉ गौतम तालुकदार

पूर्ण होने की तिथि
जुलाई 2023

शोधकर्ता
डॉ नसीम अहमद अंसारी और
अक्सा रहमान

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य देश के 51 बाघ प्रथाओं की प्रबंधन प्रभावकारिता का आकलन करना और उनकी प्रबंधन प्रणालियों और प्रगति में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना था। अभ्यास शुरू होने से पहले, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति ने बाघ अभ्यारण्य में पिछले प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन अभ्यासों पर विचार-विमर्श किया और एक तकनीकी मैनुअल विकसित किया गया। मूल्यांकनकर्ताओं के लिए एक ब्रीफिंग सत्र (आरंभ कार्यशाला) जून 2022 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया था और 51 बाघ अभ्यारण्यों का मूल्यांकन करने के लिए पांच बाघ परिदृश्यों के 5 अलग-अलग समूहों में प्रतिनियुक्त किया गया। अभ्यास के एक हिस्से के रूप में, फील्ड निदेशकों ने जुलाई 2022 तक सभी प्रासंगिक सहायक दस्तावेजों के साथ एक स्व-मूल्यांकन फॉर्म जमा किया। स्वतंत्र विशेषज्ञ मूल्यांकन टीमों ने निर्धारित मूल्यांकन मानदंडों के अनुसार एमईई आयोजित करने के लिए सभी 51 बाघ अभ्यारण्यों का दौरा किया और जुलाई 2022 और फरवरी 2023 के बीच फील्ड निदेशकों द्वारा जमा किए गए सहायक दस्तावेजों की क्रॉस-चेकिंग के बाद मूल्यांकन स्कोर कार्ड पूरा किया। मूल्यांकन टीम द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टों की देश में बाघ अभ्यारण्य प्रबंधन पर विशेषज्ञों द्वारा आंतरिक रूप से समीक्षा भी की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: रिपोर्ट को अंतिम रूप देने के लिए 15 मार्च, 2023 को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण द्वारा एक बैठक आयोजित की गई जिसमें प्राधिकरण अधिकारियों के साथ बाघ अभ्यारण्य के फील्ड निदेशक और मूल्यांकन टीमों ने भाग लिया। इस बैठक के बाद, 9 अप्रैल 2023 को मैसूर, बेंगलुरु में, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने बाघ अभ्यारण्य के लिए प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन के पांचवें चक्र की 40-पृष्ठ सारांश रिपोर्ट जारी की। इसके बाद भारतीय वन्यजीव संस्थान की टीम ने अध्यक्षों की रिपोर्ट, स्कोरिंग, डेटा विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन से सभी बाघ अभ्यारण्यों की प्रबंधन शक्तियों, प्रबंधन खामियों और तत्काल कार्रवाई योग्य बिंदुओं को संकलित करने पर काम किया ताकि पूरी रिपोर्ट तैयार की जा सके।



मील के पत्थर: प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन – बाघ अभ्यारण्य सारांश रिपोर्ट माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 9 अप्रैल 2023 को भारतीय संरक्षण सम्मेलन 2023, मैसूर, बेंगलुरु में जारी की गई थी। एक विस्तृत रिपोर्ट माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे द्वारा 29 जुलाई 2023 को जारी की गई थी।

783.275 हेक्टेयर वन भूमि जिसमें अंगुल जिले, ओडिशा की अंगुल वन प्रभाग के छेन्दीपाड़ा और कंकुरुपाल आरक्षित वन के 643.095 हेक्टेयर आरक्षित वन और 140.180 हेक्टेयर ग्राम वन भूमि शामिल है, के गैर-वानिकी उपयोग के लिए व्यापक वन्यजीव/हाथी प्रबंधन योजना की तैयारी

वित्त पोषण स्रोत

सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड

अन्वेषक

डॉ. जी.वी. गोपी

शोधकर्ता

डॉ. डी. फ्रैंक सैड्रक जबाराज,
डॉ. जस्टस जोशुआ,
डॉ. वेस्ली सुन्दरराज, एस. कार्थी,
अरुण कुमार राठ और
टी. वेंकटेश

आरंभ होने की तिथि

फरवरी 2023

पूर्ण होने की तिथि

सितम्बर 2023

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे (i) अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख जीव-जंतुओं और वनस्पति समूहों की जैव विविधता का आकलन करना, और (ii) अध्ययन क्षेत्र के लिए एक व्यापक वन्यजीव सह हाथी प्रबंधन योजना तैयार करना।

प्रगति: अध्ययन क्षेत्र में पौधों, स्तनधारियों, पक्षियों और सरीसृपों के आकलन के लिए फील्डवर्क 22 फरवरी 2023 को शुरू किया गया था। मार्च और जून के बीच, अध्ययन क्षेत्र के भीतर वनस्पति सर्वेक्षण, पक्षी सर्वेक्षण, स्तनधारी संकेत सर्वेक्षण, सरीसृप सर्वेक्षण, वन विभाग से संघर्ष डेटा और सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण पूरा किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष अध्ययन ने ओडिशा के अंगुल डिवीजन में मानव-हाथी संघर्ष के बारे में जानकारी दी, जहां कोयला खदान प्रस्तावित है। अध्ययन क्षेत्र और आस-पास के डिवीजनों में मानव-हाथी संघर्ष में वृद्धि की प्रवृत्ति थी, संभावित कारणों की परिकल्पना जिले में कोयला खदानों में वृद्धि के कारण की गई थी। वन विभाग से मौजूदा हाथी विचरण के आंकड़ों का उपयोग करके



हाथियों की आवाजाही की पारिस्थितिकी का अध्ययन किया गया था। निष्कर्ष, वार्षिक शोध संगोष्ठी 2023 में प्रस्तुत किए गए थे। इन सभी निष्कर्षों और संबंधित शमन उपायों को शामिल करते हुए हाथी प्रबंधन योजना कई संशोधनों के बाद जनवरी 2024 को ओडिशा के वन विभाग को सौंपी गई थी।

मील का पत्थर: इस अध्ययन के निष्कर्ष क्षेत्र में मौजूद महत्वपूर्ण जैवविविधता की जानकारी प्रदान करते हैं, और परिणामों को एक पीयर रिव्यूड वैज्ञानिक पांडुलिपि के लिए संकलित किया जा रहा है, जिसमें पारिस्थितिकीय और सुदूर संवेदी आकड़े शामिल हैं।



अंडमान द्वीपसमूह के मैंग्रोव वनों में कार्बन स्टॉक गतिशीलता पर टेक्टोनिक परिवर्तन (उत्थान और अवतलन) का प्रभाव

वित्त पोषण स्रोत
अंतर्राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान केंद्र

शोधकर्ता
डॉ. उत्तिमहाली एम और शामना के.टी.

आरंभ होने की तिथि
जनवरी 2023

अन्वेषक
डॉ. नेहरू प्रभाकरन

पूर्ण होने की तिथि
सितंबर 2023

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) अंडमान द्वीप पर रॉड सरफेस एलिवेशन टेबल्स की स्थापना करना ताकि 2004 सुमात्रा-अंडमान भूकंप के बाद भू-आकृतिक परिवर्तनों से उत्पन्न धंसने और उठने की ढलान के पार मैंग्रोव में अवसादन गतिकी की दीर्घकालिक निगरानी की जा सके, (ii) निगरानी स्थलों पर पर्यावरणीय मानकों (जैसे, लवणता, तापमान, और जल गहराई) को उच्च कालिक संकल्प पर मापने के लिए डेटा लॉगर्स की स्थापना, (iii) वैज्ञानिक अनुसंधान और निगरानी को बेहतर बनाने के माध्यम से मैंग्रोव के लिए बेहतर प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए वन प्रबंधकों और शोधकर्ताओं के साथ क्षमता निर्माण और नेटवर्किंग।

प्रगति: इस परियोजना ने अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग करके अंडमान द्वीप समूह में मैंग्रोव में अवसादन दरों और पर्यावरणीय मापदंडों की दीर्घकालिक निगरानी करने का प्रयास किया। उत्तर, मध्य और दक्षिणी अंडमान द्वीप समूह में सात स्थलों पर सत्रह रॉड सरफेस एलिवेशन टेबल्स स्थापित किए गए। ज्वारीय चक्रों के साथ लवणता, तापमान और पानी की गहराई में उतार-चढ़ाव की निगरानी के लिए पांच स्थलों को डेटा लॉगर से लैस किया गया था। फरवरी, जून और सितंबर (ग्रीष्म, शुरुआती मानसून, मानसून के अंत में) के दौरान तलछट संचयन और कटाव को मापा गया। क्षेत्र माप के दौरान डेटा लॉगर भी प्राप्त किए गए,

तलछट का कटाव उत्तरी अंडमान में विशेष रूप से तीव्र था, जहाँ तटीय उत्थान के कारण मैंग्रोव का क्षरण हुआ था। मैंग्रोव बहाली और प्रबंधन पर कार्यशाला ने वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों की क्षमता निर्माण किया।

मील का पत्थर: अवसादन दर की निगरानी भारतीय मैंग्रोव पर अपनी तरह का पहला अध्ययन था। स्थापित रॉड सरफेस एलिवेशन टेबल्स अंडमान के मैंग्रोव में अवसादन दर पर दीर्घकालिक आंकड़े प्रदान करता रहेगा। यह समुद्र स्तर में वृद्धि से इन मैंग्रोव की भविष्य की संवेदनशीलता पर बेहतर जानकारी देगा। परियोजना के माध्यम से प्रशिक्षित 40 अग्रिम पंक्ति के कर्मचारी अंडमान द्वीपों में मैंग्रोव प्रबंधन और पुनर्स्थापन में सहायता करना जारी रखेंगे।

कमलांग नमदाफा परिदृश्य, भारत में उभयचर और सरीसृप अन्वेषण

वित्त पोषण स्रोत
राष्ट्रीय भौगोलिक सोसाइटी

शोधकर्ता
बिटुपन बोरुआ, नैतिक जी. पटेल, दीपक वीरप्पन

आरंभ होने की तिथि
मार्च 2021

अन्वेषक
डॉ. अभिजीत दास

पूर्ण होने की तिथि
अक्टूबर 2023

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे (i) कमलांग-नमदाफा परिदृश्य में उभयचर और सरीसृप का सर्वेक्षण करना और एक अद्यतन सूची प्रदान करना तथा लक्षित जातियों के लिए आनुवंशिक नमूने एकत्रित करना, (ii) वर्गीकरण में सुधार करना और नए प्रजातियों का वर्णन करने में रूपात्मक, आणविक और व्यवहारिक डेटा का उपयोग करना, (iii) उन जातियों का पुनः खोज करना जो वर्णन के बाद से रिपोर्ट नहीं की गई थीं, (iv) कनिष्ठ शोधकर्ताओं, संरक्षण प्रबंधकों और आम जनता को ज्ञान और कौशल का हस्तांतरण करना और (v) प्रजनन व्यवहार, सूक्ष्मवास उपयोग, आहार और ध्वनिकी पर आधारभूत डेटा एकत्रित करना।

प्रगति: क्षेत्रीय अध्ययन नमदाफा बाघ अभ्यारण्य और कमलांग बाघ अभ्यारण्य में मई-जून और अगस्त-सितंबर 2022 और अप्रैल-जुलाई 2023 के दौरान किए गए। अंतिम रिपोर्ट राष्ट्रीय भौगोलिक सोसाइटी और अरुणाचल प्रदेश के वन विभाग को प्रस्तुत की गई। परियोजना के निष्कर्ष एक समीक्षित अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में प्रकाशित किए गए। कमलांग-नमदाफा परिदृश्य से एकत्रित लार्वा की पहचान आणविक डेटा और रूपात्मक लक्षणों के आधार पर की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: कुल 93 उभयचर और सरीसृप जातियों की पहचान की गई, जिसमें 28 वंश और 10 कुलों के अंतर्गत 48



उभयचर जातियाँ और 29 वंश और 10 कुलों के अंतर्गत 45 सरीसृप जातियाँ शामिल हैं। रैकोफोरिडी, सेराटोबेट्राचिडी और रानिडी कुलों के तीन नए मेंढक जातियों का वर्णन किया गया। कुछ और जातियों की खोज अभी भी प्रतीक्षित है। दो कम ज्ञात बुश मेंढक जातियों और एक उड़ने वाले छिपकली की पुनः खोज की गई। नमदाफा बाघ अभ्यारण्य से वर्णित कम ज्ञात उभयचर जातियों की फाइलोजेनेटिक स्थिति और वर्गीकरण की पुनरावृत्ति का आकलन किया गया है। उभयचर जातियों के जैवध्वनिक और सरीसृप और उभयचर के नए उत्पन्न डीएनए अनुक्रमों को वैश्विक डेटाबेस में जमा किया गया है। दोनों बाघ अभ्यारण्यों के उभयचर और सरीसृप की एक फोटोग्राफिक पुस्तिका जारी की गई है।

मील का पत्थर: कमलांग-नमदाफा परिदृश्य के उभयचर और सरीसृप जीवों पर पहली बार व्यवस्थित अध्ययन जिसमें 200 दृश्य सर्वेक्षणों में 60 स्थानों का व्यापक नमूना शामिल है। आणविक, जैवध्वनिक, अस्थि संबंधी और रूपात्मक अध्ययनों को शामिल करने वाला एकीकृत वर्गीकरण दृष्टिकोण अब तक कमलांग-नमदाफा परिदृश्य से तीन नए मेंढक जातियों की खोज में सहायक रहा है, जिनके नाम हैं पाटकाई ग्रीन ट्री मेंढक, ग्रासिक्सालस पाटकाईएंसिस, ब्रुक ड्वार्फ माउंटेन मेंढक, अल्कलस फॉटिनालिस और नोआ-दिहिंग म्यूजिक मेंढक, निडिराना नोआडिहिंग।



राजाजी बाघ अभ्यारण्य, उत्तराखंड में प्रमुख आक्रामक विदेशी पौधों का स्थानीय वनस्पति पर पारिस्थितिक प्रभाव

वित्त पोषण स्रोत
डीएसटी- विज्ञान और
इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड

शोधकर्ता
शिपु कुमार

आरंभ होने की तिथि
जुलाई, 2020

अन्वेषक
डॉ. अमित कुमार, डॉ. नवेंदु पागे,
श्री कमर कुरेशी और
डॉ. जी.एस. रावत

पूर्ण होने की तिथि
नवम्बर, 2023

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे (i) राजाजी बाघ अभ्यारण्य में विदेशी पौधों के आक्रामक स्वरूप का अध्ययन करना, (ii) आक्रामक विदेशी पौधों की जातियों के स्थानीय वनस्पति पर पारिस्थितिक प्रभावों का आकलन करना, (iii) पारिस्थितिक पुनर्स्थापन उपायों का सुझाव देना, और (iv) विदेशी पौधों को नियंत्रित करने में विभिन्न प्रबंधन प्रथाओं की प्रभावशीलता का आकलन करना।

परिणाम और निष्कर्ष: 2021 और 2022 के वर्षों के दौरान पश्चिमी राजाजी बाघ अभ्यारण्य के विभिन्न वन रेंजों में लगाए गए 127 क्यूड्रेट प्लॉट्स (10×10 मीटर) के आधार पर, *लैंटाना कैमारा* का घनत्व 5,268.08 तने/हेक्टेयर (1,756.02 व्यक्तियों/हेक्टेयर) दर्ज किया गया, जबकि *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* की 1,257.44 तने/हेक्टेयर, एजिराटम कोंजोइड्स की 1,148.93 तने/हेक्टेयर और सेन्ना टोरा की 468.08 सेन्ना टोरा / हेक्टेयर दर्ज की गई। यह स्थानिक समूहण दर्शाता है कि *लैंटाना कैमारा*, एजिराटम कोंजोइड्स और सेन्ना टोरा समान पारिस्थितिक स्थितियों, जैसे मृदा प्रकार या अन्य पर्यावरणीय कारकों पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं जो उनके स्थापना और वृद्धि का समर्थन करते हैं। आक्रामक जातियों के वितरण पैटर्न को रेंज-दर-रेंज के आधार पर और अधिक विस्तृत रूप से जांचा गया, जो चिल्लावाली (19.2 वर्ग किलोमीटर) में *एजेराटिना एडेनोफोरा* की महत्वपूर्ण कवरेज,

हरिद्वार (23.5 वर्ग किलोमीटर) में *लैंटाना कैमारा* का प्रभुत्व और ढोलखांड (28.5 वर्ग किलोमीटर) में *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* की प्रचलता को दर्शाता है, जो विशिष्ट रेंजवार वितरण पैटर्न को दर्शाता है। *लैंटाना* द्वारा प्रभावित स्थलों (L1) में अप्रभावित स्थलों (1.91±0.93: और 2.23±2.01ppm, क्रमशः) की तुलना में कम जैविक पदार्थ (1.91±0.93:) और फॉस्फोरस सामग्री (1.106±0.57ppm) थी। इसके विपरीत, प्रभावित स्थलों में सोडियम (37.57±11.81 किलोग्राम/हेक्टेयर) और नाइट्रोजन सामग्री (0.09±0.013:) अप्रभावित स्थलों (36.63±9.54 किलोग्राम/हेक्टेयर और 0.1±0.05:, क्रमशः) की तुलना में अधिक थी, जिससे संकेत मिलता है कि *लैंटाना* का मृदा पोषक तत्व रचना पर नकारात्मक प्रभाव है।

मील का पत्थर: राजाजी बाघ अभ्यारण्य के भीतर पारिस्थितिक पुनर्स्थापन की दिशा में, यह अनुशंसा की जाती है कि एक आक्रामक वनस्पति प्रबंधन योजना, विशेष रूप से राजाजी के लिए, परियोजना की विशिष्ट सिफारिशों को शामिल करते हुए तैयार की जाए। *लैंटाना* द्वारा प्रभावित क्षेत्रों को देशी पौधों की जातियों के साथ समृद्ध करने के लिए, विशेष रूप से *ऐटीलोसिया*, *फेसियोलस* और *कजानस* जैसे दलहनी पौधों पर जोर देने के साथ, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन गतिविधियों को मजबूत करने की आवश्यकता है।

पूर्ण परियोजना

भारत के तराई-आर्क परिदृश्य में बाघों की मेटापोपुलेशन गतिशीलता

वित्त पोषण स्रोत

वन्यजीव संरक्षण ट्रस्ट-पैंथेरा ग्लोबल कैट एलायंस

शोधकर्ता

सुप्रिया भट्ट

आरंभ होने की तिथि

दिसंबर 2014

अन्वेषक

डॉ. सम्राट मोण्डल

पूर्ण होने की तिथि

दिसंबर 2023

भावसं

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था तराई-आर्क परिदृश्य में बाघों के मेटापोपुलेशन गतिकी का अध्ययन करना, जिसमें निम्नलिखित शामिल थे: (i) इस परिदृश्य में आठ संरक्षित क्षेत्रों, प्रबंधित वनों और उन्हें जोड़ने वाले गलियारों में बाघों का स्थानिक वितरण और इन आवासों के बीच स्रोत-गर्त गतिकी का आकलन करना, जिसमें प्रचुरता, जनसंख्या घनत्व, लिंग अनुपात और बाघ आबादी के बीच प्रसार दिशा का अनुमान लगाना शामिल है। (ii) विभिन्न बाघ आबादी के बीच गलियारों के माध्यम से संपर्क और प्रसार दर, और किन परिदृश्य सुविधाओं के माध्यम से ऐसे विचरण को सुविधा या बाधा होती है। (iii) बाघ जनसंख्याओं के बीच आनुवंशिक संबंध और जनसंख्या संरचना का अनुमान लगाना और उनके आवास संपर्क के साथ संबंध। (iv) अध्ययन अवधि के दौरान एकत्रित पारिस्थितिक, आनुवंशिक, और परिदृश्य स्तर की जानकारी को एकीकृत करके मेटापोपुलेशन स्तर पर बाघ जनसंख्या व्यवहार्यता विश्लेषण करना। (v)(a) भारत के तराई-आर्क परिदृश्य के

शिवालिक-भाबर और तराई के विभिन्न आवास प्रकारों में गैर-आक्रामक नमूनाकरण का उपयोग करके बाघों के खाद्य आदतों का आकलन करना। (इ) ऐसे पैटर्न को प्रभावित करने वाले पारिस्थितिक चर का मूल्यांकन करना, और (ब) भारत के तराई-आर्क परिदृश्य में बाघों द्वारा पशुधन शिकार के पैटर्न का अन्वेषण करना। (vi) (a) भारतीय तेंदुए के माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए में आनुवंशिक विविधता को समझना, (इ) भारतीय तेंदुए, *पैंथेरा पार्डस फुस्का*, की जनसंख्या संरचना और जनसांख्यिकीय विश्लेषण का आकलन करना, और (vii) विभिन्न बाघ घनत्व ढलान के बीच तेंदुए के बीच आनुवंशिक संबंध को समझना।

प्रगति: माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए (mtDNA) को NADH5, NADH4 और साइटोक्रोम इ के आंशिक खंडों के लिए 112 तेंदुओं के लिए उत्पन्न किया गया और डेटा को संकलित किया गया। हैप्लोटाइप्स की संख्या, हैप्लोटाइप विविधता (h), न्यूक्लियोटाइड

विविधता (च), पॉलीमॉर्फिक साइट्स (s) की संख्या, जनसंख्या संरचना और जनसांख्यिकीय इतिहास का विश्लेषण किया गया। राजाजी बाघ अभ्यारण्य से इकट्ठा किए गए 722 मांसाहारी मल के नमूनों के लिए डेटा उत्पन्न किया गया और 398 तेंदुए और 242 बाघ के नमूनों की पहचान की गई। अद्वितीय तेंदुओं की पहचान के लिए 398 तेंदुओं के लिए तेरह माइक्रोसैटेलाइट डेटा उत्पन्न किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: हमने भारतीय तेंदुओं में 46 हैप्लोटाइप्स की पहचान की, जिसमें उच्च हैप्लोटाइप विविधता (0.913 ± 0.019) और कम न्यूक्लियोटाइड विविधता (0.00343 ± 0.01) थी। हमें चार आनुवंशिक रूप से मिश्रित समूह मिले, जिससे संकेत मिलता है कि पूरे भारत में तेंदुए के mtDNA में कोई आनुवंशिक संरचना नहीं है। नेटवर्क विश्लेषण इंगित करते हैं कि भारत में विभिन्न तेंदुए हैप्लोटाइप्स के बीच कोई मजबूत फाइलोजियोग्राफिक संरचना नहीं है। गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोणों ने जनसंख्या जनसांख्यिकीय पैटर्न के विपरीत पैटर्न दिखाए। हमने 158 तेंदुओं की पहचान की, जिनके लिए 185

तेंदुओं के पहचान मानों के लिए संचयी संभावना 1.0910–13 (PIDunbiased) और 1.510–5 (PIDsibs) थी और सामाजिक गतिकी के आनुवंशिक आधार को समझने के लिए आगे का विश्लेषण जारी है। मात्रात्मक BSP दृष्टिकोण ने 3000–4000 साल पहले (मध्य-होलोसीन अवधि के दौरान) महिला प्रभावी जनसंख्या आकार में वृद्धि दिखाई। उपरोक्त निष्कर्षों को संकलित किया गया है। रिपोर्ट अगले छह महीनों में प्रस्तुत की जाएगी। यह कार्य भारतीय वन्यजीव संस्थान के XVI आंतरिक वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया था।

मील का पत्थर: यह अध्ययन अपने तरह का पहला था जिसने भारतीय तेंदुए की माइटोकॉन्ड्रियल विविधता का अध्ययन किया। इस अध्ययन ने भारतीय तेंदुए की वर्तमान उपप्रजातियों में उच्च आनुवंशिक विविधता का सुझाव दिया। इस अध्ययन ने अंतिम हिमयुग के दौरान तेंदुए की प्रभावी जनसंख्या आकार में गिरावट की प्रवृत्ति भी प्रदान की।

पूर्ण परियोजना

वन्यजीव के प्रभावी प्रबंधन के लिए पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र, चंद्रपुर के खनन क्षेत्रों के प्रभावों को समझना

वित्त पोषण स्रोत

पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड
(डब्ल्यूसीएल) महाराष्ट्र राज्य
विद्युत उत्पादन कंपनी लिमिटेड
(महाजेनको)

शोधकर्ता

अंकिता शर्मा, नेहा यादव और
निधि गोयल

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2021

पूर्ण होने की तिथि

दिसंबर 2023

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब

भावसं

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे (i) पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन के पैटर्न का मूल्यांकन करना, (ii) पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास जैवविविधता का आकलन करना, (iii) पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के चल रहे और प्रस्तावित खनन क्षेत्रों के कारण आवास विखंडन, संरचनात्मक और कार्यात्मक गलियारों की हानि से संबंधित मुद्दों का अन्वेषण करना, (iv) पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के संबंध में मानव-वन्यजीव संघर्ष के मुद्दों का मूल्यांकन करना (v) पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के संबंध में पौधों पर धूल जमाव के प्रभावों का मूल्यांकन करना, (अप) ध्वनिकी पारिस्थितिकी – जीवित जीवों, मनुष्यों और

उनके पर्यावरण के बीच ध्वनिकी संबंध का अध्ययन, (vii) विभिन्न वन्यजीव प्रजातियों पर खनन (कंपन और शोर) के प्रभावों का मूल्यांकन करना, (viii) खनन क्षेत्रों के संबंध में वन ध्वनि में परिवर्तन का मूल्यांकन करना, (ix) बिजली संचरण लाइनों के संबंध में संपर्कता वाले क्षेत्रों की पहचान करना और जानवरों के विद्युत से मौत को कम करने के लिए शमन उपायों का सुझाव देना, और (x) पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों और कोलफील्ड्स के आसपास वन्यजीव संरक्षण के लिए एक प्रबंधन योजना विकसित करना।

प्रगति: पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन के पैटर्न का मूल्यांकन किया गया। पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास जैवविविधता का आकलन करने के लिए

कई योजनाबद्ध फील्ड अभ्यास किए गए। खनन क्षेत्रों और बिजली संयंत्रों के अधिकतम प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, खनन और बिजली संयंत्र की गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन, स्थल से 3 किलोमीटर की दूरी तक किया गया। अध्ययन स्थलों के आसपास पक्षियों की विविधता का आकलन करने के लिए फील्ड से डेटा एकत्र किया गया। खनन क्षेत्रों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के अंदर और आसपास पक्षियों की विविधता का आकलन करने के लिए, प्रत्येक खनन स्थल और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के आसपास 300 x 300 मीटर ग्रिड में एक बिंदु पर यादृच्छिक रूप से चुने गए बिंदु गणना का उपयोग करके दूरी नमूनाकरण ढांचे में किया गया, जो सभी पक्षों में 3 किलोमीटर तक फैला हुआ था। बिंदु का जीपीएस स्थान, देखी गई पक्षी प्रजातियाँ, पक्षियों की संख्या और अन्य स्थल चर को प्रलेखित किया गया।

खान स्थलों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के आसपास स्तनधारियों के समूहों का अध्ययन करने के लिए प्रत्येक खनन स्थल के चारों ओर 1 x 1 किलोमीटर ग्रिड में कैमरा ट्रैपिंग की गई, जो सभी पक्षों में 3 किलोमीटर तक फैली हुई थी। प्रत्येक ग्रिड में एक तरफा कैमरा ट्रैप 20–25 दिनों के लिए लगाए गए थे। कैमरे केवल ग्रिड के वनाच्छादित भागों पर लगाए गए थे।

खनन क्षेत्रों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के आसपास वनस्पति की विशेषता बताने के लिए, प्रत्येक खनन स्थल और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के चारों ओर 300 x 300 मीटर ग्रिड में 10 मीटर त्रिज्या वाले गोलाकार प्लॉट पर नमूनाकरण किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष चंद्रपुर क्षेत्र में कुल 11 खान हैं, जिनमें से आठ सक्रिय हैं और तीन बंद हैं। कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास जनवरी से मार्च 2023 के दौरान चंद्रपुर जिले के खनन क्षेत्रों के अंदर और

आसपास किया गया। कुल मिलाकर, तीन खनन क्षेत्रों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के चारों ओर 90 कैमरा ट्रैप लगाए गए। चंद्रपुर क्षेत्र में, चार खानों के चारों ओर 43 कैमरा ट्रैप लगाए गए, अर्थात् भटाडी ओसी (19), दुर्गापुर रायटवारी कोलियरी यूजी (9), दुर्गापुर रायटवारी कोलियरी ओसी (7) और पदमापुर ओसी (8)। बल्लारशाह क्षेत्र में, छह खानों के चारों ओर दस कैमरा ट्रैप लगाए गए, अर्थात् सस्ती यूजी (1), सस्ती ओसी (3), बल्लारपुर ओसी (1), गौरी डीप ओसी (3), पाउनी ओसी (1) और हिंदुस्तान लालपेट कोलियरी यूजी (1)। उमरेड क्षेत्र में, केवल एक खान था, मुरपार यूजी, जहां 18 कैमरा ट्रैप लगाए गए। चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र में, उर्जा नगर में दो कैमरा ट्रैप और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र की ऐश बंड क्षेत्र में 17 कैमरा ट्रैप लगाए गए। सभी स्थलों में कैमरा ट्रैप 25 दिनों के लिए सक्रिय थे, जिससे कुल 2,250 कैमरा दिन के आकड़े प्राप्त हुए।

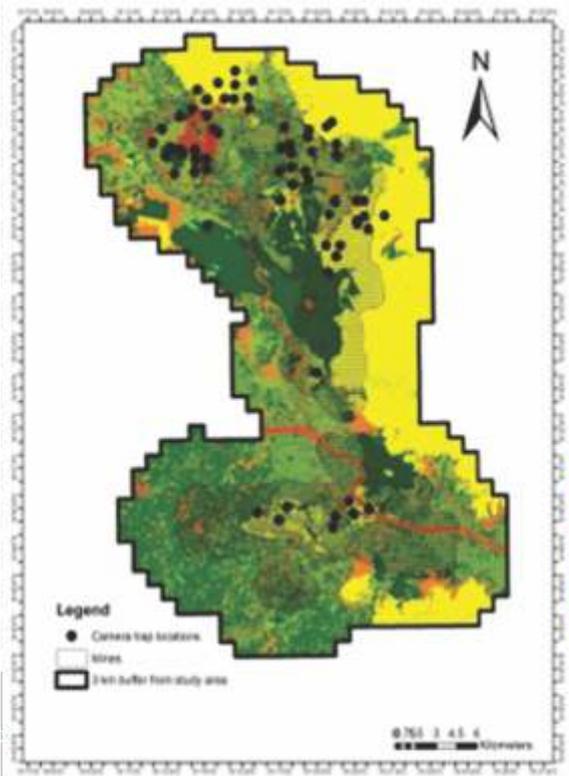
चंद्रपुर में कैमरा ट्रैप कैप्चर के आधार पर बाघ और तेंदुए का घनत्व अनुमानरु विश्लेषण ने नमूना क्षेत्रों (चंद्रपुर में खानों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के अंदर और आसपास वनाच्छादित क्षेत्रों) में शून्य मॉडल के तहत 5.8 (1.6) प्रति 100 वर्ग किलोमीटर बाघ घनत्व अनुमान प्राप्त हुआ। इसके विपरीत, विषमता मॉडल ने अध्ययन क्षेत्र में मादा और नर बाघ घनत्व को समान दर्शाया, जो 5.9 (±1.7) था।

अध्ययन ने 14 सक्रिय बाघ की उपस्थिति की रिपोर्ट की, जिनमें से आठ बाघ चंद्रपुर खनन क्षेत्र में सक्रिय हैं। चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के ऐश बंड क्षेत्र में चार सक्रिय बाघ को रिपोर्ट किया। हमने उमरेड खनन क्षेत्र के मुरपार यूजी खानों में दो सक्रिय बाघों थे जो ब्रह्मपुरी वन प्रभाग के भीतर आता हैं।

इसी प्रकार, चंद्रपुर में अध्ययन क्षेत्र में तेंदुए की घनत्व 6.3 (±1.9) प्रति 100 वर्ग किलोमीटर थी। हमने 13 सक्रिय तेंदुए व्यक्तियों की उपस्थिति पाई, जिनमें से अधिकांश व्यक्तियों की रिपोर्ट चंद्रपुर खनन क्षेत्र से की गई थी, अर्थात् भटाडी ओसी से छह और दुर्गापुर युजी से चार। उमरेड खनन क्षेत्र से दो तेंदुए व्यक्तियों की उपस्थिति की रिपोर्ट की गई, अर्थात् मुरपार (युजी), और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के उर्जा नगर क्षेत्र से एक।

स्तनधारी जीवों के सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक: चंद्रपुर जिले के खनन क्षेत्रों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के अंदर और आसपास कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास के कारण हमने 20 जंगली स्तनधारी प्रजातियों को दर्ज किया। सबसे अधिक सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक पालतू जानवरों का पाया गया। जंगली स्तनधारी जीवों में, सबसे अधिक सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक जंगली सूअर (28.15) का था, उसके बाद छोटे भारतीय सिवेट (18.47) और चीतल (17.75) का था। सबसे कम सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक जंगली बिल्लियों (0.12) का पाया गया। जंगली प्रजातियों में, सबसे कम सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक (0.68) रैटल और भारतीय लोमड़ी का था।

पक्षी विविधता का आकलनरु कुल 53 कुलों के 128 पक्षी प्रजातियों को देखा गया। खानों के अंदर और आसपास वर्तमान अध्ययन ने पाया कि मस्किकपिडी कुल का 11 प्रजातियों के साथ, पक्षी प्रजातियों की विविधता पर प्रभुत्व है, उसके बाद



चित्र 1: महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के खनन क्षेत्रों और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के अंदर और आसपास कैमरा ट्रैप लगाने के बिंदु।

अक्सिपिट्रिडी (10 प्रजातियाँ) और एस्ट्रिलिडी (6 प्रजातियाँ) का स्थान रहा। हमने 22 कुलों को प्रलेखित किया। चंद्रपुर और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास पक्षी प्रजातियों के लिए औसत शैन्न-वीनर विविधता सूचकांक $H^* = 4.125$ था। हमने पाया कि ओसी खानों के आसपास पक्षी विविधता (3.909) यूजी खानों के आसपास की तुलना में अधिक थी।

वनस्पति (वृक्ष) विविधता और प्रचुरता का आकलनरू चंद्रपुर के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास 17 कुलों के 43 वृक्ष प्रजातियों को दर्ज किया गया। इन कुलों में प्रमुख रूप से शामिल थे फैबासी (13 प्रजातियाँ), मोरासी (4 प्रजातियाँ), एपोसिनासी, मेल्वसी,

रुबिएसी और कॉब्रेतेसी (प्रत्येक 3 प्रजातियाँ)। आठ कुलों का दो प्रजातियों ने एवं तीन कुलों का प्रतिनिधित्व एकल प्रजातियों द्वारा किया गया था। अध्ययन क्षेत्र में वृक्ष प्रजातियों की औसत शैन्न विविधता सूचकांक 2.91 था।

मील का पत्थर: पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन के पैटर्न का मूल्यांकन किया गया। पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और चंद्रपुर ताप विद्युत संयंत्र के खनन क्षेत्रों के अंदर और आसपास जैवविविधता का आकलन करने के लिए फील्डवर्क पूरा हो चुका है।

पूर्ण परियोजना

उत्तराखंड में वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करने और सतत नदी तल सामग्री खनन प्रथाओं को सुनिश्चित करने की दिशा में राजाजी बाघ अभ्यारण्य के आसपास 10 किलोमीटर के दायरे के परिदृश्य क्षेत्र के लिए समग्र योजना

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड और भारतीय वन्यजीव संस्थान

शोधकर्ता

रोहित आर.एस. झा,
पी. मणिकंदन, मनीषा बिश्नोई
और स्तांजिन जंगमो

आरंभ होने की तिथि

मई 2022

अन्वेषक

डॉ. जी.वी. गोपी

पूर्ण होने की तिथि

जनवरी 2024

भावसं



उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) उत्तराखंड में राजाजी बाघ अभ्यारण्य के चारों ओर 10 किलोमीटर के दायरे में ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करना, जहाँ रेत और बोल्टर खनन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, जिससे राजाजी और कॉर्बेट बाघ अभ्यारण्यों के बीच बाघ और हाथी गलियारों की पश्चिम से पूर्व की दिशा में रक्षा की जा सके, (ii) समग्र योजना क्षेत्र के भीतर राजाजी के आसपास मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे रेत और बोल्टर खनन प्रस्तावों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना ताकि उन्हें अनुमति देने/ शमन के साथ अनुमति देने/ निषेधित करने के लिए निर्णय लिया जा सके, और (iii) उत्तराखंड के संरक्षित क्षेत्र के आसपास रेत खनन गतिविधियों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के

लिए राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति के द्वारा सूचित निर्णय लेने हेतु सिफारिशें प्रदान करना और सुविधा प्रदान करना।

प्रगति: नवंबर 2022 में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को एक समग्र तकनीकी रिपोर्ट ('समग्र योजना') प्रस्तुत की गई, जिसमें उत्तराखंड में राजाजी बाघ अभ्यारण्य के चारों ओर 10 किलोमीटर के दायरे के क्षेत्रों (लगभग 2,250 वर्ग किलोमीटर) और उपरोक्त उद्देश्यों को शामिल किया गया था। हालांकि, जब इस रिपोर्ट पर राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति की बाद की बैठकों के दौरान चर्चा की गई और अप्रैल 2023 में प्रस्तुत योजना पर उत्तराखंड मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक की टिप्पणियों के बाद,

इसी अभ्यास को उत्तर प्रदेश में राजाजी बाघ अभ्यारण्य के 10 किलोमीटर के दायरे के एक अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र (लगभग 446 वर्ग किलोमीटर, सहारनपुर और बिजनौर जिलों) में भी करने का अनुरोध किया गया। तदनुसार, जून 2023 में भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा आवश्यक वन और वन्यजीव-संबंधित डेटा का अनुरोध किया गया, जिसे बाद में दिसंबर 2023 में प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव), उत्तर प्रदेश द्वारा प्रदान किया गया। इस बीच, अक्टूबर 2023 में मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक को एक विस्तृत प्रतिक्रिया भी प्रस्तुत की गई। आवश्यक डेटा प्राप्त करने पर, जनवरी 2024 में यूपी में दो दिवसीय त्वरित फील्ड सर्वेक्षण किया गया, और एक 'परिशिष्ट रिपोर्ट' – पहले प्रस्तुत की गई मुख्य समग्र योजना के अनुक्रम में – उसी महीने में स्थायी समिति को प्रस्तुत की गई, जिससे परियोजना को समाप्त किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक, उत्तराखंड द्वारा भारतीय वन्यजीव संस्थान की प्रस्तुत 'समग्र योजना' पर की गई टिप्पणियों का विस्तृत, वैज्ञानिक और व्यापक बिंदु-दर-बिंदु उत्तर संकलित और अक्टूबर 2023 में वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को प्रस्तुत किया गया।

राजाजी बाघ अभ्यारण्य के निकटवर्ती क्षेत्रों (10 किलोमीटर के दायरे के भीतर) में वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों के प्रबंधन और रक्षा सीमांकन के लिए विस्तृत सिफारिशों के साथ एक अच्छी तरह से संदर्भित 'परिशिष्ट रिपोर्ट' वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को प्रस्तुत की गई – जैव विविधता-समृद्ध शिवालिक और नजीबाबाद वन प्रभागों में नदी तल सामग्री खनन से वन्यजीव गलियारों और महत्वपूर्ण आवासों की रक्षा के लिए वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को प्रस्तुत की गई।

मील का पत्थर: भारतीय वन्यजीव संस्थान ने अक्टूबर 2023 में वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को राजाजी बाघ अभ्यारण्य शसमग्र योजना रिपोर्ट पर उत्तराखंड मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक के टिप्पणियों का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत किया। उत्तर प्रदेश पीसीसीएफ (डब्ल्यूएल) ने जून 2023 में भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा डेटा भेजने के अनुरोध के बाद दिसंबर 2023 में 'परिशिष्ट रिपोर्ट' संकलित करने में सुविधा प्रदान करने के लिए आवश्यक प्रासंगिक डेटा प्रदान किया। संस्थान ने मंत्रालय द्वारा प्रदान की गई समयसीमा (आवश्यक डेटा प्राप्त करने से शुरू होने वाले 02 महीने) के भीतर जनवरी 2024 में वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को आवश्यक 'परिशिष्ट रिपोर्ट' प्रस्तुत की।

पूर्ण परियोजना
भावसं

अंडमान द्वीप समूह के मैंग्रोव वनों के कार्बन स्टॉक डायनेमिक्स पर टेक्टोनिक शिफ्ट (उत्थान और अवतलन) का प्रभाव

वित्त पोषण स्रोत
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

अनुसंधानकर्ता
श्री थिरुमुरुगन वी और अनूप राज सिंह

आरंभ होने की तिथि
अगस्त 2018

अन्वेषक
डॉ. नेहरू प्रभाकरन

पूर्ण होने की तिथि
जनवरी 2024

उद्देश्य: इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) उपसर्गी ढलान के साथ मैंग्रोव प्रजातियों की संरचना में विविधता का अध्ययन करना, (ii) उपसर्गी उपसर्ग के बाद उपग्रह रिमोट सेंसिंग डेटा का उपयोग करके अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में मैंग्रोव वनस्पति आवरण के परिवर्तन को समझना, और (iii) विभिन्न समुद्र स्तर परिवर्तन परिदृश्यों में मैंग्रोव उत्तराधिकार का सिमुलेशन मॉडलिंग।

प्रगति: अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में मैंग्रोव वनस्पति का नमूनाकरण पुनः किया गया था। उठी हुई तटीय क्षेत्रों से लगभग 40 स्थल, अवनत तटीय क्षेत्रों से 30 स्थल और नियंत्रण स्थल के दस स्थलों को शामिल किया गया। डेटा का विश्लेषण किया गया और परियोजना की अंतिम रिपोर्ट संकलित की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: इस परियोजना ने अंडमान द्वीपसमूह में उठे हुए प्रवाल भित्तियों और समुद्री तल पर बने नए अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों और निकोबार द्वीपसमूह में अवनत स्थलज क्षेत्रों में मैंग्रोव

उपनिवेशण पर आधारभूत डेटा उत्पन्न किया है। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में मैंग्रोव प्रजातियों के कई नए वितरण रिकॉर्ड (जैसे *अविसेनिया अल्बा*) रिपोर्ट किए गए। बीज स्रोत उपलब्धता, और शाकाहारी प्रजातियों जैसे आक्रामक धब्बेदार हिरण द्वारा शाकाहार, मैंग्रोव उपनिवेशण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक थे। *राइजोफोरा एसपीपी.*, *अविसेनिया मरीना*, और *सोनरेटिया अल्बा* जैसी प्रजातियों ने नए अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों में उच्च लचीलेपन और उपनिवेशण क्षमता दिखाई।

मील का पत्थर: उत्पन्न आधारभूत डेटा ने 2004 की सुनामी और तटीय रेखा परिवर्तनों के बाद अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में मैंग्रोव के वृद्धि की दीर्घकालिक निगरानी के लिए आधार बनाया। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में मैंग्रोव प्रजातियों के कई नए वितरण रिकॉर्ड (जैसे *अविसेनिया अल्बा*) रिपोर्ट किए गए। परिणामों ने अंडमान द्वीपसमूह के मैंग्रोव वनस्पति पर धब्बेदार हिरण के नकारात्मक प्रभाव को सामने लाया।

पूर्ण परियोजना

लोअर सुबनसिरी जलविद्युत परियोजना के साथ पानीर आरक्षित वन और दुलंग आरक्षित वन के बीच हाथी, एलिफस मैक्सिमस की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए त्वरित मूल्यांकन

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय जलविद्युत शक्ति निगम प्राइवेट लिमिटेड

अन्वेषक

डॉ. गोपी जीवी, डॉ. पराग निगम, डॉ. अभिजीत दास, डॉ. अनुकुल नाथ और डॉ. लक्ष्मीनारायण नटराजन

अनुसंधानकर्ता

कार्थी एस, स्वाति नवानी, सिरुमाई खुशियाली करी, बालाजी वी (डब्ल्यूआईआई), डॉ. संतनु डे (नागालैंड यूनिवर्सिटी)

आरंभ होने की तिथि

मई 2023

पूर्ण होने की तिथि

जनवरी 2024

भावसं

उद्देश्य: इस परियोजना का उद्देश्य पानीर आरक्षित वन और दुलंग आरक्षित वन के बीच हाथियों के मुक्त मार्ग को सुनिश्चित करने के लिए एक योजना तैयार करना था।

प्रगति: 25.04.2023 को आयोजित राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की 72वीं स्थायी समिति में अरुणाचल प्रदेश के निचले सुबनसिरी जिले में त्वरित मूल्यांकन करने का कार्यभार भारतीय वन्यजीव संस्थान को सौंपा गया। तदनुसार, संस्थान की शोध टीम ने अक्टूबर 2023 में जलविद्युत परियोजना स्थल पर हाथियों द्वारा आवास के उपयोग को खोजने के लिए त्वरित मूल्यांकन किया।

परिणाम और निष्कर्ष: अध्ययन में 127 से अधिक पक्षियों की प्रजातियों, 44 उभयचरों और सरीसृपों की प्रजातियों और 272

पौधों की प्रजातियों को दर्ज किया गया। शोधकर्ताओं ने हाथियों को उस गलियारे का उपयोग करते हुए देखा जो अक्रिय माना जा रहा था। अध्ययन के निष्कर्षों को जनवरी 2024 में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को प्रस्तुत किया गया। संस्थान द्वारा दी गई सिफारिशों को समिति के सदस्यों द्वारा स्वीकार किया गया।

मील का पत्थर: सिफारिश के आधार पर, राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति ने जलविद्युत बांध में हाइड्रो-पिकिंग गतिविधियों से बचने के लिए दुलंग-सुबनसिरी हाथी गलियारे के पुनर्मूल्यांकन का सुझाव दिया।

पूर्ण परियोजना

हाथियों की जनसंख्या निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए विभिन्न जनसंख्या अनुमान विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन

वित्त पोषण स्रोत

उत्तराखंड वन विभाग

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब और डॉ. पराग निगम

अनुसंधानकर्ता

चरनजोत कौर और रीमा साधुखान

आरंभ होने की तिथि

फरवरी 2022

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

भावसं

विषय विशेषज्ञ: डॉ. एस. पी. गोयल

उद्देश्य: इस परियोजना का उद्देश्य हाथियों की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए विभिन्न जनसंख्या अनुमान विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना और एक जनसंख्या निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना था।

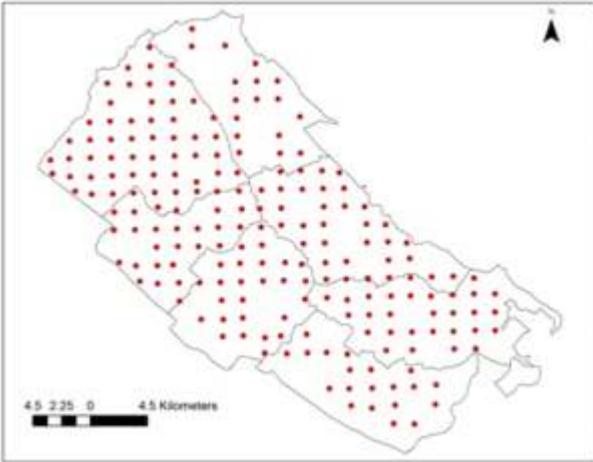
प्रगति: निम्नलिखित विधियों के लिए फील्डवर्क किया गया और पूरा किया गया:

दूरी नमूनाकरण का उपयोग करके लाइन ट्रांसेक्ट: 1 से 2 किमी तक के 41 ट्रांसेक्ट्स को पश्चिमी राजाजी राष्ट्रीय उद्यान के हिस्से में सात बार चला गया।

गोबर घनत्व अनुमान: परियोजना के चरण 1 में गोबर विघटन दरों का अनुमान लगाया गया और गोबर ढेर घनत्व पर फील्ड डेटा को गोबर के आधार पर हाथियों की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए संकलित किया गया।

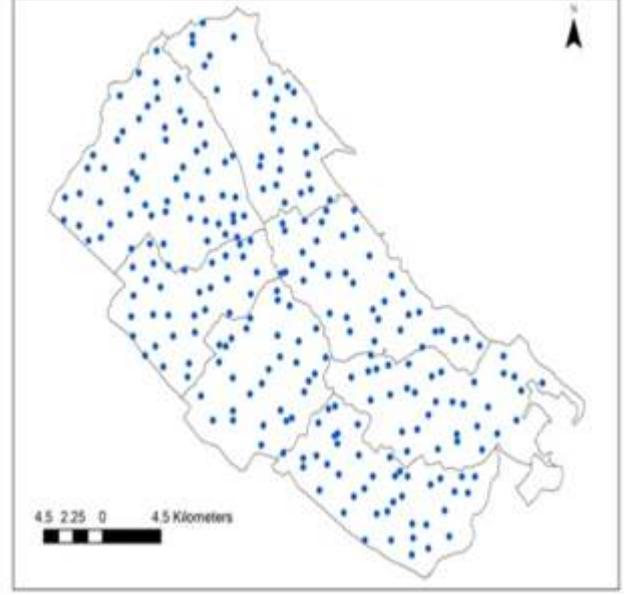
रेखीय एसईसीआर: मोटर वाहन का उपयोग करके 370 किमी सड़क खंडों का सर्वेक्षण किया गया, सात दोहराव के साथ हाथियों की उपस्थिति को सीधे देखना और झुंड, देखे जाने का स्थान, समय आदि के बारे में अतिरिक्त जानकारी दर्ज की गई। सर्वेक्षण की अवधि 1 दिसंबर 2023 से 15 दिसंबर 2023 तक थी।

ग्रिड-आधारित एसईसीआर: हमने 2 वर्ग किमी ग्रिड में जोड़े गए कैमरा ट्रैप्स को पश्चिमी राजाजी राष्ट्रीय उद्यान के 262 स्थानों पर तैनात किया ताकि एसईसीआर विश्लेषण ढांचे का उपयोग करते हुए हाथियों की जनसंख्या का अनुमान लगाया जा सके, जो उनके आकारिकी विशेषताओं के आधार पर व्यक्तिगत रूप से पहचाने गए हाथियों की आवश्यकता है। सर्वेक्षण 1 फरवरी 2024 से 31 मार्च 2024 तक किया गया।



राजाजी राष्ट्रीय उद्यान में हाथियों की जनसंख्या का एसईसीआर-आधारित अनुमान के लिए कैमरा ट्रैप्स का स्थान।

कैमरा ट्रैप-आधारित दूरी नमूनाकरण दूरी नमूनाकरण विधि के लिए बिंदु डीटेक्टर के रूप में कैमरा ट्रैप्स का उपयोग किया जा सकता है। हमने ग्रिड के केंद्र में एक एकल कैमरा ट्रैप तैनात किया। पश्चिमी राजाजी राष्ट्रीय उद्यान में कुल 210 स्थानों को शामिल किया गया। सर्वेक्षण 1 फरवरी 2024 से 31 मार्च 2024 तक और आगे बढ़ाया गया।



राजाजी राष्ट्रीय उद्यान में हाथियों की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए कैमरा ट्रैप-आधारित दूरी नमूनाकरण के लिए कैमरा ट्रैप्स का स्थान।

परिणाम और निष्कर्ष: हमारे सर्वेक्षणों में लाइन ट्रांसेक्ट सर्वेक्षणों में कुल 275 अनगुलेट्स (खुरवाले प्राणी) की देखी गई, गोबर घनत्व अनुमान के लिए कुल 246 गोबर ढेरों का अवलोकन किया गया और लीनियर एसईसीआर विश्लेषण के लिए सड़क खंडों पर कुल 159 हाथियों को देखा गया। कैमरा ट्रैप एसईसीआर सर्वेक्षण ने 11,23,705 फोटोग्राफ का एक डेटासेट उत्पन्न किया, जिसमें से लगभग 9500 फोटोग्राफ हाथियों के थे। कैमरा ट्रैप-आधारित दूरी नमूनाकरण के लिए कुल 485307 फोटोग्राफ प्राप्त किए गए। हाथियों की छवियों के डेटा का आगे का वर्गीकरण जारी है। इन डेटासेट्स का विश्लेषण चल रहा है, जिसके परिणाम विभिन्न विधियों के फायदों और नुकसानों की तुलनात्मक विश्लेषण के लिए और हाथियों की भविष्य की निगरानी के लिए उपयुक्त सिफारिशें तैयार करने के लिए उपयोग किए जाएंगे। पानी के गड्ढे की गणना के लिए कैमरा ट्रैप्स का उपयोग करने के लिए एक संशोधित दृष्टिकोण का परीक्षण जारी है।

एंथ्रोपोसीन और जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिक्रिया: भारतीय हिमालयी क्षेत्र में चयनित स्तनधारी प्रजातियों की विचरण पारिस्थितिकी

वित्त पोषण स्रोत
राष्ट्रीय हिमालयन अध्ययन मिशन

अनुसंधानकर्ता
शहीर खान और प्रसाद टोंडे

आरंभ होने की तिथि
जून 2020

अन्वेषक
डॉ. बिलाल हबीब

पूर्ण होने की तिथि
मार्च 2024

उद्देश्य: इस अध्ययन के उद्देश्य थे: क) भारतीय हिमालयी क्षेत्र में एंथ्रोपोसीन और जलवायु परिवर्तन के संबंध में पैलास की बिल्ली, हिमालयी भेड़िया और हिमालयी मर्मोट के विचरण स्वरूप का अध्ययन करना। ख) चयनित स्तनधारी प्रजातियों की स्थान-कालिक आवास उपयोग, भोजन पारिस्थितिकी और जीवन इतिहास गुणों का अध्ययन करना। ग) टेलीमेट्री डेटा के आधार पर चयनित स्तनधारी प्रजातियों के सूक्ष्म पैमाने पर वितरण स्वरूप की भविष्यवाणी करना ताकि मानवजनित और जलवायु परिदृश्यों के तहत परिवर्तन की भविष्यवाणी की जा सके।

प्रगति: क) *भेड़िया वितरण मॉडलिंग:* अफगानिस्तान, पाकिस्तान, किर्गिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान, चीन और मंगोलिया में विभिन्न स्रोतों से तीन हजार सात सौ छिहत्तर ऊनी भेड़िया के स्थान संकलित किए गए। स्थानिक स्वाचार का आकलन करने के लिए भौगोलिक सुचना प्रणाली मैपिंग का उपयोग किया गया। क्लस्टरिंग को रोकने के लिए अध्ययन क्षेत्र को ग्रिड्स (1 किमी x 1 किमी से 10 किमी x 10 किमी) में विभाजित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप आगे के विश्लेषण के लिए 774 से 162 उपस्थिति स्थान प्राप्त हुए। ऊंचाई, तापमान, वर्षा और भूमि उपयोग/भूमि आवरण ऊनी भेड़िया वितरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक थे। ऊनी भेड़िये निम्न से मध्यम गर्म तापमान और उच्च वर्षा पसंद करते थे, जंगलों और खेतों से बचते थे और खुले बंजर क्षेत्रों में रहते थे। केवल लगभग 20% अध्ययन क्षेत्र ऊनी भेड़िया आवास के लिए अत्यधिक उपयुक्त था। भविष्य के जलवायु परिवर्तन परिदृश्यों से ऊनी भेड़िये के लिए उपयुक्त आवास का विस्तार होने की संभावना है, विशेष रूप से अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमी भागों में।

ख) *पैलास की बिल्ली:* पैलास की बिल्ली के लिए कॉलरिंग स्थल को अंतिम रूप दिया गया, और आहार विश्लेषण के लिए मल संग्रह जारी है।

ग) *हिमालयी मर्मोट:* हिमालयी मर्मोट के टेलीमेट्री अध्ययन ने संरक्षण प्रयासों के लिए आधारभूत डेटा प्रदान किया है। कॉलर के वजन की सीमा के कारण टेलीमेट्री डेटा को ऑन-ग्राउंड रिसेवर का उपयोग करके एकत्र किया गया। उपकरण में लोटेक लाइटट्रैक 140 आरएफ कॉलर, पिनपॉइंट कमांडर (डेटा डाउनलोड के लिए रिसेवर), गार्मिन जीपीएस, दूरबीन और वजन मशीन शामिल थे। हिमालयी मर्मोट को पकड़ने के लिए कस्टम शर्मन ट्रैप बनाए गए। वन्यजीव संरक्षण विभाग, लेह, लद्दाख द्वारा डैन-इंजेक्ट ट्रैकिंग/लाइजर गन और डार्ट्स के लिए रसायन प्रदान किए गए। विशिष्ट मौसम (गर्मी) के दौरान पकड़ने का काम किया

गया, आहार विश्लेषण के लिए मल संग्रह किया गया। होम रेंज और विचरण मेट्रिक्स की गणना की गई, और प्रजातियों के लिए संरक्षण उपायों और सुरक्षा प्रोटोकॉल को प्रभावित करने के लिए प्रजाति वितरण मॉडलिंग की जाएगी। निवास की सीमा औसतन 3 से 7 हेक्टेयर के बीच थी, जो एक केंद्रित वितरण को इंगित करती है। स्टेप की लंबाई 20 से 60 मीटर थी और उनके बिल से औसतन 10 से 15 मीटर की दूरी पर यात्रा की गई, जो अन्य देशों के अध्ययनों की तुलना में अधिक सटीक थी जो दृश्य आकलन पर आधारित थे। शुद्ध-स्ववायर्ड विस्थापन ने दिखाया कि वे छोटे निवास की सीमाओं के साथ मेल खाते हुए केंद्रीय फोरेजर्स हैं। गतिविधि स्वरूप ने दर्शाया कि वे ज्यादातर दिनचर होते हैं, रात में एक या दो बार बिल से बाहर आने के उदाहरण होते हैं।

आवास उपयोग ने मॉस और लाइकेन्स प्रकार के आवास के लिए प्राथमिकता दिखाई, हालांकि घास के मैदान प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी लेकिन इसे निवास हेतु चुना नहीं गया था। बढ़ते पर्यटन से हिमालयी मर्मोट और पर्यटकों के बीच अंतःक्रिया बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप खुजली जैसी बीमारियों का स्थानांतरण हो रहा है। संरक्षण प्रयासों के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए कॉलर डेटा का उपयोग पर्यटकों और मर्मोट के बीच अंतःक्रिया की तीव्रता का विश्लेषण करने के लिए किया जाएगा।

परिणाम और निष्कर्ष: अध्ययन ऊनी भेड़िया के वितरण पैटर्न और प्रमुख पर्यावरणीय कारकों के बीच जटिल संबंधों पर प्रकाश डालता है। सावधानीपूर्वक मॉडलिंग प्रयासों के माध्यम से, हमने ऊंचाई, तापमान, वर्षा, और भूमि उपयोग/भूमि आवरण की इस अदृश्य प्रजाति के आवास प्राथमिकताओं को आकार देने में महत्वपूर्णता को रेखांकित किया। इसके अलावा, निष्कर्ष भविष्य के आवास उपयुक्तता पर जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभाव को



उजागर करते हैं, जिसमें विशेष रूप से अध्ययन क्षेत्र के विशिष्ट क्षेत्रों में ऊनी भेड़िया के लिए उपयुक्त आवास के उल्लेखनीय विस्तार का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त, हमारे हिमालयी मर्मोट पर अग्रणी टेलीमेट्री अनुसंधान प्रभावी संरक्षण रणनीतियों के निर्माण के लिए अमूल्य आधारभूत डेटा प्रदान करता है। टेलीमेट्री डेटा और मानव-वन्यजीव अंतःक्रिया, तेजी से बढ़ते

पर्यटन गतिविधियों के बीच प्रजातियों के संरक्षण के बहुपक्षीय चुनौतियों को स्पष्ट करते हैं। अत्याधुनिक कार्यप्रणालियों और अंतःविषय दृष्टिकोणों को एकीकृत करके, हमारा अध्ययन वैज्ञानिक समझ को आगे बढ़ाता है और भारतीय हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की जैवविविधता को संरक्षित करने के उद्देश्य से साक्ष्य-आधारित संरक्षण हस्तक्षेपों को सूचित करता है।

पूर्ण परियोजना

उत्तरी पश्चिमी घाट में तिनाघाट से कुलेम तक रेलवे ट्रैक के प्रस्तावित दोहरीकरण के कारण वन्यजीव आवास और पारिस्थितिकी मूल्यों पर संचयी पर्यावरणीय प्रभाव आकलन

वित्त पोषण स्रोत

रेल विकास निगम लिमिटेड

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब, डॉ. पराग निगम, डॉ. गोपी जी.वी., डॉ. अभिजीत दास और डॉ. नवेंदु पगे

परियोजना कर्मी

डॉ. एस. पी. गोयल, डॉ. इंद्रनील मोंडल, डॉ. जिंस वी.जे.,

डॉ. निखिल मोडक,

डॉ. मयूर नंदिकार,

डॉ. सुदीप बनर्जी,

डॉ. शरफा हुसैन,

डॉ. पूजा थाथोला, विजय बाबू नंदवंशी, निकेत निलेश अलाशी, सोनिया के.बी., रंजीत सत्रुसाल्य, अंकित सिंह दिनेश और

स्वाति साहा

आरंभ होने की तिथि

अक्टूबर 2022

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

भावसं



सर्वेक्षण के दौरान रेल से मृत्यु

उद्देश्य: परियोजना का मुख्य उद्देश्य संचयी प्रभाव मूल्यांकन करना था: i) आवास की विशेषताओं की सूक्ष्म संरचना और विन्यास का अध्ययन, ii) स्थलीय और वानस्पतिक स्तनधारी प्रजातियों और हर्पेटोफौना की वितरण और प्रचुरता स्थिति का अध्ययन करना, विशेष रूप से पश्चिमी घाट के स्थानिक लोगों पर ध्यान केंद्रित करना, iii) रेलवे शोर और कंपन की स्थानिक प्रोफाइल और सीमा की जांच करना, iv) ट्रेन परिवहन से संबंधित मृदा प्रदूषण का आकलन करना और वनस्पति पर प्रभाव का निर्धारण करना, v) वन्यजीव-ट्रेन टकराव के हॉटस्पॉट का निर्धारण करना, vi) उत्तरी पश्चिमी घाट में पारिस्थितिक प्रक्रियाओं को बनाए रखने के लिए कैसलेरॉक से कुलेम तक रेलवे ट्रैक के साथ प्रासंगिक शमन उपायों का सुझाव देना।

प्रगति: हमने पक्षी विविधता पर जानकारी एकत्र की, रेल से मृत्यु की निगरानी की, और परिवार रेनिडे के जीनस इंडोसिल्वियाना की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए दृश्य इम्प्लॉन्ट इलास्टोमर टैगिंग का उपयोग करके जनसंख्या का अनुमान लगाया। इसके अलावा, हमने वन्यजीव प्रजातियों पर रेलवे ट्रैक से संबंधित कंपन, सूक्ष्म तापमान, शोर प्रदूषण और कृत्रिम प्रकाश के प्रभाव का भी आकलन किया। इस अवधि में उपयोग की गई गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

पक्षी सर्वेक्षण: इस अध्ययन में पॉइंट-काउंट विधि का उपयोग किया गया था। कुल 75 बिंदुओं का नमूना तीन प्रतिकृति सर्वेक्षणों के साथ लिया गया।

रेल से मृत्यु सर्वेक्षण: सितंबर 2023 से नवंबर 2023 तक किया गया। सर्वेक्षण अवधि के दौरान, हमने रेल यातायात से प्रभावित विभिन्न प्रजातियों पर डेटा रिकॉर्ड किया।

दृश्यमान इम्प्लांट इलास्टोमर टैगिंग और कैप्चर-मार्क-रिकैप्चर: तिनघाट (चौनज 15300) के पास और आसपास 98 से अधिक इंडोसिलिवियाना को प्रारंभ में पकड़ा गया, चिह्नित किया गया, और बाद में उनके आवास में वापस छोड़ दिया गया।

प्रकाश और तापमान: हमने कुलेम और टीनाघाट के बीच 16 स्थानों पर 44 होबो एमएक्स डेटा लॉगर्स तैनात किए। प्रत्येक स्थान पर दो इकाइयाँ तैनात की गईं, एक ट्रैक पर और दूसरी जंगल के अंदर ट्रैक से 10 मीटर दूर। प्रत्येक इकाई को 1-सेकंड के अंतराल पर डेटा रिकॉर्ड करने के लिए कॉन्फिगर किया गया था।

ऑडियोमॉथ का उपयोग करके शोर प्रदूषण का आकलन हमने रेलवे ट्रैक के पास और जंगल के भीतर (10 मीटर, 50 मीटर, 100 मीटर, 250 मीटर, 500 मीटर और 700 मीटर) ऑडियोमॉथ उपकरण तैनात किए। उपकरणों को 55 सेकंड की रिकॉर्डिंग अवधि और 4-5 दिनों के लिए पांच सेकंड की अवकाश अवधि के साथ कॉन्फिगर किया गया था।

कंपन डेटा संग्रह: ट्रेन द्वारा कंपन की सीमा का आकलन वाइब्रेशन लेवल मीटर का उपयोग करके 5 मीटर, 10 मीटर, 20 मीटर, 50 मीटर, 100 मीटर, 150 मीटर, 200 मीटर, 250 मीटर की दूरी पर विभिन्न इलाकों में किया गया। डेटा कॉन्फिगरेशन और निष्कर्षण के लिए वाइब्रेशन डेटा प्रबंधन सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: पक्षी सर्वेक्षणरू सर्वेक्षण में रेलवे ट्रैक के साथ 4,480 अवलोकन दर्ज किए गए, जिनमें 135 पक्षी प्रजातियाँ शामिल थीं जो 17 आदेशों और 47 परिवारों का प्रतिनिधित्व करती थीं। सिम्पसन का विविधता सूचकांक (D) 0.052 और शैनन का विविधता सूचकांक (H) 3.64 मध्यम से उच्च पक्षी विविधता का संकेत देता है। प्रजातियों की समृद्धि 4.94 थी। सम (Evenness)

सूचकांक 0.73 ने प्रजातियों की आबादी के अपेक्षाकृत संतुलित वितरण का सुझाव दिया।

रेल मार्ग पर जीव हत्या: कुल 341 मृत्यु दर्ज की गईं। उभयचर बहुमत में थे (76%), इसके बाद सरीसृप (16%), स्तनधारी (7.8%), और पक्षी (0.2%)। उभयचर मृत्यु दर हॉटस्पॉट मुख्य रूप से सूखे मौसम के दौरान दूधसागर-कुलेम और टिनईघाट-कैसलरॉक में थे, जबकि गीले मौसम में, घाट खंड में मृत्यु दर व्यापक थी।

दृश्य इम्प्लांट इलास्टोमर टैगिंग और पुनः पकड़ना: 98 इंडोसिलिवियाना में से, अध्ययन के दौरान 20 चिह्नित इंडोसिलिवियाना को पुनः पकड़ा गया। टैगिंग के प्रारंभिक निष्कर्षों ने उभयचरों में लम्बी दूरी के विस्थापन (35 मीटर तक) के संकेत दिए, जिन्हें रेलवे ट्रैक जैसी बाधाओं से खतरा हो सकता है।

प्रकाश और तापमान: 0 मी. (खुला क्षेत्र) पर प्रकाश की तीव्रता के लिए उच्चतम औसत लक्स मान 35.67 था और 10 मी. (आंशिक रूप से ढके क्षेत्र) पर उच्चतम औसत लक्स मान 2.99 था। ट्रैक के करीब, प्रकाश की तीव्रता 24 से 36 लक्स तक भिन्न होती थी जबकि मूल्य 10 मी. पर बल्लास्ट से दूर 3 लक्स से कम थे। हमने वन आवरण और परिवेश तापमान के बीच एक विपरीत संबंध पाया। ट्रैक पर अधिकतम तापमान 37.36°C था जहां वन आवरण लगभग शून्य था, जबकि 10 मी. पर अधिकतम तापमान 29.21°C था जहां वन आवरण 60% थी।

ऑडियोमोथ का उपयोग करके शोर प्रदूषण का आकलन: अधिकतम डेसिबल 10 मी. पर था - 106 डेसिबल से 54.3 डेसिबल पर 300 मी. तक यह कम हो गया, जो ट्रैक के पास अधिकतम प्रभाव को दर्शाता है।

कंपन डेटा संग्रह: विभिन्न भू-भाग और सतह श्रेणियों में हमने ट्रैक से 5 मीटर से 250 मीटर की दूरी पर कंपन स्तर में लगभग 50% कमी देखी।

पूर्ण परियोजना

राजाजी बाघ अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड से होकर गुजरने वाली 4 लेन वाली हरिद्वार बाईपास रोड (पैकेज - 2) के विकास के लिए वन्यजीव अध्ययन और शमन योजना

वित्त पोषण स्रोत

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण

शोधकर्ता

डॉ. शिवम श्रोत्रिय,
जाहिदुल हुसैन और
अमन भाटिया

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2023

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

भावसं

उद्देश्य: इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) चार लेन हरिद्वार बाईपास रोड (पैकेज - 2) के लिए प्रस्तावित सुरंग के क्षेत्र में वन्यजीव उपयोग का अध्ययन (ii) चार लेन हरिद्वार बाईपास रोड (पैकेज - 2) के विकास के लिए प्रस्तावित सुरंग के साथ भूमि उपयोग, भूमि आवरण और भूभाग का मानचित्रण करना, और

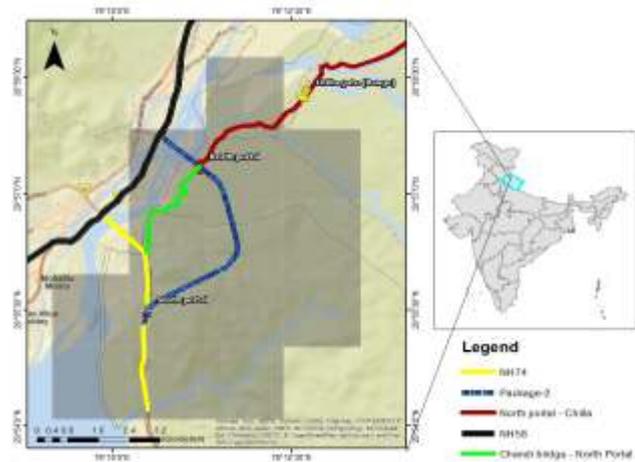
(iii) सर्वश्रेष्ठ प्रथाओं के आधार पर शमन उपाय और अनुशासक सुझाना।

प्रगति: हरिद्वार शहर हिंदू समुदाय के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक महत्व रखता है और विशेष रूप से कावड़ यात्रा जैसे आयोजनों के दौरान तीर्थयात्रियों और वाहनों की भारी संख्या होती है। जुलाई

2023 में, शहर में 4.07 करोड़ लोग और 46 लाख वाहन (मिश्रा, 2023) पहुंचे, जिससे शहरी क्षेत्रों में गंभीर यातायात जाम हो गया। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने हरिद्वार के लिए बाईपास रोड के विकास का प्रस्ताव रखा है। यह बाईपास रोड, बड़ी परियोजनाओं के पैकेज - 2 का हिस्सा है, जिसकी लंबाई 9.5 किमी है और यह मौजूदा एनएच-74 (हरिद्वार - हल्द्वानी रोड) से जुड़ता है। प्रस्तावित संरक्षण राजाजी टाइगर रिजर्व और निकटवर्ती वन क्षेत्रों से होते हुए एनएच-58 से जुड़ता है। इसलिए, इस अध्ययन को राजाजी टाइगर रिजर्व में प्रस्तावित संरक्षण के वन्यजीवों पर प्रभाव का मूल्यांकन करने और उचित शमन उपाय सुझाने के लिए किया गया था।

वन्यजीव उपस्थिति और आवास उपयोग का मूल्यांकन ट्रेल-आधारित संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैपिंग का उपयोग करके किया गया था। मई 2023 और जुलाई 2023 के बीच गहन संकेत-आधारित सर्वेक्षण (प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रिकॉर्ड) और कैमरा-ट्रैपिंग अभ्यास किए गए थे। सर्वेक्षण प्रस्तावित संरक्षण के दोनों ओर 2 किमी के बफर में किया गया था, जिसमें 50 किमी² का क्षेत्र शामिल था। अध्ययन क्षेत्र को व्यवस्थित रूप से दो ग्रिड प्रणालियों में विभाजित किया गया था: संकेत-आधारित सर्वेक्षण के लिए 2x2 किमी और गहन कैमरा ट्रैपिंग के लिए 1x1 किमी। प्रत्येक 2x2 किमी ग्रिड को वन्यजीव संकेतों को दस्तावेजित करने के लिए तीन बार चला गया, जिसमें स्तनधारी संकेत जैसे मल, पंजे के निशान, खुर के निशान और खरोंच के निशान शामिल थे। वन्यजीव संकेतों को इकट्ठा करने के लिए कुल 71.42 किमी का पैदल चला गया। इसके अतिरिक्त, 1x1 किमी ग्रिड में 41 स्थानों पर 2,353 ट्रेप नाइट्स के लिए कैमरा ट्रैप लगाए गए थे। एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण करके प्रजातियों की उपस्थिति और गति पैटर्न का आकलन किया गया और प्रस्तावित संरक्षण के साथ वन्यजीव गतिविधि और आवास उपयोग के हॉटस्पॉट की पहचान की गई।

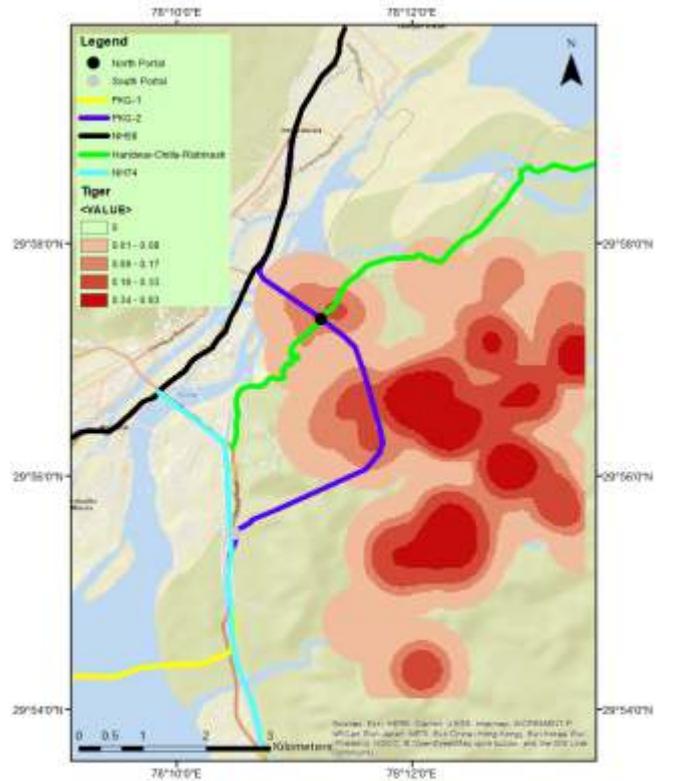
परिणाम और निष्कर्ष: सर्वेक्षण के दौरान 26 वन्यजीव प्रजातियां दर्ज की गईं। चीतल सबसे अधिक देखी जाने वाली प्रजाति थी,



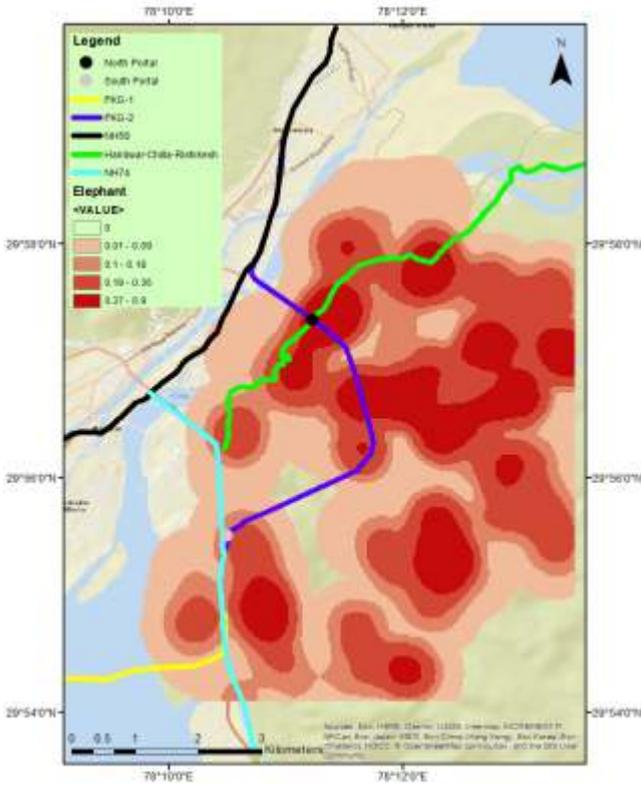
चित्र 1: अध्ययन क्षेत्र जिसमें प्रस्तावित सुरंग और राजाजी टाइगर रिजर्व, उत्तराखंड के चिल्ला क्षेत्र से गुजरने वाली मौजूदा सड़कें शामिल हैं

जिसमें 5,049 देखा गया, इसके बाद सांभर को 2455 बार देखा गया। इसके अलावा, जंगली सुअर (n= 715) और एशियाई हाथी (n= 667) कई कैमरा ट्रैप स्थानों पर लगातार कैप्चर किए गए थे। एशियाई काले भालू, भारतीय पैंगोलिन और गोरल को कम देखा गया, प्रत्येक को एक बार देखा गया था। मांसाहारी में, पट्टेदार लकड़बग्घा सबसे अधिक देखी जाने वाली प्रजाति थी (n= 183), इसके बाद प्रस्तावित संरक्षण क्षेत्र का उपयोग करने वाले 13 तेंदुओं के 107 बार और 7 बाघों के 69 बार देखा गया था।

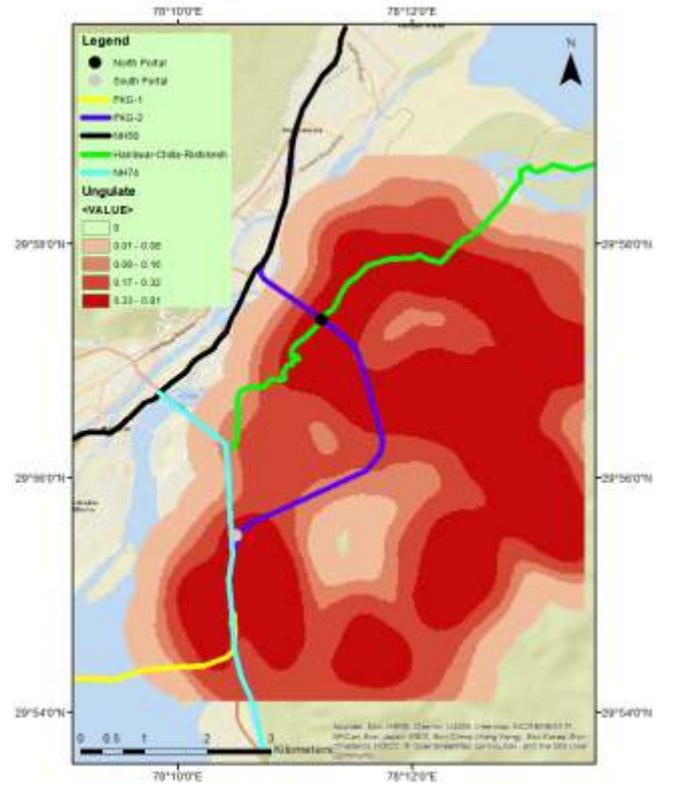
प्रजाति उपयोग क्षेत्रों को संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैप डेटा का उपयोग करके कई वन्यजीव प्रजातियों के लिए उत्पन्न किया गया था। बाघ, तेंदुए, हाथी और सांभर, चीतल और भोंकने वाले हिरण सहित विभिन्न अनगुलेट्स ने उत्तर पोर्टल के आसपास गतिविधि हॉटस्पॉट केंद्रित प्रदर्शित किए। बाघों को निर्बाध आवास और कम गतिविधि वाले क्षेत्रों को पसंद करते हुए देखा गया। हालांकि, तेंदुए, हाथी और अनगुलेट्स को उत्तर और दक्षिण पोर्टल्स दोनों, साथ ही हरिद्वार-चिल्ला-ऋषिकेश रोड सहित व्यापक श्रेणी के आवासों में पाया गया। पशु उपयोग की घनत्व संभावित स्थल दिखाती हैं जहां जानवरों का सड़कों से सामना हो सकता है, पैकेज-1 और दक्षिण पोर्टल के बीच एनएच-74 के साथ तेंदुए, हाथी और गंगा नदी के साथ वन क्षेत्रों तक पहुंचने वाले अनगुलेट्स के लिए एक महत्वपूर्ण क्रॉसिंग पॉइंट के रूप में काम कर रहा है। इस क्षेत्र में हाथी गंगा नदी और उसके द्वीपों तक पहुंचने के लिए अक्सर सड़क पार करते थे, जबकि अनगुलेट्स को नदी के किनारे के क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए सड़क पार करते हुए देखा गया था।



चित्र 2: प्रस्तावित सुरंग के साथ 2 किमी बफर के भीतर संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैप डेटा के आधार पर बाघ का घनत्व मानचित्र



चित्र 3: प्रस्तावित सुरंग के साथ 2 किमी बफर के भीतर संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैप डेटा के आधार पर हाथी का घनत्व मानचित्र



चित्र 4: प्रस्तावित सुरंग के साथ 2 किमी बफर के भीतर संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैप डेटा के आधार पर हाथी का घनत्व मानचित्र

अनुशंसाएँ: (i) उत्तर पोर्टल और उसके आसपास का क्षेत्र, जो राजाजी टाइगर रिजर्व के अंतर्गत आता है, हाथियों, बाघों, तेंदुओं और सभी प्रमुख खुर वाले प्राणियों के आवागमन के लिए महत्वपूर्ण स्थल हैं। इस जुड़ाव पर वन्यजीव संपर्क और वन्यजीव उपयोग को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। (ii) एक दोहरी- पूर्ण परिसंचरण लूप उत्तर पोर्टल विकास को चिल्ला-ऋषिकेश मार्ग और राष्ट्रीय राजमार्ग 58 के साथ जोड़ने का सुझाव दिया गया है। इस संरचना के लिए अनुशंसित न्यूनतम ऊंचाई हाथियों के आवागमन के लिए 9 मीटर है। इस संरचना को चीला-ऋषिकेश मार्ग पर सुखासोट तक बढ़ाया जाना चाहिए, जो एक प्रमुख हाथी क्रॉसिंग क्षेत्र है। यह हाथियों के लिए शमन संरचना की उपयोगिता को और बढ़ाता है। (iii) उत्तर पोर्टल पर सभी मार्ग संरक्षण में जानवरों को जितना संभव हो सके, हस्तक्षेप को कम करने के लिए एक उपयुक्त ध्वनि और प्रकाश अवरोध होना चाहिए। उत्तर पोर्टल पर वन्यजीवों के प्रवेश को रोकने के लिए एक निवारक संरचना होनी चाहिए। (iv) चंडी बाधा और उत्तर पोर्टल के बीच का क्षेत्र एक प्रमुख वन्यजीव आवास है, जिसे वर्तमान में ऋषिकेश की ओर जाने वाले मार्ग और सार्वजनिक आवागमन द्वारा विघटित किया जाता है। चंडी बाधा स्थल से उत्तर पोर्टल तक (लगभग 2 किलोमीटर) के बीच के वर्तमान 2-लेन मार्ग को सार्वजनिक उपयोग के लिए बंद कर देना चाहिए, और इस हिस्से को वन्यजीवों के लिए एक मार्ग के रूप में खोलना

चाहिए। केवल वन विभाग के द्वारा वर्तमान मार्ग का गश्ती गतिविधियों के लिए उपयोग करना चाहिए। (v) पैकेज 1 में, गंगा नदी और राष्ट्रीय राजमार्ग 74 के बीच लगभग 900 मीटर चौड़े वन क्षेत्र का एक पैच है। गंगा नदी पर एक ऊंचा पुल की योजना बनाई गई है, जो बाद में राष्ट्रीय राजमार्ग 74 के साथ जुड़ता है। सुझाव है कि इस पुल को ऊंचा रखा जाए, जो हाथियों के आवागमन के लिए न्यूनतम ऊंचाई 6 मीटर प्रदान करता है, और राष्ट्रीय राजमार्ग 74 से केवल 300 मीटर के भीतर ही इसे राष्ट्रीय राजमार्ग 74 के साथ जोड़ने के लिए इसे नीचे किया जाना चाहिए। (vi) गंगा नदी के ऊपर पुल को और पैकेज-1 और पैकेज-2 के शेष मार्ग को उपयुक्त ध्वनि और प्रकाश अवरोधों से ढकने का सुझाव दिया गया है ताकि परिणामी अंडरपास को जानवरों के आवागमन के अनुकूल बनाया जा सके। यह बाईपास, मार्ग को वन्यजीवों के लिए अनुपलब्ध कर देगा, जिससे इस क्षेत्र में सड़क के साथ टकराव और संघर्ष के जोखिम को कम किया जा सकेगा

मील के पत्थर: प्रभावित क्षेत्र के वन्यजीव उपयोग के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण और साहित्य समीक्षा पूरी कर ली गई है। 4-लेन बाईपास सड़क के वन्यजीवों पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने के लिए विशिष्ट सिफारिशें तैयार की गई और उन्हें सूचित किया गया। राजाजी बाघ अभ्यारण्य की चिल्ला रेंज से गुजरने वाली एक सुरंग की सिफारिश की गई है और दोनों सुरंगों के खोलने पर वन्यजीवों के अनुकूल क्रॉसिंग संरचनाओं की सिफारिश की गई है।

पारिस्थितिक संसाधनों के संबंध में प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों के सूक्ष्म-पैमाने पर स्थानिक और कालिक उपयोग का आकलन और हर्रावाला रेलवे स्टेशन के उन्नयन के कारण होने वाले प्रभावों को कम करने के लिए शमन योजना का सुझाव

वित्त पोषण स्रोत
उत्तरी रेलवे

शोधकर्ता
डॉ. अमित कुमार, रजत सिंह
राणा, उपासना कांडपाल, सोनम,
अपर्णा सुनील और आदिल खान

आरंभ होने की तिथि
फरवरी 2023

अन्वेषक
डॉ. बिलाल हबीब और डॉ. पराग
निगम

पूर्ण होने की तिथि
मार्च 2024

उद्देश्य: (i) रेलवे ट्रैक के साथ प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों द्वारा स्थलाकृति और कालिक उपयोग का निर्धारण करना। (ii) वन्यजीवों का रेल से टक्कर के पैटर्न का मूल्यांकन करना और परिदृश्य में टक्कर बहुल स्थल की पहचान करना। (iii) रेलवे ट्रैक के साथ प्रमुख प्रजातियों के निवास, प्रचुरता और परिदृश्य उपयोग का निर्धारण करने वाले पारिस्थितिक कारकों की पहचान करने के लिए त्रि-आयामी स्थलाकृति और वन संसाधन प्रोफाइल का उपयोग करना। (iv) परिदृश्य में पारगम्यता बढ़ाने के लिए शमन उपायों को लागू करने के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र की पहचान करना। (v) (क) हर्रावाला रेलवे स्टेशन के उन्नयन, (ख) मार्ग के स्टेशनों पर 24 डिब्बों को संभालने के लिए विस्तार/अतिरिक्त लूप लाइन, और (ग) देहरादून-हरिद्वार रेलवे लाइन पर ट्रेन की गति 100 किमी तक बढ़ाने के प्रभावों को कम करने के लिए 'शमन योजना' तैयार करना।

प्रगति: वन्यजीवों के स्थानिक और कालिक उपयोग का आकलन साइन सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैपिंग के माध्यम से किया गया, जो हर्रावाला रेलवे स्टेशन से मोतीचूर रेलवे स्टेशन (चेनिंग 72/13 से चेनिंग 30/13 के बीच) के अध्ययन क्षेत्र के भीतर मई 2023 से जुलाई 2023 तक किया गया। कैमरा ट्रैपिंग, देहरादून वन प्रभाग और राजाजी बाघ अभ्यारण्य के जंगलों में रेलवे ट्रैक के दोनों किनारों पर 2 किलोमीटर के भीतर की गई थी, और 768 ट्रैप रातों के लिए 190 कैमरा ट्रैप के साथ डेटा संग्रहित किया गया। वनस्पति सर्वेक्षण वृक्ष, झाड़ी और घास आवरण के लिए क्रमशः 10 मीटर, 5 मीटर और 1 मीटर व्यास वाले वृत्तीय प्लॉटों का उपयोग करके किया गया था। पूरे रेलवे ट्रैक का सर्वेक्षण चील गिनती और कूड़ा हॉटस्पॉट की पहचान करने के लिए किया गया, जो रेलवे



ट्रैक पर जानवरों को आकर्षित करते हैं। मौजूदा पुलों की उपयुक्तता को कार्यात्मक करने वाली संरचनाओं के रूप में संभावना के लिए जांचा गया। शोर अशांति का आकलन एचटीसी शोर स्तर माप यंत्र का उपयोग करके रेलवे ट्रैक से 400 मीटर तक किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: कुल 21 वन्यजीव प्रजातियों, पक्षियों और सरीसृपों को छोड़कर, देखा गया, जिसमें सांभर व्यापक रूप से देखी गई प्रजाति (आरएआई – 119.3 ± 21.98) है, और जंगली धब्बेदार बिल्ली को केवल एक बार देखा गया (आरएआई – 0.02 ± 0.04)। मुख्य प्रजातियों जैसे सांभर और हाथी के मुख्य हॉटस्पॉट क्षेत्र कांसरो रेलवे स्टेशन से रायवाला रेलवे स्टेशन और रायवाला रेलवे स्टेशन से मोतीचूर रेलवे स्टेशन के बीच देखे गए।

वनस्पति सर्वेक्षण से पता चला कि अध्ययन क्षेत्र के भीतर, मल्लोटस फिलिपेंसिस में वृक्षों के बीच उच्चतम प्रजाति समृद्धि थी (0.23), जबकि जिजिफस मौरिटियाना में सबसे कम (0.0011) थी। झाड़ियों में, *मुराया कोएनगी* की उच्चतम प्रजाति समृद्धि (0.19)

थी, इसके बाद *लैंटाना कैमारा* थी। कांसरो और रायवाला के बीच में वृक्ष घनत्व सबसे अधिक पाया गया, जबकि रायवाला और मोतीचूर रेलवे स्टेशनों के बीच झाड़ी घनत्व सबसे अधिक पाया गया। रेलवे ट्रैक पर मौजूदा क्रॉसिंग संरचना का सर्वेक्षण करते समय, केवल दो नदी पुल (पुल संख्या 166 और 138) बड़े शरीर वाले स्तनधारियों, यानी हाथियों और सांभरों के संभावित पारगमन के लिए अनुकूल पाए गए। इसके विपरीत, अधिकांश पुल और पुलिया मलबे और वनस्पति के कारण बंद थे। कुल 94 जानवरों के ट्रेल्स का दस्तावेजीकरण किया गया था। जानवरों के ट्रेल्स की सबसे बड़ी प्रचुरता कांसरो और रायवाला रेलवे स्टेशनों के बीच देखी गई। कूड़े का ऊंचा स्तर कांसरो और रायवाला रेलवे स्टेशनों के बीच केंद्रित है। रेलवे ट्रैक के करीब (50 मीटर) उच्च ध्वनि स्तर (110–80 डेसिबल) भी देखे गए। महत्वपूर्ण ढेर लच्छीवाला में चेनिंग 64/17 से 64/15 और 63/11 से 63/8 के बीच दो स्थानों पर पहचाने गए। उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर उपयुक्त शमन उपायों का सुझाव दिया गया है।

भारत में बंदी हाथियों के कल्याण और प्रबंधन हेतु एक आनुवंशिक डेटाबेस का विकास

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्वेषक

डॉ. सम्राट मोंडल

शोधकर्ता

अंकित शंकर पाचा,
आयुष्मान सिंह नरुका और
अभिरुचि उनियाल

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2022

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

उद्देश्य: (i) बंदी हाथियों के आनुवंशिक अध्ययन के लिए एक निर्धारित पद्धति स्थापित करना और भारतीय हाथियों पर डीएनए डेटा संग्रह उत्पन्न करना। इसे कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्यों के माध्यम से पूरा करने की योजना बनाई गई थी: (क) हाथियों से विभिन्न स्रोतों से डीएनए नमूने एकत्र करने के लिए मानक संचालन प्रोटोकॉल (एसओपी) विकसित करना, (ख) डेटाबेस के लिए जैविक नमूनाकरण के लिए एक छेड़छाड़-रोधी नमूना किट विकसित करना, (ग) कानूनी प्रक्रियाओं के लिए 'कस्टडी की श्रृंखला' (सीओसी) के विकास और रखरखाव, (घ) बंदी हाथियों से रक्त नमूने एकत्र करने के लिए एक मैनुअल विकसित करना, (ङ) हाथियों पहचान और भारत भर में फॉरेंसिक उपयोग के लिए माइक्रोसैटेलाइट मार्कर का एक सेट मानकीकृत और परीक्षण करना। (ii) बंदी हाथियों का आनुवंशिक डेटाबेस परियोजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नमूना एकत्र करने और डेटा संग्रहण और अन्य आवश्यक प्रक्रियाओं में वन विभाग के अंतर्गत पशु

चिकित्सकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करना, और (iii) बंदी हाथियों का आनुवंशिक का उद्देश्य (क) एक डेटासेट के अंतर्गत आनुवंशिक और शारीरिक डेटाबेस को संकलित करना, (ख) वर्तमान जनसंख्या की आनुवंशिक स्थिति को समझना ताकि बंदी हाथियों की जनसंख्या प्रबंधन में सहायता मिल सके।

प्रगति: परियोजना टीम ने पहले चरण में 282 नमूने एकत्र किए, जबकि मई 2024 के अंत तक 412 नमूने प्राप्त हुए। इस वर्ष, परियोजना को अरुणाचल प्रदेश से अन्य राज्यों में हाथियों को स्थानांतरित करने के लिए 27 अनुरोध प्राप्त हुए। परियोजना ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक प्रशिक्षण और संचार प्रदान किया। सभी हाथी के (n=27) आनुवंशिक डेटा उत्पन्न किए गए, और अरुणाचल वन विभाग को स्थानांतरण प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने के लिए रिपोर्ट प्रदान की गई। अब तक, आठ राज्यों में नमूना पूरा हो चुका है, और ग्यारह राज्यों में आंशिक नमूना लिया गया है। संस्थान ने इस सत्र (2023–2024) में डॉ.

सम्राट मॉडल, वैज्ञानिक-ई की अध्यक्षता में विभिन्न राज्यों (पश्चिम बंगाल, असम और केरल) में नमूना प्रक्रिया शुरू करने के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों ने वन विभाग के कर्मियों को परियोजना के तर्क, उद्देश्यों और विस्तृत नमूना प्रक्रियाओं से परिचित कराया।

परिणाम और निष्कर्ष: प्राप्त जैविक नमूनों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि देखी गई है, जिनमें से 19 राज्यों से 694 नमूने एकत्र किए गए हैं। इस विस्तार ने बंदी हाथियों के आनुवंशिक डेटाबेस में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रमुख घटक विश्लेषण के विभेदक विश्लेषण (डीएपीसी) में लागू एक बहुविध दृष्टिकोण का उपयोग करके, हमने बंदी हाथी जनसंख्या के तीन प्रमुख आनुवंशिक वंशावली की पहचान की ($K=3$)। व्यापक रूप से, राज्यों से हाथियों के नमूनों ने एक उत्तरी वंशावली, एक दक्षिणी वंशावली, और एक उत्तर-पूर्वी वंशावली का निर्माण किया। कुछ हाथियों ने मिश्रित आनुवंशिक लक्षण प्रदर्शित किए, जो

ऐतिहासिक अंतर्राज्यीय स्थानांतरण के कारण हो सकते हैं। व्यक्तिगत हाथियों की आनुवंशिक प्रोफाइलिंग अधिकारियों को राज्यों में स्थानांतरण के दौरान और बाद में बंदी हाथियों की कल्याण और निगरानी सुनिश्चित करने में सहायता करती है। यह परियोजना उन हाथियों की कल्याण के लिए भी उपयोगी थी, जिन्हें स्थानांतरित किया जाना था। सभी किटों को बंदी हाथियों वाले राज्यों में समान नमूना के लिए पूरे भारत में वितरित किया गया है।

मील के पत्थर: इस पहल का उद्देश्य इन हाथियों का विवरण एक राष्ट्रीय डेटाबेस में शामिल करना है, जो संरक्षण क्षेत्र में एक अग्रणी प्रयास का प्रतीक है। कैद हाथियों की आबादी के बारे में व्यापक डेटा, जिसमें उत्पत्ति, आकार, लिंग, मालिक और यहां तक कि आनुवंशिक पहचान शामिल है, का होना कैद हाथी जनसंख्या प्रबंधन के लिए एक नया विचार प्रस्तुत करता है।

पूर्ण परियोजना

मिजोरम के संरक्षित क्षेत्रों में खुर वाले जानवरों में बीमारी के प्रसार का आकलन

भावस

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्वेषक

डॉ. ललियानपुरई काव्लनी,
डॉ. एस. सत्यकुमार,
डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम और
श्री कमर कुरैशी

शोधकर्ता

आकांक्ष्या प्रिया गोगोई,
रूपाली सिंह, हर्षिता हालेमनी,
प्राची मिश्रा, पूजा लटवाल,
प्रीति सेमवाल, जूनू चकमा,
एफ. मालसामदांगलियाना
लालंगाइहवमी

आरंभ होने की तिथि

दिसंबर 2020

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

उद्देश्य: (i) मिजोरम के चयनित क्षेत्रों में संक्रमणीय बीमारियों की प्रचलता का आकलन करना, विशेष रूप से उन रोगजनकों को ध्यान में रखते हुए जिनके कारण हाल के दिनों में जंगली खुर वाले जानवरों की मृत्यु हुई थी, और (ii) संरक्षित क्षेत्रों के आसपास घरेलू जानवरों में संक्रमणीय बीमारियों की प्रचलता का आकलन करना।

प्रगति: सभी उद्देश्यों को पूरा किया गया है। खुर वाले जानवरों की महत्वपूर्ण बीमारियों की जांच की गई है, साथ ही जनसंख्या आकलन और अध्ययन क्षेत्रों – दाम्पा बाघ रिजर्व, मुरलेन राष्ट्रीय उद्यान और नैंगपूई वन्यजीव अभ्यारण्य के आसपास लोगों के दृष्टिकोण की जानकारी भी दी गई है।

परिणाम और निष्कर्ष: संरक्षित क्षेत्रों के आसपास घरेलू जानवरों में संक्रमणीय बीमारियों के प्रसार का आकलन किया गया है। मिजोरम के चयनित क्षेत्रों में संक्रमणीय बीमारियों के प्रसार, विशेष रूप से उन रोगजनकों को ध्यान में रखते हुए जिनके कारण हाल के दिनों में जंगली खुर वाले जानवरों की मृत्यु हुई थी, का भी आकलन किया गया है। परियोजना ने हमें अध्ययन क्षेत्र में खुर वाले जानवरों की जनसंख्या आकलन पर अतिरिक्त जानकारी भी प्रदान की है।

मील के पत्थर: अध्ययन क्षेत्र में जीवाणु जूनोटिक रोगजनकों के मेटाजेनोमिक डेटा का आकलन किया गया है। इस अध्ययन ने हमें व्यवधान और परजीवी प्रचलन पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि भी दी है।

हाथी अभ्यारण्यों में संरक्षण योजना – हाथी संरक्षण योजना की तैयारी के लिए रूपरेखा

वित्त पोषण स्रोत

परियोजना हाथी प्रभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

वन्यजीव योजना विशेषज्ञ

श्री पी.सी. त्यागी और डॉ. संजय श्रीवास्तव

आरंभ होने की तिथि

जून 2023

अन्वेषक

डॉ. पराग निगम

शोधकर्ता

मैत्रेयी भावे

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य हाथी अभ्यारण्यों के लिए हाथी संरक्षण योजना के लिए दिशानिर्देश/रूपरेखा तैयार करना है।

प्रगति: हाथी अभ्यारण्यों को 'हाथी परियोजना' के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्थापित किया गया है। हाथी अभ्यारण्य प्रबंधन का मुख्य ध्यान पूरे क्षेत्र में हाथियों की रक्षा करना है, जिसमें उनका आवास और गलियारे शामिल हैं, मानव-हाथी संघर्ष के मुद्दों का समाधान करना और एशियाई हाथियों की प्रभावी आबादी के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करना। हाथी को केवल एक प्रमुख प्रजाति के रूप में नहीं बल्कि एक छत्र और ध्वजवाहक प्रजाति के रूप में मानते हुए, योजना को अलग-अलग प्रबंधन व्यवस्थाओं के तहत कार्यान्वयन क्षेत्रों में परिदृश्य-स्तरीय दृष्टिकोण के अलावा व्यापक होना चाहिए, जैसे बाघ संरक्षण योजना के दिशा-निर्देश संरक्षित क्षेत्रों के लिए प्रबंधन योजनाएं राष्ट्रीय कार्य योजना कोड द्वारा निर्देशित कार्य योजना के अनुसार पारंपरिक वानिकी प्रबंधन और पारिस्थितिक-संवेदनशील क्षेत्र (ईएसजेड) दिशानिर्देशों द्वारा शासित फ्रिंज क्षेत्रों में जोनल मास्टर प्लान (जेडएमपी)। विभिन्न योजना प्रक्रियाओं को एकीकृत करना ताकि हाथियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थायी वन प्रबंधन और वन्यजीव संरक्षण के सामान्य लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस प्रकार, परिदृश्य में

हाथी संरक्षण योजना के लिए योजना बनाना एक जटिल कार्य होगा क्योंकि यह परिदृश्य से संबंधित पारिस्थितिक, सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक चर को शामिल करता है।

परिणाम और निष्कर्ष: परियोजना की एक सुव्यवस्थित कार्य योजना और उद्देश्य है। गतिविधियों में क्षेत्रीय यात्राएं, दस्तावेजों का संकलन और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों, जैसे अनुभवी वन्यजीव प्रबंधकों और वन्यजीव वैज्ञानिकों को शामिल करने वाले दो प्रमुख परामर्श कार्यशालाएं शामिल थीं।

मील के पत्थर: परियोजना अवधि के दौरान, हाथी संरक्षण योजना रिपोर्ट को अंतिम रूप देने के लिए दो कार्यशालाएं सफलतापूर्वक पूरी की गईं। कार्यशाला 1 – हाथी संरक्षण योजना की तैयारी के लिए रूपरेखा पर 'शुरुआत/हितधारक परामर्श कार्यशाला' 13 अक्टूबर 2023 को हाथी संरक्षण योजना के लिए रूपरेखा पर चर्चा करने के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला 2 – 'हाथी संरक्षण योजना की तैयारी के लिए रूपरेखा के अंतिम रूप के लिए परामर्श कार्यशाला' 6 फरवरी 2024 को आयोजित की गई थी, जिसमें दस्तावेज की समीक्षा और इसे आगे के कार्यान्वयन के लिए अंतिम रूप देना था। पूरी रिपोर्ट मार्च 2024 में हाथी परियोजना को सौंपी गई।

थार रेगिस्तान के संकटग्रस्त पक्षियों की निगरानी, गोडावण के लिए आवास पुनर्निर्माण का सम्बंधित पक्षियों को कैसे प्रभावित करता है?

वित्त पोषण स्रोत

रफोर्ड फाउंडेशन, यूके

जेएनसीएएसआर, बेंगलुरु और

डॉ. सुतीर्था दत्ता

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2023

अन्वेषक

श्री वरुण खेर (सलाहकार:
डॉ. आनंद कृष्णन,

शोधकर्ता

देवेन्द्र दत्त पांडे और मिहिर जाधव

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) मरु राष्ट्रीय उद्यान के पुनर्स्थापित और अप्रतिस्थापित क्षेत्रों के बीच पक्षी समुदायों की तुलना करना, (ii) गोडावण (जीआईबी) केंद्रित पुनर्स्थापन के प्रभाव को सम्बंधित पक्षी प्रजातियों की जनसंख्या और वितरण मापदंडों पर समझना, (iii) थार रेगिस्तान के संकटग्रस्त प्रजातियों की स्थिति की पुष्टि करना – सफेद-भौंह वाला बुशचौट, लग्गर फाल्कन, मिन्न का गिद्ध, लाल सिर वाला गिद्ध, सफेद पीठ वाला गिद्ध, भारतीय धब्बेदार ईगल, तन रंग का ईगल, और (iv) क्षेत्र के प्रासंगिक हितधारकों को क्षेत्र की पक्षी जीव के बारे में व्यक्तिगत बैठकों और जनसंपर्क सामग्री के वितरण के माध्यम से परिचित कराना।

प्रगति: परियोजना को एक बुनियादी अल्पकालिक अध्ययन के रूप में देखा गया था और इसका उद्देश्य ऐसी मूल जानकारी उत्पन्न करना था, जो अन्य दीर्घकालिक अनुसंधान और संरक्षण परियोजनाओं की परिकल्पना में सहायक हो सके। पूरा अध्ययन 01 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 की एक-वर्षीय अवधि में संचालित किया गया। निम्नलिखित गतिविधियों को अंजाम दिया गया: (i) फील्डवर्क: रैप्टर्स और अन्य बड़े पक्षियों के वितरण, घनत्व और आवास प्रतिक्रिया को मापने के लिए 650 किमी वाहन ट्रांसेक्ट का सर्वेक्षण किया गया। इसी प्रकार, छोटे पक्षियों के लिए पारिस्थितिक मापदंडों का अनुमान लगाने के लिए 150 किमी लाइन ट्रांसेक्ट पर चला गया। रैप्टर घोंसलों को खोजने के लिए ऐड-लिबिटम सर्वेक्षण किए गए। इन घोंसलों की प्रजनन पारिस्थितिकी और जनसांख्यिकी महत्वपूर्ण दरों को समझने के लिए निगरानी की गई। (ii) विश्लेषण और रिपोर्टिंग: डेटा का विश्लेषण, दूरी नमूने, अधिभोग अनुमान आदि जैसे विश्लेषण उपकरणों का उपयोग करके किया गया। अधिकांश विश्लेषण बायेंसियन दृष्टिकोण का उपयोग करके किए गए थे। परिणामों को एक तकनीकी रिपोर्ट के रूप में संकलित किया गया और 31 मार्च 2024 को भारतीय वन्यजीव संस्थान को प्रस्तुत किया गया। (iii) जनसंपर्क: परियोजना के हिस्से के रूप में, वन विभाग के ग्राउंड स्टाफ और स्कूल के बच्चों को उनके पड़ोस में संकटग्रस्त पक्षी प्रजातियों की उपस्थिति के बारे में संवेदनशील करने के लिए जनसंपर्क गतिविधियाँ आयोजित की गईं। (iv) प्रशिक्षण / मेंटरशिप: परियोजना के हिस्से के रूप में एक एम.एस.सी. शोध छात्र को प्रशिक्षित किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: अध्ययन ने थार रेगिस्तान के संकटग्रस्त पक्षियों की मूल जानकारी और समकालीन जीआईबी-केंद्रित आवास पुनर्स्थापन गतिविधियों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया प्रदान की। मुख्य परिणाम निम्नलिखित थे: (i) पाया गया कि अधिकांश रैप्टर्स के अधिभोग पर ग्रिड में वनस्पति पुनर्प्राप्ति संलग्नकों की उपस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस पैटर्न का अपवाद लग्गर फाल्कन, फाल्को जग्गर था, जिसकी पूर्वानुमानित अधिभोग दर बहुत अधिक थी। छोटे पक्षियों के लिए, पुनर्स्थापित और अप्रतिस्थापित क्षेत्रों के बीच कुल समृद्धि और अधिकांश पक्षियों का अधिभोग बहुत समान था। (ii) यह भी पाया गया कि कुल 22 रैप्टर घोंसले, जिनमें सफेद पीठ वाला गिद्ध, जिप्स बंगालेंसिस, मिन्न का गिद्ध, निओफ्रॉन पर्सॉपटरस, गहरे पीले रंग का ईगल, एक्विला रैपैक्स और लग्गर फाल्कन से संकटग्रस्त प्रजातियाँ शामिल थीं। (iii) शोध टीम ने थार रेगिस्तान की चार संकटग्रस्त प्रजातियों की



स्थिति की पुष्टि की और पाया कि लग्गर फाल्कन और सफेद-भौंह वाला बुशचौट घासभूमि आवासों से जुड़े हुए हैं और जीआईबी संरक्षण गतिविधियों से लाभान्वित होते हैं। दूसरी ओर, मिन्न के गिद्धों ने अप्रतिस्थापित खेतों के आवास को प्राथमिकता दी और पुनर्स्थापित क्षेत्रों में उनकी अधिभोग और घनत्व मामूली कम था। गहरे पीले रंग के ईगल आवासों के पुनर्स्थापन से उदासीन थे। लाल सिर वाले गिद्ध, सफेद पीठ वाले गिद्ध और भारतीय धब्बेदार ईगल की स्थिति का निर्धारण नहीं किया जा सका क्योंकि इन प्रजातियों को देखने की दर बहुत कम थी। (iv) परियोजना के दौरान तीन स्थानीय युवाओं को क्षेत्र सहायक के रूप में नियुक्त किया गया और उन्हें पक्षी पहचान, पारिस्थितिकी और सर्वेक्षण तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया। स्थानीय वन विभाग के ग्राउंड स्टाफ (ज्यादातर स्थानीय समुदायों से) को उनके क्षेत्र में विभिन्न संकटग्रस्त पक्षी प्रजातियों की उपस्थिति के बारे में बताया गया, और फ्लायर्स वितरित किए गए ताकि उन्हें पहचानने में मदद मिल सके। हमारी टीम ने बस्टर्ड रिकवरी प्रोग्राम और राजस्थान वन विभाग के सहयोग से स्कूल के बच्चों की मरु राष्ट्रीय उद्यान यात्रा भी आयोजित की।

इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर कुछ मौजूदा ज्ञान की कमियों की पहचान की गई और आगामी परियोजनाओं के लिए निम्नलिखित गतिविधियों का सुझाव दिया गया है: (i) वनस्पति पुनर्प्राप्ति और संरक्षण के कालिक प्रभावों को समझने के लिए दीर्घकालिक में पुनर्स्थापित क्षेत्रों में पक्षियों की निगरानी, (ii) प्रजनन पारिस्थितिकी को समझने और खतरों औरध्या जनसांख्यिकी बाधाओं की पहचान करने के लिए इस अभ्यास के दौरान पहचाने गए घोंसलों की निगरानी, (iii) संभावित खतरों के साथ उनके परस्पर संबंध को समझने के लिए कुछ पक्षियों की स्थानिक पारिस्थितिकी को समझने के लिए टेलीमेट्री का उपयोग; और (iv) आक्रामक प्रजातियों और नवीकरणीय ऊर्जा बुनियादी ढांचे जैसे अन्य खतरों को कम करने के लिए पुनर्स्थापन कार्यक्रमों का विस्तार और उसके बाद की निगरानी।

मील के पत्थर सह-अस्तित्व पक्षियों पर गोडवाण केंद्रित पुनःस्थापना के प्रभावों का वैज्ञानिक रूप से सटीक मूल्यांकन किया गया। एकत्र किए गए डेटा के आधार पर थार मरुस्थल की चार संकटग्रस्त प्रजातियों की स्थिति निर्धारित की गई। भविष्य के अनुसंधान और संरक्षण कार्य के लिए विषयों की पहचान और प्राथमिकता दी गई।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के दस आर्द्रभूमियों के लिए एकीकृत प्रबंधन योजनाओं की तैयारी

वित्तपोषण स्रोत

वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया,
नई दिल्ली

शोधकर्ता

डॉ. बिभु प्रसाद पांडा

प्रारंभ की तिथि

दिसंबर 2022

अन्वेषक

डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस

पूर्ण होने की तिथि

मई 2023

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य आर्द्रभूमियों के लिए एक एकीकृत प्रबंधन योजना तैयार करना था, जिसमें सारस क्रेन के आवास के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया गया।

प्रगति: परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है, और पूर्वी उत्तर प्रदेश की दस आर्द्रभूमियों के लिए एक एकीकृत प्रबंधन योजना बनाई गई है। चयनित आर्द्रभूमियों में बैदौली, धन्हा नायक, हरिहरपुर, हर्टोडवा, लेडी, मटियारिया, परगपुर, पुरैना, सलामतगढ़, और बैसार शामिल हैं। राष्ट्रीय जलमंडल पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण योजना के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, प्रत्येक आर्द्रभूमि के लिए संक्षिप्त दस्तावेजीकरण और स्वास्थ्य कार्ड तैयार किए गए। उसके बाद, प्रमुख चिंताओं और आर्द्रभूमि प्रबंधन के लिए रणनीतियों की पहचान करने के लिए हितधारक परामर्श आयोजित किए गए। अंतिम रिपोर्ट प्रत्येक आर्द्रभूमि के लिए विशेष एकीकृत प्रबंधन योजनाएँ प्रदान करती हैं, जिसमें सतत विकास प्राथमिकताओं पर जोर दिया गया है।

परिणाम और निष्कर्ष: एकीकृत प्रबंधन योजना उत्तर प्रदेश में पहली व्यापक आर्द्रभूमि प्रबंधन योजनाओं में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जो दस से अधिक आर्द्रभूमियों को शामिल करता है। यह सारस क्रेन के आवासों के संरक्षण और स्थानीय समुदायों की आजीविका को प्राथमिकता देता है।

मुख्य विशेषताओं में आर्द्रभूमि संसाधनों का सतत उपयोग और आर्द्रभूमि परिदृश्य प्रबंधन में समुदाय और हितधारकों का एकीकरण शामिल है। वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया द्वारा प्रायोजित आईएमपी विभिन्न विभागों, जिसमें वन विभाग भी शामिल है, के लिए एक मौलिक दस्तावेज के रूप में कार्य करता है, जो दीर्घकालिक संरक्षण और प्रबंधन प्रयासों का मार्गदर्शन करता है।

मील का पत्थर: एकीकृत प्रबंधन योजना को वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया द्वारा वन विभाग के साथ मिलकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के महाराजगंज जिले में कार्यान्वित किया जा रहा है।



© डॉ. बिभु प्रसाद पांडा

हर्टोडवा आर्द्रभूमि, महाराजगंज जिले के आसपास के पक्षी



© डॉ. बिभु प्रसाद पांडा

पुरैना आर्द्रभूमि परिदृश्य, महाराजगंज जिला

वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य, तमिलनाडु में प्रवासी पक्षियों की जनसंख्या स्थिति और अस्थायी पैटर्न का आकलन

वित्तपोषण स्रोत

तमिलनाडु राज्य भूमि उपयोग अनुसंधान बोर्ड

शोधकर्ता

डॉ. वी. किर्बानंधिनी

प्रारंभ की तिथि

मार्च 2022

अन्वेषक

डॉ. एस. बाबू और
डॉ. आर. जयपाल

पूर्ण होने की तिथि

मई 2023

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था: (i) वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य और आस-पास के चराई क्षेत्र में प्रवासी और निवासी जलपक्षियों के स्थानिक और अस्थायी पैटर्न का आकलन करना, (ii) वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य के अंदर और आसपास के पानी और वनस्पति एवं जीव-जंतु की भौतिक-रासायनिक विशेषताओं का अध्ययन करना, (iii) प्रवासी और निवासी पक्षी प्रजातियों पर शिकार के दबाव का मूल्यांकन करना और वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य की सुरक्षा और संरक्षण में शामिल अग्रिम कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन करना, और (iv) वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य के अंदर और आसपास भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन पैटर्न का आकलन करना।

प्रगति: परियोजना को अभ्यारण्य की वनस्पतियों और जीवों का दस्तावेजीकरण करने और प्रवासी और निवासी पक्षी प्रजातियों की जनसंख्या स्थिति का आकलन करने के लिए शुरू किया गया था। झील की जैव विविधता का दस्तावेजीकरण करने के लिए मानकीकृत नमूना और सर्वेक्षण विधियों का उपयोग किया गया, जिसमें आर्द्रभूमि पक्षियों की गणना के लिए कुल गिनती विधि का उपयोग किया गया। सर्वेक्षण में 312 पौधों की प्रजातियाँ, 6 डैमसेलफ्लाई प्रजातियाँ, 12 ड्रैगनफ्लाई प्रजातियाँ, 28 तितली प्रजातियाँ, 15 मछली प्रजातियाँ, 9 उभयचर प्रजातियाँ, 24 सरीसृप प्रजातियाँ, 127 पक्षी प्रजातियाँ, और 10 स्तनधारी प्रजातियाँ दर्ज की गईं, जिसमें सख्त सर्वेक्षण प्रोटोकॉल का पालन किया गया और विषय विशेषज्ञों से तकनीकी सहायता प्राप्त की गई।

हमने पानी के भौतिक-रासायनिक गुणों का विश्लेषण भी मानक विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग करके किया। दर्ज की गई 127 पक्षी प्रजातियों में से 44 आर्द्रभूमि और आर्द्रभूमि-संबंधित प्रजातियाँ थीं, जिनमें 16 प्रजातियाँ गोताखोर और खुले पानी में चारा ढूँढने वाले पक्षी, 11 प्रजातियाँ बड़े दलदली पक्षी, आठ प्रजातियाँ छोटे दलदली पक्षी, और छह प्रजातियाँ तैरती हुई वनस्पति और घास के मैदानों में चारा ढूँढने वाले पक्षी शामिल थीं। काले सिर वाला इबिस, एशियाई ओपनबिल, छोटा बगुला, भारतीय कॉमॉरेंट, और मवेशी बगुला वर्ष भर में प्रमुख और सबसे अधिक बार देखे जाने वाले प्रजातियाँ थीं।

हालांकि अभ्यारण्य अपने बड़े दलदली पक्षियों के प्रजनन स्थलों के लिए प्रसिद्ध है, ये प्रजातियाँ झील के अंदर चारा ढूँढते हुए कम देखी गईं, संभवतः उपयुक्त चारा ढूँढने के स्थानों, जैसे कि उथले पानी क्षेत्रों की अनुपस्थिति के कारण। छोटे दलदली पक्षी मुख्य रूप से वापसी प्रवास अवधि के दौरान देखे गए, जब झील के पानी

के स्तर कम थे। जलपक्षियों की प्रजातियों की मासिक संरचना के आधार पर, हमने वडूवूर झील में चार विशिष्ट पक्षी मौसमों की पहचान की: (i) प्रजनन के लिए बड़े दलदली पक्षियों का आगमन (जून-जुलाई), (ii) प्रजनन का मौसम (अगस्त-नवंबर), (iii) प्रजनन के बाद का मौसम और छोटे दलदली पक्षियों का आगमन (दिसंबर-मार्च), और (iv) प्रस्थान का मौसम/सूखा मौसम (अप्रैल-मई)।

5 किमी की त्रिज्या के भीतर प्रमुख आस-पास की आर्द्रभूमियों (उपग्रह आर्द्रभूमियों) का सर्वेक्षण किया गया, जिससे पता चला कि इन झीलों में पक्षी प्रजातियों की समृद्धि वडूवूर झील में दर्ज प्रजातियों का एक उपसमुच्चय था। इसका मतलब है कि वडूवूर झील संभवतः कई जलपक्षी प्रजातियों के लिए एक स्रोत जनसंख्या के रूप में कार्य करती है। इसलिए, इस परिदृश्य के भीतर जलपक्षियों के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए उपग्रह आर्द्रभूमियों की सुरक्षा समान रूप से महत्वपूर्ण है।

परिणाम और निष्कर्ष: पक्षी अभ्यारण्य की वनस्पतियों और जीवों, जिनमें तितलियाँ, डैमसेलफ्लाई, ड्रैगनफ्लाई, मछलियाँ, उभयचर, सरीसृप, पक्षी, और स्तनधारी शामिल हैं, का पहली बार व्यापक रूप से दस्तावेजीकरण किया गया है।

शैक्षिक आउटरीच के हिस्से के रूप में, मछलियाँ, उभयचर, सरीसृप, और आर्द्रभूमि पक्षियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए द्विभाषी पोस्टर विकसित किए गए, साथ ही वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य के आर्द्रभूमि पक्षियों को समर्पित एक पुस्तिका भी बनाई गई। इसके अतिरिक्त, अभ्यारण्य के फूल वाले पौधों का दस्तावेजीकरण करने वाली एक पुस्तक प्रकाशित की गई। अध्ययन ने आर्द्रभूमि पक्षियों की प्रजातियों की संरचनात्मक संरचना और प्रजनन मौसम को



वडूवूर पक्षी अभ्यारण्य में ओपनबिल स्टॉर्क

स्पष्ट किया। इसके अलावा, इसने उपग्रह आर्द्रभूमियों की सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया, जो इस परिदृश्य के भीतर जलपक्षियों के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

मील का पत्थर: इस परियोजना के हिस्से के रूप में सुझाई गई प्रबंधन सिफारिशों को वड़वूर पक्षी अभ्यारण्य में सीकेआईडीपी शमन उपाय परियोजना के वित्तीय समर्थन के साथ लागू किया जा रहा है।

पूर्ण परियोजना

माथिकेट्टन शोला राष्ट्रीय उद्यान का स्थानिक मानचित्रण

वित्तपोषण स्रोत

अनानमुडी वन विकास एजेंसी,
मुन्नार, केरल

शोधकर्ता

नंदू वी.एस.

प्रारंभ की तिथि

दिसंबर 2022

सैकोन

अन्वेषक

डॉ. पी.वी. करुणाकरण

पूर्ण होने की तिथि

जून 2023

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य उच्च-रिजॉल्यूशन भूमि उपयोग/भूमि आवरण मानचित्र तैयार करना था, जिसमें स्तर V/VI वर्गीकरण शामिल है: इस गतिविधि में विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों और आवासों का अन्वेषण किया गया जैसे कि विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक वन, अवनत क्षेत्र, वृक्षारोपण, और अन्य पारिस्थितिक विशेषताएँ। मानचित्रण में सामाजिक, आर्थिक, आजीविका और उपयोगिता सेवाएं जैसे फायरब्रेक्स, ट्रेकिंग ट्रेल्स, झरने आदि भी शामिल हैं।

प्रगति: रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, हमने शीर्ष पत्रों और ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करके संरक्षित क्षेत्र के प्रशासनिक और बुनियादी विषयगत परतें तैयार कीं। प्रबंधन अधिकारियों ने संरक्षित क्षेत्र की प्रशासनिक सीमा प्रदान की। भारत उच्च श्रेणी पर्वतीय परिदृश्य परियोजना के तहत राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग सेंटर से प्राप्त आईआरएस एलआईएसएस IV डेटा का उपयोग पीए की भूमि-उपयोग/भूमि-कवर विशेषताओं के मानचित्रण के लिए किया गया था। ऑब्जेक्ट-आधारित छवि विश्लेषण और सपोर्ट

वेक्टर मशीन लर्निंग प्रक्रिया के माध्यम से भूमि उपयोग भूमि कवर वर्गीकरण का एक मसौदा तैयार किया गया था।

परिणाम और निष्कर्ष: संरक्षित क्षेत्र में कुल 10 भूमि उपयोग/भूमि आवरण वर्ग, प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों की पहचान की गई। इसमें उपोष्णकटिबंधीय पहाड़ी वन, दक्षिणी मॉंटाने गीले समशीतोष्ण वन, उष्णकटिबंधीय गीले सदाबहार वन, पश्चिमी तट उष्णकटिबंधीय गीले सदाबहार वन, सरकंडों के झुरमुट, मॉंटाने गीले घास के मैदान, नीलगिरी और चट्टानी स्थल शामिल हैं। इनमें से 9 प्राकृतिक भूमि आवरण हैं, जो लगभग 100% क्षेत्र में फैले हैं, और केवल 0.35% क्षेत्र सीमा में नीलगिरी के वृक्षारोपण फैला हुआ है। प्राकृतिक भूमि आवरणों में, प्राथमिक भूमि आवरण 12 किमी² (90.1%) का योगदान करता है और द्वितीयक वन और अन्य भूमि आवरण 0.68 किमी² (5.12%) का योगदान करते हैं। उपोष्णकटिबंधीय पहाड़ी वन और दक्षिणी मॉंटाने गीले समशीतोष्ण वन प्रमुख वनस्पति के प्रकार हैं।

पैच मैट्रिक विश्लेषण ने राष्ट्रीय उद्यान में 200 से अधिक पैचों की पहचान की, जिनमें से अधिकांश (149) चट्टानी स्थल हैं। हालांकि



माथिकेट्टन शोला राष्ट्रीय उद्यान के छत्र आवरण के दृश्य

संरक्षित क्षेत्र में वनाच्छादन एक समान दिखाई देती है, लेकिन पिछले मानव हस्तक्षेपों के कारण पैच बन रहे हैं। विशेष रूप से, ये पैच अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं और स्थानिक रूप से पास-पास हैं, जिससे छोटे और बड़े दोनों वन्यजीवों की आवाजाही में सुविधा होती है। विभिन्न वनस्पति प्रकारों में, उपोष्णकटिबंधीय पहाड़ी वन और मॉन्टाने घास के मैदान अन्य भूमि आवरण वर्गों की तुलना में अधिक पैच प्रदर्शित करते हैं।

मील का पत्थर: परियोजना समापन रिपोर्ट ने संरक्षित क्षेत्र की जैविक महत्वता को उजागर किया और प्रबंधन के महत्व को आक्रामक प्रजातियों, *एगेराटिना एडेनेफोरा*, के वितरण पर ध्यान केंद्रित किया, जिसे नियंत्रित करने की आवश्यकता है। प्रबंधन सिफारिशों को संरक्षित क्षेत्र की प्रबंधन योजना में शामिल किया गया था।

पूर्ण परियोजना

जंगली धब्बेदार बिल्ली का जीनोमिक अध्ययन

वित्तपोषण स्रोत
महाराष्ट्र वन विभाग

श्री नयन खानोलकर

आरंभ होने की तिथि
अगस्त 2022

अन्वेषक
डॉ. शोमिता मुखर्जी,
डॉ. नंदिनी राजमणि, भारतीय
विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान
संस्थान तिरुपति,

पूर्ण होने की तिथि
जुलाई 2023

संरक्षण

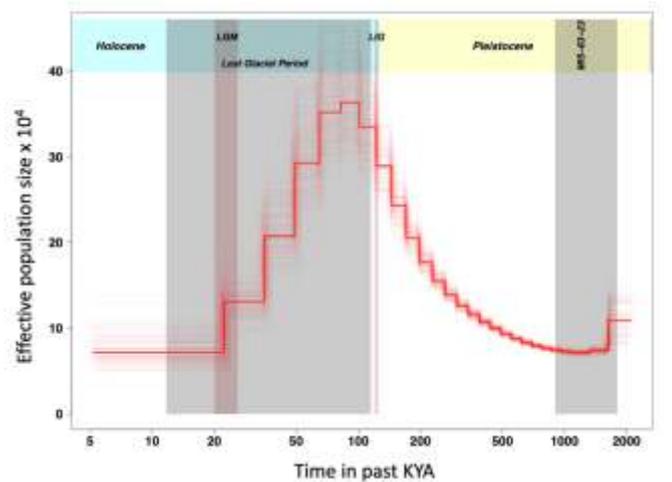
उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था: (i) जंगली धब्बेदार बिल्ली के लिए पहला संदर्भ जीनोम तैयार करना, (ii) संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान में कैद में रखी गई जंगली धब्बेदार बिल्ली की जनसंख्या में आनुवंशिक विविधता का अध्ययन करना, (iii) भारत में जंगली धब्बेदार बिल्ली के दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय इतिहास का अन्वेषण करना और समझना कि जलवायु परिवर्तन ने इसे कैसे प्रभावित किया होगा, और (iv) मल में डेंटिशन के आधार पर शिकार के डीएनए अनुक्रमों का डेटाबेस बनाना। जिसका बारकोड के रूप में उपयोग संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान में छोटे मांसाहारियों के आहार अध्ययन के संदर्भ किया जा सके।

प्रगति: दो मादा सहोदरों से लिए गए नमूनों को 50x और 30x कवरेज के लिए इलुमिना नोवासीक 6000 सीक्वेंसर (150 बेस पेयर पेयर-एंड) के माध्यम से अनुक्रमित किया गया। जीनोमिक विश्लेषण के लिए मानकीकृत वेब-आधारित पाइपलाइनों और जैव सूचना विज्ञान उपकरणों का उपयोग करके जीनोम को संयोजित किया गया। जंगली धब्बेदार बिल्ली के लिए पिछले 500,000 वर्षों (देर क्वाटर्नरी) के दौरान जनसांख्यिकीय परिवर्तन को पेयरवाइज सीक्वेंशली मार्कोवियन कोलेसेन्ट विश्लेषण के माध्यम से किया गया। परियोजना की चुनौती यह थी कि नमूने लेने से पहले कई बिल्लियों की मृत्यु हो जाने के कारण कैद की गई जनसंख्या में आनुवंशिक विविधता का निर्धारण नहीं किया जा सका। मल में शिकार के अवशेषों ने पर्याप्त डीएनए नहीं दिया जिससे उद्देश्य चार को पूरा नहीं किया जा सका।

परिणाम और निष्कर्ष: जंगली धब्बेदार बिल्ली के जीनोम का आकार 2.350 गीगाबेस पेयर अनुमानित किया गया था, जो इसके सहयोगी एशियाई तेंदुआ बिल्ली और फिशिंग कैट के समान था।

प्रजातियों के जनसांख्यिकीय इतिहास का प्रारंभिक पेयरवाइज सीक्वेंशली मार्कोवियन कोलेसेन्ट विश्लेषण बताता है कि हिमयुग के समय के दौरान प्रभावी जनसंख्या आकार में गिरावटें थीं, जो उनके पिछले जलवायु निश के एक पूर्व अध्ययन के परिणामों के साथ मेल खाती हैं। हालांकि, आगे के विश्लेषण में छोटे स्कैफोल्ड्स और खराब निरंतरता को संबोधित करने की आवश्यकता है।

मील का पत्थर: यह भारत में अनुक्रमित किए गए छोटे बिल्ली प्रजातियों के पूरे जीनोम में से एक है और यह पहला मौका है जब रस्टी-स्पॉटेड कैट के जीनोम को असेंबल किया गया है। इस परियोजना और अंतिम रिपोर्ट को पूरा कर लिया गया है।



जंगली धब्बेदार बिल्ली के जनसांख्यिकीय इतिहास को दर्शाने वाला पेयरवाइज सीक्वेंशली मार्कोवियन कोलेसेन्ट प्लश्ट

नवी मुंबई नगर निगम में होल्डिंग तालाबों और तूफानी पानी की नालियों का पुनर्जीवन

वित्तपोषण स्रोत
नवी मुंबई नगर निगम

अन्वेषक
डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस

शोधकर्ता
प्रथमेश गुर्जरपाध्ये,
सुनील कुमार गुप्ता,
सिद्धेश डी. भावे और प्रतीक डे

आरंभ होने की तिथि
अप्रैल 2022

पूर्ण होने की तिथि
अगस्त 2023

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य होल्डिंग तालाब के खुले क्षेत्र में मैंग्रोव्स पर अवसादन प्रक्रिया के प्रभाव का आकलन करना था।

प्रगति: होल्डिंग तालाब की जैव विविधता को व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकृत किया गया और मानवजनित गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले दबावों का पूरी तरह से आकलन किया गया। प्रमुख मैंग्रोव प्रजातियों, साथ ही संबंधित वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की पहचान की गई और दर्ज की गई। इसके अतिरिक्त, तालाब की पानी धारण करने की क्षमता में कमी के कारणों का मूल्यांकन किया गया ताकि इसके पुनर्जीवन की संभावना का आकलन किया जा सके।

परिणाम और निष्कर्ष: फंडिंग एजेंसी को कई साक्ष्य-आधारित सिफारिशें प्रस्तुत की गईं, जिनमें होल्डिंग

तालाब में पानी के प्रवाह को नियंत्रित करने वाले फ्लैप गेट्स के नियमित रखरखाव और निगरानी शामिल है। इन सिफारिशों पर कार्रवाई करते हुए, नवी मुंबई नगर निगम ने फ्लैप गेट्स को बदल दिया और खुले कीचड़ क्षेत्र में ड्रेजिंग संचालन किया, जिससे मैंग्रोव्स को न्यूनतम व्यवधान हुआ।

इन हस्तक्षेपों का एक उल्लेखनीय परिणाम यह था कि पिछले वर्ष नवी मुंबई में कोई बाढ़ की घटना नहीं हुई।

मील का पत्थर: नवी मुंबई नगर निगम ने इन सिफारिशों को अपने अधिकार क्षेत्र के तहत अन्य होल्डिंग तालाबों में लागू करने की योजना व्यक्त की है, जो प्रस्तावित प्रबंधन रणनीतियों की विस्तार क्षमता और प्रभाव को दर्शाता है।



© श्री प्रथमेश गुर्जरपाध्ये

सीबीडी बेलापुर में होल्डिंग तालाब



© श्री सुनील कुमार गुप्ता

सीबीडी बेलापुर में होल्डिंग तालाब

तमिलनाडु के चयनित क्षेत्रों में मानव-मोर संघर्ष का आकलन और संघर्ष कम करने के लिए कार्य योजना बनाना

वित्तपोषण स्रोत
तमिलनाडु वन विभाग

शोधकर्ता
बी.के. अरविंदन और आर. किशोर

आरंभ होने की तिथि
सितंबर 2022

अन्वेषक
डॉ. एच. एन. कुमारा और डॉ.
एस. बाबू

पूर्ण होने की तिथि
दिसंबर 2023

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था: (i) तमिलनाडु में उच्च मानव-मोर संघर्ष क्षेत्रों की पहचान करना और पहचाने गए संघर्ष क्षेत्रों में मोरों की जनसंख्या का आकलन करना, (ii) चयनित संघर्ष क्षेत्रों में मोरों के कारण फसल क्षति और कृषि उत्पादों के आर्थिक नुकसान का मूल्यांकन करना, (iii) किसानों द्वारा फसलों की रक्षा के लिए उपयोग किए गए डराने वाले उपकरणों की प्रभावशीलता का आकलन करना, और (iv) उच्च संघर्ष क्षेत्र के लिए एक कार्य योजना तैयार करना और उपयुक्त प्रबंधन हस्तक्षेप का प्रस्ताव करना।

प्रगति और निष्कर्ष: डेटा संग्रह और विश्लेषण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया था। तमिलनाडु के 38 जिलों में से, 32 जिलों में मोरों को देखा गया। ई-बर्ड और फील्ड डिटेक्शन से प्राप्त डेटा ने राज्य के सभी जिलों में मोरों की उपस्थिति की पुष्टि की। सर्वेक्षण के दौरान 1,025 मोरों के कुल मिलाकर 348 डिटेक्शन दर्ज किए गए। औसत डिटेक्शन दूरी के आधार पर, अनुमानित जनसंख्या घनत्व 40.45 मोर/किमी² था, जबकि अधिकतम डिटेक्शन दूरी का उपयोग करके गणना की गई न्यूनतम जनसंख्या घनत्व 25.20 मोर/किमी² था। राज्य में मोरों का

अनुमानित औसत जनसंख्या आकार लगभग 6.1 मिलियन था, जिसमें न्यूनतम अनुमान 3.8 मिलियन था।

तमिलनाडु के 35 जिलों में 1,136 उत्तरदाताओं के साथ साक्षात्कार किए गए। उत्तरदाताओं द्वारा रिपोर्ट किए गए सबसे आम मेसो-मांसाहारी ग्रे नेवला (70.98%) थे, उसके बाद जंगल बिल्ली, गीदड़/लोमड़ी, और छोटा भारतीय सीवेट। 78.70% किसानों द्वारा फसल क्षति की सूचना दी गई, जिसमें अधिकांश लोग कटाई के बाद की अवधि (31.26%) और संपूर्ण फसल अवधि (30.66%) के दौरान क्षति फसल क्षति की सूचना दी। किसानों ने बताया कि मोर दैनिक रूप से (82.88%) और सभी दिन के समय (80.89%) खेतों में आते हैं। मोरों द्वारा फसल क्षति से सबसे कम प्रभावित फसलों में नारियल, केला और कपास शामिल थे।

किसानों ने आर्थिक व्यवहार्यता, दक्षता और स्थायित्व के आधार पर विभिन्न शमन विधियों का उपयोग किया। सबसे सामान्य रणनीतियाँ कुत्तों के साथ मोरों को भगाना और फसल प्रकार बदलना था, जो उनकी लागत-प्रभावशीलता और कार्यान्वयन में आसानी के कारण थे। जबकि विभिन्न डराने वाले उपकरण, जिनमें डिकॉइ भी शामिल थे, का परीक्षण किया गया, लेकिन इनमें से कोई भी मोरों को डराने में उल्लेखनीय रूप से प्रभावी साबित नहीं हुआ।



खेतों में चरते हुए मोर

मोर पर्यावरणीय परिवर्तनों के लिए उच्च स्तर की अनुकूलता प्रदर्शित करते हैं, जिससे उन्हें विविध आवासों में समृद्धि और अपनी सीमा का विस्तार करने में मदद मिलती है। यह अनुकूलता बताती है कि कृषि परिदृश्यों में मोरों का प्रबंधन करना और अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। इस अध्ययन के निष्कर्षों और मौजूदा साहित्य के आधार पर, हमने प्रभावी शमन रणनीतियों और मोर प्रबंधन के लिए हस्तक्षेप विकसित करने के लिए विशिष्ट प्रबंधन कार्यों का प्रस्ताव रखा है और अनुसंधान दिशाओं की पहचान की है।

देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करने के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजनाएं विकसित करना— नागालैंड

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

दुर्गेश डी. पाटिल

आरंभ होने की तिथि

दिसंबर 2021

अन्वेषक

डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस

पूर्ण होने की तिथि

सितंबर 2023

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य अगले दशक के लिए नागालैंड में पक्षियों के संरक्षण के लिए एक दूरदर्शी रोडमैप विकसित करना था, जो स्थिरता, सामुदायिक भागीदारी और साक्ष्य आधारित वैज्ञानिक अनुसंधान के सिद्धांतों पर आधारित हो।

प्रगति: राज्य स्तरीय कार्य योजना, दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना के क्रियान्वयन में प्राथमिक कदम है। नागालैंड जैव विविधता का एक हॉटस्पॉट है, प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध भूमि और जीवंत संस्कृतियाँ हैं।

राज्य स्तरीय कार्य योजना तैयार करते समय अपनाई गई विधियों में नागालैंड के वैज्ञानिक, भूगर्भीय, सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं को शामिल करने वाले द्वितीयक साहित्य का संग्रह और संकलन शामिल है। इसके बाद, प्राथमिकता वाली विशेषताओं की पहचान की गई जिन्हें ध्यान देने की आवश्यकता थी और विभिन्न स्तरों की चिंताओं को चिन्हित किया गया। इन

चिंताओं पर बैठकों के दौरान हितधारकों के साथ चर्चा की गई और संभावित समाधान निकाले गए।

राज्य स्तरीय कार्य योजना रिपोर्ट एकत्र किए गए द्वितीयक साहित्य सर्वेक्षण और हितधारकों और वन अधिकारियों के साथ क्षेत्रीय बातचीत का संकलन है, जिसमें उन खतरों का समाधान करने का प्रयास किया गया है जिनके लिए तात्कालिक और स्थायी ध्यान की आवश्यकता है।

परिणाम: क) आवास संरक्षण: महत्वपूर्ण पक्षी आवासों की सुरक्षा और बहाली को प्राथमिकता देना। ख) सामुदायिक भागीदारी: पक्षी संरक्षण के माध्यम से सतत आजीविका को बढ़ावा देना और पक्षी जैव विविधता के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना।

मील का पत्थर: क) नागालैंड के पक्षियों का संरक्षण संरक्षण प्रयास जो पक्षी प्रजातियों की सुरक्षा में मदद करते हैं। ख) पारिस्थितिक संतुलन: पक्षी आवासों की सुरक्षा राज्य के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में योगदान करती है। ग) सतत विकास: पक्षी संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी सतत विकास प्रथाओं को प्रोत्साहित करती है। घ) सांस्कृतिक महत्त्व नागालैंड में पक्षियों के सांस्कृतिक महत्त्व को मनाना और स्वीकार करना।



डोयांग घाटी में अमूर बाज

उत्तराखंड राज्य स्तरीय कार्य योजना: देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सैकोन की दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करना

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

डॉ. अंकिता भट्टाचार्य और हर्षिता प्रकाश

आरंभ होने की तिथि

नवंबर 2022

अन्वेषक

विद्याधर अटकोरे

पूर्ण होने की तिथि

नवंबर 2023

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) उत्तराखंड की पक्षी विविधता के संरक्षण पर प्रकाशित और अप्रकाशित जानकारी को एकत्रित करना, जैसा कि दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना के प्रत्येक विषयगत क्षेत्र में उल्लिखित है, और (ii) विभिन्न हितधारकों के साथ व्यापक परामर्श के माध्यम से उत्तराखंड में पक्षियों, उनके आवासों, पारिस्थितिकी तंत्रों और परिदृश्यों को संरक्षित करने के लिए राज्य-स्तरीय कार्य योजनाओं को विकसित करना।

प्रगति: एक व्यापक साहित्य सर्वेक्षण पूरा किया गया। पहले वर्ष में उत्तराखंड वन विभाग के कर्मचारियों और स्थानीय गैर सरकारी संगठनों और विशेषज्ञों के साथ एक हितधारक परामर्श आयोजित किया गया। राज्य स्तरीय कार्य योजना विकसित करने के लिए विभिन्न सुझावों पर विचार किया गया। शहरीकरण की बढ़ती समस्या, आक्रामक प्रजातियों के फैलाव और प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए मंथन किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: उत्तराखंड राज्य में 700 से अधिक पक्षी प्रजातियां थी, जो किसी भी भारतीय हिमालयी राज्य में दूसरी सबसे बड़ी है (अरुणाचल प्रदेश में 867 हैं)। रिपोर्ट में राज्य के संकटग्रस्त पक्षियों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियों की पहचान की गई। इनमें आवास संरक्षण, पुनर्स्थापना, सतत भूमि उपयोग और जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देना शामिल है।

परियोजना के परिणाम: (क) उत्तराखंड राज्य स्तरीय कार्य योजना: देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सैकोन की दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करना। सालिम अली पक्षीविज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान केंद्र, भारतीय वन्यजीव

संस्थान का दक्षिण भारत केंद्र, अन्नैकट्टी (पोस्ट), कोयम्बटूर – 641108, तमिलनाडु, भारत। पृष्ठ 226। पीआर-247।

(ख) प्रकाश एच, वी. अटकोरे, ए. भट्टाचार्य, एम. महेंद्रन और डी. प्रकाश (2022)। सैकोन की दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना के माध्यम से उत्तराखंड राज्य में पक्षियों और उनके आवासों के लिए संरक्षण खतरों की पहचान करना। बर्ड मॉनिटरिंग संगोष्ठी में एक पोस्टर प्रस्तुत किया गया। 29-30 अप्रैल 2022। (ऑनलाइन)।

(ग) प्रकाश डी, एम. महेंद्रन, ए. भट्टाचार्य, वी. अटकोरे और एच. प्रकाश (2022)। प्रदूषण या जनसंख्या: दिल्ली के शहरी पक्षी जीवन के लिए एक चिंता का विषय। बर्ड मॉनिटरिंग संगोष्ठी में एक पोस्टर प्रस्तुत किया गया। 29-30 अप्रैल 2022। (ऑनलाइन)।

परिणाम: पक्षियों पर राज्य कार्य योजना की एक व्यापक रिपोर्ट तैयार हो गई है।



पश्चिमी ट्रेगोपन

देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सैकोन की दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना को लागू करने के लिए राज्य-स्तरीय कार्य योजना, दिल्ली- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

दिव्या प्रकाश और अंकिता भट्टाचार्य

आरंभ होने की तिथि

सितंबर 2021

अन्वेषक

डॉ. महेंद्रन माइलस्वामी

पूर्ण होने की तिथि

दिसंबर 2023

उद्देश्य: परियोजना के उद्देश्य थे: (i) संबंधित राज्यों के लिए पक्षी प्रजातियों की विविधता और महत्वपूर्ण पक्षी आवासों के संरक्षण मुद्दों और प्रबंधन प्राथमिकताओं की पहचान करना और (ii) चयनित पक्षी प्रजातियों या आवासों के लिए तत्काल कार्रवाइयों के लिए दूरदर्शी दृष्टिकोण योजना के आधार पर विशिष्ट पहलुओं की पहचान करना, और पक्षी संरक्षण पहलों की योजना के लिए रोडमैप तैयार करना।

प्रगति: दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए राज्य-स्तरीय कार्य योजना तैयार करने के दिशा-निर्देशों के अनुसार पक्षियों और



सर्दियों की एक शाम को दलदली आर्द्रभूमि में टहलते हुए एक जोड़ी सारस क्रेन

© विलियम फ्रैंक

उनके आवासों पर एक व्यापक साहित्य सर्वेक्षण पूरा किया गया। पहले वर्ष में दिल्ली वन विभाग और स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों और विशेषज्ञों के साथ ऑनलाइन सत्रों सहित विभिन्न समय पर तीन से अधिक हितधारक परामर्श आयोजित किए गए। राज्य स्तर की कार्य योजना विकसित करने के लिए विभिन्न सुझावों पर विचार किया गया। दिल्ली एनसीआर में शहरीकरण की बढ़ती समस्या, आक्रामक प्रजातियों के फैलाव और प्लास्टिक प्रदूषण पर गहन मंथन के बाद अंतिम रिपोर्ट और सिफारिशें फंडिंग एजेंसी और दिल्ली वन विभाग को सौंपी गईं।

परिणाम और निष्कर्ष: नीति दस्तावेज में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में पक्षी प्रजातियों की विविधता के संरक्षण मुद्दों और प्रबंधन प्राथमिकताओं की 14 विषयगत क्षेत्रों में विस्तृत जानकारी दी गई। इसे नीति निर्माताओं, अकादमिक विशेषज्ञों, वन अधिकारियों, स्थानीय समुदायों, एनसीजी और पक्षी प्रेमियों सहित हितधारकों के साथ कई परामर्श के बाद तैयार किया गया।

मील का पत्थर: यह योजना नीति निर्माताओं को पक्षी प्रजातियों और उनके आवासों के संरक्षण में सहायता करेगी, क्योंकि यह नई दिल्ली में सितंबर 2023 जी20 शिखर सम्मेलन में उल्लिखित सिद्धांतों और नीतियों के साथ संरेखित है।

महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट, पश्चिमी तट, और तटीय द्वीपों में भारतीय स्विफ्टलेट की जनसंख्या स्थिति, पारिस्थितिकी और संरक्षण

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

धनुषा कावलकर

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2020

अन्वेषक

डॉ. मांची शिरीष एस. और डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस

पूर्ण होने की तिथि

मार्च 2024

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था: (i) महाराष्ट्र के तटीय जिलों सहित तटीय द्वीपों में भारतीय स्विफ्टलेट की जनसंख्या का अनुमान लगाना और वितरण पैटर्न का मूल्यांकन करना, (ii) महाराष्ट्र के तटीय जिलों सहित तटीय द्वीपों में भारतीय स्विफ्टलेट की प्रजनन पारिस्थितिकी (प्रजनन जीवविज्ञान और घोंसला बनाने और चारा ढूंढने वाले आवास) को समझना, और (iii) महाराष्ट्र के तटीय जिलों सहित तटीय द्वीपों में भारतीय स्विफ्टलेट के लिए खतरे की पहचान करना और संरक्षण योजना तैयार करना।

प्रगति: चूंकि परियोजना अपने अंतिम चरण में थी, जनसंख्या सर्वेक्षण, प्रजनन जीवविज्ञान, चारा ढूंढने वाले आवास और खतरे की पहचान करने वाले अध्ययनों को जारी रखने के साथ, अधिकांश प्रयास सामाजिक सर्वेक्षण, जागरूकता और आउटरीच कार्यक्रमों में लगाए गए थे। महाएमटीबी और राउंडग्लास सस्टेन के साथ सहयोग करके, बहुभाषी वृत्तचित्र तैयार किए गए और जारी किए गए ताकि लोगों, विशेष रूप से स्थानीय लोगों, को प्रजातियों और उसके महत्व के बारे में जागरूक किया जा सके। वृत्तचित्रों को विभिन्न मंचों पर स्थानीय लोगों (जिनमें मछुआरे, छात्र, अकादमिक, प्रिंट और डिजिटल मीडिया, किसान, और स्थानीय नीतिनिर्णय निर्माता), प्रकृतिवादी, शोधकर्ता और अन्य लोग शामिल हैं, के लिए प्रदर्शित किया गया। भारतीय स्विफ्टलेट के संरक्षण पर चर्चा करने के लिए वेंगुर्ला में हितधारक बैठक सफलतापूर्वक आयोजित की गई थी। निष्कर्षों के आधार पर, भारतीय स्विफ्टलेट संरक्षण योजना और अंतिम तकनीकी रिपोर्ट का लेखन जारी है।

परिणाम और निष्कर्ष: प्रजातियों और उसके आवासों के खतरों की पहचान की गई है।

1. प्रजातियों की जनसंख्या, वितरण, प्रजनन जीवविज्ञान, आवास पारिस्थितिकी और खतरों से संबंधित वैज्ञानिक जानकारी मौजूदा ज्ञान में जोड़ी गई है।

2. लोगों को प्रजातियों, उसके आवास, पारिस्थितिक महत्व और चल रहे संरक्षण प्रयासों के बारे में विभिन्न तरीकों से जानकारी दी गई।
3. प्रजातियों के वैश्विक संरक्षण के लिए ज्ञान की नींव रखी गई।
4. भारतीय स्विफ्टलेट संरक्षण योजना के माध्यम से क्रियात्मक रोडमैप तैयार किया गया।

उपलब्धि: महाराष्ट्र में प्रजातियों का प्रजनन क्षेत्र वेंगुर्ला रॉक्स आर्किपेलागो तक ही सीमित है, और चारा ढूंढने का क्षेत्र रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग तक सीमित है। महाराष्ट्र से अवैध व्यापार के ना होने की पुष्टि की गई थी। तटीय सिंधुदुर्ग क्षेत्र में झाड़ी, शुष्क-पर्णपाती, और सदाबहार वन भारतीय स्विफ्टलेट के लिए एक महत्वपूर्ण चारा ढूंढने वाला आवास है। क्षेत्र में लोगों को प्रजातियों, उसके आवास, पारिस्थितिक महत्व और चल रहे संरक्षण प्रयासों के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न साधनों के माध्यम से कार्य किया गया। प्रजातियों के संबंध में पारिस्थितिक और सामाजिक ज्ञान के आधार पर सतत दृष्टिकोण के साथ महाराष्ट्र के लिए भारतीय स्विफ्टलेट संरक्षण योजना की तैयारी शुरू की गई है।



पुराने लाइटहाउस में पक्षियों के आराम करने के दौरान भारतीय स्विफ्टलेट के खाद्य घोंसले पर भोजन करता हुआ एक तिलचट्टा (ऑर्डर- ब्लैटोडिया)

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के चयनित भारतीय नागरिक हवाई क्षेत्रों में पक्षियों से विमानों को खतरों का आकलन—चरण—।

(महाराजा बीर विक्रम हवाईअड्डा, अगरतला, राजा भोज अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा, भोपाल, देवी अहिल्या बाई होल्कर हवाईअड्डा, इंदौर, जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा, पटना और सूरत अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा)

वित्तपोषण स्रोत

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

शोधकर्ता

डॉ. पीएन अनूप राज,
डॉ. एस. जीविथ, पीपी अशिक,
एंजेल जाँय, श्री सौम्या

आरंभ होने की तिथि

नवम्बर 2020

अन्वेषक

डॉ. पी. प्रमोद और
डॉ. पी.वी करुणाकरण

समाप्ति की तिथि

मार्च 2024

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था: (i) हवाई क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में पक्षियों और जानवरों की समुदाय संरचना का अध्ययन करना और संघर्ष में शामिल प्रमुख प्रजातियों की पहचान करना, (ii) हवाई क्षेत्र के आसपास (10 किमी की त्रिज्या) में भूमि उपयोग और भूमि आवरण का मूल्यांकन करना और हवाई क्षेत्र में पादप जगत की संरचना, क्षेत्र के पक्षियों का आवास का मूल्यांकन



भोपाल एयरपोर्ट में घास की कटाई

करनाय (iii) पक्षियों/जानवरों की गतिविधियों को प्रभावित करने वाले कारकों और अन्य व्यवहारिक पहलुओं का अध्ययन करना ताकि टकराव के लिए जिम्मेदार कारकों की पहचान की जा सके, और (iv) हवाई क्षेत्र में पक्षियों से टकराव को कम करने के लिए व्यापक और एकीकृत रणनीतियाँ विकसित करना।

प्रगति: रिपोर्टिंग अवधि के दौरान परियोजना का फील्डवर्क पूरा कर लिया गया है। कार्यों के लिए सिफारिशों के साथ एक वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। दो निगरानी रिपोर्टें भी प्रस्तुत की गईं। प्रत्येक हवाई अड्डे के लिए अंतिम रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

परिणाम और निष्कर्ष: सभी हवाई अड्डों ने अध्ययन के तीसरे वर्ष में सेकॉन अनुसंधान टीम के निरंतर समर्थन के साथ सिफारिशों को लागू करना शुरू कर दिया। हवाई अड्डे के संचालक वन्यजीव खतरे के प्रबंधन की गंभीरता के बारे में संवेदनशील हैं। संबंधित अधिकारियों ने हवाई अड्डे के आसपास कचरा प्रबंधन को प्राथमिकता दी।

मील का पत्थर परियोजना पूरी हो गई है। अंतिम वितरण कार्यशाला अगस्त 2024 के लिए योजनाबद्ध है।

उपयुक्त पक्षी डायवर्टर का सुझाव देने के लिए ठाणे क्रीक फ्लेमिंगो अभ्यारण्य के 110 केवी खोपोली-मांखुर्द और खोपोली-चेंबूर प्रतिस्थापन ट्रांसमिशन लाइनों का पक्षी प्रजाति सम्बन्धी अध्ययन

वित्तपोषण स्रोत

टाटा पावर, मुंबई

शोधकर्ता

बाबुराव, जी.

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2023

अन्वेषक

डॉ. अरुण पी.आर. और
डॉ. बाबू एस.

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

सितंबर 2023

उद्देश्य: सैकोन ने निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ अध्ययन किया: (i) प्रस्तावित ट्रांसमिशन लाइनों के मार्ग पर पक्षियों की प्रारंभिक जानकारी का दस्तावेजीकरण करना, और (ii) ट्रांसमिशन लाइनों और टावरों के लिए उपयुक्त बर्ड डायवर्टर का सुझाव देना।

प्रगति: मार्च 2023 से सितंबर 2023 तक ठाणे और पनवेल क्रीक्स के अंदर और आसपास पक्षी निगरानी की गई। पक्षियों की प्रचुरता और उड़ान गतिविधि का आकलन करने के लिए कुल गिनती और दृष्टिकोण गिनती विधियों का उपयोग किया गया, जबकि क्रीक क्षेत्र के भीतर ट्रांसमिशन लाइनों के दोनों किनारों की जांच के लिए यंत्रिकृत नाव का उपयोग करके शव खोज की गई। इसके अतिरिक्त, पक्षियों के बिजली लाइनों से टकराने के बारे में द्वितीयक जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली सर्वेक्षण किए गए। प्रकाशित और ऑनलाइन स्रोतों से डेटा का उपयोग करके पक्षी प्रजातियों की एक व्यापक सूची संकलित की गई। दर्ज की गई प्रजातियों में, *पासेरीफोर्मेस* और चराड्रीफोर्मेस की उच्चतम विविधता दर्ज की गई, उसके बाद *अकिपिट्रिफोर्मेस* और *पेलीकेनिफोर्मेस* का स्थान था। अध्ययन के दौरान सबसे अधिक बार देखे जाने वाली प्रजातियों में लेसर फ्लेमिंगो, लेसर सैंड प्लोवर, ग्रेटर फ्लेमिंगो, ब्राउन-हेडेड गुल और भारतीय कॉर्नरेंट्स शामिल थे। अधिकतम उड़ान गतिविधि हाउस क्रो और ब्लैक काइट के लिए दर्ज की गई। विशेष रूप से, जोखिम क्षेत्र में पक्षियों की उड़ान गतिविधि कम थी, जिससे संकेत मिलता है कि कुछ



ठाणे क्रीक को पार करती हुई ट्रांसमिशन लाइनें

प्रजातियाँ लंबे समय से स्थापित बिजली लाइनों की उपस्थिति के अनुकूल हो सकती हैं। शव सर्वेक्षण के दौरान किसी भी पक्षी की मृत्यु नहीं देखी गई।

परिणाम और निष्कर्ष: बिजली लाइनों पर विभिन्न क्षेत्रों में पक्षियों की उड़ान गतिविधि उनकी टकराव के प्रति संवेदनशीलता को इंगित करती है। हमने अध्ययन के दौरान किसी भी पक्षी प्रजाति को सीधे बिजली लाइनों से टकराते हुए नहीं देखा। हालांकि, व्हिस्कर्ड टर्न, ब्राउन-हेडेड गुल, फ्लेमिंगोस और पेंटेड स्टॉर्क जैसी कुछ प्रजातियों को जोखिम क्षेत्र में उड़ते हुए देखा गया, जिससे बिजली लाइनों के साथ संभावित टकराव का संकेत मिलता है। ठाणे क्रीक अत्यधिक गतिशील है और ज्वारों से प्रभावित होता है। हालांकि हमारे गहन शव सर्वेक्षण के अल्पकालिक अध्ययन के दौरान बिजली लाइनों के आसपास मृत पक्षियों को दर्ज नहीं किया, लेकिन क्षेत्र के स्थानीय मछुआरों के साक्षात्कार से पुष्टि होती है कि कुछ मौसमों और मौसम की स्थिति में बिजली लाइनों के साथ फ्लेमिंगोस का बार-बार टकराव होता है, जिससे पक्षियों की सुरक्षा के लिए प्रबंधन की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

पक्षियों का बिजली लाइनों के साथ टकराव कई कारकों पर निर्भर करता है, और एक प्रकार के उपकरण समस्या का समाधान नहीं करेगा। इसलिए, हमने दो प्रकार के डायवर्टर स्थापित करने की सिफारिश की है, जैसे स्पाइरल-स्वान-फ्लाइटीएम डायवर्टर को या तो रिफ्लेक्टिव रोटामार्क 3डी डायवर्टर या रिफ्लेक्टिव फायरफ्लाइ डायवर्टर के साथ मिलाकर स्थापित करना। उम्मीद है कि रिफ्लेक्टिव डायवर्टर क्षेत्र में कम प्रकाश परिस्थितियों के दौरान पक्षियों के टकराव को कम करने में सबसे प्रभावी रूप से काम करेंगे।

मील का पत्थर: परियोजना पूरी हो गई है, और पक्षियों के टकराव के जोखिम को कम करने के लिए उपयुक्त बर्ड डायवर्टर्स की सिफारिशों के साथ अंतिम रिपोर्ट को कार्यान्वयन के लिए फंडिंग एजेंसी को प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर-पूर्व भारत में मिशमी ताकिन, बुडोरकास टैक्सिकोलर टैक्सिकोलर के संरक्षण के लिए एकीकृत दृष्टिकोण: प्रजाति पारिस्थितिकी को पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के साथ जोड़ना

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु
परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

गौरव पी.जे. और
सिरुमाई खुसीआली क्रि

आरंभ होने की तिथि

जुलाई 2019

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मई 2024

अन्वेषक

डॉ. गोपी जी.वी.,
डॉ. पराग निगम,
डॉ. बिलाल हबीब और
डॉ. सत्यकुमार एस

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) अरुणाचल प्रदेश में मिशमी ताकिन के वितरण स्थिति और अधिभोग का आकलन करना, (ii) संभावित जलवायु परिवर्तन अनुमानों के तहत इसके वितरण में संभावित परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाना, (iii) मिशमी ताकिन के स्थानीय और अंतर-सीमाई विचरण स्वरूप को समझना, और (iv) मिशमी ताकिन पर पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान का मूल्यांकन करते हुए खतरों और स्थानीय दृष्टिकोणों की पहचान करना।

प्रगति: उद्देश्यों I और II के लिए डेटा संग्रह में कैमरा ट्रैप, संकेत सर्वेक्षण और साहित्य समीक्षा शामिल थे, जिसने मिशमी ताकिन के वितरण और आवास उपयुक्तता की भविष्यवाणी करने में सहायता की। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के विश्लेषण में उच्च उत्सर्जन परिदृश्यों के तहत महत्वपूर्ण आवास ह्रास की भविष्यवाणी की गई। उद्देश्य IV के तहत, ताकिन पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक महत्व पर पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को दस्तावेजीकरण के लिए मुख्य जानकारी सर्वेक्षण किए गए। ताकिन के चराई व्यवहार की जांच स्थानीय निवासियों के साक्षात्कार के माध्यम से की गई। उद्देश्य III के तहत अभियानों के दौरान कठिन इलाकों, आवास की दूरस्थता, सीमित संसाधनों और प्रजातियों की संवेदनशीलता के कारण ताकिन को कॉलर करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

परिणाम और निष्कर्ष: इस परियोजना ने मिशमी ताकिन की पारिस्थितिकी और आवास उपयोग को समझने के लिए पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया। इसके माध्यम से, हम पक्षियों के छह सभा स्थलों की पहचान करने में सक्षम हुए और मिशमी ताकिन की पारिस्थितिकी, व्यवहार, गतिविधि पैटर्न, श्रवण संरचना और पसंदीदा पौधों की प्रजातियों पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त की।

विस्तृत सर्वेक्षणों ने मिशमी ताकिन की पारिस्थितिकी में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की और प्रजातियों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों

और आवास उपयुक्तता के बारे में भी जानकारी दी। प्राथमिक क्षेत्र सर्वेक्षणों और साहित्य समीक्षाओं के माध्यम से मिशमी ताकिन से संबंधित स्थानों की पहचान की गई। इन स्थानों का उपयोग प्रजाति वितरण मॉडलिंग के लिए किया गया, जिसमें लगभग 24,697 वर्ग किलोमीटर को मिशमी ताकिन के लिए संभावित आवास के रूप में पहचाना गया। विभिन्न जलवायु परिवर्तन अनुमानों के तहत क्रमशः 15.6% और 40.4% की आवास ह्रास का अनुमान लगाया गया। परियोजना के निष्कर्ष से पता चला कि मिशमी ताकिन के लिए भारत में लगभग 24,000 वर्ग किलोमीटर उपयुक्त आवास मौजूद है, जो प्रजातियों की सीमा के भीतर जलवायु भिन्नताओं के प्रभाव को दर्शाता है।

मुख्य जानकारी सर्वेक्षणों के माध्यम से ताकिन व्यवहार और सांस्कृतिक महत्व पर पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया गया। अभियान सर्वेक्षणों के दौरान इनके छह सभा स्थलों की पहचान की गई और मिशमी ताकिन की पारिस्थितिकी, व्यवहार, गतिविधि पैटर्न, झुंड संरचना और पसंदीदा पौधों की प्रजातियों पर व्यापक अंतर्दृष्टि प्राप्त की। हालांकि, अभियानों के दौरान दुर्गम इलाकों और सीमित संसाधनों के कारण ताकिन को कॉलर करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस पहल का उद्देश्य मिशमी ताकिन का संरक्षण करना था, जबकि अरुणाचल प्रदेश में इसके सांस्कृतिक महत्व का सम्मान करना और प्रभावी संरक्षण प्रयासों के लिए वैज्ञानिक और पारंपरिक दृष्टिकोणों के बीच सहयोग के महत्व को उजागर करना था।

मील के पत्थर: इस रिपोर्ट ने प्रत्येक उद्देश्य से परियोजना के मील के पत्थरों का एक संक्षेपण प्रस्तुत किया। प्रजाति वितरण मॉडलिंग के माध्यम से मिशमी ताकिन के लिए 24,697 वर्ग किलोमीटर संभावित आवास की पहचान की गई। ये निष्कर्ष संरक्षण योजना के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे आवास संरक्षण और प्रजाति सुरक्षा के लिए उच्च महत्व वाले क्षेत्रों को दर्शाते हैं।

जलवायु परिवर्तन अनुमानों ने दिखाया कि मिशमी ताकिन का आवास तेजी से घट सकता है, जो प्रजातियों की पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता को उजागर करता है। समुच्चय मॉडलिंग के तहत जलवायु परिवर्तन प्रभावों के लिए आवास ह्रास

ने उत्सर्जन परिदृश्यों आरसीपी 2.6 और आरसीपी 8.5 के तहत महत्वपूर्ण आवास ह्रास को प्रकट दर्शाया।

परियोजना ने प्रजाति के प्रभावी संरक्षण के लिए पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान को शामिल करने के महत्व को उजागर किया।

परियोजना

भावसं

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत शामिल की गई संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी: मालाबार सिवेट

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

सईद अनवर अली एम. वी.

आरंभ होने की तिथि

फरवरी 2023

अन्वेषक

डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम और डॉ. सम्राट मॉडल

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) अत्यधिक संकटग्रस्त मालाबार सिवेट की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना (ii) मालाबार सिवेट्स के दीर्घकालिक पारिस्थितिक अध्ययन के लिए संभावित क्षेत्र स्थलों की पहचान करना और (iii) दीर्घकालिक जनसंख्या और आवास की निगरानी के लिए प्रोटोकॉल विकसित करना।

प्रगति: इस वर्ष, पश्चिमी घाट क्षेत्र में मालाबार सिवेट की पहचान प्रक्रिया शुरू की गई। विभिन्न भारतीय संस्थानों में मालाबार सिवेट की संभावित खालें पाई गईं। नमूने एकत्र करने के लिए चार संस्थानों को अनुमति पत्र भेजे गए। केरल के कोझिकोड में भारतीय प्राणि सर्वेक्षण और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी ने नमूने एकत्र करने की अनुमति दी। केरल विश्वविद्यालय ने हमें मालाबार सिवेट की संभावित खालों की जांच की अनुमति दी, लेकिन उन्हें

एकत्र करने की अनुमति नहीं दी। नमूने भारतीय प्राणि सर्वेक्षण, कोझिकोड से एकत्र किए गए और उसके बाद नमूनों की जांच के लिए केरल विश्वविद्यालय का दौरा किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: मालाबार सिवेट के संभावित वितरण क्षेत्रों में अखिल भारतीय बाघ अनुमान से क्षेत्र कार्य डेटा से कैमरा ट्रैपिंग में कोई सकारात्मक छवियां प्राप्त नहीं हुईं। संग्रहालय नमूनों को मालाबार सिवेट की पहचान करने और अन्य विवेरिड प्रजातियों से उनकी विशिष्टता की पुष्टि करने के लिए आनुवंशिक विश्लेषण की आवश्यकता है, जो जारी है।

मील के पत्थर: वर्तमान क्षेत्र कार्य डेटा से पता चलता है कि वर्तमान में इस प्रजाति की उपस्थिति वन में नहीं है। चल रहे आनुवंशिक विश्लेषण कार्य से इस प्रजाति की स्थिति की स्पष्ट समझ मिलेगी।

परियोजना

भावसं

पूर्व गोदावरी नदी मुहाना पारिस्थितिकी तंत्र, आंध्र प्रदेश में फिशिंग कैट, प्रियोनैलुरस विवरिनस की पारिस्थितिकी और संरक्षण परिप्रेक्ष्य

वित्त पोषण स्रोत

ईस्ट गोदावरी रिवर एस्टुरीन इकोसिस्टम

शोधकर्ता

कुणाल गोखले

आरंभ होने की तिथि

जून 2021

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

जनवरी 2026

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) आंध्र प्रदेश के कोरिंगा वन्यजीव अभ्यारण्य में फिशिंग कैट की जनसंख्या घनत्व और अन्य स्तनधारी प्रजातियों की सापेक्ष प्रचुरता का आकलन करना, (ii) रेडियो-टेलीमेट्री का उपयोग करके फिशिंग कैट के स्थान उपयोग, गृह क्षेत्र और गतिविधि पैटर्न का अध्ययन करना, और (iii) फिशिंग कैट के भोजन पैटर्न को समझकर संसाधन उपयोग को समझना।

प्रगति: प्रारंभिक चरण में, तूल्यहगा, कोरिंगा और गडेरू नदियों के डेल्टा में ज्वारीय परिस्थितियों और पहुंच के संबंध में पारिस्थितिक चुनौतियों को समझने के लिए कोरिंगा वन्यजीव अभ्यारण्य में एक प्रारंभिक सर्वेक्षण किया गया। अभ्यारण्य के अंदर व्यवस्थित ग्रिड आधारित (1x1 वर्ग किमी) कैमरा ट्रैपिंग की गई। प्रत्येक स्टेशन पर, 2 कडुबैक टीएम सी 1 इंफ्रारेड ट्रेल कैमरे, ज्वार जल की संभावना के आधार पर, जमीन से 30–45 सेमी की ऊंचाई पर उपयुक्त पेड़ों पर बांधे गए थे। कैमरा ट्रैप को दिन और रात दोनों समय की तस्वीरें रिकॉर्ड करने के लिए सेट किया गया था।

कैमरा ट्रैप डेटा का उपयोग फिशिंग कैट की जनसंख्या घनत्व का अनुमान लगाने के लिए किया जाएगा। सभी कैमरा ट्रैप स्टेशनों की यात्रा नाव द्वारा की गई। कैमरा ट्रैप के स्थानों का चयन वनस्पति विशेषताओं के आधार पर किया गया जो कैमरा ट्रैप की स्थापना को सुविधाजनक बनाते हैं और बिल्ली के संकेतों की उपस्थिति को दर्शाते हैं। आहार विश्लेषण के लिए मल नमूना एकत्रण की प्रक्रिया जारी है। फिशिंग कैट को पकड़ने और कॉलरिंग के लिए अनुकूलित लोहे के पिंजरे बनाए गए हैं। स्थानीय मत्स्य पालकों के साथ एक प्रश्नावली सर्वेक्षण किया जा रहा है ताकि मत्स्य पालकों के साथ फिशिंग कैट के संघर्ष को समझा जा सके।

परिणाम और निष्कर्ष: अध्ययन ने मैंग्रोव आवासों के भीतर प्रजातियों के समुदाय संरचना पर प्रकाश डाला। कैमरा ट्रैपिंग



कार्यक्रम के दौरान 6 स्तनधारी प्रजातियों की छवियां प्राप्त हुईं। इनमें फिशिंग कैट, प्रियोनाइलुरस विवरिनस, सुनहरी गीदड़, कैनिस ऑरियस, भारतीय धूसर नेवला, हर्पेस्तेस एडवर्डसाई, रीसस मकाक, मकाका मुलटा, चिकनी कोटेड ऊदबिलाव, लुट्रोगले पर्सिसिलाटा और जलीय भैंस, बुबालस बुबालिस शामिल हैं। पक्षियों को अक्सर कैमरा ट्रैप किया गया था, क्योंकि अधिकांश ट्रैप स्थानों को मैंग्रोव क्रीक और कीचड़ स्थल पर थे। सबसे आमतौर पर कैमरा ट्रैप किए गए पक्षी प्रजातियों में व्हिम्ब्रेल, व्हाइट-ब्रेस्टेड वॉटरहैन, विभिन्न प्रजातियों के बगुले और ग्रेटर कौकल शामिल थे। प्रश्नावली सर्वेक्षण से यह पता चला कि मत्स्य पालकों के साथ फिशिंग कैट का संघर्ष नगण्य है क्योंकि फिशिंग कैट किसानों को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाती हैं। आने वाले महीनों में हमारा अध्ययन फिशिंग कैट के भोजन पैटर्न को समझने पर जोर देगा। इसके अलावा, हम रेडियो टेलीमेट्री का उपयोग करके उनके स्थान उपयोग और गृह क्षेत्र का अध्ययन करने का लक्ष्य रखते हैं।

परियोजना

हजारीबाग वन्यजीव प्रभाग, हजारीबाग पश्चिम वन प्रभाग और कोडरमा वन प्रभाग के वन क्षेत्र में परिदृश्य दृष्टिकोण के साथ निवारण और क्षतिपूर्ति उपायों को शामिल करते हुए एकीकृत वन्यजीव कार्य योजना

वित्त पोषण स्रोत

डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर ऑफ इंडिया लिमिटेड

अन्वेषक

डॉ. जी.वी. गोपी,
डॉ. जे.ए. जॉनसन,
डॉ. अभिजीत दास,
डॉ. नवेंदु पगे और
डॉ. ललियानपुई काव्लनी

शोधकर्ता

दीपक आनंद, रोहित आर.एस. झा,
प्रियंका दास, इंजी. पी. मणिकंदन,
अविनाश यादव, अरुण के. राठ,
अजीत साहू, स्वास्तिक प्रीतम,
अभिन एन., श्री चिराग वास्सा,
अभिषेक के. सिंह, आकाश साई
और सुवम कानुंगो

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मई 2024

भावसं

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

(i) प्रस्तावित रेलवे ट्रैक और संपूर्ण तत्काल प्रभाव क्षेत्र में वन्यजीवों के फूलों और प्राणियों के घटकों का व्यापक आकलन करना, (ii) नजदीकी प्रभाव क्षेत्र में स्थित गांवों का सामाजिक-आर्थिक आकलन करना, (iii) प्रजातियों के वितरण और समूह पर आधारित प्रस्तावित रेलवे गलियारे के साथ हॉट स्पॉट क्षेत्र की पहचान और सीमांकन करना, (iv) जानवरों के सुरक्षित मार्ग और संरक्षित क्षेत्र में दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त निवारण उपायों की योजना बनाना, और (v) पारिस्थितिक, भौगोलिक, और सामाजिक कारकों को ध्यान में रखते हुए नजदीकी प्रभाव क्षेत्र के लिए एक व्यापक प्रबंधन योजना का निर्माण करना।



परिणाम और निष्कर्ष: 596.70 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के भीतर एक व्यापक अध्ययन किया गया, जिसे नजदीकी प्रभाव क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, जिसमें तीनों वन प्रभाग शामिल हैं, ताकि संरक्षित क्षेत्र के जैव विविधता मूल्यों का आकलन किया जा सके। अध्ययन में विविध वन्यजीवों की उपस्थिति का पता चला, जिसमें 28 स्तनधारी प्रजातियाँ, 143 पक्षी प्रजातियाँ, दस उभयचर प्रजातियाँ, और 23 सरीसृप प्रजातियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, इसमें विभिन्न परिवारों का प्रतिनिधित्व करने वाले 81 पेड़ प्रजातियाँ, 24 झाड़ी प्रजातियाँ, 16 जड़ी-बूटी प्रजातियाँ, और 13 घास प्रजातियाँ पाई गईं। इसके अतिरिक्त, 48 गांवों में 601 परिवारों का सर्वेक्षण करके एक सामाजिक-आर्थिक अध्ययन किया गया। दोनों ओर के संरक्षण पर संभावित रेलवे संरक्षण के निकटवर्ती जैव विविधता पर संभावित प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए सर्वेक्षण किए गए। इन सर्वेक्षणों में 18 स्तनधारी प्रजातियाँ, 121 पक्षी प्रजातियाँ, छह उभयचर प्रजातियाँ, 11 सरीसृप प्रजातियाँ और 69 पेड़ प्रजातियाँ की उपस्थिति का पता चला।

प्रस्तावित संरक्षण (36.32 किमी) के साथ हॉट स्पॉट की पहचान की गई। इसके बाद, कुल 331 निवारण संरचनाओं का प्रस्ताव दिया गया, जिसमें आरसीसी बॉक्स कलवर्ट (15 संख्या), जानवरों के अंडरपास (23 संख्या), प्रकाश और ध्वनि अवरोधों के साथ जानवरों के ओवरपास (25 संख्या), वायाडक्ट्स (234 संख्या), कट-एंड-कवर टनल (4 संख्या), महत्वपूर्ण पुल (2 संख्या), छोटे पुल (22 संख्या), और आरयूबी (6 संख्या) शामिल हैं। इन निवारण संरचनाओं को परिदृश्य में प्रजातियों की निरंतरता और अबाधित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस अध्ययन ने प्रबंधन के दृष्टिकोण से आग, मृदा, और नमी संरक्षण क्षेत्रों का भी सीमांकन किया।

मील के पत्थर: इस परिदृश्य के लिए यह एक अग्रणी कदम के रूप में एक कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास को किया गया, जिससे वन्यजीवों की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त हुए। पहली बार, अध्ययन क्षेत्र में लुप्तप्राय जंगली बिल्ली और भारतीय ग्रे भेड़िया को कैमरा में कैद किया गया। इसके अलावा, क्षेत्र में एक व्यापक संकेत सर्वेक्षण से कुछ उभयचर प्रजातियों की उपस्थिति का पता चला, जो क्षेत्र में उनकी उपस्थिति का पहला प्रलेखित रिकॉर्ड है।

परियोजना
जारी

उच्च ऊंचाई पारिस्थितिक तंत्र में निवास चयन और मध्यम शिकारी को छोड़ना

वित्त पोषण स्रोत
विज्ञान और इंजीनियरिंग
अनुसंधान बोर्ड, विज्ञान
प्रौद्योगिकी विभाग

शोधकर्ता
प्रियंका जस्टा

आरंभ होने की तिथि
फरवरी 2021

भावसं

अन्वेषक
डॉ. सल्वाडोर लिंगदोह

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
मई 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) उच्च ऊंचाई के मांसाहारी जानवरों द्वारा संसाधनों का उपयोग निर्धारित करना (ii) ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में हिम तेंदुओं, हिमालयी भेड़ियों, लोमड़ियों और स्वतंत्र विचरण करने वाले कुत्तों के संसाधन उपयोग का अध्ययन करना और (iii) मध्यमक्षी विमोचन या दमन के संदर्भ में उच्च ऊंचाई के मांसाहारी जानवरों के प्रभाव और परस्पर प्रभाव की जांच करना, (क) अंतर-समूह शिकारियों के

बीच परस्पर क्रियाएं मध्यमक्षी की सापेक्ष प्रचुरता और वितरण पर शीर्ष-नीचे प्रभाव कैसे डालती हैं? और (ख) संसाधन उपलब्धता जैसे नीचे-ऊपर प्रक्रियाएं मांसाहारी समूह के बीच मध्यमक्षी विमोचन को कैसे प्रभावित करती हैं?

प्रगति: शिकारियों के स्थानिक-कालिक परस्पर क्रियाओं का अध्ययन करने के लिए पांच अध्ययन स्थलों में दो सत्रों में 205 कैमरा ट्रैप से डेटा का विश्लेषण किया गया। सत्र-1 में, 113 कैमरे

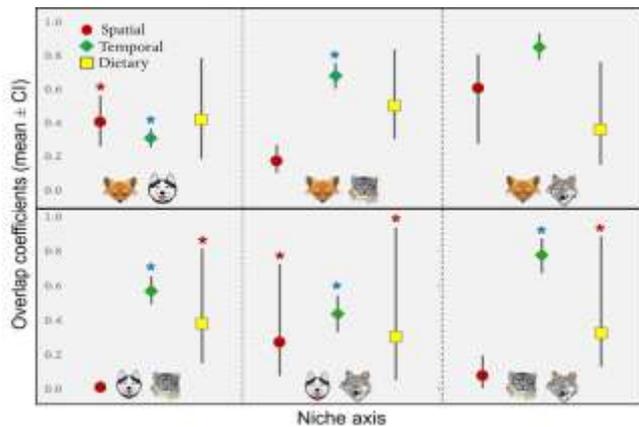
लगाए गए, जिनमें चंद्रताल में 15, किब्बर में 39, पिन वैली में 43 और माने में 16 कैमरे थे। सत्र ॥ में, 92 कैमरे लगाए गए, जिनमें किब्बर में 49, माने में 21 और गुए में 22 कैमरे थे। डेटा का उपयोग बहु-प्रजाति अधिभोग, स्थानिक-कालिक ओवरलैप और लाल लोमड़ी घनत्व अनुमान लगाने के लिए किया गया।

मांसाहारी जानवरों के मल नमूने अगस्त 2021 से दिसंबर 2023 तक कैमरा ट्रैप स्थापित करते समय खाद्य आदतों और आहार ओवरलैप का अध्ययन करने के लिए ट्रेल ट्रांसैक्ट्स और अवसरानुकूल रूप से एकत्र किए गए। इस अध्ययन के लिए कुल 1,065 मांसाहारी मल नमूने एकत्र किए गए और विश्लेषित किए गए, जिनमें कुत्तों के 279, लाल लोमड़ियों के 583, हिम तेंदुओं के 159 और हिमालयी भेड़ियों के 44 नमूने शामिल हैं।

कुत्तों की जनसंख्या अनुमान के लिए डेटा एकत्र और विश्लेषित किया गया। स्पीति घाटी के माने गांव में तीन लाल लोमड़ियों को कॉलर किया गया। परियोजना समापन रिपोर्ट डीएसटी-एसईआरबी को प्रस्तुत की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: अध्ययन ने मानव-परिवर्तित परिदृश्यों में मानव गतिविधियों और संबंधित प्रजातियों को मांसाहारी पारिस्थितिकी अनुसंधान में एकीकृत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह मांसाहारी समुदाय की गतिशीलता को समझने के लिए स्थानिक, कालिक और आहार निवास अक्षों पर विचार करने के महत्व पर जोर देता है।

लाल लोमड़ी अधिभोग और अन्य शिकारियों के बीच सकारात्मक स्थानिक संघ मिले, जो उनके अवसरानुकूल व्यवहार के कारण संभावित मध्यभक्षी सुविधा को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, कुत्तों के



स्पीति घाटी, हिमाचल प्रदेश, भारत में मांसाहारी जानवरों के बीच स्थानिक, कालिक और आहार निवास ओवरलैप के ओवरलैप गुणांक (मीन ± सीआई)। लाल तारा महत्वपूर्ण सकारात्मक स्थानिक संघ और महत्वपूर्ण आहार ओवरलैप को दर्शाता है, जबकि नीला तारा उनके कालिक गतिविधि पैटर्न के बीच महत्वपूर्ण असमानता को दर्शाता है (महत्त्व पी-मूल्य < 0.05)

हिम तेंदुओं और भेड़ियों के साथ संघ रोग संचरण और हिमालयी भेड़ियों के संकरण जोखिमों के बारे में चिंताएँ बढ़ाते हैं।

मांसाहारी जानवरों के बीच उच्च आहार ओवरलैप, मुख्य रूप से घरेलू जानवरों पर निर्भरता के कारण, सीमित संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा का संकेत देता है। मांसाहारी जानवर अपने निवास को विभिन्न स्थान, समय और आहार अक्षों के साथ विभाजित करते हैं ताकि इस ओवरलैप को कम किया जा सके। प्रभावी पशुधन और आवास प्रबंधन, जबकि एक स्वस्थ शिकार आधार बनाए रखते हुए, संघर्षों को कम करने और उच्च ऊंचाई के मांसाहारी जानवरों के सह-अस्तित्व का समर्थन करने के लिए आवश्यक है।

नमूना गांवों में कुत्तों की जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि ने प्रतिस्पर्धा को बढ़ा दिया है और देशी मांसाहारी जानवरों के लिए खतरे उत्पन्न किए हैं। लाल लोमड़ी घनत्व अनुमान ने एक आधार स्थापित किया है और भविष्य में लोमड़ी की प्रचुरता में परिवर्तनों की निगरानी के लिए उपयोगी हो सकता है। कॉलर किए गए लाल लोमड़ी के टेलीमेट्री डेटा ने मानव बस्तियों के निकट एक छोटे गृह क्षेत्र का खुलासा किया, जो मानव निर्मित सहायता पर निर्भरता को दर्शाता है। सापेक्ष प्रचुरता सूचकांकों का उपयोग करते हुए, शीर्ष शिकारियों और मध्यभक्षियों के बीच नकारात्मक संबंधों ने शीर्ष-नीचे दमन को दर्शाया। उदाहरण के लिए, किब्बर में, हिम तेंदुओं की प्रचुरता अधिक थी और लाल लोमड़ियों की प्रचुरता कम थी।



जूनो: स्पीति घाटी, हिमाचल प्रदेश के माने गांव में पहली जीपीएस-कॉलर वाली मादा।

मील के पत्थर: स्पीति घाटी में चार शिकारियों के लिए एक साथ तीन मुख्य निवास आयामों, यानी आहार, स्थान और समय पर व्यापक डेटा एकत्र किया गया है। यह अध्ययन, एक परिचित शिकारी यानी कुत्तों का सहानुभूतिपूर्ण मांसाहारी जानवरों पर प्रभावों के निर्देशित अनुसंधान में डेटा अंतराल को पूरा करता है। स्पीति में यह लाल लोमड़ियों को कॉलर करने वाला पहला अध्ययन है।

भारत में वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – कैराकल, कैराकल कैराकल

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु
परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

डॉ. अयान साधु, क्रिस्टीना ग्रेस टी,
श्रिया औरदकर,
गौसिया केलावाला, सृष्टि जोशी
और सौरव दास

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2023

अन्वेषक

श्री कमर कुरेशी,
डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम

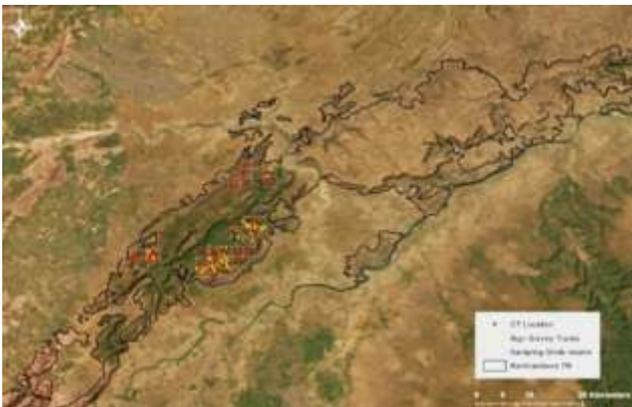
पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) राजस्थान में संभावित कैराकल आवासों में कैराकल की जनसंख्या स्थिति का आकलन करना और (ii) कैराकल के जनसंख्या और आवास की दीर्घकालिक निगरानी के लिए प्रोटोकॉल विकसित करना।

प्रगति: भारत में कैराकल की जीवविज्ञान और वितरण को समझने के लिए एक व्यापक साहित्य समीक्षा की गई। राजस्थान में कैराकल की स्थिति और वितरण का अध्ययन करने के लिए, रणथंभौर बाघ रिजर्व, राजस्थान में संभावित कैराकल आवासों के लिए संकेत सर्वेक्षण और व्यवस्थित कैमरा ट्रैपिंग का निर्णय लिया गया। अध्ययन क्षेत्र को 4 वर्ग किलोमीटर ग्रिड में विभाजित किया गया, और प्रत्येक ग्रिड के भीतर 3-4 किलोमीटर का व्यवस्थित सर्वेक्षण एम-एसट्रिप्स पॉलीगॉन सर्च एप्लिकेशन का उपयोग करके योजनाबद्ध किया गया।

अखिल भारतीय बाघ अनुमान 2018 और 2022 के कैमरा ट्रैप कैप्चर से प्राप्त जानकारी के आधार पर, रणथंभौर बाघ रिजर्व के डिवीजन-1 को गहन अध्ययन के लिए चुना गया। इसके बाद, जून-जुलाई 2023 में रणथंभौर टीआर डिवीजन-1 के गहन अध्ययन क्षेत्रों में एक प्रारंभिक सर्वेक्षण किया गया, जिसे अक्टूबर-दिसंबर 2023 के दौरान आरटीआर डिवीजन-1 और जनवरी-मार्च 2024 के दौरान आरटीआर डिवीजन-1 में पूर्ण व्यवस्थित नमूनाकरण में विस्तारित किया गया।



जून-जुलाई 2023 के दौरान रणथंभौर टाइगर रिजर्व डिवीजन-1 में किए गए संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैप तैनाती को दिखाने वाला मानचित्र।

जून-जुलाई 2023 में आरटीआर डिवीजन-1 में क्षेत्र कार्य के दौरान, 69 कैमरा ट्रैप लगाए गए और 14 पगडंडियों (लगभग 30 किमी) को कवर किया गया, जिसके परिणामस्वरूप कुल 18 संभावित कैराकल/छोटी बिल्ली के मल एकत्रित किए गए (चूंकि कैराकल के मल को अन्य छोटी बिल्ली प्रजातियों के मल से दृश्य रूप से अलग नहीं किया जा सकता)। अक्टूबर 2023 से मार्च 2024 तक, आरटीआर डिवीजन-1 और II में 92 कैमरा ट्रैप लगाए गए। आरटीआर डिवीजन-1 में, 72 पगडंडियों (लगभग 228 किमी) को कवर किया गया, जिसमें 122 संभावित मल नमूने एकत्र किए गए, जबकि आरटीआर डिवीजन-1 में, 93 पगडंडियों (लगभग 351 किमी) को कवर किया गया, जिसके परिणामस्वरूप 456 संभावित मल नमूने एकत्र किए गए।

कैमरा ट्रैप छवियों को जियोटैग, कोडित और व्यक्तिगत प्रजातियों के फोल्डरों में अलग किया गया। एकत्र किए गए मल नमूनों को जीयूएससीएन-आधारित वॉश विधि का उपयोग करके जीनोमिक डीएनए निष्कर्षण के बाद 218 बीपी स्तनधारी साइट-बी माइटोकॉन्ड्रियल मार्कर (साइटबीबीएफ और एच15149) का उपयोग करके पीसीआर संवर्धन और अंततः प्रजाति पहचान के लिए सैंगर अनुक्रमण किया गया।

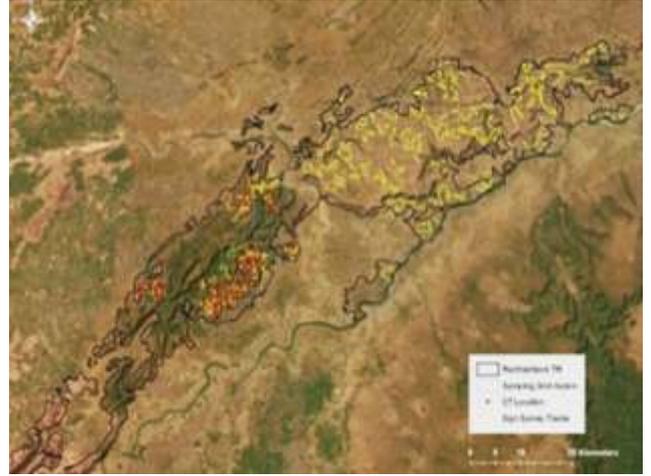
परिणाम और निष्कर्ष: जून-जुलाई 2023 में क्षेत्र कार्य के दौरान, 37,241 छवियां (1,186 ट्रैप रातों) कैद की गईं, जिसमें 6,819 खाली थीं। यद्यपि कोई कैराकल की फोटो प्राप्त नहीं हुई, लेकिन 23 अन्य प्रजातियों को दर्ज किया गया, जिसमें 47 छोटी बिल्लियों (जंगल बिल्ली और जंगली धब्बेदार बिल्ली) की छवियां शामिल हैं। अक्टूबर 2023-मार्च 2024 के क्षेत्र कार्य के कैमरा ट्रैप डेटा वर्तमान में डेटा पृथक्करण प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। हालांकि, प्रारंभिक डेटा विश्लेषण में अध्ययन क्षेत्र से 10 कैराकल की कैप्चर का खुलासा हुआ है।

जून-जुलाई 2023 के दौरान एकत्र किए गए 18 नमूनों में से 6 प्रजातियों की पहचान सैंगर अनुक्रमण द्वारा की गई थी। विशेष रूप से, एक नमूने की पहचान कैराकल, कैराकल कैराकल के रूप में की गई, जबकि अन्य प्रजातियों की पहचान सुनहरी गीदड़, कैनेस ऑरियस, रड्डी नेवला, हर्पेस्तेस स्मिथी, और भारतीय शाही

साही, *हायस्ट्रिक्स इंडिका* के रूप में की गई। अक्टूबर 2023–मार्च 2024 सत्र के 578 नमूनों के डीएनए निष्कर्षण पूरे हो गए हैं, 252 नमूनों का पीसीआर संवर्धन किया गया है। 48 नमूनों का एक प्रारंभिक बैच अनुक्रमित किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप 24 नमूनों की पहचान हुई है। इनमें जंगली धब्बेदार बिल्ली, *प्रियोनाइलुरस रुबिगिनोसस*, सुनहरी गीदड़, *कैनिस ऑरियस*, भारतीय भेड़िया, *कैनिस लुपस पल्लिप्स*, धारीदार लकड़बग्घा, *हायना हायना*, रड्डी नेवला, *हर्पेस्तेस स्मिथी*, भारतीय धूसर नेवला, *उर्वा एडवर्डसाई*, लोमड़ी, *वलपेस वलपेस*, और नीलगाय, *बोसेलाफस ट्रागोकैमलस* शामिल हैं।

शेष नमूनों के लिए, पीसीआर संवर्धन और सैंगर अनुक्रमण के माध्यम से प्रजातियों की पहचान, साथ ही जीनोटाइपिंग द्वारा व्यक्तिगत पहचान की जाएगी।

मील के पत्थर: अध्ययन से अब तक प्राप्त निष्कर्ष अध्ययन क्षेत्र के भीतर कैराकल की उपस्थिति की पुष्टि करते हैं। प्रजातियों के पसंदीदा आवास पर भी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई।



अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 के दौरान रणथंभौर टाइगर रिजर्व डिवीजन-1 और डिवीजन-11 में किए गए संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैप तैनाती को दिखाने वाला मानचित्र।

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – बटागुर बास्का (उत्तर नदी टेरापिन)

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

अमृता बालन आर, स्वाति नवानी और असीम बशीर

आरंभ की तिथि

दिसंबर 2022

अन्वेषक

डॉ. अभिजीत दास और डॉ. सम्राट मोंडल

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

जून 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) गंभीर रूप से संकटग्रस्त *बटागुर बास्का* की वर्तमान स्थिति का आकलन करना (ii) उनकी जनसंख्या और उनके आवास के लिए एक दीर्घकालिक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना, और (iii) सुंदरबन में *बटागुर बास्का* के लिए ईडीएनए का उपयोग करके आणविक पहचान विधि की स्थापना करना।

प्रगति: परियोजना को प्रणालीबद्ध आधुनिक विधियों का उपयोग करके वन में *बटागुर बास्का* की वर्तमान स्थिति का आकलन करने के लिए डिजाइन किया गया था। परियोजना में तीन चरण शामिल हैं: चरण I में, 28 जनवरी 2023 से 26 फरवरी 2023 तक पश्चिम बंगाल में सुंदरबन बाघ रिजर्व में एक दृश्य सर्वेक्षण किया गया। चरण II में, सुंदरबन बाघ रिजर्व के आसपास के सात गांवों में एक प्रश्नावली सर्वेक्षण किया गया। 5 जून 2023 से 30 अगस्त 2023 तक ईडीएनए विश्लेषण के लिए विभिन्न तालाबों से जल नमूने

एकत्र किए गए। चरण III में, जनसंख्या आनुवंशिकी को समझने के लिए सुंदरबन बाघ रिजर्व के बंदी *बटागुर बास्का* से जैविक नमूने एकत्र किए गए।

परिणाम और निष्कर्ष: 2,625 किमी नाव सर्वेक्षण से बटागुर बास्का का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ। सुंदरबन बाघ रिजर्व के समुद्र तटों ने भी कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिखाया। सुंदरबन बाघ रिजर्व के अंदर पांच में से तीन समुद्र तट, कछुओं के लिए अनुकूल हैं (चौमारी, बागमारा, गुरंगटी)। प्रश्नावली सर्वेक्षण से पता चला कि 422 लोगों में से 1% से कम लोग *बटागुर बास्का* के बारे में जानते थे। प्रजाति वितरण मॉडलिंग से पता चला कि ओडिशा में सुंदरबन बाघ रिजर्व और भितरकनिका के अंदर अधिक उपयुक्त आवास हैं। बंदी *बटागुर बास्का* से अवलोकन ने ब्रोंकाइटिस और मेटाबोलिक बोन बीमारियों के लक्षण दिखाए, जो संभवतः बास्किंग साइट्स की कमी और बंदी परिस्थितियों से जुड़े



स्वास्थ्य चुनौतियों का संकेत देते हैं। पूरे माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए विश्लेषण ने प्रजातियों के भीतर कम आनुवंशिक विविधता को

उजागर किया, जिससे इनब्रीडिंग अवसाद की संवेदनशीलता बढ़ सकती है।

मील के पत्थर: यह अध्ययन वन्य में बटागुर बास्का की वर्तमान जनसंख्या का आकलन करने के लिए किया गया पहला प्रणालीबद्ध सर्वेक्षण है। वर्तमान अध्ययन से, बटागुर बास्का भविष्य के अनुसंधान में आंदोलन पारिस्थितिकी, घोंसले के समुद्र तट नमूनाकरण और बंदी व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सहायता करेगा। अध्ययन ने बटागुर बास्का का पहला संपूर्ण माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए उत्पन्न किया है, जिसे केंद्र प्रजनन कार्यक्रमों और संभावित भविष्य के पुनःप्रवेश प्रयासों में आनुवंशिक विविधता को बनाए रखने के महत्व पर जोर देने के लिए उपयोग किया जा सकता है। बंदी बटागुर बास्का आबादी में पहचानी गई स्वास्थ्य समस्याओं (ब्रोंकाइटिस, मेटाबोलिक बोन बीमारी) ने बेहतर देखभाल प्रथाओं और संभावित पुनःप्राप्ति चुनौतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

जासी परियोजना

गोडावण के आवास में सुधार और संरक्षण प्रजनन

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्वेषक

डॉ. सुतीर्थ दत्ता, श्री कमर कुरैशी, डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम और डॉ. ललियानपुई काव्ल्नी

शोधकर्ता

डॉ. तुषना करकेरिया, डॉ. विपुल बिश्नोई, डॉ. सोनिका बीएल,

श्री बिपिन सीएम, प्रवेश सकलानी, मोहिबुद्दीन, सौरव सुपकार, तान्या गुप्ता, हृषिका शर्मा, हेमलता जोशी, इंद्रनील पॉल, अंजलि नागर, वरुण खेर, अंशुमान पाटी, शिमोंतिका गुप्ता, निखिला पुरोहित, स्वप्ना लॉरेंस, आशीष कुमार जांगिड़, महेश गुज्जर, मोहन कृष्ण, मयूरी मोइत्रा, मैथिली सावंत, स्वेता भट्टाचार्य, सोहन लाल, जोगराज सिंह और अमृत राम

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2016

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

जून 2024

भावसं

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) संरक्षण प्रजननरू गोडावण और छोटे फ्लोरिकन की बाहरी आबादी को सुरक्षित करना, (ii) अनुप्रयुक्त अनुसंधानरू संरक्षण क्षेत्रों को प्राथमिकता देना, खतरों का विश्लेषण करना, जनसंख्या और आवास की निगरानी करना, आजीविका के मुद्दों और जनसंख्या आनुवंशिकी को समझना, (iii) क्षमता निर्माण, जागरूकता और वकालतरू संरक्षण उपायों को बढ़ाना, हितधारकों और निर्णयकर्ताओं को संवेदनशील बनाना, जन जागरूकता बढ़ाना, और गोडावण हितैषी भूमि उपयोग को बढ़ावा देना, और

(iv) पायलट आवास प्रबंधन: आवास पुनर्स्थापना और प्रबंधन के लिए प्रभावी हस्तक्षेपों का प्रदर्शन करना, जिसे राज्य वन विभाग और संरक्षण एजेंसियों द्वारा दोहराया जा सके।

प्रगति: गोडावण और छोटे फ्लोरिकन का संरक्षण प्रजनन: (i) गोडावण के लिए सैम और रामदेवरा (जैसलमेर) में पूरी तरह से कार्यात्मक और परिचालन सुविधाओं और छोटे फ्लोरिकन के लिए बिजयनगर (अजमेर) में एक अस्थायी सुविधा में नियमित संरक्षण प्रजनन गतिविधियाँ, (ii) गोडावण के सफल संरक्षण प्रजनन, जिसमें केंद्र में रखे अंडों से 2 चूजों और जंगली-अंडों से 7

अतिरिक्त चूजों का पालन-पोषण, (iii) अरवार सुविधा (अजमेर) और सोरसन सुविधा (बारा) का निर्माण जारी है।

अनुप्रयुक्त अनुसंधान: (i) पश्चिमी थार में गोडावण जनसंख्या सर्वेक्षण (2022-चल रही है), (ii) राजस्थान में गोडावण (6 कार्यात्मक टैग) और छोटे फ्लोरिकन (2 कार्यात्मक टैग) का टेलीमेट्री, (iii) जैसलमेर में जंगली गोडावण जनसंख्या की जनसांख्यिकी निगरानी, (iv) गोडावण आवासों में आवास और अर्थोपॉड जनसंख्या आकलन, (v) आनुवंशिक विश्लेषण और मार्करों का अंतिमकरण।

क्षमता निर्माण और लोगों तक पहुँच: (i) स्कूलों में प्रकृति शिक्षा कार्यक्रम और जैसलमेर और अजमेर के गांवों में संरक्षण के उद्देश्य से लोगों तक पहुँच, (ii) तकनीकी एजेंसी के माध्यम से गोडावण और परियोजना गतिविधियों की वीडियो-डॉक्यूमेंट्री का विकास, (iii) वन्यजीव दिवस और सप्ताह उत्सव रजिस्ट्रार महोत्सव दीवार पेंटिंग संरक्षण प्रजनन केंद्रों में गणमान्य व्यक्तियों के साथ बातचीत, (iv) परियोजना गतिविधियों की प्रदर्शनी सहित बैठकें और सम्मेलन।

प्रायोगिक आवास प्रबंधन: (i) गोडावण प्रजनन आवासों से घोंसले के शिकारियों का स्थानांतरण (ii) पावरलाइन मृत्यु दर सर्वेक्षण और डायवर्टर प्रभावशीलता की जाँच।

परिणाम और निष्कर्ष: गोडावण और छोटे फ्लोरिकन का संरक्षण प्रजनन: (i) सैम, रामदेवरा और बिजयनगर में संरक्षण प्रजनन सुविधाओं की स्थापना, (ii) गोडावण और छोटे फ्लोरिकन की संस्थापक आबादियों को आंशिक रूप से सुरक्षित किया गया, (iii) वर्तमान में कैद पक्षियों की संख्या 29 (>1 वर्ष) गोडावण और 10 छोटे फ्लोरिकन है।

अनुप्रयुक्त अनुसंधान: (i) गोडावण और छोटे फ्लोरिकन की जनसंख्या स्थिति पर जानकारी प्राप्त की गई, अनुमानित गोडावण जनसंख्या मरु राष्ट्रीय उद्यान में 37 (एसई 14) पक्षी हैं,

(ii) गोडावण और छोटे फ्लोरिकन की विचरण पारिस्थितिकी पर टेलीमेट्री के माध्यम से बेहतर समझ, (iii) गोडावण जनसांख्यिकी और आवास प्राथमिकताओं और उपयोग पर जानकारी प्राप्त हुई, (iv) खतरों की प्राथमिकता और गोडावण पर उनके प्रभावों का आकलन।

क्षमता निर्माण और लोगों तक पहुँच: (i) वन फ्रंटलाइन कर्मचारियों के बीच गोडावण जनसंख्या आकलनों का ज्ञान प्रसारित करना, (ii) संबंधित हितधारकों के बीच पावर लाइन शमन उपायों की तकनीकी समझ विकसित करना, (iii) स्कूल के बच्चों और स्थानीय लोगों के बीच गोडावण, छोटे फ्लोरिकन और चल रहे संरक्षण प्रयासों के बारे में जागरूकता।

पायलट आवास प्रबंधन: (i) परियोजना अनुसंधान ने गोडावण आवासों में संबंधित एजेंसियों द्वारा चल रहे पावर लाइन शमन को प्रभावित किया, जो पावरलाइन से खतरे को प्रभावी ढंग से शमन करने के बाद वयस्क मृत्यु दर को कम करेगा, (ii) प्रजनन क्षेत्रों में शिकारी नियंत्रण और जंप-स्टार्ट रणनीति के प्रयासों मूल स्थान पर संरक्षण करने की क्षमता दिखाई, (iii) परियोजना ने सफलतापूर्वक 38 शिकारी, जिसमें लोमड़ी, नेवला, छिपकली प्रमुख गोडावण प्रजनन एनक्लोजर से शामिल हैं, को स्थानांतरित किया कुछ को रिहाई के बाद की गतिविधियों की निगरानी के लिए टैग किया गया, (iv) लगभग 30 स्वतंत्र विचरण करने वाले कुत्तों को भी प्रमुख गोडावण प्रजनन एनक्लोजर से स्थानांतरित किया गया।

मील के पत्थर: प्राकृतिक संभोग के माध्यम से गोडावण के संरक्षण प्रजनन की शुरुआत, सैम से रामदेवरा केंद्रों में गोडावण चूजों का सफल स्थानांतरण, छोटे फ्लोरिकन का प्रवास मार्ग स्पष्ट हुआ, प्रमुख प्रजनन एनक्लोजर से गोडावण घोंसले के शिकारियों का सफल स्थानांतरण, मूल स्थान पर संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए, मूल स्थान में सुधार के लिए प्रायोगिक जंप-स्टार्ट रणनीति का सफल निष्पादन।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत संकटग्रस्त प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – नीलगिरि ताहर

वित्त पोषण स्रोत
पर्यावरण, वन और जलवायु
परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता
जोएल कोरेया, बी.के. अरविंदन

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2023

अन्वेषक
डॉ. एस. सत्यकुमार

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
जुलाई 2024

उद्देश्य: इस अध्ययन का लक्ष्य तमिलनाडु और केरल में संकटग्रस्त नीलगिरि तहर की जनसंख्या स्थिति का आकलन करना है। इसके अतिरिक्त, इस अध्ययन का उद्देश्य सटीक जनसंख्या अनुमान और आवास आकलन के लिए दीर्घकालिक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना है। इन प्रोटोकॉलों को लागू करके, अध्ययन नीलगिरि तहर की जनसंख्या और उनके आवास के प्रभावी संरक्षण और दीर्घकालिक प्रबंधन को सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।

प्रगति: परियोजना को तमिलनाडु और केरल में नीलगिरि तहर की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए डिजाइन किया गया था। इसका उद्देश्य सीमित गणना विधि के मुद्दों को संबोधित करना और ताहर आवासों के बड़े निरंतर परिदृश्यों और अलग-अलग पैचों में दोहरी पर्यवेक्षक विधि को लागू करके कार्यप्रणाली को मानकीकृत करना है। इसके अतिरिक्त, परियोजना वैकल्पिक विधियों की खोज करती है, जैसे बड़े परिदृश्यों में जनसंख्या अनुमान के लिए कैमरा ट्रैप-आधारित दूरी नमूनाकरण।

तमिलनाडु और केरल में नीलगिरि ताहर की जनसंख्या अनुमान के लिए एक समन्वित सर्वेक्षण किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: केरल में, कैमरा ट्रैप-आधारित दूरी नमूनाकरण को एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान में 20 कैमरा ट्रैप तैनात करके लागू किया गया। 20 कैमरा ट्रैप में से 6 ने नीलगिरि ताहर की फोटो-कैप्चर की, जिससे 247 तस्वीरें और वीडियो रिकॉर्ड किए गए। एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान में अनुमानित नीलगिरि ताहर जनसंख्या 6.58 एसई ± 3.94 नीलगिरि ताहर प्रति वर्ग किमी (सीवी = 0.37) है। तमिलनाडु में, हमने ग्रास हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में अध्ययन किया, जहां हमने 12 कैमरा ट्रैप तैनात किए। इनमें से 4 ने नीलगिरि ताहर की फोटो-कैप्चर की, जिससे 194 तस्वीरें और वीडियो प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त, मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान में, हमने 5 कैमरा ट्रैप तैनात किए, और उनमें से 3 ने नीलगिरि ताहर की फोटो-कैप्चर की, जिससे 15 तस्वीरें और वीडियो प्राप्त हुए।

यह अध्ययन केरल और तमिलनाडु में नीलगिरि ताहर की जनसंख्या का अनुमान लगाने में एक महत्वपूर्ण प्रयास करता है। यह इन दो राज्यों के बीच किया गया पहला समन्वित सर्वेक्षण है। प्राप्त आधारभूत अनुमान भविष्य के अनुसंधान, जनसंख्या रुझानों की निगरानी, संरक्षण प्रयासों और नीलगिरि तहर के प्रबंधन रणनीतियों के लिए मूल्यवान होंगे।

परियोजना

भाषा

कर्नाटक के अर्ध-शुष्क घासभूमि-झाड़ी-खेती प्रणाली में प्रमुख मांसाहारी और खुर वाले जानवरों की पारिस्थितिकी और संरक्षण

वित्त पोषण स्रोत
कर्नाटक वन विभाग

अन्वेषक

श्री कमर कुरैशी,
डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम और
डॉ. ललियानपुई काव्लनी

शोधकर्ता

डॉ. मंजरी रॉय, बसवराज मुलगे,
चेतन सीएम और मेघना श्रीवत्सा

आरंभ होने की तिथि

दिसंबर 2020

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) कर्नाटक के अर्ध-शुष्क घासभूमि-झाड़ी-खेती प्रणाली में प्रभावी गश्त, पारिस्थितिक स्थिति का आकलन और मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने में सहायता के लिए आधुनिक तकनीक के साथ एक निगरानी प्रणाली विकसित करना, (ii) कर्नाटक के अर्ध-शुष्क घासभूमि-झाड़ी-खेती प्रणाली के प्रमुख जीवों की स्थिति और वितरण का निर्धारण करना, (iii) चयनित अध्ययन स्थलों पर कर्नाटक के अर्ध-शुष्क घासभूमि-झाड़ी-खेती प्रणाली के प्रमुख मांसाहारी और खुर वाले प्राणियों के गृह क्षेत्र, प्रसार, बिल खोदने के व्यवहार और भोजन पारिस्थितिकी का निर्धारण करना, (iv) चयनित अध्ययन स्थलों पर प्रमुख मांसाहारी प्राणियों में कुछ संक्रामक बीमारियों की व्यापकता का निर्धारण करना और इन रोगजनकों के प्रवाहित स्ट्रेनोवृत्तियों की तुलना करके संचरण को समझना, और (v) प्रजातियों की पहचान और निगरानी, आधुनिक

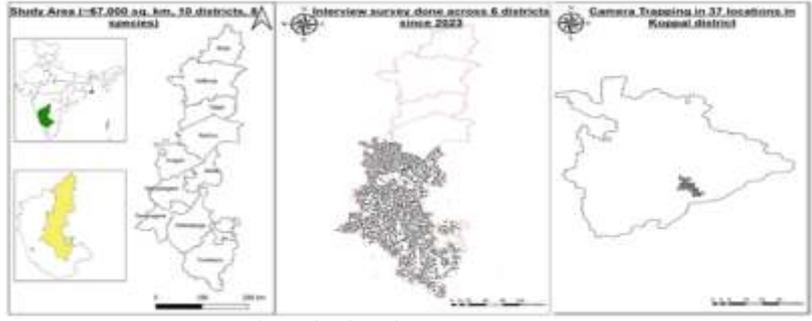
उपकरणों और तकनीक (एमएसटीआरआईपीईएस, टेलीमेट्री) और पकड़ और नियंत्रण में वन कर्मचारियों की क्षमता का निर्माण करना।

प्रगति: कर्नाटक के कोप्पल, बेल्लारी, विजयनगर, दावणगेरे, चित्रदुर्ग और तुमकूर जिलों में प्रजातियों के वितरण का निर्धारण करने के लिए एक साक्षात्कार-आधारित अधिभोग सर्वेक्षण से डेटा एकत्र किया गया। विभिन्न प्रजातियों की प्रचुरता के अनुमान के लिए कोप्पल के चयनित ब्लॉकों में कैमरा ट्रैपिंग पूरी हुई। क्षेत्रकार्य को आगे बढ़ाने के लिए नए परियोजना कर्मियों की भर्ती की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: साक्षात्कार-आधारित अधिभोग सर्वेक्षण ने हमें उपरोक्त जिलों में भेड़िया, तेंदुआ, लकड़बग्घा, स्लॉथ बियर, लोमड़ी, गीदड़ और काले हिरण की अधिभोगता और वितरण का निर्धारण करने में मददगार साबित हुआ। साक्षात्कार सर्वेक्षणों की

सीमा का मानचित्र, साथ ही कैमरा ट्रैपिंग स्थान, नीचे दिखाया गया है

मील के पत्थर: अध्ययन क्षेत्र के लगभग 67,000 वर्ग किमी में से 34,000 वर्ग किमी को अध्ययन प्रजातियों के वितरण को समझने के लिए साक्षात्कार-आधारित अधिभोग सर्वेक्षण का उपयोग करके शामिल किया गया है।



अध्ययन क्षेत्र में साक्षात्कार सर्वेक्षणों और कैमरा ट्रैपिंग की सीमा साक्षात्कार-आधारित नमूनाकरण डेटा को वर्तमान में एकल-मौसम अधिभोग ढांचे में विश्लेषित किया जा रहा है। कैमरा ट्रैप डेटा का विश्लेषण जारी है।

जारी परियोजना

भावसं

निकोबार द्वीपसमूह में जालीदार अजगर, मलायोपायथन रेटिकुलटस (श्नाइडर 1801) की संरक्षण पारिस्थितिकी

वित्त पोषण स्रोत

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग –
विज्ञान और इंजीनियरिंग
अनुसंधान बोर्ड

शोधकर्ता

धनेश पी, ज्योति नागरकोटी,
टन्नू और कोडिस्वरन वी

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

जनवरी 2025

अन्वेषक

डॉ. रमेश चिन्नासामी,
डॉ. नेहरू प्रभाकरन और
डॉ. संदीप कुमार गुप्ता

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) निकोबार द्वीपसमूह में अजगरों का वितरण और जनसंख्या पारिस्थितिकी का अध्ययन करना, (ii) निकोबार द्वीपसमूह में विभिन्न वन प्रकारों, सूक्ष्मवासों और ट्रॉपिक पारिस्थितिकी में अजगरों के बारे में जानकारी उत्पन्न करना, (iii) इसके फाइलोजियोग्राफी, फाइलोजेनेटिक्स, और जनसंख्या आनुवंशिकी निष्कर्षों के लिए आणविक आनुवंशिक डेटा प्राप्त करना, और (iv) मानव-अजगर संघर्ष और सांपों के प्रति लोगों की धारणा पर जानकारी का दस्तावेजीकरण और अजगरों के लिए संभावित संरक्षण रणनीतियों की रूपरेखा तैयार करना।

प्रगति: क्षेत्र का नमूनाकरण ग्रिड सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया जिसमें कार निकोबार द्वीप और बंपोका द्वीपों में 1x1 ग्रिड का दिन और रात में नमूना लिया गया, जबकि तारासा द्वीप में 3x3 ग्रिड का नमूना लिया गया। इन सर्वेक्षणों का उद्देश्य अजगरों की जनसंख्या स्थिति और वितरण को समझना था। इसके अलावा, पिछले मुठभेड़ों से अजगर की उपस्थिति को रिकॉर्ड किया गया। अंडमान और निकोबार वन विभाग के सहयोग से कार निकोबार के स्कूलों में 'हमारे पड़ोसियों को जानना: सांपों को समझना और इनकी सराहना करना' विषय पर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए ताकि स्कूल के बच्चों को सांपों और सांप के काटने के बारे में संवेदनशील बनाया जा सके।

परिणाम और निष्कर्ष: उत्तर और मध्य समूह के निकोबार द्वीपों, विशेष रूप से कार निकोबार, कामोर्टा और कच्छल में तीन अलग-अलग द्वीपों से आनुवंशिक नमूने एकत्र किए गए। ये नमूने दो मुख्य स्रोतों से प्राप्त किए गए: सड़क दुर्घटना और संघर्ष स्थल



जहां स्थानीय निवासियों द्वारा प्रतिशोध में अजगरों को मारा गया था। सड़क दुर्घटना के नमूने सड़कों पर किए गए यादृच्छिक सर्वेक्षणों के माध्यम से एकत्र किए गए, जबकि अतिरिक्त नमूने उन निवासियों से प्राप्त किए गए जिन्होंने अजगरों के साथ संघर्ष के बारे में जानकारी प्रदान की। यह संग्रह प्रक्रिया स्थानीय समुदायों और वन्यजीवों के बीच अंतःक्रिया को उजागर करती है, जो आगे के अध्ययन के लिए मूल्यवान आनुवंशिक डेटा प्रदान करती है।

कार निकोबार द्वीप पर 145 (1x1 वर्ग किमी) ग्रिड के ग्रिड प्रणाली का उपयोग करके एक गहन सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के दौरान कुल आठ जालीदार अजगर पाए गए। केवल एक अपवाद के साथ इनमें से अधिकांश खोजें या तो अवसरवादी थीं या स्थानीय सूचनाओं पर आधारित थीं। सर्वेक्षण का एकमात्र जीवित खोज एक युवा अजगर था, जिसे रात में एक ग्रिड के भीतर खोजा गया था।

मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर बाघ रिजर्व में केन-बेतवा नदी लिंक परियोजना के संदर्भ में परिदृश्य प्रबंधन योजना का विकास और निगरानी

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी

अन्वेषक

डॉ. के रमेश और
डॉ. जे.ए. जॉनसन

शोधकर्ता

डॉ. संकर्षण चौधरी, सुप्रतिम दत्ता,
दिव्येंदु बिस्वास, कामना
पोखरिया, वंदना तोमर,
राहुल गांधी, प्रियंका कुमारी और
आशीष कुमार

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2018

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) परिदृश्य में प्रमुख प्रजातियों जैसे बाघ, गिद्ध और घड़ियाल के लिए आवास, संरक्षण और प्रबंधन को बेहतर बनाना, (ii) स्थानिक प्राथमिकता और वन-निर्भर समुदायों की भलाई के माध्यम से समग्र जैव विविधता संरक्षण के लिए परिदृश्य को समेकित करना, और (iii) एकीकृत परिदृश्य प्रबंधन संदर्भ में प्रजाति-विशिष्ट और स्थल-विशिष्ट निगरानी रणनीतियाँ प्रदान करना, जिसमें फीडबैक लूप और अनुकूली प्रबंधन विकल्प शामिल हैं।

प्रगति: इस अवधि के दौरान, योजना के लिए क्षेत्र डेटा संग्रह, विश्लेषण और लेखन पूरे किए गए। 2018-2021 में कैमरा ट्रैप डेटा से तेंदुए और लकड़बग्घा जैसे सह-शिकारियों का घनत्व अनुमान किया गया। तीन बड़े मांसाहारियों, अर्थात् बाघ, तेंदुआ और धारीदार लकड़बग्घा की अधिभोग अनुमान एक बहु-मौसम ढांचे में की गई। इसके अलावा, पांच प्रजातियों के मध्यभक्षियों का घनत्व और उनके स्थान उपयोग पैटर्न को स्थानिक उपस्थिति-अभाव मॉडल और एकल-मौसम अधिभोग ढांचे का उपयोग करके कैमरा ट्रैप डेटा से किया गया, जैसा कि पहले बताया गया था। ग्रेटर पन्ना परिदृश्य (जीपीएल) से 2018-2019 के दौरान प्राप्त कैमरा ट्रैप डेटा का विश्लेषण स्तनपायी प्रजातियों की समृद्धि और अधिभोग का अनुमान लगाने के लिए एक स्थानिक बहु-प्रजाति अधिभोग ढांचे में किया गया। प्रवासी गिद्धों (यूरेशियन ग्रिफॉन और हिमालयी ग्रिफॉन) के टेलीमेट्री डेटा का विश्लेषण प्रवासी मार्गों, विश्राम स्थल, प्रजनन और शीतकालीन गृह क्षेत्रों को समझने के लिए किया गया। इसके अतिरिक्त, निवासी गिद्धों (भारतीय गिद्ध, लाल सिर वाला गिद्ध) के गृह क्षेत्रों में मौसमी परिवर्तन का मूल्यांकन किया गया।

पहली ग्रेटर पन्ना लैंडस्केप काउंसिल बैठक 5 सितंबर 2023 को मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें एकीकृत लैंडस्केप प्रबंधन योजना (आईएलएमपी) के कार्यान्वयन, एकीकृत अनुसंधान और शिक्षण केंद्र (आईआरएलसी) की स्थापना, बजट आवंटन की स्वीकृति और कार्यान्वयन टूलकिट (बाघ संरक्षण, गिद्ध संरक्षण, क्रोकोडिलियन संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण, सामुदायिक सहभागिता) और एक स्वास्थ्य प्रबंधन योजना को जारी करने पर चर्चा की गई। एकीकृत अनुसंधान और शिक्षण

केंद्र की स्थापना के लिए लगभग 9 हेक्टेयर की रणनीतिक रूप से उपयुक्त राजस्व भूमि की आवश्यकता थी, जिसकी पहचान पन्ना बाघ रिजर्व और पन्ना सिटी के बीच की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: 2018 से 2021 तक तेंदुओं का घनत्व 23 ± 2 तेंदुआ/100 वर्ग किमी और 30 ± 2 तेंदुआ/100 वर्ग किमी के बीच भिन्न था। इसी अवधि के दौरान, धारीदार लकड़बग्घा का घनत्व 14 ± 2 लकड़बग्घा/100 वर्ग किमी और 17 ± 2 लकड़बग्घा/100 वर्ग किमी के बीच भिन्न था। 2018-2021 के दौरान बाघ, तेंदुआ और धारीदार लकड़बग्घा की बहु-मौसम अधिभोग क्रमशः 0.48 ± 0.03 से 0.74 ± 0.02 , 0.74 ± 0.02 से 0.86 ± 0.02 , और 0.70 ± 0.02 से 0.95 ± 0.03 के बीच थी। पीटीआर में, घनत्व अनुमान (2018 से 2021 तक) से पता चला कि सुनहरी गीदड़ सबसे उच्च घनत्व (19 से 30 गीदड़/100 वर्ग किमी के बीच) में पाए गए, इसके बाद जंगली बिल्लियाँ (10-16 बिल्ली/100 वर्ग किमी), भारतीय लोमड़ियाँ (5-11 लोमड़ी/100 वर्ग किमी), एशियाई वन बिल्लियाँ (4-6 एशियाई वन बिल्ली/100 वर्ग किमी), और रेटल्स (4-6 रेटल्स/100 वर्ग किमी) पाए गए। अधिभोग अनुमान से संकेत मिला कि सुनहरी गीदड़ की उच्चतम अधिभोगता (\pm एसई) (0.64 ± 0.03) थी, इसके बाद जंगल बिल्ली (0.52 ± 0.03), रेटल (0.32 ± 0.06), भारतीय लोमड़ी (0.19 ± 0.02), और एशियाई वन बिल्ली (0.19 ± 0.02) थी। इन प्रजातियों की अधिभोगता मुख्य रूप से वन आवरण, एनडीवीआई, गांव की दूरी और जल स्रोतों से प्रभावित पाई गई। जीपीएल में, यह पाया गया कि समग्र स्तनपायी प्रजातियों की समृद्धि मानव परिदृश्य के लिए मध्यम संवेदनशील थी, हालाँकि, आगे के अन्वेषण से विभिन्न मानवजनित सहविवरों के प्रजातियों की समृद्धि पर भिन्न-भिन्न प्रभावों की मात्रा का खुलासा हुआ। कई प्रजातियों ने उच्च मानव जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों से बचना पसंद किया और वनाच्छादित परिदृश्यों को पसंद किया, लेकिन कई प्रजातियों ने आवास विशिष्टता का कोई पैटर्न नहीं दिखाया, इस प्रकार उनके प्रकटन में समग्र व्यापकता को इंगित किया। बाघ संरक्षण रणनीतियों के कार्यान्वयन टूलकिट को अंतिम रूप दिया गया।

टेलीमेट्री डेटा से, प्रवासी गिद्धों के तीन विश्राम स्थल, एक तिब्बती पठार में और एक अफगानिस्तान के निकट, पहचाने गए। यूरेशियन ग्रिफॉन्स ने लगभग 2,300 किमी की यात्रा की, जिसमें मध्य एशियाई क्षेत्र (कजाखस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान) शामिल थे, जबकि हिमालयी ग्रिफॉन्स ने 2500 किमी की यात्रा की, जिसमें मंगोलिया, तियन शान क्षेत्र, तिब्बती पठार और मध्य चीन के भाग शामिल थे। निवासी गिद्धों को पीटीआर और आस-पास के क्षेत्रों में, साथ ही जीपीएल के बाहर भी, पाया गया।

बाघ संरक्षण, गिद्ध संरक्षण, क्रोकोडिलियन संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण और सामुदायिक सहभागिता के कार्यान्वयन टूलकिट, साथ ही एक-स्वास्थ्य प्रबंधन योजना, विशेषज्ञों से प्राप्त टिप्पणियों और सुझावों का पालन करने के बाद अंतिम रूप दिया गया। आईआरएलसी की स्थापना के लिए भूमि की पहचान करने

पर, भूमि को कब्जे के लिए सत्यापित किया गया, मापा गया (नौ हेक्टेयर), चिह्नित किया गया और जिला प्रशासन द्वारा फील्ड डायरेक्टर, पीटीआर को आवंटित किया गया।

मील के पत्थर: एकीकृत अनुसंधान और शिक्षण केंद्र को भोपाल, मध्य प्रदेश में अपनी पहली बैठक के दौरान जीपीएलसी द्वारा अनुमोदित और कार्यान्वयन के लिए सिफारिश की गई थी। जीपीएलसी द्वारा एकीकृत अनुसंधान और शिक्षण केंद्र के कार्यान्वयन के लिए बजट (कुल 3186 करोड़) को मंजूरी दी गई। केंद्र की स्थापना को जीपीएलसी द्वारा अनुमोदित किया गया और संबंधित विभागों (भारतीय वन्यजीव संस्थान, वन विभाग, जिला प्रशासन) के लिए आवश्यक कार्रवाई की सिफारिश की गई। केंद्र की स्थापना के लिए भूमि की पहचान और इस भूमि का आवंटन किया गया। प्रवासी गिद्धों के विचरण पैटर्न (प्रवास मार्ग, विश्राम स्थल) के बारे में प्राथमिक जानकारी प्राप्त हुई।

चांगथांग और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्यों, लद्दाख के लिए सीमाओं के तर्कसंगत नियोजन हेतु वन्यजीव मूल्यांकन और भूमि अधिकार का आकलन

वित्त पोषण स्रोत

वन्यजीव संरक्षण विभाग, संघ राज्य क्षेत्र लद्दाख

अन्वेषक

डॉ. एस सत्यकुमार,
डॉ. बिलाल हबीब और
डॉ. सल्वाडोर लिंग्दोह

शोधकर्ता

डॉ. उपमा मनराल, डॉ. अजय हुसैन, अंकित सिंह, अभिषा घोष, अपूर्वा थापा, आरिफ अहमद, हिमांशी शर्मा, प्रतीक सविता, प्रियदर्शन पांडे, प्रियदर्शिनी मित्रा, प्रतिवा बोम्जॉन, रामेश्वर घाडे, शिवानी परमार और त्रिभुवन सिंह

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2021

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) चांगथांग और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्यों में उच्च संरक्षण मूल्य श्रेणियों में क्षेत्रों की पहचान करना, (ii) चांगथांग और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्यों में उच्च संरक्षण मूल्य क्षेत्रों का सीमांकन और मानचित्रण करना (iii) स्थानीय परामर्श के माध्यम से हितधारक विश्लेषण करना और वन्यजीव मूल्यों और प्राकृतिक संसाधन निर्भरताओं का निर्धारण करना, और (iv) काराकोरम और चांगथांग वन्यजीव अभ्यारण्यों में उच्च संरक्षण मूल्य क्षेत्रों के भविष्य के संरक्षण के लिए रणनीतियाँ और कार्य योजनाएँ बनाना।

प्रगति: चांगथांग और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्यों के बड़े परिदृश्य विविध आवासों की मेजबानी करते हैं जो अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों का समर्थन करते हैं और आवश्यक पारिस्थितिक तंत्र सेवाएँ प्रदान करते हैं। हालांकि, इन क्षेत्रों को विभिन्न हितधारकों से संघर्षपूर्ण रुचियों का सामना करना पड़ता है। इन मुद्दों को हल करने के लिए, भारतीय वन्यजीव संस्थान को इन संरक्षित क्षेत्रों के तर्कसंगत नियोजन के लिए इन परिदृश्यों में उच्च संरक्षण मूल्य क्षेत्रों की पहचान करने का काम सौंपा गया है।

परियोजना इन संरक्षित क्षेत्रों को समझने और प्रबंधित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाती है। प्रारंभिक कार्य में चांगथांग और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्यों पर विस्तृत पृष्ठभूमि जानकारी एकत्र करना शामिल था, जिसमें संरक्षण महत्व के वन्यजीवों और आवासों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया था।

परिणाम और निष्कर्ष: चांगथांग और काराकोरम में, प्रत्येक श्रेणी (1-6) में उच्च संरक्षण मूल्य क्षेत्र को दी गई प्राथमिकताओं के आधार पर, परियोजना ने उच्च प्राथमिकता क्षेत्र की पहचान और सीमांकन किया। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र एचसीवी के एक या अधिक के लिए महत्वपूर्ण हैं और स्थानीय वन्यजीवों के संरक्षण के लिए सुरक्षा उपाय किए जाने चाहिए।

सुदूर संवेदन और भौगोलिक सूचना प्रणाली तकनीकों का उपयोग करते हुए, चांगथांग वन्यजीव अभ्यारण्य और काराकोरम वन्यजीव अभ्यारण्य के लिए मानचित्र उत्पन्न किए गए, जो महत्वपूर्ण वन्यजीव आवासों को उजागर करते हैं और उच्च संरक्षण मूल्य क्षेत्र के आधार पर क्षेत्रों का सीमांकन करते हैं।

मेघालय में संकटग्रस्त वनस्पतियों और जीवों का व्यापक अध्ययन और दस्तावेजीकरण

वित्त पोषण स्रोत
मेघालय जैव विविधता बोर्ड

शोधकर्ता
बिटूपन बोरुआ

आरंभ होने की तिथि
मई 2022

अन्वेषक
डॉ. अभिजीत दास और
डॉ. नवेंदु पगो

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
मार्च 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियों में पुष्प और हर्पेटोफौना विविधता का अध्ययन करना, और (ii) चयनित स्थलों पर वनस्पतियों और हर्पेटोफौना का वितरण और प्रचुरता का अध्ययन करना।

प्रगति: नोकरेक बायोस्फीयर रिजर्व, तुरा पीक रिजर्व वन, माल्की वन (शिलॉन्ग), मौसिनराम, चैरापून्जी और नॉर्पुह वन्यजीव अभ्यारण्य में क्षेत्र अध्ययन किए गए। कम ज्ञात उभयचरों के प्राकृतिक इतिहास डेटा और ध्वनियां एकत्र की गईं। स्थानिक कम ज्ञात प्रजातियों की फाइलोजेनेटिक स्थिति का आकलन किया गया है। नई प्रजातियों का वर्णन और खोई हुई प्रजातियों का पुनर्वर्णन प्रगति में है। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, कोलकाता में मौजूद उभयचर प्रजातियों के प्रकार के नमूनों की टैक्सोनोमिक अध्ययन के लिए जांच की गई। एनुरंस के लार्वा चरणों की पहचान और रूपात्मक वर्णन प्रगति में है। एक फोटोग्राफिक फील्ड गाइड पर कार्य प्रगति पर है।

परिणाम और निष्कर्ष: कुल 63 प्रजातियों के हरपीटोफौना दर्ज किए गए, जिनमें 23 वंश और सात परिवारों के 34 उभयचर प्रजातियाँ और 20 वंश और सात परिवारों के 29 सरीसृप प्रजातियाँ शामिल हैं। मेघालय में अपनी प्रकार की स्थानिकता से दो बुश मेंढक प्रजातियाँ पुनः खोजी गईं। तीन उभयचर प्रजातियाँ, *फिलाउटस केम्पीए*, *राओर्वेस्टस शिलॉन्गेंसिस* और *बुफोइड्स*

मेघालयनस, भी आईयूसीएन रेड लिस्ट में गंभीर संकटग्रस्त के रूप में दर्ज की गईं। अध्ययन अवधि के दौरान, पांच उभयचर प्रजातियाँ, *बुफोइड्स केम्पी*, *जेनोफ्रीस ऑरोपेडियन*, *लेप्टोब्राचेला नोकरेकेंसिस*, *फिलाउटस केम्पीए*, *इचथ्योफिस डारिबोकेंसिस* और दो गेको प्रजातियाँ, *सिर्तोडैक्टायलस बापमे* और *सिर्तोडैक्टायलस जैटियांसिस* मेघालय में स्थानिक दर्ज की गईं। मेघालय से वर्णित उभयचर और सरीसृप की प्रकार की स्थानिकताओं को पुनः देखा गया और संग्रहित नमूनों को वन्यजीव संस्थान के सरीसृप और उभयचर भंडार में जमा किया गया।

अध्ययन ने राज्य में स्थानिक छह फूलों की प्रजातियों को भी दर्ज किया, जैसे *पोलिएलथिया मेघालयनसिस*, *एडिनांद्रा ग्रिफिथी*, *सलासिया खासियाना*, *इम्पैटियंस खासियाना*, *लेप्टोडर्मिस ग्रिफिथी*, *इलेक्स खासियाना*। पुष्प सर्वेक्षण के दौरान, कुल 350 फूलों की प्रजातियाँ दर्ज की गईं, जो 110 परिवारों और 250 वंशों से संबंधित थीं।

मील के पत्थर: मेघालय से मूल रूप से वर्णित उभयचर और सरीसृप प्रजातियों की फाइलोजेनेटिक स्थिति का पुनः खोज और आकलन। नोकरेक बायोस्फीयर रिजर्व, नॉर्पुह वन्यजीव अभ्यारण्य, तुरा पीक रिजर्व वन जैसे संरक्षित क्षेत्रों के हर्पेटोफौना और फूलों के पौधों का पहली बार संगठित सर्वेक्षण।

मानव तेंदुआ संघर्ष शमन के लिए महाराष्ट्र के जुन्नार तालुका में तेंदुओं की जनसंख्या गतिकी, स्थान उपयोग, विचरण और आहार को समझना

वित्त पोषण स्रोत
महाराष्ट्र वन विभाग

शोधकर्ता
कुमार अंकित

आरंभ होने की तिथि
मार्च 2019

अन्वेषक
डॉ. बिलाल हबीब, डॉ. पराग
निगम और डॉ. सम्राट मोंडल

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
मार्च 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) जुन्नार वन प्रभाग में तेंदुओं की घनत्व, प्रचुरता और जनसांख्यिकीय संरचना का अनुमान लगाना। (ii) मल विश्लेषण के माध्यम से तेंदुए की खाद्य आदतों का आकलन करना। (iii) संघर्ष मामलों में शामिल तेंदुओं की पारिवारिक वंशावली की पहचान करना, और जनसंख्या गतिकी और लिंगानुपात की पहचान करना। (iv) तेंदुओं के गृह-क्षेत्र, स्थान उपयोग और प्रादेशिक व्यवहार का अनुमान लगाना, और जुन्नार वन प्रभाग के मानव-प्रधान परिदृश्य में रहने वाले तेंदुओं के प्रसार पैटर्न और आवास उपयोग का अध्ययन करना। (v) संघर्ष परिदृश्य के आधार पर संघर्ष स्थलों का विश्लेषण करना (vi) वन संसाधनों पर स्थानीय लोगों की निर्भरता का मूल्यांकन करना, और संघर्ष की मात्रा का मूल्यांकन करना।

प्रगति: तेंदुओं की जनसंख्या अनुमान के लिए कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास रू ओतुर रेंज में फरवरी 2024 में दूसरी बार कैमरा ट्रैप अभ्यास को दोहराया गया ताकि परिदृश्य में मांसाहारी की स्थिरता को समझा जा सके। सभी डेटा सॉर्टिंग और विश्लेषण की प्रक्रिया में है। अब तक हमने छह ब्लॉकों की कैमरा ट्रैपिंग और दो कैमरा ट्रैप ब्लॉकों की तीन प्रतिकृति पूरी की है। हमने विभिन्न वन प्रभागों में तेंदुए के कारण मानव मृत्यु के बीच तेंदुओं को ट्रैक करने के लिए अवसरवादी कैमरा ट्रैप अभ्यास (n=9) किया। इसके अतिरिक्त, वन विभाग के उद्देश्य, जैसे शावक पुनर्मिलन और संघर्ष परिदृश्यों को पूरा करने के लिए हमने अवसरवादी कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास (n=6) किया। कुल 11 तेंदुओं (पाँच नर और छह मादा) को रेडियो कॉलर लगाया गया, जिसमें से सात कॉलर गिर गए हैं। वन विभाग को एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है। आहार विश्लेषण और आनुवंशिक घटक के लिए जुन्नार वन प्रभाग के तहत तालुकों और रेंजों में अवसरवादी मल संग्रह किए जाते हैं।

वन अधिकारीक्षेत्रीय स्टाफ सदस्यों की कैमरा ट्रैप अभ्यास, मल संग्रह, जमीनी स्तर की टिप्पणियों और तेंदुआ-बचाव डेटा संग्रह के बारे में आवधिक प्रशिक्षण (n=8) किया गया। इन प्रशिक्षणों में 150 से अधिक विभिन्न रेंजों के स्टाफ को प्रशिक्षित किया गया। लक्षित अधिकारी/स्टाफ रेंजर, फॉरेस्टर, वन रक्षक और बीट गार्ड थे। जुन्नार वन प्रभाग में मानव-तेंदुआ संघर्ष को कम करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम (n=6) में 900 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

परिणाम और निष्कर्ष: एक कांफ्रेंस पेपर श्रॉटिंग द स्पॉट्स& शीर्षक से 'भारत के महाराष्ट्र के मानव-प्रधान परिदृश्य में तेंदुओं की पारिस्थितिकी को समझना' अप्रैल 2023 में मैसूर में आईसीसीओएन में प्रस्तुत किया गया था। 'द गली बॉय ऑफ जुन्नार: पश्चिमी महाराष्ट्र के मानव-प्रधान परिदृश्य में तेंदुओं की पारिस्थितिकी' शीर्षक से एक और प्रस्तुति वन्यजीव संस्थान के 34वीं वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में की गई।

प्रकाशन: हबीब बी, प्रवीण एनआर, निगम पी, मॉडल एस, सत्वते ए, घाणेकर आर, अंकित के (2023) जुन्नार वन प्रभाग, पुणे, महाराष्ट्र, भारत (2021-2022) में तेंदुए का स्थान उपयोग और विचरण। तकनीकी रिपोर्ट 2023/17। वन्यजीव संस्थान और महाराष्ट्र वन विभाग। पृष्ठ 36.

मील के पथर: पहली बार 11 तेंदुओं को मानव-प्रधान परिदृश्य में तेंदुए के स्थान-उपयोग और विचरण पैटर्न को समझने के लिए रेडियो कॉलर लगाया गया, इसके अतिरिक्त 4 और रेडियो कॉलर लगाए जाएंगे, जिसमें दो कॉलर कैमरा स्थापित होंगे। भारत में मानव-प्रधान परिदृश्य में गहन कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास और अभ्यास की पुनरावृत्ति के साथ पहला अध्ययन किया गया।



छवियाँ (जुन्नार अनुसंधान टीम)

कांगड़ा जिला, हिमाचल प्रदेश में पोंग डैम संरक्षित क्षेत्र और इसके पर्यावरण संवेदनशील क्षेत्र में गंभीर संकटग्रस्त गिद्ध प्रजातियों की पारिस्थितिकी और पुनर्प्राप्ति

वित्त पोषण स्रोत
पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, अनुसंधान और विकास विभाग

शोधकर्ता
माल्याश्री भट्टाचार्य और अंकित जोड़े

आरंभ होने की तिथि
नवंबर 2020

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
मार्च 2025

अन्वेषक
डॉ. गौतम तालुकदार और डॉ. आर सुरेश कुमार

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) उपग्रह टेलीमेट्री का उपयोग करके विचरण पारिस्थितिकी का अध्ययन करना, (ii) चयनित गिद्ध प्रजातियों के वितरण पैटर्न का अध्ययन करने के लिए निश मॉडलिंग, (iii) अध्ययन क्षेत्र में डाइक्लोफेनाक का प्रचलन और उनके प्रभाव का आकलन, और (iv) हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग की क्षमता निर्माण।

प्रगति: पांच सफेद-पीठ वाले गिद्धों, *जिप्स बेंगालेंसिस* को ई-ऑक्स सोलर जीपीएस-जीएसएम टैग के साथ टैग किया गया। अध्ययन क्षेत्र में डाइक्लोफेनाक के प्रचलन को ज्ञात करने के लिए कई घरों और पशु चिकित्सालयों में प्रश्नावली सर्वेक्षण किए गए हैं। हिमाचल वन विभाग के साथ दो क्षमता-निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है ताकि अध्ययन क्षेत्र में गिद्धों और उनके घोंसले और भोजन स्थलों के महत्व को संवेदनशील बनाया जा सके।

परिणाम और निष्कर्ष: 2000-2020 के जीबीआईएफ डेटा सेट और जैव-जलवायु चर का उपयोग करके नौ प्रजातियों के गिद्धों

का वर्तमान जलवायु निश मॉडल किया गया है। 2041-2060 और 2061-80 के एसएसपी परिदृश्यों को लेते हुए भविष्य के लिए संभावित वितरण का मॉडलिंग किया गया। 400 से अधिक सफेद-पीठ गिद्ध के घोंसले स्थित किए गए। अध्ययन क्षेत्र में गिद्ध जनसंख्या के खतरों की पहचान की गई है। भोजन स्थल के पास पावरलाइन के कारण टकराव और वन अग्नि के कारण घोंसले वाले पेड़ों का नुकसान महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

मील के पत्थर: कांगड़ा जिले के प्रत्येक बीट के 60 से अधिक वन रक्षक और रेंजरो को क्षेत्र में भविष्य के गिद्ध सर्वेक्षणों के लिए प्रशिक्षित किया गया। नौ प्रजातियों के गिद्धों की जलवायु निश मॉडलिंग से पता चला है कि गिद्धों के अधिकांश जलवायु निश 2041-60 और 2061-80 में घट रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र से 14 घोंसले वाली कॉलोनियों की पहचान की गई। गुप्त फार्मसी खोजों से पता चला कि ऐसे दवाओं का उपयोग किया जा रहा है, जो गिद्धों के लिए समान रूप से विषैले हैं जैसे ऐसेक्लोफेनाक, निमेसुलाइड, और केटोपरोफेन, जो शायद अज्ञानता के कारण क्षेत्र में कभी-कभी उपयोग किए जाते हैं।

तमिलनाडु के चयनित जलाशयों में और उसके आसपास सामूहिक घोंसले बनाने वाले जलपक्षियों द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आकलन

वित्त पोषण स्रोत
विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड

शोधकर्ता
एलेक्स जैकब एस.एस.

आरंभ होने की तिथि
मार्च 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
मार्च 2025

अन्वेषक
डॉ. गोपी जी.वी.

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) हेरोनरीस वाले और बिना हेरोनरीस वाले जलाशयों पर पारिस्थितिक आधारभूत रेखाएँ स्थापित करना, (ii) जल और तलछट की गुणवत्ता में पोषक

तत्वों की प्रविष्टियों के प्रभाव का निर्धारण करना, (iii) हेरोनरीस वाले और बिना हेरोनरीस वाले जलाशयों से पानी खींचने वाले कृषि क्षेत्रों में उर्वरक के उपयोग और उत्पादकता का निर्धारण



तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में कूथाकुलम पक्षी अभ्यारण्य में जलपक्षियों की एक झलक। यहाँ एक वयस्क सारस अपनी चोंच में पानी इकट्ठा करता हुआ देखा गया, संभवतः यह प्यासे चूजों के लिए अपने घोंसले में ले जाने के लिए कर रही है।



तमिलनाडु के चेंगलपट्टूर जिले में वेदांथंगल पक्षी अभ्यारण्य में अपने चूजों के साथ घोंसले बनाते हुए सारस

करना, और (iv) सामूहिक घोंसले बनाने वाले जलपक्षियों पर किसानों के दृष्टिकोण और धारणा का आकलन करना।

प्रगति: जलाशयों में पक्षी जीवों पर पारिस्थितिक आधारभूत रेखाएँ स्थापित करने के लिए डेटा दो क्षेत्र सत्रों (2022–23 और 2023–24) में एकत्र किया गया और वर्तमान में तुलना के लिए विश्लेषण किया जा रहा है। प्रारंभिक निष्कर्षों से दोनों सत्रों के बीच जलपक्षियों की उपस्थिति में भिन्नताएँ के संकेत मिले हैं। वेटांगुडी पक्षी अभ्यारण्य में 2022–23 में घोंसले बनाने का अवलोकन किया गया, लेकिन शुष्क मौसम के कारण कम जल स्तर के कारण 2023–24 में पक्षियों की पूर्ण अनुपस्थिति दर्ज की गई। इसके विपरीत, कूथाकुलम और थीरथंगल पक्षी अभ्यारण्यों में 2022–23 में कोई घोंसला दर्ज नहीं किया गया, लेकिन 2023–24 में घोंसला बनाने का अवलोकन किया गया। जल और तलछट की गुणवत्ता पर पोषक तत्वों की प्रविष्टियों के प्रभाव का निर्धारण करने के लिए, प्रोडीएसएस मल्टीपैरामीटर जल गुणवत्ता परीक्षण उपकरण का उपयोग करके परीक्षण और नियंत्रण स्थलों में गहन डेटा एकत्र किया गया। मापों में घुलित ऑक्सीजन, तापमान, चालकता, कुल क्लोरोफिल, स्यानो-क्लोरोफिल, गन्दगी, पीएच, नाइट्रेट, नाइट्राइट, क्लोराइड, और अमोनियम शामिल थे। जल नमूने प्रत्येक जलाशय के सतह और तीन विभिन्न क्षेत्रों (इनलेट, आउटलेट और घोंसले के पास) से एकत्र किए गए। इसी तरह, तलछट नमूने एकत्र किए गए। नमूनाकरण प्रक्रिया जारी है, और डेटा विश्लेषण के अधीन है।

परिणाम और निष्कर्ष: अध्ययन ने तमिलनाडु के जलाशयों में सामूहिक जलपक्षियों के घोंसले बनाने के स्थलों के चयन पर वर्षा पैटर्न के प्रभाव के महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की है। 2023–24 प्रजनन सत्र के दौरान, दक्षिणी तमिलनाडु में भारी वर्षा ने उच्च जल स्तर और घोंसले बनाने वाले जलपक्षियों की संख्या में वृद्धि की, जबकि केंद्रीय क्षेत्र में कम वर्षा के कारण पक्षियों की

अनुपस्थिति दर्ज की गई। यह इंगित करता है कि घोंसले बनाने वाले जलपक्षियों के लिए पर्याप्त भोजन आपूर्ति और शिकारी संरक्षण सुनिश्चित करने में वर्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रारंभिक विश्लेषण से संकेत मिला कि हेरोनरीस वाले और बिना हेरोनरीस वाले जलाशयों के बीच पोषक तत्व स्तरों में महत्वपूर्ण अंतर है, जो घोंसले बनाने वाले जलपक्षियों के पारिस्थितिक प्रभाव को दर्शाता है। इसके अलावा, अध्ययन स्थलों में हेरोनरीस वाले स्थलों पर इनलेट और आउटलेट बिंदुओं पर पोषक तत्व स्तरों में भिन्नता पाई गई, जो नियंत्रण स्थलों के विपरीत थी।

परिणामों का विशेष रूप से रामसर स्थलों के लिए जलाशयों और जलपक्षियों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव है। वे प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों को सूचित कर सकते हैं, टिकाऊ और समान संरक्षण प्रथाओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इन पक्षियों द्वारा प्रदान की जाने वाली सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को प्रबंधन योजनाओं में शामिल किया जा सकता है, जिससे स्थानीय समुदायों के साथ उनके संबंध को मान्यता दी जा सके। यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण ज्ञान अंतर को पूरा करता है, जो जलाशयों और पक्षी प्रजातियों के प्रति स्थानीय दृष्टिकोण और दृष्टिकोणों के बारे में नई अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। एकत्रित डेटा तमिलनाडु के 11 जलाशयों में घोंसले बनाने के मौसम के समय के बारे में समझ को बढ़ाएगा और हेरोनरीस वाले और बिना हेरोनरीस वाले जलाशयों के बीच जल और मिट्टी पैरामीटर में भिन्नताओं के ज्ञान को समृद्ध करेगा।

मील के पत्थर: 'कृषि एवियन असेंबलेज: तमिलनाडु में हेरोनरीस और कृषि भूमि के बीच संबंध की जांच' शीर्षक वाला एक पोस्टर, एलेक्स जैकब और जी.वी. गोपी द्वारा 34वें वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून में 21–22 सितंबर 2023 को प्रस्तुत किया गया।

भारत में गैंडे के शिकार संबंधित खतरों का मुकाबला करने और गैंडे की जनसंख्या प्रबंधन में सहायता के लिए गैंडा डीएनए इंडेक्सिंग सिस्टम (रोडिस) का कार्यान्वयन – चरण II

वित्त पोषण स्रोत
पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता
श्रेयुश्री कुमार

आरंभ होने की तिथि
अप्रैल 2021

अन्वेषक
डॉ. सम्राट मॉडल

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
अप्रैल 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) रोडिस – भारत डेटाबेस का विस्तार, (ii) भारतीय गैंडे की जनसंख्या के विकासवादी इतिहास को समझने के लिए माइटोजीनोम विविधताओं का आकलन, (iii) एक सींग वाले गैंडे के लिए आणविक सेक्सिंग दृष्टिकोण का विकास, (iv) गैंडा अपराध स्थल जांच के लिए अपराध जांच किट का विकास, और (v) फोरेंसिक उपयोग के लिए वैश्विक गैंडा मार्करों के पैनेल को विकसित करने के लिए भारतीय गैंडों के पूरे जीनोम का अनुक्रमण।

प्रगति: परियोजना के पहले चरण के बाद, उत्तर प्रदेश के दुधवा राष्ट्रीय उद्यान (n=88) में पुनः नमूनाकरण किया गया ताकि रोडिस-भारत डेटाबेस का विस्तार किया जा सके। इसके अतिरिक्त, 11-29 मार्च 2024 के दौरान पोबितोरा वन्यजीव अभ्यारण्य, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और ओरांग राष्ट्रीय उद्यान में पुनः नमूनाकरण किया गया ताकि इस परियोजना के डेटाबेस को मजबूत किया जा सके। असम के नए गैंडा-धारी पार्क, यानी बिस्वनाथ वन्यजीव प्रभाग और लाओखोवा-बुरहाचापोरी वन्यजीव अभ्यारण्य को भी लक्षित किया गया। कुल 591 नमूने असम से एकत्र किए गए।

सभी भारतीय गैंडे की जनसंख्या के लिए पूरे माइटोजीनोम डेटा का निर्माण किया गया, इसके बाद भारतीय गैंडों में माइटोकॉन्ड्रियल आनुवंशिक विविधता का आकलन करने के लिए पॉलीमॉर्फिक साइटों की पहचान की गई। आठ प्राइमरों का उपयोग करके 111 नमूनों के लिए 2,531bp का एक संयोजित अनुक्रम उत्पन्न किया गया ताकि फाइलोजियोग्राफी पैटर्न की जांच की जा सके। इसके बाद हमने भारतीय गैंडों के विकासवादी इतिहास को समझने के लिए वर्गों के बीच विभाजन समय का अनुमान लगाया।

गैर-आक्रामक नमूनों के लिए एक मजबूत आणविक सेक्सिंग दृष्टिकोण विकसित किया गया था, जो एक सींग वाले गैंडों के अध्ययन में एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है क्योंकि गैंडों के लिंग का ज्ञान प्रबंधन और संरक्षण कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करता है। रोडिस-भारत कार्यक्रम के आरंभ में यह कल्पना की गई थी कि वन्यजीव अपराध स्थल जांच की दिशा में प्रशिक्षण और बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण प्रयास (विशेषकर गैंडों पर ध्यान केंद्रित करते हुए) की आवश्यकता है।

इस संबंध में, हमने असम वन विभाग को पहले पांच अपराध जांच किट प्रदान किए हैं क्योंकि यह सबसे बड़ी भारतीय गैंडा जनसंख्या का आश्रयस्थल है। एक किट दुधवा वन विभाग को भी प्रदान की गई थी।

रोडिस कार्यक्रम के विस्तार को वैश्विक स्तर पर करने के लिए इस परियोजना के चरण ने अन्य प्रयोगशालाओं में परीक्षण किए जाने के लिए अधिक मजबूत प्राइमरों को डिजाइन करने के लिए भारतीय गैंडों के जीनोम अनुक्रमण का आयोजन करने की योजना बनाई थी। इस संबंध में, प्रत्येक पार्क से कई नमूनों का चयन किया गया और हमारे सहयोगी एजेंसी न्यूक्लियोम इन्फॉर्मेटिक्स, हैदराबाद को जीनोम अनुक्रमण के लिए भेजा गया। जीनोम अनुक्रमण के लिए डेटा उत्पादन पूरा हो गया है और विश्लेषण चल रहा है।

परिणाम और निष्कर्ष: दुधवा राष्ट्रीय उद्यान से एकत्र किए गए 88 नमूनों में से 43 अद्वितीय गैंडों की पहचान की गई। असम से एकत्र किए गए नमूनों से डेटा उत्पादन और विश्लेषण चल रहा है।

पूरे माइटोजीनोम डेटा स्क्रीनिंग ने भारतीय गैंडों की जनसंख्या में 21 पॉलीमॉर्फिक साइटों की पहचान की। इसके अतिरिक्त, फाइलोजियोग्राफी विश्लेषण से पता चलता है कि भारतीय गैंडे आनुवंशिक रूप से असम, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश के अनुरूप तीन मातृ वर्गों में संरचित हैं। तीन में से असम सबसे विविध है जिसमें 28 हैप्लोटाइप शामिल हैं जबकि अन्य दो वर्ग मोनोमॉर्फिक हैं। हमारे डेटा की मौजूदा साहित्य के साथ तुलना करने पर, यह पुष्टि की गई कि उत्तर प्रदेश की पुनःप्रवेशित जनसंख्या ने चितवन राष्ट्रीय उद्यान, नेपाल के मातृ लक्षण दिखाए। इसके अतिरिक्त, विभाजन तिथि अनुमान विश्लेषण से पता चलता है कि एक सींग वाले गैंडे ने अपने हाल के सामान्य पूर्वजों से ~950 हजार साल पहले और विभिन्न जनसंख्या (असम, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश/नेपाल) ~190-50 हजार साल पहले विलय कर दिया, जो भारतीय उपमहाद्वीप के पेलोबायोजियोग्राफी इतिहास के साथ मेल खाता है। इस परियोजना के लिए संबंधित वन विभाग के कर्मचारियों के लिए रोडिस-भारत फोरेंसिक किट और गैंडा मल नमूनाकरण तकनीकों के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इस वर्ष, हमें 11 गैंडा फोरेंसिक मामले के नमूने मिले और संबंधित वन विभागों को रिपोर्ट प्रदान की गई।

मील के पत्थर: यह सभी मौजूदा जनसंख्याओं से भारतीय एक सींग वाले गैंडे के माइटोजेनोम की पहली रिपोर्ट है। फाइलोजियोग्राफी और फाइलोजेनोमिक परिणाम भारतीय गैंडों में तीन 'विकासवादी महत्वपूर्ण इकाइयों (ईएसयू)' की मान्यता का सुझाव देते हैं। यह देखते हुए कि 'राष्ट्रीय संरक्षण रणनीति के लिए भारतीय एक सींग वाले गैंडे, राइनोसेरॉस यूनिर्कोर्निस, भारत सरकार, पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, 2021' के उद्देश्यों के अनुसार कई पुनःप्रवेश कार्यक्रमों की योजना बनाई गई

है (उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के राज्यों में) निकट भविष्य में, इस अध्ययन में वर्णित आनुवंशिक लक्षण संस्थापक जानवरों की पहचान करने के लिए उपयुक्त क्षेत्रों का चयन करने में बहुत सहायक होंगे।

माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए कार्य के निष्कर्षों को एक सहकर्मी समीक्षा पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। कार्य को वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में भी प्रस्तुत किया गया।

जारी परियोजना

भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वन्यजीव आवास विकास कार्यक्रम के तहत अरब सागर हम्पबैक व्हेल, मेगाप्टेरा नोवांग्लिए संकटग्रस्त प्रजाति का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना सलाहकार परिषद, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

जोशुआ धर्मराज और अभिषेक बेट्टास्वामी

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2023

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

जून 2025

अन्वेषक

डॉ. जेए जॉनसन, डॉ. नेहरू प्रभाकरन, सुश्री चिन्मया घाणेकर और डॉ. के. शिवाकुमार, पांडिचेरी विश्वविद्यालय

भावसं

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) मछुआरों के स्थानीय ज्ञान के आधार पर भारत के पश्चिमी तट के साथ अरब सागर हम्पबैक व्हेल हॉटस्पॉट की पहचान करना, और (ii) ध्वनिक उपकरणों का उपयोग करके भारत के पश्चिमी तट में निवास करने वाले विभिन्न अरब सागर हम्पबैक व्हेल जनसंख्या का दस्तावेजीकरण करना।

प्रगति: पश्चिमी तट के साथ व्हेल वितरण स्थिति को समझने के लिए, जनवरी 2023 और जून 2023 के बीच मछुआरों के बीच प्रश्नावली सर्वेक्षण किया गया। भारत के पश्चिमी और पूर्वी तट पर कुल 35 प्रमुख मछली लैंडिंग क्षेत्रों का चयन किया गया, और अब तक, जून 2023 के अंत तक 27 स्थलों को सफलतापूर्वक पूरा किया गया, जिसमें गुजरात के 4 स्थान, महाराष्ट्र के छह, गोवा के दो, कर्नाटक के छह, केरल के सात और तमिलनाडु के दो स्थान शामिल हैं। ये सभी स्थल प्रमुख मछली लैंडिंग केंद्र हैं जिन्हें गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाले जहाजों की उच्च गतिविधि के कारण लक्षित किया गया था। 6 राज्यों के 23,114 जहाजों में से 2407 साक्षात्कार (गुजरात— 601, महाराष्ट्र— 408, गोवा—165, कर्नाटक— 745, केरल— 381, तमिलनाडु— 107) किए गए। पश्चिमी तट के साथ 2407 मछुआरों के सर्वेक्षण ने चार मौसमों में अरब सागर हम्पबैक व्हेल के दिखाई देने की तुलना कीरु सर्दी,

गर्मी, मानसून और मानसून के बाद। सर्दियों में, गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक में अरब सागर हम्पबैक व्हेल को अधिक देखा गया। गर्मियों में, कर्नाटक में प्रमुखता से देखा गया। मानसून के बाद की अवधि में, कर्नाटक और तमिलनाडु में अरब सागर हम्पबैक व्हेल का वितरण कम हो गया था। मानसून के मौसम में, तमिलनाडु और केरल ही ऐसे राज्य थे जहाँ अरब सागर हम्पबैक व्हेल का वितरण देखा गया, संभवतः प्रतिबंध अवधि के दौरान गहन मछली पकड़ने में सक्षम बनाने के लिए नाव इंजनों में संशोधन के कारण। हमारे विश्लेषण के आधार पर, भारत के पश्चिमी तट के साथ सबसे अच्छे संभावित हॉटस्पॉट गुजरात में पोरबंदर, महाराष्ट्र में हरनई, कर्नाटक में तेंगिनागुंडी, केरल में बेमपोरे और तमिलनाडु में चिन्नमुट्टम हैं।

परिणाम और निष्कर्ष इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण परिणाम भारत के पश्चिमी तट के साथ अरब सागर हम्पबैक व्हेल जनसंख्या के स्थानिक-कालिक वितरण पैटर्न की स्थापना है।

मील के पत्थर भारत के पश्चिमी तट के साथ अरब सागर हम्पबैक व्हेल जनसंख्या के स्थलों के हॉटस्पॉट स्थापित किए गए हैं। अरब सागर हम्पबैक व्हेल के विचरण और प्रवास को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्थलों में हाइड्रोफोन स्थापित किए गए हैं।

वन्यजीव आवासों का एकीकृत विकास – चयनित संकटग्रस्त प्रजातियों के आवास की निगरानी

वित्त पोषण स्रोत
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता
डॉ. विवेक सरकार, स्नेहा पांडे और हिमानी सिंह खाती

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2022

अन्वेषक
डॉ. गौतम तालुकदार

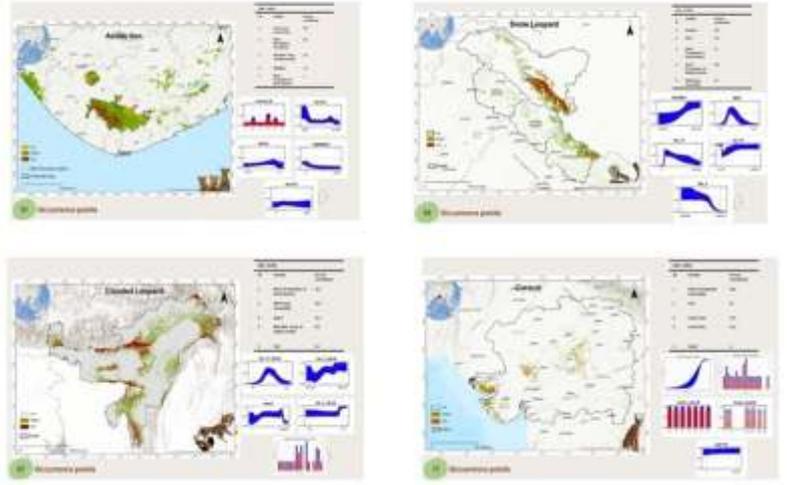
पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
जुलाई 2025

उद्देश्य: वन्यजीव आवासों का एकीकृत विकास –चयनित आवास के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) चयनित वन्यजीव आवासों का एकीकृत विकास प्रजातियों के वितरण की मॉडलिंग, (ii) परियोजना के तहत शामिल की गई चयनित प्रजातियों की आवास की जानकारी का आकलन, और (iii) क्षेत्र सत्यापन।

प्रगति: दस्तावेजों/उत्पादों/मानचित्रों की तैयारी: (i) परियोजना के 30 प्रजातियों के लिए विस्तृत तथ्य पत्रक, (ii) 30 प्रजातियों के लिए विस्तृत आवास आवश्यकताओं का लेखन, और (iii) चयनित प्रजातियों के लिए प्रजाति वितरण मॉडलिंग।

परिणाम और निष्कर्ष: परियोजना के निम्नलिखित परिणाम हैं: (i) 12 प्रजातियों (9 स्तनधारी और 3 पक्षी) के लिए मानचित्र तैयार किए गए (ii) ओलिव रिडले समुद्री कछुए के लिए आवास निगरानी प्रोटोकॉल, और (iii) कार्यक्रम में शामिल सभी प्रजातियों के लिए पोस्टर।

Results - SDM



भारत के अत्यधिक खंडित तराई घासभूमि में हिस्पिड खरगोश, कैप्रोलागस हिस्पिडस के आवास, जनसंख्या और आनुवंशिक संरचना का परिदृश्य स्तर पर आकलन

वित्त पोषण स्रोत
विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड, दुलीप माठाई प्रकृति संरक्षण फ़ैलोशिप कार्यक्रम, प्रकृति अनुसंधान फ़ैलोशिप

अन्वेषक
डॉ. सुतीर्थ दत्ता, डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम और डॉ. अनुकुल नाथ

आरंभ होने की तिथि
मई 2020

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
अगस्त 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) भारत में हिस्पिड खरगोश के वितरण क्षेत्र में स्थल अधिभोग और आवास संबंधों को समझना, (ii) हिस्पिड खरगोश की प्रचुरता का अनुमान लगाने के लिए संकेत आधारित और व्यक्तिगत पहचान-आधारित दृष्टिकोणों

को एकीकृत करके एक परिष्कृत जनसंख्या आकलन विधि का कार्यान्वयन, और (iii) भारत में वितरण क्षेत्र के भीतर हिस्पिड खरगोश की जनसंख्या आनुवंशिक संरचना को समझना।

प्रगति: मानस राष्ट्रीय उद्यान, मानस आरक्षित वन, बर्नाड़ी

वन्यजीव अभ्यारण्य (असम), डेरिंग स्मारक वन्यजीव अभ्यारण्य (अरुणाचल प्रदेश), जलदापाड़ा राष्ट्रीय उद्यान (पश्चिम बंगाल), दुधवा राष्ट्रीय उद्यान और कतरनियाघाट वन्यजीव अभ्यारण्य (उत्तर प्रदेश) के लिए हिस्पिड खरगोश के वितरण, आवास अधिभोग और घनत्व पर डेटा संग्रह पूरा हो गया। डेटा सेट को घासभूमि क्षेत्रों में एक प्रणालीगत ग्रिड (2x2 किमी) डिजाइन में अधिभोग ढांचे का उपयोग करके एकत्र किया गया। प्रजातियों की पहचान/गैर-पहचान डेटा को ट्रेल्स (स्थानिक सर्वेक्षण) के खंडों के साथ मल समूहों को रिकॉर्ड करके उत्पन्न किया गया ताकि पर्याप्त स्थानिक कवरेज प्राप्त किया जा सके। हिस्पिड खरगोश के मल को उनके आकार और आकार के आधार पर अलग-अलग किया गया। प्रत्येक ग्रिड में, दो स्वतंत्र व्यक्तियों की मदद से एमआरडीएस (मार्क-रिकैप्चर दूरी नमूनाकरण दृष्टिकोण) का पालन करते हुए हिस्पिड खरगोश के मल के लिए 0.5–2.5 किमी क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया। इसके बाद, अवलोकन स्थल पर ताजे मलों को चिह्नित किया गया और दो-चार सप्ताह के अंतराल पर और विघटन की दर की स्थिति दर्ज की गई। विभिन्न अध्ययन स्थलों से एकत्र किए गए ताजे मलों से डीएनए निकाला गया और विश्लेषण प्रगति पर है। इसके अलावा, हमने मानस राष्ट्रीय उद्यान के बंसबाड़ी रेंज में 1.5x1.5 किमी घासभूमि भूखंड का चयन किया और गहन मल नमूनाकरण किया, और नमूनाकरण प्रयास को प्रणालीबद्ध तरीके से वितरित करने और इस भूखंड को 50x50 मी (0.5 हे.) नमूनाकरण इकाइयों में विभाजित किया। ताजे मल नमूने इन 0.5 हे. भूखंडों में से प्रत्येक से एकत्र किए गए, और आनुवंशिक विश्लेषण वर्तमान में जारी है।

परिणाम और निष्कर्ष: आठ नमूना स्थलों में से चार में हिस्पिड खरगोश की उपस्थिति की पुष्टि हुई: मानस राष्ट्रीय उद्यान, मानस आरक्षित वन, जलदापाड़ा राष्ट्रीय उद्यान, और दुधवा राष्ट्रीय उद्यान। इन स्थलों में, सबसे अधिक संख्या में हिस्पिड खरगोश के मल समूह माना परिदृश्य (5,830) में पाए गए, इसके बाद जलदापाड़ा (255) और दुधवा राष्ट्रीय उद्यान (224) में। ताजे मलों पर किए गए डीएनए विश्लेषण ने इन स्थलों में हिस्पिड खरगोश की उपस्थिति की पुष्टि की। बर्नाड़ी वन्यजीव अभ्यारण्य, डेरिंग स्मारक वन्यजीव अभ्यारण्य और कतरनियाघाट वन्यजीव अभ्यारण्य में हिस्पिड खरगोश के कोई संकेत नहीं मिले। बर्नाड़ी की घासभूमि हाल के वर्षों में अत्यधिक क्षीण हो गई है और आक्रामक *क्रोमोलेना ओडोराटा* हावी है। यह भी देखा गया कि

बर्नाड़ी दक्षिणी सीमा क्षेत्र के नदीघाटी घासभूमियों के छोटे पैच और डेरिंग और कतरनियाघाट वन्यजीव अभ्यारण्य के घासभूमि पैच मवेशी चराई द्वारा अत्यधिक खतरे में हैं। परिदृश्य-स्तरीय विश्लेषण ने दिखाया कि घासभूमि आवरण का प्रतिशत, उसके बाद आग की घनत्व, संरक्षित क्षेत्र से दूरी, और वार्षिक औसत तापमान हिस्पिड खरगोश की उपस्थिति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण थे। माइक्रो-स्केल पर, खरगोश उच्च घास प्रजातियों के समूहों को पसंद करता है, जिनमें सैकेरम नारेंगा हावी है। प्रजातियों के लिए उपलब्ध अनुमानित आवास क्षेत्र लगभग (295.56) 300 वर्ग किमी से कम है। मानस परिदृश्य प्रजातियों के वितरण क्षेत्र के भीतर 50% से अधिक उपयुक्त क्षेत्र है। प्राकृतिक स्थितियों में, औसत मल विघटन दर का अनुमान (136.52 ± 17.43 दिनय सीवी=12.77%) था। मानस परिदृश्य में हिस्पिड खरगोश की घनत्व 95% सीआई (0.14 ± 0.019 व्यक्ति/हेक्टेयरय सीवी: 13.8%) पर 0.10–0.20 व्यक्ति/हेक्टेयर से भिन्न होती है। भुयानपारा रेंज में सबसे अधिक घनत्व है, इसके बाद बंसबाड़ी और कहिटेमा रेंज हैं। मानस एनपी और आसपास के मानस आरएफ की पानबारी रेंज में सबसे कम घनत्व है। हिस्पिड खरगोश की सभी ज्ञात जीवित जनसंख्या लगभग सभी नदीघाटी घासभूमि के छोटे क्षेत्रों में बाढ़ के मैदानों में सीमित हैं। हालाँकि, प्रजातियों का आवास इन नदियों के रास्तों में मामूली परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील है, जो आवास को नष्ट कर सकता है। इसके अलावा, आसपास के क्षेत्रों में मानव जनसंख्या का दबाव वैकल्पिक आवास को असंभव बनाता है। हिस्पिड खरगोश के भोजन की प्राथमिकता पर मेटाजीनोमिक्स विश्लेषण ने सैकेरम प्रजातियों की ओर इंगित किया।

मील के पत्थर: हम सबसे महत्वपूर्ण जलवायु, परिदृश्य, और मानवजनित चर को शामिल करके एक मजबूत और सहमति आवास चयन प्रस्तुत करते हैं। एक गैर-आक्रामक और संकेत-आधारित सर्वेक्षण का उपयोग करके दुर्लभ संकटग्रस्त हिस्पिड खरगोश की निगरानी के लिए एक वैज्ञानिक रूप से विश्वसनीय प्रणाली विकसित की गई है। शैक्षिक और आउटरीच कार्यक्रमों का निरंतर कार्यान्वयन क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के संबंध में स्थानीय समुदायों के बीच ज्ञान के प्रसार में योगदान दिया है। आहार और भोजन की प्राथमिकताओं का विश्लेषण स्थल-विशिष्ट घासभूमि समूहों के संरक्षण को प्राथमिकता देने और प्रबंधित करने में सहायता करेगा।

उत्तराखंड राज्य में घरेलू गौरैया, पासर डोमेस्टिकस की पारिस्थितिकी और जनसंख्या स्थिति पर एक व्यापक अध्ययन

वित्त पोषण स्रोत
उत्तराखंड राज्य वन विभाग

शोधकर्ता
रेनु बाला और शाफाय खालिद

आरंभ होने की तिथि
अप्रैल 2021

अन्वेषक
डॉ. आर सुरेश कुमार और
डॉ. धनंजय मोहन

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
सितंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) राज्य भर में ऊंचाई के ग्रेडिएंट के साथ चयनित स्थलों पर घरेलू गौरैया की जनसंख्या और घोंसले बनाने की पारिस्थितिकी को समझना, (ii) घरेलू गौरैया जनसंख्या की आनुवंशिक संरचना का अध्ययन करना ताकि उपजनसंख्याओं की उपस्थिति का पता लगाया जा सके, यदि कोई हो, और उत्तराखंड हिमालय में उनका विकासवादी इतिहास, और (iii) उत्तराखंड राज्य में घरेलू गौरैया में कीटनाशकों की उपस्थिति और घरेलू गौरैया जनसंख्या में गिरावट के संभावित संबंध की जांच करना।

प्रगति: हमने प्रजनन और गैर-प्रजनन दोनों मौसमों में, राज्य भर में विभिन्न ऊंचाइयों पर व्यापक बिंदु गणना सर्वेक्षण किए। प्रजनन विज्ञान को समझने के लिए, हमने पुरोला, रुद्रपुर और हरिद्वार में घोंसले की निगरानी के लिए अतिरिक्त घोंसला बॉक्स को रणनीतिक रूप से स्थापित किया। इसके अलावा, हमने निरंतर निगरानी सुनिश्चित करते हुए, पिछले वर्ष के पूर्व-स्थापित घोंसला बॉक्स से प्रत्येक के घोंसले का डेटा रिकॉर्ड किया। जनसंख्या आनुवंशिक मूल्यांकन के लिए, राज्य के विभिन्न ऊंचाइयों के 20 से अधिक स्थलों से मापमानक माप और रक्त के नमूने एकत्र किए गए। इसके अतिरिक्त, पंख के नमूने भी पिछले वर्ष के दौरान लिए गए थे, जिन्हें विभिन्न ऊंचाइयों पर अच्छी क्षमता में विविधताओं का अध्ययन करने के लिए विश्लेषित किया गया। इसके अलावा, प्रजातियों की उच्च ऊंचाई के लिए शारीरिक अनुकूलन को समझने के लिए, रक्त के नमूनों से हीमोग्लोबिन सांद्रता और हीमाटोक्रिट स्तर का मूल्यांकन चल रहा है।

परिणाम और निष्कर्ष: उत्तराखंड में क्षेत्र सर्वेक्षणों ने घरेलू गौरैया के वितरण, प्रचुरता और आवास प्राथमिकताओं को उजागर किया। प्रजनन मौसम में सापेक्ष गणना 3.82/बिंदु और गैर-प्रजनन मौसम में 4.64/बिंदु थी, ग्रामीण आवासों में घोंसले बनाने के स्थानों और खाद्य संसाधनों की प्रचुरता के कारण उच्च जनसंख्या को समर्थन मिला। हमारे बिंदु गणना सर्वेक्षणों ने दर्शाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में सभी ऊंचाइयों और मौसमों में लगातार अधिक घरेलू गौरैया थीं, जिससे उनके जनसंख्या पर आवास लक्षणों के प्रभाव को उजागर किया गया। पीली पड़ाव और मैकोटी जैसे स्थलों के बीच घोंसला बॉक्स अधिभोग में भिन्नता ने घोंसला

चयन प्राथमिकताओं पर आवास लक्षणों के प्रभाव को उजागर किया। पारंपरिक आवास और गांव का आकार अधिभोग को प्रभावित करते हैं, प्राकृतिक घोंसला स्थलों को अक्सर कृत्रिम बॉक्स की तुलना में पसंद किया जाता है, जैसा कि माला गाँव में देखा गया। शहरी और ग्रामीण स्थलों के बीच घोंसला बॉक्स अधिभोग में विपरीत रुझान इंगित करते हैं कि जबकि शहरी क्षेत्रों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, घोंसला बॉक्स कार्यक्रम निरंतर प्रयासों के साथ गौरैया की जनसंख्या को धीरे-धीरे बढ़ा सकते हैं। हिमालय में 3,200 मीटर की ऊंचाई के ग्रेडिएंट में, हमने पाया कि घरेलू गौरैया आकार और पंख संरचना दोनों में महत्वपूर्ण अंतःप्रजाति विविधता दिखाती हैं, जो बढ़ते ठंडे तापमान के लिए अनुकूलन का संकेत देती हैं।

घरेलू गौरैया उच्च ऊंचाई पर बड़ी आकार की थीं और उनके पास अधिक ऊनी पृष्ठीय पंख थे, जो संभवतः उच्च ऊंचाई पर निम्न तापमान से निपटने के लिए थर्मल लाभ प्रदान करते हैं। हीमाटोलॉजिकल मूल्यांकन ने दर्शाया कि उच्च ऊंचाई पर हीमोग्लोबिन और हीमाटोक्रिट स्तर दोनों में वृद्धि प्रदर्शित हुई, जो उच्च ऊंचाई पर प्रचलित ऑक्सीजन-घटित परिस्थितियों से निपटने के लिए ऑक्सीजन-ले जाने की क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से एक स्पष्ट शारीरिक समायोजन का सुझाव देती है। ये निष्कर्ष गौरैया के ऑक्सीजन वहन को सुविधाजनक बनाने में बढ़ी हुई एरिथ्रोपोइटिक गतिविधि की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हैं जो हाइपोक्सिक वातावरण में रहते हैं।

मील के पत्थर: उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों में किए गए इस अध्ययन ने स्थानीय लोगों के बीच घरेलू गौरैया संरक्षण के महत्व के बारे में महत्वपूर्ण जन जागरूकता पैदा की है। निवासी सक्रिय रूप से इस प्रयास में शामिल हो रहे हैं, अपने घरों पर स्थापित घोंसला बॉक्स की निगरानी कर रहे हैं और डेटा संग्रह में योगदान दे रहे हैं। इस पहल ने पर्याप्त घोंसला स्थान प्रदान करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को उजागर किया है और घरेलू गौरैया की जनसंख्या स्थिति और घोंसला पारिस्थितिकी में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की है। समुदाय को शामिल करके, परियोजना ने स्थानीय वन्यजीवों के प्रति जिम्मेदारी और संबंध की भावना को बढ़ावा दिया है।

भारत में चीते को वापस लाना

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के माध्यम से पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अन्वेषक

श्री कमर कुरैशी,
डॉ. बिवाश पांडव,
डॉ. सुतीर्थ दत्ता और
डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम

शोधकर्ता

बिपिन सी.एम.,
डॉ. सनथ के. मुलिया (पशु चिकित्सा अधिकारी – राष्ट्रीय

चिड़ियाघर, दिल्ली, एनटीसीए द्वारा परियोजना में प्रतिनियुक्त), हर्षवर्धन सिंह राठौड़, केशव गोगोई, पारुल सेन, मौलिक सरकार, सुलतान, नूपुर रौतेला, केशा पटेल, डॉ. सुमित पटेल, गुनासेखरण एम., गीत आनंद काले, हिमांशी साहू, सेरीन ई. रिन्जाह, स्वाति भट्ट, निकुंज वसावा, शिलादित्य आचार्य, निवेदिता बसु, यश देशपांडे, लक्ष्मण गुणकुला, आशीष जोसेफ, अक्षय राणा, सूरज चौहान, अमित कुमार, प्रतीक शर्मा, श्रेष्ठ सिंह, पल्लवी शर्मा

आरंभ की तिथि

नवंबर 2020

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

नवंबर 2025 (चरण-1)

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) ऐतिहासिक सीमा के सुरक्षित आवासों में प्रजनन चीता जनसंख्या स्थापित करना और इनका प्रबंधन एक मेटापॉपुलेशन के रूप में करना, (ii) चीता को एक करिश्माई प्लैगशिप और छत्र प्रजाति के रूप में उपयोग करना ताकि खुले वन और सवाना प्रणालियों को पुनर्स्थापित करने के लिए संसाधन जुटाए जा सकें, जो इन पारिस्थितिक तंत्रों से जैवविविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को लाभान्वित करेंगे, (iii) चीता संरक्षण क्षेत्रों में पारिस्थितिकी तंत्र पुनर्स्थापना गतिविधियों के माध्यम से कार्बन अवशोषण करने की भारत की क्षमता को बढ़ाना और इस प्रकार वैश्विक जलवायु परिवर्तन शमन लक्ष्यों की दिशा में योगदान देना, (iv) स्थानीय समुदायों की आजीविका को बढ़ाने के लिए इको-विकास और इको-पर्यटन के अवसर का उपयोग करना, और (v) चीता या अन्य वन्यजीवों द्वारा स्थानीय समुदायों के साथ किसी भी संघर्ष को त्वरित रूप से मुआवजा, जागरूकता और प्रबंधन कार्यों के माध्यम से प्रबंधित करना ताकि समुदाय का समर्थन प्राप्त हो सके।

प्रगति: 2021–22 के दौरान नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से कुनो राष्ट्रीय उद्यान में लाए गए 20 चीतों के समूह से, वर्तमान में दो की निगरानी की जा रही है, और 11 जानवरों को उनके 12 शावकों के साथ सॉफ्ट रिलीज में रखा गया है, जबकि सात चीतों की विभिन्न प्राकृतिक कारणों से मृत्यु हो गई। पिछले वर्ष से एक शावक को हाथ से पाला जा रहा है। सभी चीतों की नियमित रूप से उपग्रह कॉलरों की मदद से ट्रैकिंग टीमों द्वारा निगरानी की जा रही है, जो अतिरिक्त पारिस्थितिकी संबंधी जानकारी एकत्र करने में सक्षम बनाते हैं। शिकार, सह-शिकारियों और आवास की

निगरानी की जा रही है। अगली चीता रिहाई के स्थल के रूप में गांधीसागर वन्यजीव अभ्यारण्य का आकलन किया गया और तैयारियां चल रही हैं। गांधीसागर में पाँच तेंदुओं को पकड़ा गया और रेडियो कॉलर लगाया गया। इसके अतिरिक्त, कुनो में, तीन तेंदुए, तीन जंगल बिल्लियाँ, दो सियार और पाँच चीतलों को पकड़ा गया और रेडियो कॉलर लगाया गया और पारिस्थितिकी तंत्र प्रतिक्रिया को समझने के लिए उनकी निगरानी की जा रही है। इन दो स्थलों के वन कर्मचारियों के लिए सर्वेक्षण विधियों और उपकरणों पर कई प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

परिणाम और निष्कर्ष: गांधीसागर वन्यजीव अभ्यारण्य में चीता को लाने के लिए एक कार्य योजना तैयार की गई थी, जो किए गए आकलन पर आधारित थी। कुनो में किए गए कैमरा ट्रैप नमूनाकरण से तेंदुओं और लकड़बगघों की घनत्व क्रमशः 27.05 (2.9 एसई) प्रति 100 वर्ग किमी और 13.35 (1.6 एसई) प्रति 100 वर्ग किमी अनुमानित है। गांधीसागर में तेंदुओं की घनत्व क्रमशः पश्चिम और पूर्वी रेंज में 27.6 (3.3एसई) और 16.4 (2.3एसई) प्रति 100 वर्ग किमी अनुमानित है।

मील के पत्थर: विश्व के पहले वाइल्ड टू वायर अंतरमहाद्वीपीय चीता स्थानांतरण के रूप में भारत में जीवित मेटापॉपुलेशन स्थापित करने की दिशा में प्रगति हो रही है, 2023–24 के दौरान 14 शावकों का जन्म हुआ, जिनमें से 12 शावकों को सॉफ्ट रिलीज में उनकी माताओं के साथ रखा गया है। कुनो में उनकी रिहाई के बाद डेढ़ साल से अधिक समय बाद, वर्तमान में कुनो में कुल 26 चीते (13 वयस्क और 13 शावक) हैं।

भारत में डुगोंग और उनके आवासों की पुनर्प्राप्ति – एक एकीकृत सहभागी दृष्टिकोण

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना सलाहकार परिषद, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्वेषक

डॉ. जेए जॉनसन, डॉ. नेहरू प्रभाकरन, चिन्मया घाणेकर और डॉ. के. शिवाकुमार (पांडिचेरी विश्वविद्यालय)

शोधकर्ता

डॉ. ओशिन चक्रवर्ती,
डॉ. स्वप्नाली गोले, समीहा पठान,
सागर राजपुरकर,
सुमित प्रजापति, प्राची हटकर,
स्वेता अय्यर, श्रवनी बोस, वाबेश त्रिपुरा, अनघा बिजू, आकर्श अग्रवाल, गरिमा धीमान और सोनी नेगी

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2016

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) प्रजातियों का संरक्षण और प्रबंधन: उन्नत जनगणना तकनीकों के माध्यम से डुगोंग जनसंख्या स्थिति का आकलन करना, महत्वपूर्ण आवासों की पहचान करना, खतरों का वर्गीकरण करना और स्थल-विशिष्ट निगरानी योजना विकसित करना, (ii) आवास का संरक्षण और प्रबंधन: महत्वपूर्ण डुगोंग आवासों की विशेषता बनाना, सहभागी दृष्टिकोण के माध्यम से खतरों को कम करना और अप्रत्यक्ष खतरों को कम करना, (iii) डुगोंग और उनके आवासों का सहभागी प्रबंधन प्रजातियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और स्थानीय समुदायों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना, अन्य हितधारकों को संरक्षण प्रयासों में शामिल करना और राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता फैलाकर डुगोंग संरक्षण कार्यक्रम को बढ़ाना, और (iv) राज्य वन विभाग और स्थानीय समुदायों की क्षमता निर्माण: राज्य वन विभाग के कर्मचारियों की क्षमता को बढ़ाना, दीर्घकालिक आवास निगरानी के लिए कर्मचारियों और स्थानीय समुदायों को पानी के भीतर सर्वेक्षण में प्रशिक्षित करना।

प्रगति: डुगोंग का दिखना: गुजरात में मछुआरों ने चंक और पगा रीफ्स के पास तीन डुगोंग को देखने की सूचना दी, जिसमें मान मारुड़ी और पगा के पास एक को बचाया भी गया है। अधिकांश मछुआरों, जो धनी-गांधीयो बेट और पिरोटन द्वीप जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं, ने कभी डुगोंग नहीं देखा था। रेकार्ड (n=51) ने नाव से टकराने और जाल से उलझने के लिए संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान करने में मदद की। इसके अलावा, डुगोंग स्वयंसेवी नेटवर्क से तीन स्थलों पर निरंतर दृष्टि रिकॉर्ड प्राप्त हुए।

हवाई सर्वेक्षण: अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में, 167 हवाई उड़ानों ने उत्तर, मध्य और दक्षिण अंडमान में 27 डुगोंग दर्ज किए। वीडियो का विश्लेषण दिखने की दर और व्यवहार का अनुमान लगाने के लिए किया जा रहा है। महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान में डुगोंग की 1.85 वर्ग किमी प्रति 1 बार दिखने की दर थी।

समुद्री घास से जुड़े बैटिक मैक्रोफाउन: गुजरात में सर्वेक्षण से पता चला कि समुद्री घास के मैदानों में इनफॉउनल मैक्रोबेंटोस की

उच्च घनत्व और विविधता है। महत्वपूर्ण डुगोंग चारा स्थलों जैसे भैदर द्वीप में उच्च प्रचुरता देखी गई। मौसमी भिन्नता को हैलोफिला प्रजातियों में देखा गया, जिसमें 149 प्रजातियों को दर्ज किया गया, जिनमें से अधिकांश घोंघे थे।

समुद्री घास में पोषक तत्व डुगोंग संरक्षण रिजर्व में समुद्री घास के क्षेत्र के पोषक तत्व के रूप में कार्य करते हैं। आठ समुद्री घास प्रजातियों में से, साइमोडोसीआ सेरुलाटा में सबसे अधिक पोषक तत्व सामग्री थी। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में, पोषक तत्व विश्लेषण ने विभिन्न क्षेत्रों में जैविक कार्बन, सोडियम, पोटेशियम, नाइट्रोजन और फॉस्फोरस के स्तर में भिन्नता दिखाई।

आउटरीच और जागरूकता कार्यक्रम: गुजरात में, 26 आउटरीच कार्यक्रम और 12 हितधारक बैठकों ने 2,103 लोगों को शिक्षित किया। तमिलनाडु और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में क्रमशः 36 और 43 आउटरीच कार्यक्रम थे, जिनमें 2,500 से अधिक व्यक्ति शामिल थे।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम: 31 कार्यक्रमों ने तीन क्षेत्र स्थलों में समुद्री जैवविविधता की निगरानी और वैकल्पिक आजीविकाओं के लिए 727 लोगों को प्रशिक्षित किया, जिनमें हितधारक परामर्श, कार्यशालाएं और क्षेत्रीय दौरे शामिल थे।

बचाव और रिहाई: तमिलनाडु में मछुआरों द्वारा कुल 3 जीवित डुगोंग को बचाया और रिहा किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: वर्ष 2023–2024 के दौरान कुल 6 शोध प्रकाशन किए गए।

हटकर पी, पटेल एस, पठान एस, शिवाकुमार के, वच्छराजानी के, प्रभाकरन एन, जॉनसन जेए (2023). **भारत में कच्छ की खाड़ी में मेगाहर्बिवोर डुगोंग डुगोंग के स्ट्रैंडिंग रिकॉर्ड की समीक्षा – गुजरात में समुद्री स्तनधारियों के संरक्षण के लिए एक विचार।** *जर्नल ऑफ सर्वे इन फिशरीस साइंसेज*, 10(2): 62–77.

गोले एस, गाइधनी पी, बोस एस, पांडे ए, जॉनसन जेए, कप्पूसामी एस (2022). **उत्तर अंडमान द्वीप समूह से वैश्विक रूप से**

संकटग्रस्त महासागरीय टर्फ घास हैलोफिला बेक्केरी अशरसन, 1871 का नया वितरण रिकॉर्ड समुद्री घास अन्वेषण सर्वेक्षणों के महत्व को उजागर करता है। *जर्नल ऑफ थ्रेंटेंड टैक्सा*, 14(1): 20406–20412.

गोले एस, प्रजापति एस, प्रभाकरन एन, जॉनसन जेए, शिवाकुमार के (2023). अंडमान द्वीप समूह में डुगोंग डुगोंग के प्राकृतिक इतिहास पर झुंड आकार गतिकी और अवलोकन। *एक्वाटिक मैमल्स*, 49(1).

गोले एस, कप्पूसामी एस, दास एच, जॉनसन जेए (2023). अंडमान द्वीपों से टेप समुद्री घास एनहैलस एकोरोइड्स (एलफ) रॉयल की फूल और फलन: पुष्पक्रम कलियों से लेकर प्रस्फुटित फलों तक के अवलोकन। *जर्नल ऑफ थ्रेंटेंड टैक्सा*, 15(1): 22494–22500।

गोले एस, प्रजापति एस, प्रभाकरन एन, दास एच, कप्पूसामी एस, जॉनसन जेए (2023). अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में प्रबंधन सिफारिशों के साथ समुद्री घास के मैदानों की स्थानिक विविधता और आवास विशेषताएँ। *फ्रंटियर्स इन मरीन साइंस*, 10.

गोले एस, प्रभाकरन एन, प्रजापति एस, दुधट एस, दास एच, कप्पूसामी एस, जॉनसन जेए (2024)। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में विशेष रूप से सुनामी के बाद की स्थिति पर जोर देने के साथ समुद्री घास समुदायों में अक्षांशीय भिन्नता। *प्लोस वन*, 19(3): e0300654.

तमिलनाडु में आउटरीच और जागरूकता अभियानों के प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष प्रयासों के रूप में कुल 21 डुगोंग को बचाया और रिहा किया गया है। 2017 के बाद से, मछुआरों के 700 से अधिक स्कूल बच्चों को डुगोंग एम्बेसडर का खिताब दिया गया है और डुगोंग छात्रवृत्ति कार्यक्रम के हिस्से के रूप में उन्हें दो साल के लिए प्रति माह 500 रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई है।

एससीयूबीए प्रशिक्षण कार्यक्रम: एससीयूबीए प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 6 अग्रणी वन कर्मचारियों को एससीयूबीए डाइविंग और पानी के भीतर निगरानी तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया। विश्व डुगोंग दिवस समारोह के दौरान, डुगोंग और उनके संरक्षण

पर प्रमुख विशेषज्ञों ने 'दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में डुगोंग संरक्षण उपायों को बढ़ाने' के बारे में चर्चा में भाग लिया।

डुगोंग छात्रवृत्ति कार्यक्रम: डुगोंग छात्रवृत्ति कार्यक्रम का विस्तार किया गया, और 2017 के बाद से, मछली पकड़ने की पृष्ठभूमि से 757 छात्रों को डुगोंग संरक्षण में समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया है।

एससीयूबीए कार्यशाला: सीएएमपीए डुगोंग पुनर्प्राप्ति कार्यक्रम के हिस्से के रूप में आयोजित एससीयूबीए प्रशिक्षण कार्यक्रम 22 से 28 फरवरी, 2024 तक शहीद द्वीप पर आयोजित किया गया था। इसका उद्देश्य अग्रणी वन कर्मचारियों को एससीयूबीए डाइविंग में प्रमाणित करना और पानी के भीतर सर्वेक्षणों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से समुद्री जैव विविधता की निगरानी और प्रबंधन करना था। प्रशिक्षण में महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान का दौरा भी शामिल था, जिससे अंडमान और निकोबार वन विभाग द्वारा सफल एससीयूबीए-आधारित निगरानी पहलों से प्राथमिक प्रशिक्षण को सक्षम बनाया जा सका।

मील के पत्थर: 28 मई, 2023 को विश्व डुगोंग दिवस पर, डुगोंग संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महीने लंबे सोशल मीडिया अभियान, शैक्षिक वार्ताओं और अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया था, जिसमें 1,000 से अधिक प्रतिभागियों को शामिल किया गया था।

भारतीय समुद्री स्तनधारी संघ: सीएएमपीए डुगोंग टीम ने 5–6 नवंबर, 2023 को बेंगलुरु में आयोजित एमएमसीओआई कार्यशाला में भाग लिया, जिसका आयोजन डब्ल्यूसीएस इंडिया, मैग्रोव फाउंडेशन और डब्ल्यूडब्ल्यूएफ इंडिया द्वारा किया गया था। टीम ने भारत में समुद्री स्तनधारी संरक्षण के हालिया अनुसंधान, संरक्षण चुनौतियों और नवीन दृष्टिकोणों से संबंधित चर्चाओं में भाग लिया। टीम के विभिन्न सदस्यों ने समुद्री घास प्रबंधन, डुगोंग संरक्षण में आउटरीच-जागरूकता की भूमिका और डुगोंग की निगरानी के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी के उपयोग पर वार्ता प्रस्तुत की।

मणिपुर के ब्रो-एंटलर्ड हिरण या संगार्ड के लिए संरक्षण कार्य योजना: एकीकृत दृष्टिकोण

वित्त पोषण स्रोत

राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्वेषक

डॉ. रुचि बडोला और डॉ. सैयद आइनुल हुसैन

शोधकर्ता

डॉ. मिर्जा गजनफरुल्ला गाजी, डॉ. नेन्गनाइकिम बैटे, डॉ. शर्मिला नाओसेकपाम, अकोइजम सांतिकुमार, रोशनी बिष्ट और आलोक मन्ना

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2016

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) केईबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान में मौजूदा संगई जनसंख्या को मजबूत करना, (ii) जंगल में द्वितीय जनसंख्या स्थापित करना, (iii) आवास की स्थिति और संरक्षण उपायों में सुधार करना, (iv) संरक्षण प्रयासों में स्थानीय समुदाय को शामिल करना, और (v) प्रजातियों की पारिस्थितिकी पर व्यावहारिक अनुसंधान करना।

प्रगति: भारत वन्यजीव संस्थान ने मणिपुर वन विभाग के सहयोग से मार्च 2023 के दौरान केईबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान में संगई और संबद्ध प्रजातियों की जनसंख्या का अनुमान लगाया। मणिपुर से विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों और प्रमुख वैज्ञानिकों ने इस अनुमान प्रयास में भाग लिया। संगई की औसत घनत्व 3.20 ± 1.09 संगई/वर्ग किमी के साथ 95% विश्वास स्तर पर न्यूनतम 1.64 और अधिकतम 6.24 संगई/वर्ग किमी अनुमानित की गई। 2006 और 2023 के बीच निकाले गए जनसंख्या रुझानों ने 5.9% वार्षिक वृद्धि ($R^2=0.9641$) के साथ हॉग हिरण जनसंख्या में सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई, जो महत्वपूर्ण रूप से बढ़ती जा रही है।

भावसं द्वारा तैयार एकीकृत प्रबंधन योजना का कार्यान्वयन केईबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान में प्रगति पर है, जिसमें फुमदी के समूहों को समेकित करके, अग्नि रेखाओं को रेखित करके, और संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त गतिविधियों के माध्यम से आवास की बहाली और प्रबंधन शामिल है। भावसं ने गश्त अवसंरचना का समर्थन करने और संरक्षण उपायों को बढ़ाने के लिए मणिपुर वन विभाग को दो नावें प्रदान की हैं।

केईबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान में संगई की तेजी से घटती जनसंख्या को देखते हुए, मणिपुर वन विभाग ने राष्ट्रीय उद्यान में संरक्षण प्रजनन केंद्र को विकसित करने के प्रयास तेज कर दिए हैं। वन संरक्षक (उद्यान और अभ्यारण्य) के सहयोग से बंदीगृहों का निर्माण तेजी से किया जा रहा है, और राज्य में वर्तमान अशांति के कारण प्रक्रिया धीमी गति से प्रगति कर रही है। संगई के लिए दूसरा घर स्थापित करने के लिए उपयुक्त स्थलों की खोज और स्थानीय समुदायों की तत्परता सर्वेक्षण किए जा रहे हैं।

वन विभाग के साथ वन्यजीवों के बचाव और पुनर्वास कार्य किये गए। बचाए गए जानवरों को जंगल में छोड़ने से पहले आवश्यक उपचार दिए गए। अप्रैल 2023 में बिष्णुपुर जिले के यावा लामजाओ से एक मादा हॉग हिरण को बचाया गया और प्राथमिक



चिकित्सा के बाद उद्यान में छोड़ दिया गया। एक अन्य बचाई गई हॉग हिरण और एक ह्यूम्स तीतर को पुनर्वास के लिए मणिपुर प्राणी उद्यान में सौंपा गया।

हमने आर्द्रभूमि परिदृश्य गतिशीलता में परिवर्तन को समझने के लिए कालिक उपग्रह डेटा का उपयोग करके भूमि उपयोग का



पता लगाने का कार्य किया। हमने केईबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिक-संवेदनशील क्षेत्र में भूमि उपयोग और परिवर्तन की जांच की। 1980 और 2022 के बीच देखे गए भूमि उपयोग पैटर्न में प्रमुख परिवर्तन विशाल मछली फार्मा की वृद्धि है, जो 1994 में 25.66 वर्ग किमी से 2022 में 56.19 वर्ग किमी तक पहुंच गया। इथाई बैराज की स्थापना के साथ, कृषि क्षेत्र 1980 में 121.65 वर्ग किमी से घटकर 2022 में 24.93 वर्ग किमी हो गया। कृषि क्षेत्र में यह गंभीर कमी इथाई बैराज की स्थापना के कारण हुई विशाल बाढ़ और राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिक-संवेदनशील क्षेत्र में भूमि उपयोग पैटर्न में परिवर्तन को इंगित करती है।

निर्दिष्ट आवास में गैर-आक्रामक रूप से जाने और अकशेरुकीय जन्तुओं का पता लगाने के लिए मानवरहित हवाई वाहनों (यूएवी) के दायरे का भी अध्ययन किया गया। एक क्वाडकोप्टर, जिसमें एक ऑप्टिकल (आरजीबी) और एक थर्मल कैमरा माउंट किया गया था, का इन परिदृश्य स्थितियों में इसकी स्थायित्व, फेलसेफ रेंज, लचीलेपन, दृश्यता और पता लगाने के लिए कैमरा क्षमताओं, और रिजॉल्यूशन के लिए परीक्षण किया गया था। तीन विभिन्न समय फ्रेम के आधार पर ड्रोन सर्वेक्षण के परिणामों से पता चलता है कि हिरण का पता लगाने के लिए तैरते हुए घास के मैदानों से उड़ना संभव है, जो भोर और शाम के दौरान सबसे अच्छा होता है। थर्मल इन्फ्रारेड (टीआईआर) इमेजिंग के साथ रात में और सुबह के समय दोनों टीआईआर और ऑप्टिकल का उपयोग करके जानवरों के व्यवहार में बिना किसी गड़बड़ी के सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त हुए। परिणामों ने सटीक जमीनी जानकारी प्राप्त करने के लिए एक सुरक्षित और व्यावहारिक तरीका प्रदान किया है जो जनसंख्या

अनुमान, आवास मूल्यांकन, और जंगली आग के कारण जले हुए क्षेत्र का अनुमान लगाने में सहायता कर सकता है ताकि एक अमूल्य प्राकृतिक संपत्ति के संरक्षण में सहायता की जा सके।

जनवरी और मार्च 2024 के बीच स्कूलों और कॉलेजों में पांच जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए ताकि मणिपुर में संगई संरक्षण और पर्यावरणीय मुद्दों पर लगभग 450 व्यक्तियों, जिसमें छात्रों और शिक्षकों शामिल थे, को शिक्षित किया जा सके। चल रहे आजीविका हस्तक्षेप कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में, सितंबर 2023 और जनवरी 2024 के बीच केईबुल, चंदपुर, इथाई वपोकपी, सागरम, और चिंगमई गांवों में महिलाओं के स्व-सहायता समूहों का समर्थन करने के लिए मणिपुर राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से पांच ग्राम स्तरीय संघ स्थापित किए गए। इसके अलावा, अप्रैल 2023 से मार्च 2024 के बीच, एसएचजी की 86 स्थानीय महिला सदस्यों ने एमएसआरएलएम के साथ साझेदारी में उन्नत बहीखाता प्रशिक्षण और सक्रिय महिला कैंडिडेटों के लिए इमर्शन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

परिणाम और निष्कर्ष: दीर्घकालिक डेटा के आधार पर संगई और हॉग हिरण जनसंख्या आकार और रुझानों के अनुमान संरक्षण योजना और प्रजातियों की पुनर्प्राप्ति के लिए उपलब्ध कराए गए हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा 2023 में अनुमानित अत्यधिक कम प्रचुरता के आधार पर संरक्षण प्रजनन केंद्र को विकसित करने

के प्रयासों को तीव्र किया गया है। राज्य वन विभाग सक्रिय रूप से दूसरा निवास स्थापित करने के लिए स्थलों की खोज के लिए सर्वेक्षणों को तेजी से कर रहा है। केएलएनपी में दीर्घकालिक अनुसंधान निगरानी के आधार पर संगई और हॉग हिरण की आवास स्थिति और वितरण पैटर्न पर जानकारी उत्पन्न की गई है।

जनवरी और मार्च 2024 के बीच पांच जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों और शिक्षकों सहित कुल 450 व्यक्तियों को संगई संरक्षण पर शिक्षित किया गया। इसके अलावा, अक्टूबर 2023 में देहरादून में आईसीएफआरई-एफआरआई में एक जागरूकता स्टॉल भी स्थापित किया गया था।

मील के पत्थर: राज्य वन विभाग द्वारा 2023 जारी तेजी से घटते जनसंख्या अनुमानों के कारण केएलएनपी में संरक्षण प्रजनन केंद्र के विकास को प्राथमिकता दी गई है।

एकीकृत प्रबंधन योजना का पालन करते हुए, केएलएनपी में अग्निशमन स्टेशन और गश्त अवसंरचना तैनात की गई है। केएलएनपी के आसपास महिलाओं के स्व-सहायता समूहों का समर्थन करने के लिए पांच ग्राम स्तरीय संघ स्थापित किए गए, और 86 महिलाओं ने उन्नत बहीखाता प्रशिक्षण और सक्रिय महिला कैंडिडेटों के लिए इमर्शन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जारी परियोजना

भावसं

नदी डॉल्फिन की रेंज-व्यापी अनुमान

वित्तपोषण स्रोत

प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (कैम्पा), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अन्वेषक

डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम और श्री कमर कुरेशी

शोधकर्ता

सैयदा तबस्सुम तास्फिया,
अथुल ए, अतित राय,
बिस्वजीत पुजारी, दिपामोनी ताये,
पंचाली हजारिका,
प्रणव कुलकर्णी, शंताम ओझा

आरंभ होने की तिथि

सितंबर 2021

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) नदी डॉल्फिन जनसंख्या का उसके विस्तार में व्यापक अनुमान, (ii) नदी डॉल्फिन क्षेत्र में संबंधित जीवों का अनुमान, (iii) नदी डॉल्फिन आवास में जल गुणवत्ता और प्रदूषण का आकलन, और (iv) डॉल्फिन संरक्षण में मदद करने वाले नेटवर्क को विकसित करने के लिए हितधारकों को शामिल करना।

प्रगति: गंगा डॉल्फिन जनसंख्या और संबंधित जीवों के व्यापक अनुमान पर रिपोर्ट लेखन चल रहा है।

विस्तृत राज्यों में वितरण के लिए उपकरणों की खरीद: ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) उपकरण, लेजर रेंज फाइंडर्स, दूरबीन, कैमरे, फ्लोटिंग पैसिव ध्वनिक निगरानी प्रणाली

(एफ-पॉड), और वाईएसआई जल निगरानी उपकरण की खरीद प्रक्रिया पूरी हो गई है और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, और पंजाब में वितरित की गई है।

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण: उपकरण खरीद के समानांतर, भावसं ने स्थानीय हितधारकों को इन उपकरणों का कुशलता से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम शुरू किए हैं। भावसं विशेषज्ञों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यशालाएं संरक्षण अभ्यास, शोधकर्ताओं और स्थानीय समुदाय सदस्यों को उनके संबंधित क्षेत्रों में निगरानी उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए आवश्यक कौशल से सुसज्जित करती हैं। यह सहयोगी दृष्टिकोण स्थानीय स्वामित्व और संरक्षण प्रयासों में



नदी और नदी डॉल्फिन निगरानी पर वन कर्मचारियों को क्षमता निर्माण प्रशिक्षण और कार्यशालाएं

भागीदारी को प्रोत्साहित करके डॉल्फिन जनसंख्या और उनके आवास के सतत प्रबंधन को सुनिश्चित करता है।

डॉल्फिन के निवास करने वाले नदी प्रणाली में प्रदूषकों की निगरानी के लिए व्यापक नमूना पहल: गंगा डॉल्फिन वितरण की पूरी शृंखला को कवर करने वाले महत्वपूर्ण स्थानों से जल नमूने एकत्र किए गए, जिसमें गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियों और सिंधु डॉल्फिन के लिए ब्यास नदी शामिल है। प्रदूषक संचयन और तलछट दरों का आकलन करने के लिए नदी के तल और किनारों से तलछट के नमूने प्राप्त किए गए। इसके अतिरिक्त, मछली की आबादी में प्रदूषकों के जैव संचयन का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न जल आवासों से मछली के नमूने एकत्र किए गए, जो पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण संकेतक हैं।

डॉल्फिन द्वारा निवासित राज्यों में प्रदूषक स्तरों की निगरानी के लिए विश्लेषण वर्तमान में चल रहा है, और हम डेटा संकलन पर पूरी मेहनत कर रहे हैं। हमें जल्द ही इस विश्लेषण को पूरा करने की उम्मीद है और संपूर्ण निष्कर्षों को शीघ्र ही प्रस्तुत करेंगे।

परिणाम और निष्कर्ष: भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा उन्नत निगरानी उपकरणों की खरीद और उपयोग गंगा और सिंधु नदी डॉल्फिन और उनके आवास के संरक्षण को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है। भावसं जीपीएस उपकरण, लेजर रेंज फाइंडर्स, दूरबीन, कैमरे, एफ-पॉड, और वाईएसआई जल निगरानी उपकरणों को रणनीतिक रूप से तैनात करके प्रमाणिक वैज्ञानिक डेटा उत्पन्न करने का लक्ष्य रखता है। सहयोग को बढ़ावा देकर और स्थानीय क्षमता का निर्माण करके, भारतीय वन्यजीव संस्थान इन प्रतिष्ठित नदीय प्रजातियों को



विभिन्न वन विभागों को उपकरण हस्तांतरण

भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने और नदी पारिस्थितिकी तंत्र में मानव और वन्यजीव के सतत सहअस्तित्व को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।

मील के पत्थर: मुख्यधारा गंगा, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियाँ, और ब्यास नदी के व्यापक डॉल्फिन सर्वेक्षण, जो 8,000 किमी से अधिक को शामिल करता है, पूरा हो गया। डॉल्फिन निगरानी के लिए महत्वपूर्ण स्थलों की पहचान और जल आवास की निगरानी के लिए उपयुक्त तकनीक के साथ वन विभाग के क्षमता निर्माण के साथ निगरानी स्टेशन स्थापित करना हमारे मीठे पानी के आवास की निगरानी में एक महत्वपूर्ण कदम को चिह्नित करता है।

नदी डॉल्फिन के लिए संरक्षण कार्य योजना का विकास

वित्तपोषण स्रोत

राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्वेषक

श्री कमर कुरेशी और डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम

शोधकर्ता

डॉ. अब्दुल वकीद, डॉ. शोवना रे, डॉ. विनीत सिंह, डॉ. सनी देओरी, मेरिन जैकब, गार्गी रॉयचौधरी, कनाड रॉय, गौतम, भावना पंत, स्नेहा माने, विजय प्रताप सिंह, शंताम ओझा और अथुल

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2016

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

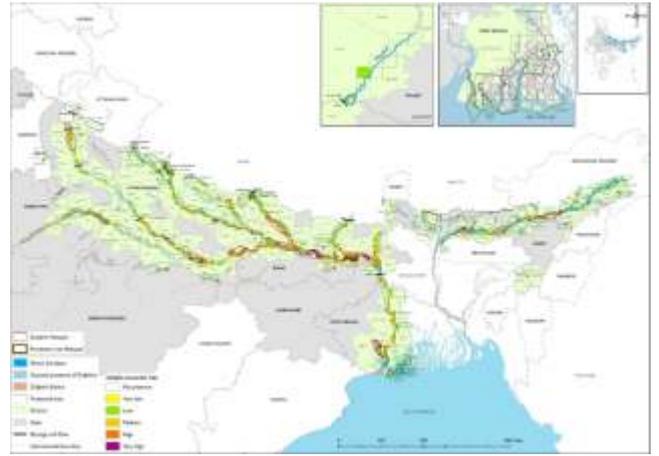
दिसंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) डॉल्फिन के लिए निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना, (ii) घड़ियाल, ऊदबिलाव, कछुए और मछलियों जैसी संबंधित नदी जीवों की स्थिति का आकलन, (iii) जल गुणवत्ता, मानवजनित दबाव और नदी परिदृश्य के आसपास के परिदृश्य के संदर्भ में नदी आवास की गुणवत्ता मूल्यांकन, (iv) नदी परिदृश्य में आक्रामक प्रजातियों की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन, और (v) डॉल्फिन संरक्षण में सहायता के लिए एक नेटवर्क विकसित करने के लिए भागीदारों को शामिल करना।

प्रगति: इस वर्ष का उद्देश्य भारत में गंगा नदी डॉल्फिन के महत्वपूर्ण स्थलों में गहन जांच करना था। गहन स्थल अध्ययन गंगा नदी डॉल्फिन की पारिस्थितिकी को व्यापक रूप से समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस सर्वेक्षण ने गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियों में गंगा नदी डॉल्फिन के रेंज-व्यापी सर्वेक्षण के दौरान पहचाने गए महत्वपूर्ण स्थलों का उपयोग किया ताकि उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम में अध्ययन स्थलों का चयन किया जा सके।

सत्र के दौरान किए गए कार्यकलाप: गंगा नदी डॉल्फिन जनसंख्या का दुबारा सर्वेक्षण: उत्तर प्रदेश में 90 किलोमीटर के खंड में (प्रयागराज से सेम्रादनाथ घाट तक, जिसमें 30 किलोमीटर का कछुआ वन्यजीव अभ्यारण्य शामिल है) दो दोहराए गए सर्वेक्षण किए गए, जिनमें क्रमशः 147 और 119 डॉल्फिन की न्यूनतम गणना का अनुमान लगाया गया। ब्रह्मपुत्र नदी, असम में किरकाता से सराईघाट पुल तक 30 किलोमीटर के खंड में तीन सर्वेक्षण दोहराए गए।

प्लॉट काउंट अनुमान विधि: हाइड्रोफोन का उपयोग करके, उत्तर प्रदेश के 90 किलोमीटर के खंड में 9 खंडों में, बिहार में 16 किलोमीटर के दो खंडों (बरह से मुँगर तक) और पश्चिम बंगाल की रूपनारायण नदी में 32 किलोमीटर के तीन खंडों (घाटाल से मंकर तक) में प्लॉट काउंट अनुमान विधि का उपयोग किया गया। गंगा डॉल्फिन और उनके आवास की प्रचुरता और अंतःक्रिया को समझने के लिए दोनों दृश्य और ध्वनिक डेटा और कैमरा-ट्रैप डेटा एकत्र किए गए।



गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली, भारतीय सुंदरवन और ब्यास में गंगा नदी डॉल्फिन जनसंख्या का महत्वपूर्ण स्थल।

संबंधित जीव सर्वेक्षण: उत्तर प्रदेश में 9 खंडों के बैंकिंग बोट सर्वेक्षण (178 किलोमीटर), साइन सर्वेक्षण (34 ट्रेल्स), दो नाव आधारित संबंधित जीव सर्वेक्षण दोहराए गए और 94 प्लॉट काउंट ट्रांसेक्ट का एविफौना के लिए किया गया। कई विभिन्न प्रवासी और गैर-प्रवासी पक्षी प्रजातियों को गंगा नदी द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न आवासों का उपयोग करते देखा गया। हालांकि, सबसे महत्वपूर्ण अवलोकन विलुप्तप्राय भारतीय स्किमर, *रिंकोप्स अल्बिकोलिस* था। एविफौनल विविधता के अलावा, सर्वेक्षण के दौरान देखी गई स्तनधारी प्रजातियों में केवल नीलगाय, *बोसेलाफस ट्रैगोकामेलस* और भारतीय स्वर्ण सियार, *कैनिंस औरस इंडिकस* शामिल थे, जबकि हर्पेटोफौना विविधता में केवल सांपों के मृत नमूने शामिल थे, चेकर्ड किलबैक, *फॉवलेआ पिस्केटर* और भारतीय चूहा साँप, *प्यास मुकोसा*। कछुओं के मृत नमूने और ट्रेल, जिनमें भारतीय साँपटशेल कछुआ, निल्सोनिया गैंगेटिका शामिल थे, सर्वेक्षण के दौरान देखे गए। बिहार में, संबंधित जीवों के लिए 37 किलोमीटर का नाव आधारित सर्वेक्षण और 44 किलोमीटर के साइन सर्वेक्षण (22 ट्रेल्स) किए गए। पश्चिम बंगाल में, तीन खंडों और 59.52 किलोमीटर में फैले नाव आधारित नदीताट आकलन ने 44 प्रजातियों का खुलासा किया, जिसमें तीन स्तनधारी (भारतीय ग्रे नेवला, उड़न लोमड़ी, उत्तरी

मैदानी लंगूर), एक हर्पेटोफौना (जल निगरानी) और 40 पक्षी प्रजातियाँ शामिल थीं। इन व्यापक आकलनों के दौरान कोई भी लुप्तप्राय प्रजातियाँ दर्ज नहीं की गईं। पैदल ट्रान्सेक्ट आधारित साइन सर्वेक्षण में 18.2 किलोमीटर के छह ट्रान्सेक्ट शामिल थे, जिसमें 52 प्रजातियाँ पहचानी गईं, जिनमें छह हर्पेटोफौना (जल निगरानी, बंगाल निगरानी, चूहा साँप, स्किटरिंग मेंढक, क्रिकेट मेंढक और एक अज्ञात अगामिड), पांच स्तनधारी (बंगाल फॉक्स, सियार, जंगल बिल्ली, नेवला), और 42 पक्षी प्रजातियाँ शामिल थीं। किसी भी स्तनधारी को सीधे नहीं देखा गया। सभी अनुमानों को उनके अप्रत्यक्ष संकेतों पर किया गया।

मछली नमूना और मछली बाजार सर्वेक्षण: 90 किलोमीटर खंड में मछली नमूनाकरण पूरा हो गया है, और छोटे और बड़े मछली बाजारों को उत्तर प्रदेश में खंड के साथ शामिल किया गया है और कुल 36 प्रजातियाँ नमूना से पहचानी गईं हैं। कास्ट और गिल जाल का उपयोग करके मछली नमूना अध्ययन ने 42 मछली प्रजातियों की पहचान की, जिनमें *सैल्मोस्टोमा बैकाइला*, *पुंटियस सोफोर*, और *अपोक्रीप्टस बाटो* सबसे प्रचुर मात्रा में पाए गए। विशेष रूप से, कुल पकड़ी गई मछलियों में से कोई आक्रामक प्रजातियाँ नहीं पाई गईं। नमूना प्रयासों में लगभग 107 घंटे, 1508 कास्ट जाल फेंकना और 418 गिल जाल तैनाती शामिल हैं। घाताल से बक्शी तक 14 स्थानीय बाजारों में किए गए एक बाजार सर्वेक्षण से 67 मछली प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया गया, जिन्हें मछली पालन, समुद्री, नदी, तालाब और नदी/समुद्री प्रकारों में वर्गीकृत किया गया। इनमें से, छह गैर-स्वदेशी थीं, जबकि 57 स्वदेशी प्रजातियाँ थीं।

प्लवक नमूना: उत्तर प्रदेश में 90 किलोमीटर खंड में 2.5 किलोमीटर के खंडों में प्लवक जाल को खींचकर प्लवक नमूने एकत्र किए गए। प्रमुख रेत खनन क्षेत्रों और उन स्थलों के ऊपरी और निचले प्रवाह से भी नमूने एकत्र किए गए। 60 किलोमीटर के खंड में दिन में चार बार अस्थायी प्लवक नमूना किया गया। बिहार में, गंगा नदी के 70 किलोमीटर (बरह से चकौर घाट तक) से प्लवक नमूने एकत्र किए गए। पश्चिम बंगाल में, रूपनारायण क्षेत्र में 32 किलोमीटर और कटवा क्षेत्र में 20 किलोमीटर में प्लवक नमूना लिया गया। सभी खंडों का विश्लेषण अभी शुरू किया जाना है।



मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण और हितधारकों के लिए सामुदायिक पहुंच और जागरूकता कार्यक्रम।



एविकौना सर्वेक्षण के दौरान दर्ज की गई पक्षी प्रजातियाँ

वनस्पति सर्वेक्षण: उत्तर प्रदेश में नौ खंडों में 90 किलोमीटर की कुल दूरी में रिपेरियन वनस्पति नमूना लिया गया, साथ ही साइन सर्वेक्षण ट्रान्सेक्ट (पगडंडी चलना) भी किया गया। जड़ी-बूटियों, झाड़ियों और पेड़ों के लिए कुल 178 गोलाकार प्लॉट पूरे हो चुके हैं। हालांकि, अभी भी कुछ प्रजातियाँ हैं जिन्हें पहचाना नहीं गया है। पश्चिम बंगाल में, रूपनारायण और मुंडेश्वरी नदियों के साथ-साथ 17 बिंदुओं पर नमूना लिया गया। इसमें 21 पेड़, आठ झाड़ियों और 50 जड़ी-बूटियों सहित 79 रिपेरियन वनस्पति प्रजातियों की समृद्ध जैव विविधता दर्ज की गई। अध्ययन ने 58 जड़ी-बूटी प्रजातियाँ, 22 पेड़ प्रजातियाँ, और छह झाड़ी प्रजातियाँ दर्ज कीं, जो स्थानिक, स्वदेशी, आक्रामक और गैर-स्वदेशी श्रेणियों के बीच अंतर करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

गंगा नदी डॉल्फिन पर पिंगर्स की प्रभावशीलता: पश्चिम बंगाल में 35 दिनों तक पिंगर की प्रभावशीलता को समझने के लिए प्रयोग किए गए, जिसमें सात दिन पूर्व-उपचार, 18 दिन उपचार के दौरान, और दस दिन उपचार के बाद के प्रयोग शामिल थे। विश्लेषण चल रहा है। इसी तरह, असम की कुलसी नदी में भी इसे दुहराया गया। कुल प्रयोग दिनों में 40 दिन शामिल हैं, जिनमें लगभग 960 घंटे का ध्वनिक डेटा संग्रह शामिल है। यह 17 दिसंबर से शुरू होकर 25 जनवरी को समाप्त हुआ। डेटा विश्लेषण चल रहा है।

पिंगर-मछली प्रयोग: 28 दिसंबर 2023 – 6 जनवरी 2024, 10–18 जनवरी 2024, और 25 फरवरी – 4 मार्च 2024 के बीच तीन सेट के प्रयोग किए गए प्रत्येक में आठ दिनों के साथ दो सेट-अप गुवाहाटी और एक सेट-अप ब्रह्मपुत्र नदी, असम में गोलपारा में किए गए। कुल 32 मछुआरे, 19 नावें, और 43 इस प्रयोग में शामिल हुए, जिसमें क्षेत्र में लगभग 562 जाल विछाए गए, कुल प्रयास लगभग 3005 घंटे था।

गंगा नदी डॉल्फिन की गहराई प्राथमिकता पर प्रयोग: असम और बिहार में, नदी गहराई प्रोफाइलिंग के आधार पर 2 किलोमीटर के खंड में, चार एफ-पॉड को चार विभिन्न गहराइयों में तैनात किया गया, जिनके हाइड्रोफोन को गहराई में रखा गया (2, 4, 8, और 12 मीटर), डेटा ओवरलैप को कम करने के लिए न्यूनतम अंतर-एफपीओडी दूरी 600 मीटर निर्धारित की गई। विश्लेषण उद्देश्यों के लिए सभी चार गहराइयों को निम्न, मध्यम, गहरी और बहुत गहरी के रूप में वर्गीकृत किया गया। कुल मिलाकर, 700

घंटे का ध्वनिक डेटा विभिन्न गहराइयों पर एकत्र किया गया। गहराई प्रोफाइल 2 मीटर से 23 मीटर तक थी।

सामुदायिक आधारित सर्वेक्षण: असम और पश्चिम बंगाल के मछली पकड़ने वाले समुदायों में सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किए गए। पश्चिम बंगाल में मत्स्य पालन योजना जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। नदी संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम हितधारकों के बीच आयोजित किए गए, जिसमें स्कूल और कॉलेज के छात्र, वन विभाग और मत्स्य पालन विभाग शामिल थे। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिलों में बीएसएफ बटालियनों के लिए संवेदनशीलता कार्यक्रम आयोजित किए गए। बिहार, पश्चिम बंगाल, और असम में वन्यजीव सप्ताह और पर्यावरण दिवस मनाया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: असम के बाघजान ऑयल वेल ब्लोआउट घटना के प्रभावों पर किए गए अध्ययन को वैज्ञानिक समुदाय के साथ साझा किया गया। (सिंह और अन्य, 2023, ऊपरी असम, भारत में 2020 बाघजान तेल रिसाव के संपर्क में आए जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बनरू अल्पकालिक विषाक्तता और पारिस्थितिक जोखिम, <https://journals-plos-org/plosone/article?id%10-1371/journal-pone-0293601%2A>)

गहन स्थल निगरानी ने महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की, जैसे गंगा डॉल्फिन के लिए न्यूनतम गहराई की आवश्यकता। इसके अलावा, तकनीकी हस्तक्षेपों जैसे पिंगर्स की स्वीकार्यता, डॉल्फिन की मृत्यु दर को कम करने के लिए एक संभावित समाधान के रूप में उभरकर सामने आई है।

जारी परियोजना

हरिके आर्द्रभूमि की डी-सिल्टिंग के कारण होने वाले विभिन्न प्रभावों का अध्ययन

वित्तपोषण स्रोत

राजस्थान फीडर नहर और भूजल विभाग, जल संसाधन विभाग, फिरोजपुर, पंजाब

अन्वेषक

डॉ. गोपी जी.वी.

शोधकर्ता

विवेक रंजन, सिपु कुमार, प्रियांका दास, अर्णब चटोपाध्याय, अरुण कुमार राठ, स्तांजिन जांगमो, सोरिचोन वाशी और विजय जोशी

आरंभ होने की तिथि

फरवरी 2024

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

फरवरी 2026

भा.व.सं.



उद्देश्य: (i) हरिके वन्यजीव अभ्यारण्य की जैव विविधता का मूल्यांकन (डी-सिल्टिंग से पहले, दौरान और बाद)। (ii) हरिके आर्द्रभूमि पर डी-सिल्टिंग के संभावित प्रभावों का अध्ययन। (iii) हरिके वन्यजीव अभ्यारण्य पर डी-सिल्टिंग के प्रभावों को कम करने के लिए संरक्षण और शमन योजना तैयार करना।

प्रगति: हरिके वन्यजीव अभ्यारण्य में जैव विविधता के अध्ययन के लिए विस्तृत योजना तैयार की गई। डी-सिल्टिंग से पहले सर्वेक्षण की योजना और रूपरेखा पूरी की जा चुकी है। स्तनधारियों, पक्षियों, वनस्पतियों, उभयचरों, मछलियों और सामाजिक-आर्थिक घटकों का क्षेत्रीय डेटा संग्रह किया गया है।

डेटा विश्लेषण और प्रारंभिक पूर्व-डी-सिल्टिंग रिपोर्ट तैयार की जा रही है, जिसे सितंबर 2024 तक प्रस्तुत किया जाएगा।

परिणाम और मील का पत्थर: स्थानिक प्रतिकृतियों के साथ विस्तृत क्षेत्रीय डेटा संग्रह किया गया। स्तनधारियों, पक्षियों,

वनस्पतियों, उभयचरों और मछलियों की विस्तृत सूची तैयार की गई। आर्द्रभूमि का मानचित्रण और सीमांकन किया गया। डी-सिल्टिंग से पहले संभावित प्रभावों पर एक रिपोर्ट तैयार की जा रही है, जिसे सितंबर 2024 तक प्रस्तुत किया जाएगा।

जारी परियोजना

भावसं

स्वच्छ गंगा के लिए गंगा नदी बेसिन में जलीय प्रजातियों के संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के रखरखाव के लिए योजना और प्रबंधन

वित्तपोषण स्रोत

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, जल शक्ति मंत्रालय

शोधकर्ता

113 परियोजना कर्मचारी

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2020

अन्वेषक

डॉ. रुचि बडोला और
डॉ. सैयद आइनुल हुसैन

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2026

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) गंगा नदी के किनारों पहचाने गए छह जैव विविधता हॉटस्पॉट पर जलीय जैव विविधता संरक्षण उपायों को मजबूत करना और अन्य क्षेत्रों की स्थिति की निगरानी करना, (ii) गंगा नदी के अन्य हिस्सों में संरक्षण महत्व की प्रजातियों के प्राकृतिक और सहायक उपनिवेशों का अन्वेषण करना, (iii) गंगा बेसिन में प्रमुख सहायक नदियों और आर्द्रभूमियों के जलीय पर्यावरण और जैव विविधता की वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना, (iv) गंगा बेसिन में जलीय पर्यावरण और जैव विविधता की अखंडता को प्रभावित करने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष चालकों की पहचान करना (v) समस्याग्रस्त क्षेत्रों की पहचान करना और संरक्षण प्राथमिकता क्षेत्रों की पहचान करना (vi) संकट में जलीय प्रजातियों के लिए रणनीतिक स्थलों पर बचाव और पुनर्वास केंद्रों को मजबूत/स्थापित करना, (vii) क्षमता निर्माण, नवाचार और मौजूदा संस्थानों को मजबूत करने के माध्यम से समुदायों और अन्य हितधारकों को संरक्षण प्रक्रिया में शामिल करना (viii) शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जलीय जैव विविधता और गंगा संरक्षण के लिए समर्थन जुटाना, (ix) कुशल और लक्षित संरक्षण कार्यवाही के लिए नदी बेसिन में जल-सामाजिक-पारिस्थितिक संबंधों की पहचान और विश्लेषण करना, (x) गंगा बेसिन की चयनित सहायक नदियों के जलीय पर्यावरण और जैव विविधता पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष चालकों के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए एक कार्य योजना तैयार करना, और (xi) गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के विज्ञान आधारित प्रबंधन में सहायता के लिए प्रयोगशालाओं और संसाधन केंद्र की एक केंद्रीकृत सुविधा विकसित करना।

प्रगति: गंगा जलीयजीव संरक्षण निगरानी केंद्र/राष्ट्रीय नदी अनुसंधान केंद्र भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून परिसर में स्थापित किया गया है। केंद्र में तीन अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ हैं: विषविज्ञान प्रयोगशाला, जलीय पारिस्थितिकी प्रयोगशाला, और स्थानिक विश्लेषण के लिए जीआईएस प्रयोगशाला।

गंगा बेसिन में कुल 5,725 किलोमीटर नदियों के साथ व्यापक सर्वेक्षण किए गए, जिसमें गंगा नदी के मुख्य धारा, इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ जैसे यमुना, घाघरा, गंडक, सोन, कोसी, रूपनारायण, और चंबल और छोटी सहायक नदियाँ जैसे गिरवा, कौरियाला, बाबाई, शारदा, राप्ती, बागमती, महानंदा, केन, बेतवा, और सिंध नदियाँ शामिल हैं, गंगा नदी बेसिन में गंगा डॉल्फिन की जनसंख्या को निर्धारित करने के लिए। गंगा बेसिन में 14 नदियों में लगभग 3936 763 (माध्य ± एसई) गंगा डॉल्फिन निवास करती हैं, जिसमें गंगा नदी भी शामिल है।

गंगा, यमुना, घाघरा और गंडक नदियों में नदी द्वीपों पर घोंसलों के सर्वेक्षण के दौरान, कुल 11 प्रजातियों के पक्षियों को घोंसला बनाते हुए पाया गया, जिसमें शामिल थे: भारतीय स्किमर, रिकॉप्स अल्बिकोलिस, नदी टर्न, स्टर्ना औरेशिया, नदी लैपविंग, वनेलस दुवाउसेली, लिटिल रिंगेड प्लोवर, चराड्रिउस दुबियस, लिटिल टर्न, स्टर्नुला अल्बिफ्रांस, रेड-वॉटल्ड लैपविंग, वनेलस इंडिकस, भारतीय थिंक-नी, बुर्हिनुस इंडिकस, फेजेंट-टेल्ड जैकाना, हाइड्रोफेसिनस चिरुरगस, स्मॉल प्राटिनकोल, ग्लेरेओला लैक्टिया, ब्लू-टेल्ड बी-ईटर, मेरॉप्स फिलिपिनस और ब्लैक-विंग्ड स्टिल्ट, हिमन्टोपस हिमन्टोपस।

वनस्पति सर्वेक्षण गंगा, गोमती और घाघरा नदियों के साथ (लगभग 3,653 किलोमीटर) मई से दिसंबर 2023 के बीच किया गया। पूर्व-मानसून सर्वेक्षण (हरिद्वार से फरक्का) ने गंगा नदी के मुख्य धारा के साथ 456 पौधों की प्रजातियों की उपस्थिति के संकेत दिया। इसमें प्रमुख परिवार थे एस्टेरेसी, फैबेसी, पोएसी, अमारंथेसी, मोरेसी, अकंथेसी, लैमीएसी, और कंवल्बुलसेसी।

तीन राष्ट्रीय और एक राज्य स्तरीय प्रमुख प्रशिक्षण कार्यशालाएँ अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक आयोजित की गईं। कुल 309 प्रतिभागियों, जिनमें पुलिस कर्मी, वन अधिकारी, अभियंता, राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक और गंगा प्रहरी शामिल थे, को नदी

संरक्षण और जैव विविधता में प्रवर्तन एजेंसियों की भूमिका पर प्रशिक्षित किया गया। तीन स्थल प्रशिक्षण कार्यशालाएँ राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों के लिए जयपुर, रुड़की और मालदेवता में आयोजित की गईं। कुल 298 राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों और कार्यक्रम अधिकारियों को गंगा जैव विविधता संरक्षण में प्रशिक्षित किया गया।

बारह गंगा जलीय जीव ज्ञान केंद्र विभिन्न राज्यों के सरकारी विद्यालयों में स्थापित किए गए। 95 संवेदनशीलता कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 15,012 छात्र और 300 शिक्षक गंगा जैव विविधता और इसके संरक्षण के महत्व के बारे में संवेदनशील किए गए।

गंगा प्रहरियों के लिए क्षमता विकास कार्यशालाएँ 19 प्रमुख सहायक नदियों, उप-सहायक नदियों, और गंगा मुख्यधारा से सम्बंधित गंगा प्रहरियों के लिए आयोजित की गईं।

गंगा प्रहरी सम्मेलन, जो तीन दिनों तक चला, 19-21 मार्च 2024 को ऋषिकेश, उत्तराखंड के परमार्थ निकेतन आश्रम में आयोजित किया गया। इस आयोजन ने गंगा बेसिन के 11 राज्यों के गंगा प्रहरियों को एकत्र किया, जिसका प्राथमिक उद्देश्य गंगा बेसिन संरक्षण से संबंधित ज्ञान, अनुभवों और दूरदर्शी अंतर्दृष्टियों का आदान-प्रदान करना था।

उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार के 17 जिलों में रामगंगा, यमुना, गोमती और गंडक नदियों के साथ 39 छोटे पैमाने के व्याख्यात्मक केंद्र, जलमाला संवाद स्थापित किए गए।

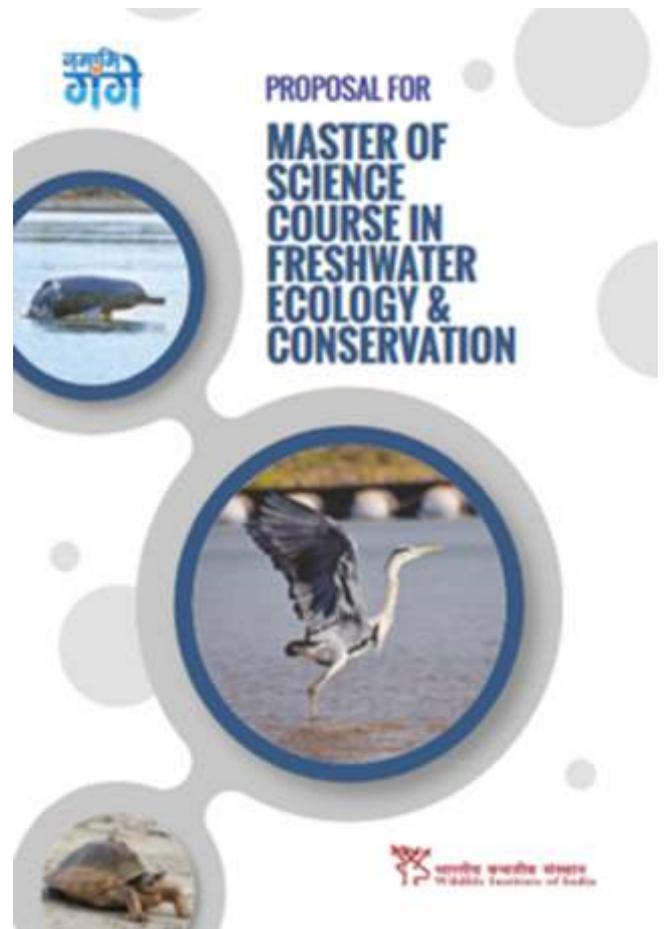
परिणाम और निष्कर्ष: प्रभावी संरक्षण योजना के लिए, ध्वजवाहक प्रजातियों का दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसके लिए गंगा डॉल्फिन, *प्लैटानिस्टा गैंगेटिका* को ध्वजवाहक प्रजाति के रूप में चुना गया। लगभग 46.3% नदी खंडों को संरक्षण प्राथमिकता खंडों के रूप में चिह्नित किया गया।

दो नई प्रजातियाँ, *लिंडर्निया तमिलनाडेंसिस* और *लिंडर्निया डुबियाअंड* (उत्तर भारत से पहले रिकॉर्ड) को वनस्पति सर्वेक्षण के दौरान भागलपुर, बिहार से प्रलेखित किया गया। अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा वाले उच्च प्रभाव कारक पत्रिकाओं में पंद्रह वैज्ञानिक पत्र प्रकाशित किए गए। छोटी सहायक नदियों पर जानकारी पत्रक अंग्रेजी में प्रकाशित किए गए। परियोजना के परिणामस्वरूप



रिपोर्ट और बच्चों के लिए कहानी पुस्तकें प्रकाशित की गईं। गंगा प्रहरी कैडर की संख्या गंगा नदी बेसिन में 4,808 व्यक्तियों तक बढ़ गई है, जिनमें से 3,067 महिलाएँ और 1,741 पुरुष हैं।

अप्रैल से जून 2023 तक हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल के 42 जिलों में 204 जीवन कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई, जिसमें 23,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों के दौरान, 15 श्रेणियों के तहत कुल 265 गतिविधियाँ आयोजित की गईं। महत्वपूर्ण दिनों जैसे पृथ्वी दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, कछुआ दिवस, स्वतंत्रता दिवस, राष्ट्रीय पक्षी दिवस और वन्यजीव सप्ताह को वाराणसी, कौशाम्बी, प्रयागराज और कानपुर जिलों में मनाया गया। लगभग 2,120 स्थानीय समुदायों, छात्रों और शिक्षकों के प्रतिभागियों को जलीय जैव विविधता और उनके संरक्षण के महत्व के बारे में संवेदनशील और जागरूक किया गया। गंगा दर्पण



निगरानी समिति की आठवीं बैठक

ब्लॉग ने रिपोर्टिंग अवधि के दौरान 54 पोस्ट जारी किए, जिनमें 1,866 आगंतुक और 3,335 लोगों ने देखा।

मील का पत्थर वन्यजीव संस्थान भारत –राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के संसाधन व्यक्तियों ने विभिन्न संरक्षण पहलुओं और युवाओं के लिए करियर विकल्पों पर 14 रेडियो वार्ताएं 90.0 एफएम रेडियो ऋषिकेश पर दीं।

डॉ. रुचि बडोला, डीन, भारतीय वन्यजीव संस्थान, ने 10 मार्च 2024 को देहरादून के वेल्हम बॉयज स्कूल में टेडएक्स वार्ता दी। उन्होंने गंगा प्रहरियों के कार्यों के उदाहरण देते हुए बताया कि गंगा नदी के संरक्षण और पारिस्थितिक पुनर्स्थापन के लिए

सकारात्मक व्यवहारिक परिवर्तन और आम लोगों, विशेषकर बच्चों में नेतृत्व को कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है। उन्होंने गंगा नदी को नेतृत्व का प्रतीक और प्रेरणा का स्रोत बताया।

परियोजना की निगरानी समिति की आठवीं बैठक 29 जनवरी 2024 को सफलतापूर्वक आयोजित की गई।

मीठे जल पारिस्थितिकी और संरक्षण में मास्टर पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और भारतीय वन्यजीव संस्थान की तकनीकी और अनुसंधान सलाहकार समिति द्वारा स्वीकृत किया गया। मीठे जल पारिस्थितिकी और संरक्षण में एमएससी के पहले बैच में प्रवेश प्रक्रिया आरंभ हो गई है।

जाशी परियोजना

रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र के लिए एकीकृत संरक्षण और प्रबंधन रणनीतियाँ: एक बहुआयामी दृष्टिकोण

भावसं

वित्त पोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

रिचर्ड एस संगमा और अरुण कुमार गोराटी

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2024

अन्वेषक

डॉ. अनुकुल नाथ, डॉ. बिलाल हबीब और डॉ. पराग निगम

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2026

उद्देश्य: इस परियोजना के उद्देश्य हैं: (i) रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र के बफर जोन (उदालगुड़ी) में वन आवरण क्षरण की जांच करना और आवास पुनर्स्थापन के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करना, (ii) रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र के मुख्य (मानस राष्ट्रीय उद्यान) और बफर जोन (उदालगुड़ी) में एशियाई हाथी की जनसांख्यिकी का अध्ययन करना, और (iii) एशियाई हाथी की जनसांख्यिकी और मानवजनित कारकों (जैसे भूमि उपयोग पैटर्न में परिवर्तन और अन्य मानव गतिविधियाँ) का उदालगुड़ी जिले में संघर्ष पैटर्न पर प्रभाव जांचना।

प्रगति: चिरांग-रिपु हाथी आरक्षित क्षेत्र के भीतर उदालगुड़ी जिले से हाथी मृत्यु दर और इसके कारणों से संबंधित द्वितीयक डेटा प्राप्त किया गया है। विश्लेषण में विभिन्न आयु और लिंग श्रेणियों में मृत्यु दर की जांच शामिल है ताकि यह समझा जा सके कि मानव-हाथी संघर्ष से सबसे अधिक प्रभावित जनसांख्यिकी कौन है।

इसके अतिरिक्त, पिछले 40 वर्षों के दौरान रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र के लिए भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण का उद्देश्य समय के साथ आवास परिवर्तनों और उनके हाथी आवागमन और मृत्यु दर पर प्रभाव को समझना है।

परिणाम और प्रभाव: परियोजना का उद्देश्य रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र में संरक्षण रणनीतियों के माध्यम से मानव-हाथी संघर्षों का समाधान करना है। वन आवरण क्षरण, एशियाई हाथी की जनसांख्यिकी, और संघर्ष पैटर्न का अध्ययन करके, हम आवास पुनर्स्थापन के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने और संघर्ष तीव्रता पर मानवजनित कारकों के प्रभाव को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

परियोजना का लक्ष्य संघर्षों को कम करना और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना है, जिसमें युवा विचरणशील नर हाथियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए जनसांख्यिकी डेटा का विश्लेषण और लक्षित रणनीतियाँ शामिल हैं।

परिणामों में भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन मानचित्र तैयार करना, महत्वपूर्ण संरक्षण क्षेत्रों की पहचान करना, और स्थानीय अधिकारियों के लिए साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने में सहायता करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, परियोजना संघर्ष में शामिल हाथियों के व्यवहार में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी, भविष्य के संरक्षण प्रयासों का मार्गदर्शन करेगी और रिपु-चिरांग हाथी आरक्षित क्षेत्र के लिए एक व्यापक संरक्षण योजना तैयार करने में योगदान देगी।

बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र, पश्चिम बंगाल में बाघ संरक्षण और दीर्घकालिक निगरानी

वित्त पोषण स्रोत

पश्चिम बंगाल वन विभाग और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण, भारत सरकार

शोधकर्ता

शेखर सरकार और अंकित ठाकुर

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2018

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2026

अन्वेषक

डॉ. के. रमेश और डॉ. संदीप गुप्ता

उद्देश्य: इस परियोजना के उद्देश्य हैं: (i) समग्र आवास पुनर्जीवन के लिए क्षेत्रीय संरक्षण और खुफिया-आधारित प्रवर्तन को मजबूत करना, (ii) बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र और परिदृश्य परिसर में बाघ पुनर्स्थापन के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ बनाने हेतु आवास गुणवत्ता और शिकार जनसंख्या की स्थिति में सुधार करना, (iii) अन्य स्रोत क्षेत्रों से बाघ जनसंख्या को वृद्धि करना, जिसमें सॉफ्ट-रिलीज और हार्ड-रिलीज रणनीतियाँ शामिल हैं, ताकि बाघ और उसकी संतानों की जनसांख्यिकीय, आनुवंशिक और शारीरिक रूप से (स्वास्थ्य की दृष्टि से) स्थिर जनसंख्या सुनिश्चित की जा सके, (iv) आवास परिस्थितियों, शिकार जनसंख्या और बाघ जनसंख्या की निगरानी को संस्थागत बनाना, ताकि छोड़े गए जानवरों की 24x7 सुरक्षा और प्रभावी प्रबंधन के लिए प्रतिक्रिया तंत्र और नियमित स्टाफ क्षमता निर्माण सक्षम हो सके, और (v) बक्सा और जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान, बक्सा और मानस, साथ ही बक्सा और भूटान के पड़ोसीधमध्यवर्ती वनों के बीच बाघ विचरण के संदर्भ में एक परिदृश्य प्रबंधन योजना विकसित करना।

प्रगति: इस अवधि के दौरान, हमने बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र में संरक्षण प्रयासों में योगदान देने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया। पिछले वर्ष (नवंबर 2022 – अप्रैल 2023) के 239 कैमरा ट्रैप गिड्स (प्रत्येक 2 वर्ग किमी) से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया। वर्तमान वर्ष (नवंबर 2023 – अप्रैल 2024) में 175 कैमरा ट्रैप गिड्स में कैमरा ट्रैप स्थापित किए गए, ताकि आरक्षित क्षेत्र में प्रजातियों की गतिशीलता को समझा जा सके। मार्च 2024 में चरण-1 निगरानी शिकार घनत्व और वितरण का अनुमान लगाने के लिए उन्नत नमूनाकरण तकनीकों और स्थानिक विश्लेषण का उपयोग करके की गई।

जुलाई 2023 में लक्षित गांवों (भूतियाबस्ती के 21 परिवार, गंगुटिया के 63 परिवार और जयंती के 234 परिवारों) में एक प्रश्नावली सर्वेक्षण किया गया ताकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पुनर्वास की इच्छा और बाघ पुनर्स्थापन को समझा जा सके।

शिकार जनसंख्या वितरण को बढ़ाने और निकटवर्ती क्षेत्रों (असम और भूटान) से बाघों की प्राकृतिक प्रवास को सुगम बनाने के लिए कई आवास सुधार उपाय सुझाए गए (जैसे घासभूमि तैयार करने

के लिए क्षेत्रों की पहचान, खरपतवारों को हटाना और सहायक पुनर्जनन)। बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र के पूर्वी भाग में आवास कनेक्टिविटी पर विशेष ध्यान दिया गया, ताकि संकीर्णता को दूर किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें वन्यजीव निगरानी, वन्यजीव में उन्नत तकनीक, संघर्ष समाधान और सामुदायिक भागीदारी में उनकी क्षमता को बढ़ाया गया।

परिणाम और प्रभाव: परियोजना ने महत्वपूर्ण प्रगति की है और अपनी क्रियान्वित गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न परिणाम प्राप्त किए हैं। रणनीतिक कैमरा ट्रैपिंग के तहत, दिसंबर 2023 और फरवरी 2024 के बीच कई आरक्षित क्षेत्रों में एक नर बाघ की सफलतापूर्वक फोटो प्राप्त हुई। इस अवधि के दौरान तेंदुआ, धुमिल तेंदुआ, जंगली कुत्ता, तेंदुआ बिल्ली, जंगली बिल्ली और सुनहरी बिल्ली जैसे सह-शिकारी भी देखे गए।

आरक्षित क्षेत्र में शिकार वृद्धि के लिए एक संकर दृष्टिकोण सुझाया गया और लागू किया गया। हाल ही में किए गए शाकाहारी अनुमान में आरक्षित क्षेत्र में 12.17 प्रति वर्ग किमी से 14.87 प्रति वर्ग किमी के अनुमानित अकशेरुकी घनत्व में वृद्धि दर्ज की गई। मुख्य क्षेत्र के भीतर दो वन गांवों में किए गए प्रश्नावली सर्वेक्षण ने सुझाव दिया कि वन गांवों के निवासी स्वेच्छा से पुनर्वास के लिए तैयार हैं और आरक्षित क्षेत्र में बाघ वृद्धि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। परिणामस्वरूप, वन विभाग द्वारा 247 लोगों का पुनर्वास किया गया।

आरक्षित क्षेत्र के पूर्वी भाग में आवास सुधार के परिणामस्वरूप, संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैपिंग डेटा ने खुलासा किया कि यह क्षेत्र बाघों के लिए एक सक्रिय गलियारे के रूप में कार्य कर रहा है। हाल के बाघ का स्रोत क्षेत्र असम का मानस बाघ आरक्षित क्षेत्र पहचाना गया है, जो इस परिदृश्य में बाघों की सीमापार आवाजाही का समर्थन करता है।

वर्ष के दौरान, 203 वन कर्मचारियों को विभिन्न सर्वेक्षण तकनीकों जैसे दूरी नमूनाकरण, कैमरा ट्रैपिंग, संकेत सर्वेक्षण और रेडियो टेलीमेट्री पर प्रशिक्षित किया गया।

मील का पत्थर: परियोजना के दौरान, तैयारी कार्यों में आवास मूल्यांकन, शिकार आधार मूल्यांकन, संकेत सर्वेक्षण, बाघ और सह-शिकारी के लिए कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास, स्टाफ का क्षमता निर्माण और हितधारकों के साथ जागरूकता अभियान शामिल थे। इन प्रयासों ने 'चरण-1 अंतिम रिपोर्ट' तैयार करने और प्रस्तुत करने में योगदान दिया, जिसमें आरक्षित क्षेत्र में भविष्य की संरक्षण योजना और प्रबंधन निर्णयों को सूचित करने के लिए निष्कर्ष,

कार्यप्रणालियाँ और सिफारिशें शामिल हैं। परिणामस्वरूप, बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र असम और भूटान के समीपवर्ती संरक्षित क्षेत्रों से बाघों की लगातार आवाजाही का अनुभव कर रहा है, जो इन क्षेत्रों के बीच एक सक्रिय गलियारे की उपस्थिति का संकेत देता है। यह गलियारा निकट भविष्य में बक्सा बाघ आरक्षित क्षेत्र में प्राकृतिक बाघ आवाजाही को बढ़ावा देने का वादा करता है, जो परिदृश्य में बाघों की जनसंख्या और आनुवंशिक विविधता को बढ़ा सकता है।

जारी परियोजना

सीमापार तराई आर्क परिदृश्य में विस्तृत बुनियादी रैखिक ढांचे पर स्थित महत्वपूर्ण गलियारों का संरक्षण

वित्तपोषण स्रोत

गैंडा और बाघ संरक्षण कोष,
यूएसएफडब्ल्यूएस

शोधकर्ता

डॉ. आकांक्षा सक्सेना और मनीषा

आरंभ होने की तिथि

सितंबर 2022

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

अगस्त 2026

भावसं

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) भारत-नेपाल तराई आर्क परिदृश्य में बाघ और गैंडा जनसंख्या के लिए आवागमन गलियारों की पहचान करना, (ii) बुनियादी परिवहन ढांचे के डेटा लेयर्स बनाना (वर्तमान और भविष्य की सड़कों के नेटवर्क), (iii) बुनियादी परिवहन परियोजनाओं के संघर्ष क्षेत्रों की पहचान करना, जो बाघ और गैंडा के आवागमन को सीमित करते हैं और शमन प्राथमिकता पर ध्यान, और (iv) सीमापार संयोजकता समन्वय, विज्ञान कार्यान्वयन और क्षमता निर्माण को मजबूत करना।

प्रगति: रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, तराई आर्क परिदृश्य में दोनों प्रजातियों (बाघ और गैंडा) के लिए सीमापार आवास उपयुक्तता और संयोजकता की मॉडलिंग की गई। हमने फिर लिंगेज मैपर का उपयोग करके दोनों प्रजातियों के लिए सीमापार संयोजकता को मॉडल करने के लिए परिणामस्वरूप प्राप्त आवास उपयुक्तता परतों का उपयोग किया। इस अभ्यास ने परिदृश्य में सबसे कम लागत वाली आवागमन पथ, महत्वपूर्ण लिंक, और बाधा क्षेत्रों को चिह्नित करने में मदद की। हमने बुनियादी परिवहन ढांचे परियोजनाओं के संघर्ष क्षेत्रों की भी पहचान की जो परिदृश्य में बाघ और गैंडा के आवागमन को सीमित करते हैं। उम्मीद की

जाती है कि परिणाम, तेजी से विकसित हो रहे रैखिक बुनियादी ढांचे के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण आवास लिंक और महत्वपूर्ण बाधा क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करेंगे।

वर्तमान में निम्नलिखित कार्य जारी हैं: (i) परिदृश्य को जुड़े रखने के लिए महत्वपूर्ण गलियारों की प्राथमिकता का निर्धारण, (ii) इन गलियारों को पार करने वाले महत्वपूर्ण रैखिक बुनियादी ढांचे के खंडों की पहचान, (iii) परिणामी गलियारों का क्षेत्र प्रबंधकों के लिए व्यावहारिक रूप से उपयोगी परिणाम के रूप में समानीकरण, और (iv) भारत और नेपाल में तराई आर्क परिदृश्य में रैखिक बुनियादी ढांचा विकास और शमन योजना के संबंध में विभिन्न हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला की योजना बनाना।

परिणाम और निष्कर्ष: इस अभ्यास के परिणाम एक तकनीकी रिपोर्ट 'तराई आर्क परिदृश्य में बाघ और गैंडा के लिए सीमापार आवास उपयुक्तता और आवागमन गलियारों का मॉडलिंग' में प्रकाशित किए गए और वित्तपोषण एजेंसी को प्रस्तुत किए गए। अध्ययन को आंतरिक वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी 2023 में 'तराई आर्क परिदृश्य में बाघ और गैंडा के लिए आवास उपयुक्तता और आवागमन गलियारों का मॉडलिंग' शीर्षक से एक प्रस्तुति की गई।

भारतीय हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के आकलन और निगरानी और अनुकूलन रणनीतियाँ विकसित करना – चरण II

वित्तपोषण स्रोत
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

डॉ. गौतम तालुकदार और
डॉ. अभिजीत दास

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2021

अन्वेषक
श्री वीरेन्द्र आर. तिवारी (कार्य समन्वयक),
डॉ. एस. सत्यकुमार (नोडल वैज्ञानिक),
डॉ. रुचि बडोला,
डॉ. जे.ए. जॉनसन,
डॉ. आर. सुरेशकुमार,
डॉ. के. रमेश,

शोधकर्ता
डॉ. विनीत के. दुबे,
डॉ. प्रियंका कश्यप, अंकित सिंह,
शगुन ठाकुर, पूजा पंत,
दीपाली बंसल, कृष्णेंदु बैनर्जी,
मनीषा मठेला, अमरजीत कौर,
हिमांशु बोरा, मेघावी पुरोहित,
डॉ. निशिगंधा और रक्षित रायाल

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2026

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर जानकारी उत्पन्न करना, पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का आकलन करना, जलवायु शरणस्थली परिदृश्य को वर्णित करना, एक स्थानिक डेटाबेस स्थापित करना और दीर्घकालिक निगरानी को करना है। परियोजना का उद्देश्य संरक्षण रणनीतियों को सूचित करना और भारतीय हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन को बढ़ावा देना है।

प्रगति: वर्तमान नमूनाकरण पहल पश्चिम कामेंग बेसिन में प्रजातियों की समृद्धि और घटनाओं के पैटर्न के लिए आधारभूत डेटा स्थापित करने के साथ-साथ ब्यास, भागीरथी और तीस्ता नदी बेसिनों से प्रजातियों के वितरण और फेनोलॉजी के दीर्घकालिक नमूना पर केंद्रित है, जो परियोजना के चरण-I से जारी है। पश्चिम कामेंग बेसिन में नमूना ने 7 आर्डर से 21 नेमाटोड जेनरा, 49 जीनरा से 86 तितली प्रजातियों और 14 मछली प्रजातियों की पहचान की। इसके अलावा, अध्ययन ने लगभग 1980 मैक्रोइनवर्टेब्रेट नमूनों से आठ आर्डर और 48 परिवारों की पहचान की।

लंबी अवधि की निगरानी (2016–2023) बर्फीली ट्राउट, शिजोथोरैक्स रिचर्डसोनीई की प्रजनन फेनोलॉजी के लिए भी स्थापित की गई थी। निगरानी से पता चला कि गोनाड वजन से सोमैटिक वजन अनुपात नवंबर में 6.07 के शिखर से फरवरी में 0.14 तक कम हो गए, जो पश्चिमी हिमालयी नदियों की प्रवृत्तियों के साथ मेल खाते थे।

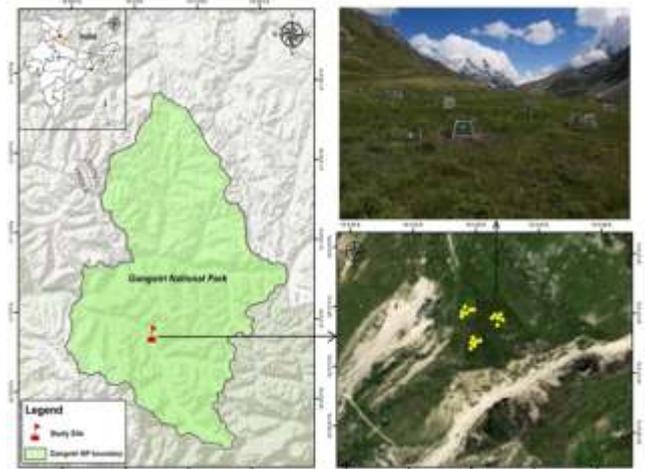
चरण-I और चरण-II डेटा का संकलन किया जा रहा है ताकि जलवायु परिवर्तन के तहत वन्यजीव संरक्षण के लिए नीति निर्णयों को सूचित करने के लिए 'वेब-आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली' विकसित की जा सके।

परिणाम और निष्कर्ष: स्तनधारियों के चल रहे नमूनाकरण में सिक्किम के तीस्ता नदी बेसिन में 4,492 ट्रेप नाइट्स के लिए 134

कैमरा ट्रैप की तैनाती शामिल है, जिसमें 27 स्तनधारी प्रजातियों का खुलासा हुआ, जबकि अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग बेसिन में 3,392 ट्रेप नाइट्स के लिए 168 कैमरा ट्रैप ने 20 स्तनधारी प्रजातियों का खुलासा किया।

हिमालयी नदियों में नदी के इकोटोन का अक्षांश आधारित तुलना ने मैक्रोइनवर्टेब्रेट्स के मैक्रोइकोलॉजी और जलवायु परिवर्तन पर नई अंतर्दृष्टियाँ प्रदान कीं। अध्ययन ने श्रेडोल्ड इंडिकेटर टैक्सा विश्लेषण का उपयोग करके 31 में से 11 संकेतक मैक्रोइनवर्टेब्रेट टैक्सा की पहचान की, जो उच्चतम समुदाय वाले ऊंचाई बैंड को दर्शाता है।

इसके अलावा, स्थापित दीर्घकालिक निगरानी स्थलों पर 'ओपन टॉप चैंबर' प्रयोगों के माध्यम से मिट्टी में वायु संचलन की चल रही निगरानी को गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड और सेला पास, अरुणाचल प्रदेश में जारी रखा जा रहा है।



उत्तराखंड में गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में स्थापित दीर्घकालिक निगरानी स्थलों पर ओपन टॉप चैंबर प्रयोगों के माध्यम से मिट्टी में वायु संचलन की चल रही निगरानी।

नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व, उत्तराखंड में जैव विविधता संरक्षण के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद, देहरादून के माध्यम से

शोधकर्ता

देबलीना चटर्जी

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

जून 2027

अन्वेषक

डॉ. बी.एस. अधिकारी और

डॉ. अनुकुल नाथ

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य नंदा देवी बायोस्फेयर रिजर्व के लिए एकीकृत प्रबंधन योजना तैयार करना है।

प्रगति: नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान, जोशीमठ वन प्रभाग में एक सर्वेक्षण किया गया ताकि पर्यावरण की वर्तमान स्थिति और स्थानीय जनसंख्या की वर्तमान स्थिति को समझा जा सके। छह गाँव, अर्थात् थेंग, चाई, पारसारी, बरगाँव, तपोवन और मेराग का दौरा किया गया। गाँव के मुखिया (सरपंच/प्रधान), महिला मंडल दल की प्रमुख और अन्य गाँव के लोगों के साथ समूह चर्चाएं आयोजित की गईं ताकि जलवायु परिवर्तन, आपदाओं, मानव-वन्यजीव संघर्षों और क्षेत्र की वर्तमान पारिस्थितिक समस्याओं के बारे में जानकारी और धारणाएं प्राप्त की जा सकें। चर्चाओं से पता चला कि गंभीर मानव-वन्यजीव संघर्ष और जलवायु परिवर्तन ने राजस्व उत्पन्न करने की संभावनाओं और कृषि पैटर्न को प्रभावित किया है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, पशु चारण और जलवायु परिवर्तन सहित कुछ प्रमुख विषयों पर जानकारी नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व के संक्रमण क्षेत्र की छह समुदायों से समूह चर्चाओं के माध्यम से प्राप्त की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: वर्तमान अध्ययन नंदा देवी बायोस्फेयर रिजर्व का इतिहास ट्रेस करता है और वैज्ञानिक समुदायों के हितों को निर्धारित करने के लिए वर्तमान शोध प्रवृत्तियों को संश्लेषित करता है, जो बदले में रिजर्व के प्रबंधन की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से कुल 459 विद्वानों के प्रकाशन खोजे गए। इनमें से 313 को पिछले शोध के हितों को निर्धारित करने के लिए सामग्री विश्लेषण के लिए उपयोग किया गया और 112 को विषयों को, कवर किए गए परिदृश्यों और अपनाई गई तकनीकों की पहचान करके वर्तमान शोध प्रवृत्तियों के लिए जांचा गया। शोध विषयों, पारिस्थितिक तंत्र, और अध्ययन क्षेत्रों के भौगोलिक कवरेज का वितरण विषम और असमान पाया गया, जहां फूलों के अध्ययन अभी भी पारिस्थितिक अनुसंधान पर हावी हैं। थेंग, जोशीमठ में अपनी फसलों, जैसे आलू, पालक, सरसों के बीज, दालें, गाजर, मूली, बाजरा, मक्का, सेब, मटर और कई अन्य के लिए गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है, क्योंकि जंगली सूअर, जो निशाचर चारावास हैं, उनकी फसलें नष्ट करते हैं। औषधीय पौधों का संग्रह और व्यापार, विशेष रूप से *हेल्लेबोर*,

पिकोरिजा कुरोआ और *कैटरपिलर कवक*, *ओफियोकोर्डिसेप्स साइनेसिस*, स्थानीय गाँव समुदायों की आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। पशु चारण औषधीय पौधों के लिए एक प्रमुख खतरा है, जबकि चारण की तीव्रता चरागाहों के आकार, स्थान, स्वामित्व, और प्रवासी पशुओं की संख्या के आधार पर बहुत भिन्न होती है।

सबसे प्रभावी संरक्षण विधि यह सुनिश्चित करना है कि सभी वनस्पतियों और जीवों की जनसंख्या अपने मूल आवास में विकसित होती रहे। कोई एकल क्षेत्र, कॉर्पोरेट या लोग, अकेले संरक्षण नहीं कर सकताय इसके लिए विभिन्न संगठनों, विषयों और हितधारकों को शामिल करने वाले सहयोगात्मक प्रयास की आवश्यकता होती है। इसलिए, सहयोग किसी भी संरक्षण और प्रबंधन दृष्टिकोण को विकसित करने और लागू करने के लिए महत्वपूर्ण है जैसे कि सतत पर्यटन, नए आर्थिक अवसरों का निर्माण, क्षमता निर्माण और क्षेत्र में आर्थिक विकास के लिए धन आवंटन, जलवायु-लचीली कृषि, जलग्रहण प्रबंधन और सामुदायिक-आधारित गतिविधियों के माध्यम से आपदा जोखिम में कमी, और आरएस और जीआईएस तकनीक का उपयोग आवास और परिदृश्य स्तर के अध्ययन में।



मील का पत्थर: भविष्य के अनुसंधान प्राथमिक क्षेत्रों का एक व्यापक दृष्टिकोण देने के लिए जैवमंडल रिजर्व में संगठनात्मक विकास को प्रतिबिंबित करने के लिए जैव विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र, सामाजिक-पारिस्थितिक, प्रबंधन और विकास, और अनुसंधान और निगरानी के संदर्भ में यूनेस्को द्वारा निर्धारित किया गया है। इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षाविदों और संरक्षणवादियों

को उनके वैज्ञानिक रुचियों के क्षेत्रों को व्यापक बनाने और वन प्रबंधन एजेंसियों को सामाजिक-आर्थिक विकास और जैविक संरक्षण के संतुलन के साथ प्रबंधन रणनीतियों को लागू करने में मदद करेंगे तथा आसपास के परिदृश्यों की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करेंगे।

जारी परियोजना

भावसं

गौर पुनर्वास योजना 2023–28 : संजय – दुबरी बाघ अभ्यारण्य, मध्य प्रदेश में गौर, बोस गॉरस गॉरस की स्थापना

वित्तपोषण स्रोत

मध्य प्रदेश वन विभाग

शोधकर्ता

ऋतेश विश्वकर्मा और
भास्कर भंडारी

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2023

अन्वेषक

डॉ. पराग निगम,
डॉ. बिलाल हबीब और क्षेत्रीय
निदेशक,
संजय बाघ अभ्यारण्य

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2028



उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) संजय बाघ अभ्यारण्य में गौर को छोड़ने के बाद इनकी जनसंख्या का अन्वेषण और स्थापना का अध्ययन करना, (ii) संजय बाघ अभ्यारण्य में पुनर्वासित गौर के विचरण व्यवहार, रेंजिंग पैटर्न और आवास उपयोग का अध्ययन करना, (iii) संजय बाघ अभ्यारण्य में पुनर्वासित गौर की गतिविधि व्यवहार और अंतःक्रिया का अध्ययन करना, (iv) गौर की खाद्य आदतों और परिदृश्य में प्रतिस्पर्धा का अध्ययन करना और (v) संजय बाघ अभ्यारण्य में पुनर्वास के बाद गौर की स्वास्थ्य स्थिति का मूल्यांकन करना।

प्रगति: परियोजना के भाग के रूप में, 50 गौर को कान्हा और सतपुड़ा बाघ अभ्यारण्यों से संजय बाघ अभ्यारण्य में पुनर्वासित किया गया। पहले चरण में पकड़ा गया और, 1 जून से 7 जून 2023 के बीच कान्हा से 28 गौर (21 मादा और सात नर) स्थानांतरित किए गए। दूसरे चरण में, 26 जून से 29 जून 2023 के बीच सतपुड़ा से 16 गौर (13 मादा और तीन नर) स्थानांतरित किए गए। इनको सैटेलाइट-जीपीएस वर्टेक्स कॉलर (4), वीएचएफ

कॉलर (8), और स्वयं निर्मित रंग-कोडित गले के बैंड (22) के साथ लैस किया गया।

स्थानांतरण के बाद, गौर को प्रारंभ में 2 हेक्टेयर के छोटे सॉफ्ट-रिलीज बाड़े में निकटतम पर्यवेक्षण के लिए छोड़ दिया गया और फिर उन्हें अनुकूलन के लिए 30 हेक्टेयर के बड़े बाड़े में ले जाया गया। पुनर्वासित गौर के पहले स्टॉक को 23 जून 2023 को खुले जंगल में और दूसरे स्टॉक को 19 अगस्त 2023 को छोड़ा गया। पुनर्वासित गौर की निगरानी जमीनी ट्रैकिंग, रेडियो कॉलर, सैटेलाइट टेलीमेट्री और विस्तृत दृश्य अवलोकनों के माध्यम से की जाती है।

परिणाम और निष्कर्ष: बाड़े से रिलीज के बाद, स्थानांतरित गौर संजय बाघ अभ्यारण्य और पड़ोसी संरक्षित क्षेत्रों में विभिन्न रेंजों में फ़ैल गए, जो पूर्वी और उत्तरी क्षेत्रों में छोटे, अस्थायी झुंड बनाते थे। वयस्क बैल, गायों और उपवयस्क बैलों की तुलना में बड़े क्षेत्रों में कब्जा करते हैं। स्थानांतरित गौर ने प्रारंभ में संजय दुबरी बाघ

अभ्यारण्य के चारों ओर सभी रेंजों और संरक्षित क्षेत्रों का अन्वेषण किया, जून 2023 में 384 किमी² क्षेत्र को कवर किया गया। जुलाई में यह 751 किमी² तक बढ़ गया और फिर अक्टूबर में 601 किमी² और दिसंबर 2023 में 585 किमी² तक घट गया। अंततः, 12-17 गौर के तीन अलग-अलग झुंडों का गठन करने के बाद, इन झुंडों का गृह क्षेत्र जनवरी-फरवरी 2024 में 274-418 किमी² तक था। स्थानांतरित जनसंख्या के वयस्क बैल अकेले रहते थे, मैथुन मौसम (नवंबर से फरवरी) के दौरान झुंडों में शामिल होने के कुछ ही दर्ज उदाहरण मिले। जनसंख्या 54 व्यक्तियों तक बढ़ गई, जिसमें कुल 12 जन्म और दो प्राकृतिक मृत्यु शामिल थे।

पुनर्वासित गौरों ने मुख्य रूप से पर्णपाती जंगल का उपयोग किया, इसके बाद कृषि भूमि, झाड़ी वाले भूमि और बंजर घास के मैदानों का उपयोग किया। आवास उपयोग की रैंकिंग इस प्रकार थी: पर्णपाती जंगल > कृषि भूमि > झाड़ीनुमा भूमि > बंजर घास का मैदान > जल निकाय > खुला जंगल। खाद्य व्यवहार के अध्ययन ने बताया कि गौरों ने 32 पौधों की प्रजातियों का खाने के लिए इस्तेमाल किया, मुख्य रूप से *डेंड्रोकालमस स्ट्रिक्टस*, *शोरिया रोबस्टा*, *डायोस्पायरोस मेलानॉक्सिलॉन*, *हेटेरोपोगोन कंटोर्टस*, और *क्राइसोपोगोन जिजानियोइड्स*। उनका आहार स्थानीय हाथियों के साथ ओवरलैप करता था, जो समान चारागाह क्षेत्र का संकेत देता था। सभी गौरों ने रिलीज के बाद अच्छा शारीरिक

स्थिति प्रदर्शित की, जो सफल अनुकूलन का संकेत देती थी। स्थानांतरण के दौरान तनाव स्तर का अध्ययन मल कॉर्टिसोल मेटाबोलाइट्स के माध्यम से किया गया। परिवहन के दौरान बढ़ा हुआ तनाव स्तर (3035.75 ± 383.4 पिको ग्राम/मिलीलीटर) पोस्ट-रिलीज पर घटकर (254.1 ± 73.59 पिको ग्राम/मिलीलीटर) हो गया, जो तीसवें दिन (220.58 ± 66.62 पिको ग्राम/मिलीलीटर) पर आधार रेखा स्तर तक पहुंच गया। 45वें दिन स्थिर तनाव स्तर (234.86 ± 45.86 पिको ग्राम/मिलीलीटर) ने नए आवास में सफल अनुकूलन का संकेत दिया।

मील का पत्थर: कान्हा और सतपुड़ा बाघ अभ्यारण्यों से 44 गौरों को सफलतापूर्वक संजय बाघ अभ्यारण्य में पुनर्वासित किया गया। थियाफेंटेनिल (एक मादक) को प्राथमिक श्वसनकारक एजेंट के रूप में प्रभावी उपयोग के साथ ड्रग प्रोटोकॉल को मानकीकृत किया गया। एक व्यापक पशु चिकित्सा प्रोटोकॉल स्थापित किया गया, जिसमें एक सुसज्जित पकड़, पशु परिवहन और निगरानी टीम शामिल थी। रंग-कोडित गले के बैंड के साथ-साथ रेडियो कॉलर का उपयोग करके एक लागत-प्रभावी व्यक्तिगत चिह्नकन तकनीक भी विकसित की गई। परियोजना ने एक संवेदनशील और अच्छी तरह प्रशिक्षित टीम के समूह का भी विकास किया जो बड़े शाकाहारी प्राणियों के स्थानांतरण को पूरा कर सके।

जारी परियोजना

भावस

समृद्धि एक्सप्रेसवे वन्यजीव ओवरपास और अंडरपास की निगरानी

वित्तपोषण स्रोत

महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब

शोधकर्ता

डॉ. शाहिर खान, अंकन हलदर, नेहा यादव, वेदांशी महेश्वरी और मानसी अरोड़ा

आरंभ होने की तिथि

नवंबर 2023

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

नवंबर 2028

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) एक्सप्रेसवे के संचालन के दौरान वन्यजीव अंडरपास और ओवरपास की निगरानी, (ii) शमन उपायों की प्रभावशीलता निर्धारित करने के लिए कैमरा ट्रैप का उपयोग, और (iii) शमन संरचना के आसपास के आवास लक्षण, शोर और कंपन स्तर का मूल्यांकन।

प्रगति: हमने ओवरपास और अंडरपास संरचनाओं का आकलन किया और कैमरा ट्रैप तैनाती अभ्यास शुरू किया। कैमरे क्रॉसिंग संरचनाओं की दीवारों पर लगाए गए थे। कुल 28 कैमरे सात वन्यजीव ओवरपास पर लगाए गए, और 34 कैमरे 17 वन्यजीव अंडरपास में वितरित किए गए। प्रत्येक वन्यजीव ओवरपास में चार कैमरे लगाए गए, जबकि प्रत्येक वन्यजीव अंडरपास में दो कैमरे लगाए गए।

कैमरे की तैनाती वन्यजीव गतिविधि की निगरानी करने और वन्यजीव विचरण की सुविधा के लिए ओवरपास और अंडरपास की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए होती है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के पारिस्थितिक प्रभाव को समझने और भविष्य के संरक्षण प्रयासों को सूचित करने में हमारी समझ को बढ़ाता है।

तालिका 1: समृद्धि एक्सप्रेसवे पर पैकेज नंबर और चौनेज नंबर के साथ वन्यजीव ओवरपास पर कैमरा ट्रैप तैनाती का विवरण।

पैकेट सं.	चेनेज सं.	कैमरे
1	15	4
2	77 & 71	4,4
5	217 & 218	4,4
9	406 & 436	4,4

तालिका 2: समृद्धि एक्सप्रेसवे पर पैकेज नंबर और चौनेज नंबर के साथ वन्यजीव अंडरपास पर कैमरा ट्रैप तैनाती का विवरण।

पैकेट सं.	चेनेज सं.	कैमरे
1	12+900	2
2	34+960	2
2	79+009	2

परिणाम और निष्कर्ष: कैमरा ट्रैप निगरानी पहल शुरू हो गई है, जिसमें टीम ने कई कैमरों का सत्यापन किया और विभिन्न जानवरों की प्रजातियों की उपस्थिति का निरीक्षण किया। दो ओवरपास में, कैमरा में कैद जानवरों में नीलगाय, बोसेलाफस ट्रेगोकामेलस, चिंकारा, गजेला बेनेट्टी, भारतीय खरगोश, लेपुस नाइग्रिकोलिस, साही, हिस्ट्रीक्स इंडिका, जंगली सूअर, सस स्कॉफ, तेंदुआ, पेंथेरा पार्डस, नेवला, हर्पेस्टिडे और ग्रे लंगूर, सेमनोपिथेकस शामिल हैं। ये अवलोकन वन्यजीवों के ओवरपास के उपयोग के बारे में मूल्यवान वैज्ञानिक डेटा प्रदान करते हैं और नागपुर-मुंबई सुपर कम्युनिकेशन एक्सप्रेसवे के साथ वन्यजीव शमन उपायों की प्रभावशीलता का आकलन करने में मदद करते हैं।

टीम एक्सप्रेसवे के साथ-साथ पक्षी गणना भी कर रही है। अब तक, 310 बिंदुओं से डेटा एकत्र किया गया है। हर 500 मीटर की दूरी पर, टीम पास के क्षेत्र में मौजूद पक्षी प्रजातियों की गणना करने के लिए बिंदु गणना करती है। यह प्रणालीगत दृष्टिकोण नागपुर-मुंबई सुपर कम्युनिकेशन एक्सप्रेसवे के साथ एवियन विविधता और वितरण का व्यापक आकलन करने की अनुमति देता है।

पैकेट सं.	चेनेज सं.	कैमरे
2	78+414	2
2	75+695	2
2	74+700	2
2	73+897	2
2	73+745	2
2	73+038	2
2	72+855	2
2	72+450	2
2	71+178	2
3	149+337	2
7	339.4, 339.3	2,2
9	398+682	2
10	452.985	2

जारी परियोजना

विदर्भ, महाराष्ट्र के बाघ वाले क्षेत्रों में बाघ, सह-शिकारियों और शिकार की दीर्घकालिक निगरानी

वित्तपोषण स्रोत

महाराष्ट्र वन विभाग, महाराष्ट्र सरकार

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब और डॉ. (कैप्टन) पराग निगम

शोधकर्ता

ए. कृष्णन, अक्षयी ए.एस., अनन्या अजय, अंजलि थपलियाल, अनुभूति कृष्णा, अरित्र राँय, जयदीप पाटिल, जूरी राँय, कनिष्का शर्मा, खदीजा, सजिद रेजा और सुमन कोले

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2019

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

अप्रैल 2029

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) परिदृश्य में बाघ, सह-शिकारियों और शिकार प्रजातियों की स्थिति का मूल्यांकन करना, (ii) परिदृश्य में बाघ के प्रसार की पहचान करना, (iii) चयनित बाघियों और उनके बाद की पीढ़ियों की गतिविधियों को समझना, और (iv) मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए संरक्षण पुनर्वास के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करना।

प्रगति: बाघ-प्रभावित क्षेत्रों में किए गए सर्वेक्षण में मेलघाट बाघ अभ्यारण्य, पेंच बाघ अभ्यारण्य महाराष्ट्र, नवेगांव-नागजिरा बाघ अभ्यारण्य, ताडोबा-अंधारी बाघ अभ्यारण्य, ब्रह्मपुरी (क्षेत्रीय) वन प्रभाग, उमरेड-पाओनी-करहंदला वन्यजीव अभ्यारण्य, टिपेश्वर वन्यजीव अभ्यारण्य, पांधारकवड़ा वन प्रभाग (क्षेत्रीय), पैनगंगा वन्यजीव अभ्यारण्य, बोर बाघ अभ्यारण्य और अकोला वन प्रभाग शामिल हैं।

क्षमता निर्माण: क्षमता निर्माण कार्यक्रम का उद्देश्य परियोजना के लिए डेटा संग्रह में शामिल वन कर्मियों के ज्ञान, कौशल और क्षमताओं को बढ़ाना था। सभी साइटों के वन कर्मियों (गार्ड और

वनपाल) को कैमरा ट्रैपिंग और ट्रांसेक्ट सर्वेक्षण के लिए प्रशिक्षित किया गया। सिद्धांत सत्र में लाइन ट्रांसेक्ट और कैमरा ट्रैपिंग की बुनियादी समझ और इन विधियों के पीछे के विज्ञान का अध्ययन किया गया। इसे सरल पावरपॉइंट प्रस्तुतियों का उपयोग करके प्रस्तुत किया गया और इसके बाद सामान्य प्रश्नों और बुनियादी संदेहों के बारे में प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। दूसरे सत्र में, सभी प्रतिभागियों को जीपीएस, कम्पास, रेंजफाइंडर आदि उपकरणों का उपयोग और रेखा ट्रांसेक्ट चलाने के सही तरीकों के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा, प्रतिभागियों को कैमरा ट्रैप लगाने के सही तरीकों और बुनियादी कैमरा सेटिंग्स, जिसमें अभ्यास के दौरान आवश्यक सावधानियां शामिल हैं, के बारे में भी बताया गया।

बाघ और तेंदुओं की जनसंख्या का आकलन: एक व्यापक संकेत सर्वेक्षण के बाद, बाघों और तेंदुओं की घनत्व की प्रचुरता का अनुमान लगाने के लिए एक कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास किया गया। विदर्भ, महाराष्ट्र के अध्ययन क्षेत्रों में 3,230 गिड्स को कवर करने वाले 1 या 2 ब्लॉकों में कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास किया गया।



ताडोबा-अंधारी बाघ अभ्यारण्य, ब्रह्मपुरी (क्षेत्रीय) वन प्रभाग, उमरेड-पाओनी-करहंदला वन्यजीव अभ्यारण्य, पेंच बाघ अभ्यारण्य, टिपेश्वर वन्यजीव अभ्यारण्य, पांधारकवड़ा वन प्रभाग (क्षेत्रीय), पैनगंगा वन्यजीव अभ्यारण्य, बोर बाघ अभ्यारण्य और अकोला वन प्रभाग के कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास को पूरा कर लिया गया है। मेलघाट बाघ अभ्यारण्य और नवेगांव-नागजिरा बाघ अभ्यारण्य के कैमरा ट्रैपिंग के दूसरे ब्लॉक का कार्य प्रगति पर है।

शिकार की जनसंख्या का आकलन: कैमरा ट्रैपिंग के साथ-साथ, विदर्भ, महाराष्ट्र के अध्ययन क्षेत्रों में प्रमुख अविकारी प्रजातियों की घनत्व का अनुमान लगाने के लिए रेखा ट्रांसेक्ट सर्वेक्षण भी किए गए। प्रत्येक ट्रांसेक्ट लाइन का सर्वेक्षण लगातार छह दिनों तक सुबह के समय किया गया। उपरोक्त अभ्यास से एकत्र किए गए डेटा का वर्तमान में प्रसंस्करण किया जा रहा है।

एनएच 44 अंडरपास निगरानी: पेंच बाघ अभ्यारण्य, महाराष्ट्र से गुजरते हुए एनएच 44 पर नौ अंडरपास की साल भर निगरानी के लिए 78 कैमरा ट्रैप लगाए गए हैं। कैमरा ट्रैप में कैद किये गए महत्वपूर्ण घटनाओं को वन विभाग को सूचित किया गया। शोधकर्ताओं, क्षेत्र सहायकों और वन विभाग के कर्मचारियों द्वारा अंडरपास की नियमित गश्त की जाती है।

परिणाम और निष्कर्ष: व्यापक निगरानी: परियोजना ने बाघों, सह-शिकारियों और शिकार घनत्व की वार्षिक मूल्यांकन के लिए एक मजबूत प्रोटोकॉल स्थापित किया है। यह सतत निगरानी जनसंख्या प्रवृत्तियों का विश्लेषण, संभावित खतरों की पहचान और संरक्षण रणनीतियों को सूचित करने के लिए एक महत्वपूर्ण डेटा सेट प्रदान करती है।

जनसंख्या अनुमान वर्षों से संगठित डेटा संग्रह के माध्यम से, परियोजना ने बाघों, सह-शिकारियों और शिकार की जनसंख्या के विश्वसनीय अनुमान उत्पन्न किए हैं। यह जानकारी पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का आकलन करने और परिदृश्य के भीतर शिकारी-शिकार संबंधों को समझने के लिए आवश्यक है।

प्रवृत्ति विश्लेषण: बहुवर्षीय डेटा बाघों, सह-शिकारियों और शिकार की जनसंख्या प्रवृत्तियों के विश्लेषण की अनुमति देता है। यह पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर संभावित परिवर्तनों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जैसे कि शिकार की उपलब्धता में उतार-चढ़ाव या नए खतरों का उदय। प्रवृत्तियों का पता लगाने से सक्रिय संरक्षण उपायों को लागू करने की अनुमति मिलती है।

अंडरपास निगरानी: अंडरपास ने सुरक्षित वन्यजीव आंदोलन और संघर्ष को कम करने के अपने मुख्य उद्देश्य के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणाम दिए हैं।

पुनर्वास: बाघों का पुनर्वास नवेगांव-नागजिरा टाइगर रिजर्व में वर्तमान बाघ जनसंख्या को बढ़ाने और नर-पक्षपाती सेक्स अनुपात को सुधारने का लक्ष्य है। टेलीमेट्री डेटा बाघों के गतिविधि पारिस्थितिकी पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा, जिससे बेहतर प्रबंधन रणनीतियों का मार्ग प्रशस्त होगा।

रिपोर्ट: रेखा ट्रांसेक्ट और कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास में एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण किया जा रहा है ताकि 2024 चरण-IV रिपोर्ट प्रकाशित की जा सके।

वन्यजीव आवास के एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी, धूमिल तेंदुआ

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

शोधकर्ता

आजम खान, डैनियल मिरांडा, रामेश्वर घाडे और त्रिभुवन सिंह

आरंभ होने की तिथि

दिसंबर 2022

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब और डॉ. गोपी जी.वी.

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

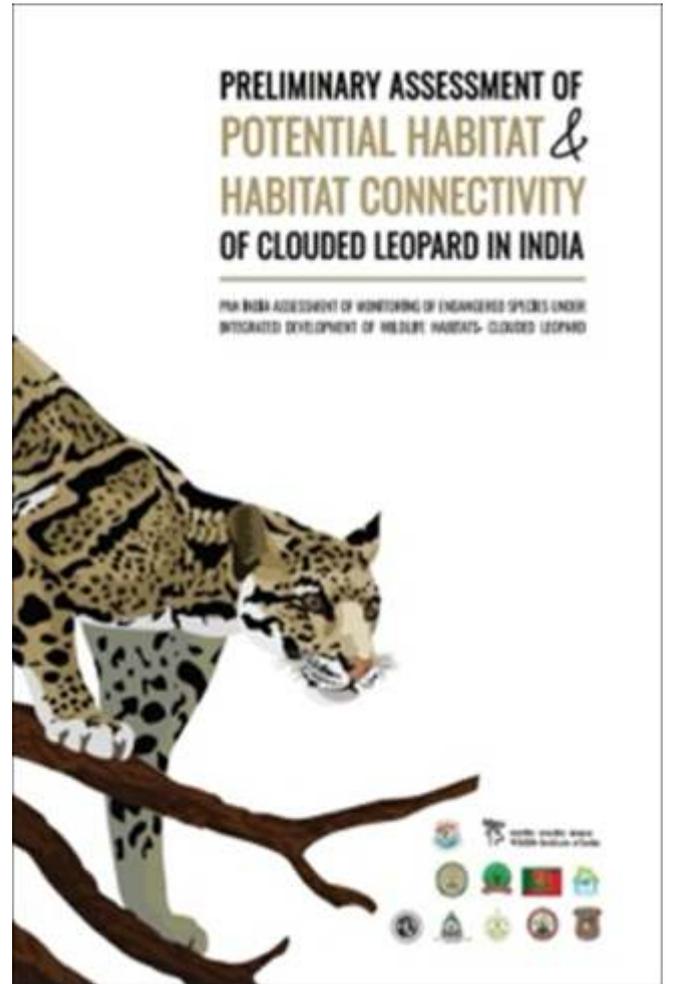
दिसंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) आईडीडब्ल्यूएच योजना के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों – धूमिल तेंदुआ की वर्तमान स्थिति का आकलन करना, और (ii) आईडीडब्ल्यूएच योजना के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों – धूमिल तेंदुआ की जनसंख्या और आवास मूल्यांकन के लिए दीर्घकालिक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना।

प्रगति: 'भारत में धूमिल तेंदुआ की संभावित आवास और आवास संयोजकता का प्रारंभिक आकलन' रिपोर्ट 14 मार्च 2023 को प्रस्तुत की गई। इस रिपोर्ट के परिणामों का उपयोग हमारे फील्ड साइटों में कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास के लिए उच्च उपयुक्तता वाले क्षेत्रों का चयन करने के लिए किया गया। इस रिपोर्ट के परिणाम आंतरिक वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी- भारतीय वन्यजीव संस्थान 2023 में भी प्रस्तुत किए गए।

एक शोध पत्र मसौदा 'द नियोफेलिस कनेक्शन: पूर्वोत्तर भारत में धूमिल तेंदुआ, नियोफेलिस नेबुलोसा के आवास कनेक्टिविटी की जांच' भी प्रस्तुत किया गया। इस पत्र का उद्देश्य भारत के पूर्वोत्तर परिदृश्य में प्रजातियों की संभावित आवास कनेक्टिविटी का मॉडल बनाना है। यह संरक्षण प्राथमिकता क्षेत्रों (बॉटलनेक्स) की भी पहचान करता है। कैमरा ट्रैप तैनाती जारी है और जुलाई 2024 तक पूरी होने की उम्मीद है। कैमरा ट्रैपिंग के साथ, संकेत सर्वेक्षण और मल संग्रह भी किया जा रहा है। मल के नमूने एकत्र किए गए और प्रयोगशाला में भेजे गए हैं।

अपेक्षित परिणाम: वर्तमान कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास के परिणाम हमें पूर्वोत्तर भारत में धूमिल तेंदुआ की अनुमानित जनसंख्या का आकलन देंगे। एकत्र किए गए मल के नमूने इस प्रजाति और इन संरक्षित क्षेत्रों में निवास करने वाले अन्य जानवरों के आहार और वितरण के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं।



वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत लुप्तप्राय प्रजातियों का अखिल भारतीय आकलन और निगरानी – लाल पांडा (xv)

वित्त पोषण स्रोत
पर्यावरण, वन और जलवायु
मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता
गौरव पीजे, मेघना लिम्बू, पूजा
कुमारी, पूजन प्रधान और रोशमे
बोरगोहेन

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2025

अन्वेषक
डॉ. गोपी जीवी और
डॉ. बिलाल हबीब

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य (i) भारत में लाल पांडा के वितरण और प्रचुरता का आकलन करना, (ii) लाल पांडा सर्वेक्षण के लिए एक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना, और (iii) लाल पांडा के आवास और वितरण का आकलन और भविष्यवाणी करना।

प्रगति: इस दुर्लभ प्रजाति की प्रारंभिक जानकारी एकत्र करने के लिए, लाल पांडा आवास क्षेत्रों के सीमांत गांवों में अर्ध-संरचित प्रश्नावली के साथ सूचना सर्वेक्षण और समूह चर्चाएँ आयोजित की गईं। मुक्त और बंद प्रश्न पूछकर उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति, मानव-वन्यजीव संघर्ष मुद्दों और उनके द्वारा उठाए गए शमन उपायों, लाल पांडा के प्रति धारणा और उसके संरक्षण स्थिति और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के बारे में जागरूकता के बारे में जानकारी एकत्र की गई। हमारे सर्वेक्षण के दौरान प्रमुख सूचना देने वाले ज्यादातर गाओ बुरा, जो सामान्यतः गांव के मुखिया के रूप में जाने जाते हैं, ग्राम पंचायत सदस्य, शिकारी, ट्रेकर, प्रकृति गाइड, चरवाहे, लक्षित किसान जो अक्सर जंगल में गैर-काष्ठ वन उत्पाद एकत्र करने के लिए जाते हैं, वन विभाग के अधिकारी, वन्यजीव संरक्षण में काम करने वाले लोग और शोध विद्वान थे।

संकेत सर्वेक्षण: प्रश्नावली सर्वेक्षण और द्वितीयक साहित्य से इनपुट के साथ, हमने लाल पांडा के संकेत (प्रत्यक्ष संकेत और अप्रत्यक्ष संकेत – मल, पंजे के निशान, भोजन के निशान) के लिए पशु मार्गों की निगरानी की।

कैमरा ट्रैपिंग: कैमरा ट्रैपिंग के लिए, 5 वर्ग किमी ग्रिड वार (प्रत्येक ग्रिड में कम से कम एक कैमरा के साथ) फील्ड सर्वेक्षण अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और उत्तरी पश्चिम बंगाल के राज्यों के संरक्षित और गैर-संरक्षित क्षेत्रों में 2200 मीटर – 4000 मीटर की ऊँचाई पर आयोजित किए गए थे। प्रत्येक कैमरा ट्रैप स्टेशन पर, एक 10 मीटर व्यास वाले गोलाकार प्लॉट से संबंधित पर्यावरण और आवास चर एकत्र किए गए। अरुणाचल प्रदेश में, 82 ग्रिडों में 187 कैमरा ट्रैप लगाए गए हैं। सिक्किम में, 86 ग्रिडों में 133 कैमरा ट्रैप लगाए गए हैं और पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग और कालिम्पोंग जिलों में 83 ग्रिडों को कवर करते हुए कुल 226 कैमरा ट्रैप लगाए गए हैं।

परिणाम और निष्कर्ष: मुख्य सूचना सर्वेक्षण: अरुणाचल प्रदेश के अंजॉ, तवांग और पश्चिम कामेंग जिलों में अर्ध-संरचित प्रश्नावली के साथ 158 गांवों के 421 व्यक्तियों का साक्षात्कार किया गया। सिक्किम में, 58 गांवों से 130 उत्तरदाताओं का साक्षात्कार किया गया। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग और कालिम्पोंग जिले से 52 गांवों के 688 उत्तरदाताओं का साक्षात्कार किया गया। प्रमुख सूचना सर्वेक्षण के दौरान अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले से एक लाल पांडा की खाल दर्ज की गई। हालांकि, इन सर्वेक्षणों से एकत्र किए गए डेटा का अभी विश्लेषण किया जाना बाकी है।

संकेत सर्वेक्षण: अरुणाचल प्रदेश के अंजॉ, तवांग और पश्चिम कामेंग जिलों में कुल 49 पगडंडियों पर क्रमबद्ध रूप से चलकर लाल पांडा के संभावित आवास क्षेत्र में 376.8 किमी के कुल प्रयास के साथ, 28 अप्रत्यक्ष संकेत प्राप्त किए गए। सिक्किम में, 562.6 किमी की दूरी को कवर करने वाले 103 पगडंडियों पर चलकर 0.092 संकेत/किमी की सामने आने की दर के साथ 52 लाल पांडा संकेत प्राप्त किए गए। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग और कालिम्पोंग जिलों में संकेत सर्वेक्षण के लिए, विभिन्न लंबाई की कुल 65 पगडंडियों पर चलकर 480 किमी की संयुक्त दूरी को कवर किया गया। इन पगडंडियों के सर्वेक्षण के दौरान, लाल पांडा के 160 संकेत प्राप्त किए गए (13 प्रत्यक्ष दृश्य और 147 अप्रत्यक्ष प्रमाण), जिससे संकेत मिलने का दर 0.33 संकेत/किमी रहा।

कैमरा ट्रैपिंग: अरुणाचल प्रदेश में, 82 ग्रिडों को कवर करते हुए 5 वर्ग किमी के चयनित ग्रिडों में 187 कैमरा ट्रैप लगाए गए, कुल



6526 कैमरा ट्रैप रातों के लिए। इन कैमरा ट्रैपों से 31 स्तनधारी प्रजातियाँ दर्ज की गईं, जिनमें लाल पांडा के 20 स्वतंत्र कैप्चर थे, अंजों, तवांग और पश्चिम कामेंग जिलों से क्रमशः 0.097(±0.037), 0.005(±0.233), और 0.001(±0.174) की कैप्चर दर थी। हमने अंजों जिले से लाल पांडा की पहली फोटोग्राफ दर्ज की। सिक्किम में, विभिन्न आवास क्षेत्रों में 86 ग्रिडों को कवर करते हुए कुल 133 कैमरा ट्रैप लगाए गए। हमने 74 कैमरा ट्रैप को वापस प्राप्त किया जो कुल 5176 कैमरा ट्रैप रातों के प्रयास के लिए लगाए गए थे। कुल 52 प्रजातियाँ दर्ज की गईं, जिनमें 32 स्तनधारी, 5 गैलीफोर्मस, और 15 पक्षी प्रजातियाँ शामिल हैं और 18 लाल पांडा को कैप्चर किया गया था। पश्चिम बंगाल में, 83 ग्रिडों को कवर

करते हुए 226 कैमरा ट्रैप में से, कुल 89 कैमरा ट्रैप (67–दार्जिलिंग, 19–कालिम्पोंग) को वापस प्राप्त किया गया। इन 89 कैमरा ट्रैप स्टेशनों से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया, जिसमें 9186 कैमरा ट्रैप रातों (6147–दार्जिलिंग, 3039–कालिम्पोंग) के संयुक्त ट्रैपिंग प्रयास के दौरान 20 से अधिक स्तनधारी कैप्चर और 135 स्वतंत्र रेड पांडा कैप्चर (127–दार्जिलिंग, 08–कालिम्पोंग) प्राप्त हुए। इससे दार्जिलिंग का सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक 2.06±0.71 और कालिम्पोंग का 0.26 प्रति 100 ट्रैप रात प्राप्त हुआ।

परियोजना

भावसं

दिल्ली-गुरुग्राम-अलवर-रेवाड़ी क्षेत्रीय रैपिड परिवहन प्रणाली सुरंग कार्य के कारण राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली में बंदी वन्यजीवों पर प्रभाव का आकलन

वित्तपोषण स्रोत

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रीय परिवहन निगम

शोधकर्ता

डॉ. भारती अरोरा, कृष्णा शर्मा और मोहित सिंह

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2023

अन्वेषक

डॉ. सम्राट मोंडल और डॉ. आर. सुरेश कुमार

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2026

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) निर्माण परियोजना (यानी, 980 मीटर लंबी और 25 मीटर गहराई पर भूमिगत सुरंग) के विभिन्न निर्माण चरणों के दौरान राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली में बंदी जानवरों की व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं और पैटर्न का आकलन करना, और (ii) प्रस्तावित निर्माण कार्य के विभिन्न चरणों के दौरान दिल्ली चिड़ियाघर में रखी गई प्रजातियों के शारीरिक तंत्र पर आरआरटीएस (क्षेत्रीय त्वरित परिवहन प्रणाली) कॉरिडोर के प्रभाव का आकलन करना।

प्रगति: परियोजना के मार्च 2023 में शुरू होने के साथ, हमने प्रस्तावित अध्ययन के दायरे और विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए मौजूदा प्रकाशित कार्य की एक व्यापक साहित्य समीक्षा की। टीम ने कैद और प्राकृतिक वातावरण दोनों में विभिन्न प्रजातियों के व्यवहार और शारीरिक तंत्र को प्रभावित करने वाले मानवजनित शोर और बुनियादी ढांचा निर्माण के बारे में पृष्ठभूमि जानकारी एकत्र की।

क्षेत्रीय त्वरित परिवहन प्रणाली कॉरिडोर के संरक्षण को राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के समन्वयकों पर मैप किया गया। इसने प्रस्तावित सुरंग मार्ग (10 मीटर, 30 मीटर, 50 मीटर और 100 मीटर) से बाड़ों की दूरी के आधार पर अध्ययन के लिए प्रजातियों के चयन को सक्षम बनाया। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में वास कर रही 100

प्रजातियों में से चार पक्षियों और नौ स्तनधारियों (3 मांसाहारी, 2 सर्वाहारी और चार शाकाहारी) सहित 13 प्रजातियों की एक परिष्कृत सूची अध्ययन के लिए अंतिम रूप दी गई। सरीसृपों को इस सूची में शामिल नहीं किया गया क्योंकि राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में सरीसृप घर अक्टूबर से मार्च के शीतकालीन महीनों में बंद रहता है।

28 अगस्त 2023 को राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में एक ओरिएंटेशन कार्यशाला आयोजित करने के बाद फील्डवर्क शुरू किया गया था। इस कार्यशाला ने वन्यजीव संस्थान के अनुसंधान दल और कामकाजी कर्मचारियों, जिसमें राष्ट्रीय प्राणी उद्यान चिड़ियाघर के रखवाले शामिल थे, के बीच तालमेल बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परियोजना के उद्देश्यों और दायरे के साथ-साथ अपेक्षित परिणामों पर चर्चा की गई ताकि प्रस्तावित अध्ययन के महत्व को समझा जा सके।

शोधकर्ताओं को व्यवहारिक डेटा एकत्र करने के लिए दिल्ली चिड़ियाघर में तैनात किया गया, और एक अन्य टीम सदस्य को हार्मोनल मात्रा निर्धारण के लिए प्रयोगशाला तैयार करने और एस्से के लिए सभी तनाव परीक्षण किटों को प्राप्त करने के लिए वन्यजीव संस्थान में तैनात किया गया। हमने अक्टूबर-नवंबर 2023 में एक पायलट सर्वेक्षण किया, राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के

नियमित दौरे किए और रखवाले को मल नमूने एकत्र करने के लिए प्रशिक्षित किया।

भारतीय ग्रे वुल्फ, गोल्डन जैकाल, स्लॉथ बियर, हिमालयी काला भालू, स्वैम्प हिरण, बार्किंग हिरण, हिमालयी गोरल, और भारतीय बाइसन के व्यवहारिक और शाकाहारियों (स्वैम्प हिरण, बार्किंग हिरण, भारतीय बाइसन, और हिमालयी गोरल) के मल नमूने संग्रह दिसंबर में एनजेडपी में तैनात शोधकर्ताओं द्वारा शुरू किया गया। इसके अलावा, नमूनों को हार्मोन विश्लेषण के लिए वन्यजीव संस्थान में संसाधित किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: 26 फरवरी 2024 तक, शाकाहारियों के 106 मल नमूने एकत्र किए गए हैं। इन सभी नमूनों को राष्ट्रीय

प्राणी उद्यान से वन्यजीव संस्थान की प्रयोगशाला में स्थानांतरित किया गया है, जहां उन्हें संसाधित किया जा रहा है। तनाव हार्मोन निर्धारण करने से पहले प्रत्येक शाकाहारी प्रजाति के लिए एस्से मानकीकरण, यानी समानांतरता और सटीकता, किया गया था।

विश्लेषित परिणाम ने सुरंग निर्माण शुरू होने से पहले बंदी प्रजातियों के लिए आधारभूत जानकारी एकत्र करने में मदद की। सुरंग निर्माण के सभी चरणों (निर्माण के दौरान और बाद में) के दौरान इसी तरह की प्रक्रिया जारी रहेगी ताकि एनजेडपी में रखी गई चयनित प्रजातियों में किसी भी तनाव परिवर्तन को देखा जा सके। उपरोक्त सभी व्यावहारिक प्रजातियों के एथोग्राम को स्कैन सैंपलिंग का उपयोग करके व्यवहारों को रिकॉर्ड और वर्गीकृत किया गया।



वन्यजीव फॉरेंसिक में अनुप्रयोग के लिए पंख मापविज्ञान और डीएनए का उपयोग करके भारत के चयनित गैलिफोर्म्स का वर्गीकृत विश्लेषण

वित्तपोषण स्रोत

डीएसटी-एसईआरबी, भारत सरकार

शोधकर्ता

भवानी सबत

आरंभ होने की तिथि

नवंबर 2022

अन्वेषक

डॉ. आशुतोष सिंह

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

नवंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य था: (i) भारत के चयनित गैलिफोर्म्स की पंख की विशेषताओं का डेटाबेस विकसित करना, और (ii) भारत के चयनित गैलिफोर्म्स का डीएनए डेटाबेस (माइटोकॉन्ड्रियल) विकसित करना।

प्रगति: दो भारतीय और तीन विदेशी गैलिफोर्म्स प्रजातियों, अर्थात् भारतीय मोर, कलीज तीतर, सिल्वर तीतर, गोल्डन तीतर, और लेडी एमहर्स्ट तीतर के पंख माइक्रोस्ट्रक्चर को लाइट माइक्रोस्कोपी और फील्ड एमिशन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी का उपयोग करके विश्लेषित किया गया। मैक्रोस्कोपिक विशेषताओं जैसे पंख, पूंछ, कौंटूर, सेमिप्लूम, डाउन फेदर्स और बार्ब्स को तीन इंटरवल सेक्शन, अर्थात् प्रॉक्सिमल, इंटरमीडिएट, और डिस्टल से जांचा गया। दूसरे उद्देश्य के एक हिस्सा के रूप में संग्रहित अंडों के जीनोमिक डीएनए पृथक्करण और पीसीआर प्रवर्धन किया गया छ इसके अतिरिक्त, ओडिशा के कोरापुट जिले के 15 विभिन्न स्थानों में एक प्रश्नावली सर्वेक्षण किया गया ताकि गैलिफोर्म्स से संबंधित स्थानीय आदिवासियों के पारंपरिक एथनोबायोलॉजिकल प्रथाओं को सूचीबद्ध किया जा सके।

परिणाम और निष्कर्ष: परिणाम इंगित करते हैं कि प्लुमुलेस और पेनुलेस बार्ब्स 40X आवर्धन पर, सभी प्रजातियों में छोटी से लंबी बार्ब्स होती हैं, जिनमें विभिन्न रंग और पैटर्न होते हैं। 400X आवर्धन पर प्लुमुलेस बार्बुलेस पर विचार करते हुए, बार्बुलेस के पेनुलम में विभिन्न प्रकार के नोड्स होते हैं, जैसे कि विस्तारित नोड्स, स्पाइन नोड्स, रिंग-जैसे नोड्स, बहु-नोड्स, और प्रॉग्ड नोड्स। विस्तारित और स्पाइन नोड्स बार्बुलेस के प्रॉक्सिमल भाग में होते हैं। प्रमुख रिंग नोड्स केवल प्रॉक्सिमल वेंयूल में होते हैं। ये रिंग नोड्स मूल स्थल से अलग हो जाते हैं और बहु-नोड्स बनाने के लिए निकटवर्ती नोड्स पर फिसल जाते हैं, जिन्हें बहु-अनुली (2-5) कहा जाता है। नोड्स गहरे और हल्के होते हैं, जबकि इंटरनोड्स गहरे, छितरे, और हल्के दिखाते हैं। प्रॉग्ड नोड्स डिस्टल बार्बुलेस के डिस्टल टिप पर दिखाई देते हैं। 100X और 400X आवर्धन पर पेनुलेस बार्बुलेस पर विचार करते हुए, सभी प्रजातियों में छोटी से मध्यम बार्बुलेस होती हैं। बार्बुलेस के विभिन्न रंग, जैसे कि भूरे, नारंगी, पारदर्शी, और गहरे भूरे, उड़ान और

कौंटूर पंखों के रंगीन होने के कारण देखे गए। डिस्टल बार्बुले ने विभिन्न माइक्रोस्ट्रक्चर दिखाए जैसे पत्ती-जैसे वेंट्रल, हुकलेट्स, वेंट्रल सिलिया, डोर्सल सिलिया, और विशिष्ट न्यूक्लिई। इसके विपरीत, प्रॉक्सिमल बार्बुले ने प्लेट्स, विशिष्ट न्यूक्लिई, वेंट्रल, डोर्सल स्पाइन, और डोर्सल प्लैंग्स जैसे माइक्रोस्ट्रक्चर दिखाए। आगे, प्रश्नावली सर्वेक्षण भी विभिन्न बाजारों और आदिवासी क्षेत्रों में किए गए ताकि गैलिफोर्म्स के जैविक भागों के एथनोजूलॉजिकल प्रथाओं की जानकारी एकत्रित की जा सके। ओडिशा के कई हिस्सों में, उपस्थित 13 गैलीफार्म्स फोर्म्स प्रजातियों में से 08 को 23 विभिन्न तरीकों से 15 विभिन्न प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है, गैलीफार्म्स के शरीर के 6 विभिन्न भागों का उपयोग किया जाता है। संकलित डेटाबेस जांच/जबती मामलों की जांच के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए उपयोगी होगा।

मील का पत्थर: अब तक, फील्ड एमिशन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (एफईएसईएम) पंख डेटाबेस 7 भारतीय और 3 विदेशी प्रजातियों के लिए उत्पन्न किया गया है। लेडी एमहर्स्ट तीतर के उड़ान पंखों के बारे में एक नया अवलोकन हुक-लेट्स जैसे माइक्रोस्ट्रक्चर को दर्शाता है जो प्रॉक्सिमल और डिस्टल बार्बुलेस दोनों के डिस्टल टिप के निकट स्थित होते हैं। निचले भाग से एक विविधता उत्पन्न हुई जहां प्रॉक्सिमल बार्बुलेस की मूल संरचना धीरे-धीरे विपरीत डिस्टल बार्बुलेस की संरचना के समान दिखाई दी।



भारतीय मोर पावो क्रिस्टेटस के शरीर कौंटूर के प्लुमुलेस बार्बुलेस पर (A) रिंग नोड्स का अवलोकन और लाइट माइक्रोस्कोप के तहत सेमिप्लूम के पेनुलेस बार्बुलेस पर (B) हुकलेट्स का अवलोकन

पश्चिमी घाट के स्थानिक और संकटग्रस्त लाफिंगथ्रश की जनसंख्या और आवासों की सुरक्षा के लिए संरक्षण योजना विकसित करने हेतु पारिस्थितिकी मूल्यांकन

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु
परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

सुजिन एनएस और एम. किशोर

आरंभ होने की तिथि

दिसंबर 2019

अन्वेषक

डॉ. एस. बाबू, डॉ. आर. जयपाल,
निदेशक (एआईडब्ल्यूसी) और श्री
अनूप (केएफडी)

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) लाफिंगथ्रश के विभिन्न आवासों में वनस्पति की संरचना का आकलन करना और लाफिंगथ्रश के खाद्य पौधों की फेनोलॉजी का अध्ययन करना, (ii) पश्चिमी घाट में बनासुरा लाफिंगथ्रश, नीलगिरि लाफिंगथ्रश और अशंबू लाफिंगथ्रश के वितरण पैटर्न और प्रचुरता को स्पष्ट करना, (iii) इन लाफिंगथ्रश के आवास, घोंसला स्थल चयन को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना, और (iv) पश्चिमी घाट में लाफिंगथ्रश की जनसंख्या पर मानवजनित दबावों का मूल्यांकन करना और इन प्रजातियों के लिए एक संरक्षण योजना विकसित करना ताकि उनकी जनसंख्या और आवासों को सुरक्षित किया जा सके।

प्रगति: एक सीमा में सीमित और संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण की दिशा में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम हो सकता है जो प्रजातियों की वर्तमान वितरण सीमा को प्रभावित करने वाले निकटतम कारणों की पहचान करता है। स्थानिक और संकटग्रस्त मॉटेसिक्ला जीनस के मामले में विस्तृत जनसंख्या और अन्य पारिस्थितिक अध्ययन की आवश्यकता है। पश्चिमी घाट के लाफिंगथ्रश पर वर्गीकरण विज्ञान संबंधी और वितरण अध्ययन को छोड़कर कोई पारिस्थितिक मूल्यांकन नहीं किया गया है। खतरे के स्तर को ध्यान में रखते हुए, यह परियोजना मॉटेसिक्ला लाफिंगथ्रश की तीन स्थानिक प्रजातियों (बनासुरा लाफिंगथ्रश-खतरे में, नीलगिरि लाफिंगथ्रश-खतरे में और अशंबू/त्रावणकोर लाफिंगथ्रश-संवेदनशील) के अध्ययन में अंतर को पूरा करने का प्रयास करती है।

हमने अधिवास का अनुमान लगाने के लिए एकल-मौसम, एकल-प्रजाति अधिवास ढांचे का उपयोग किया। लाफिंगथ्रश की प्रचुरता का अनुमान लगाने के लिए स्थिर त्रिज्या प्वाइंट काउंट विधि भी संचालित की गई। लाफिंगथ्रश द्वारा घोंसला स्थल चयन को यादृच्छिक रूप से चुने गए स्थलों के साथ घोंसला स्थलों की तुलना करके जांचा गया। लाफिंगथ्रश द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रमुख वनस्पति प्रकारों की पहचान की गई। इन आवासों के भीतर वनस्पति मूल्यांकन प्रारंभ किए गए हैं। बनासुरा और नीलगिरि लाफिंगथ्रश के लिए एकल-मौसम, एकल-प्रजाति अधिवास ढांचे का उपयोग करके अधिवास सर्वेक्षण पूरा किया गया, जबकि अशंबू लाफिंगथ्रश के लिए यह 50% पूरा हुआ है। बनासुरा और नीलगिरि लाफिंगथ्रश के लिए प्रचुरता का अनुमान

लगाने के लिए चयनित स्थलों पर गहन नमूनाकरण प्रारंभ किया गया। वर्तमान में, हम कैमरा ट्रैप का उपयोग करके नीलगिरि लाफिंगथ्रश के घोंसलों की निगरानी कर रहे हैं। अब तक कुल 34 घोंसलों का अवलोकन किया गया है। पश्चिमी घाट और दक्षिणी पश्चिमी घाट के अन्य उच्च-ऊंचाई स्थानिक पक्षियों में लाफिंगथ्रश जनसंख्या द्वारा सामना किए जाने वाले प्रमुख खतरों का दस्तावेजीकरण किया गया है।

परिणाम और निष्कर्ष: पश्चिमी घाट में नीलगिरि और बनासुरा लाफिंगथ्रश दोनों के लिए उपस्थित क्षेत्र और अधिवास क्षेत्र का निर्धारण किया गया। इन प्रजातियों के अधिवास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान की गई। इसके अतिरिक्त, नीलगिरि लाफिंगथ्रश के घोंसला स्थल चयन, साथ ही इस चयन



ऊपरी नीलगिरियों में नीलगिरि लाफिंगथ्रश और उसका घोंसला

को प्रेरित करने वाले कारकों का आकलन किया गया। अध्ययन ने लाफिंगथ्रश की जनसंख्या पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख मानवजनित खतरों की भी पहचान की।

मील का पत्थर: अध्ययन ने इस स्थानिक पक्षी का पहला प्रारंभिक दस्तावेजीकरण किया जो वन विभाग को पश्चिमी घाट की उच्च ऊंचाई में भविष्य की संरक्षण योजनाओं को डिजाइन करने में मदद करेगा।

भारत में दो चयनित स्थानों से भारतीय चट्टानी अजगर, पाइथन मोलुरस, के आवास उपयोग, गतिविधि स्वरूप, और विचरण पारिस्थितिकी को समझने के लिए गैर-आक्रामक दृष्टिकोण

वित्तपोषण स्रोत

डीएसटी- विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड, भारत सरकार

शोधकर्ता

सिद्धेश सीताराम भोर, सिंह गौरव संजय, गौरव सोनावणे और अविमन्यु मुखर्जी

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
जनवरी 2025

अन्वेषक

डॉ. अदिति मुखर्जी, डॉ. एच.एन. कुमार और डॉ. माची शिरीष एस.

आरंभ होने की तिथि

जनवरी 2022

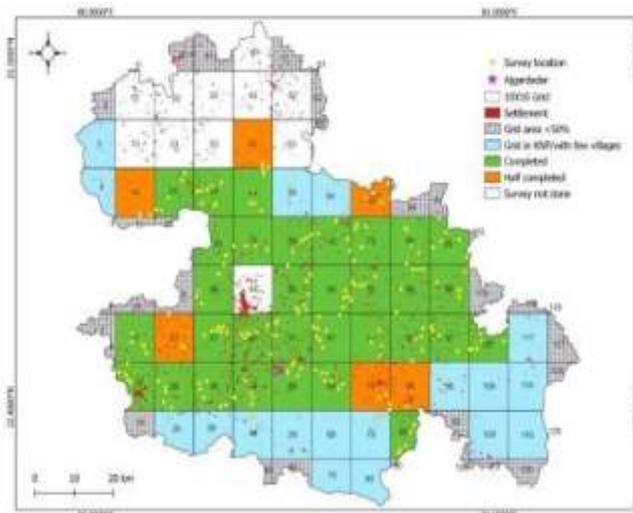
उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) पाइथन मोलुरस के दो विभिन्न जैवभौगोलिक क्षेत्रों में आवास उपयोग, उपयुक्तता, और गतिविधि स्वरूप का आकलन और तुलना करना, (ii) पाइथन मोलुरस के लिए गैर-आक्रामक पहचान विधियों का उपयोग करके व्यक्तिगत पहचान तकनीकों को मानकीकृत करना, और (iii) पार्क के अंदर छोड़े गए पाइथन मोलुरस के विचरण और जीवित रहने की दर के पैटर्न का आकलन करना।

प्रगति: अध्ययन के दूसरे वर्ष में मंडला, मध्य प्रदेश में, हमने अजगरों के वितरण को दादर के प्रसिद्ध स्थान के अलावा पूरे मंडला क्षेत्र में और स्थानीय लोगों की धारणाओं को समझने पर ध्यान केंद्रित किया। हमने पूरे मंडला रेंज, जो 5,800 वर्ग किमी में फैला हुआ है, को 10x10 किमी ग्रिड में विभाजित किया। हमने एक अर्ध-संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके 49 ग्रिड का सर्वेक्षण किया।

राजस्थान के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में डेटा संग्रह अप्रैल 2023 में वन विभाग से देरी से प्राप्त अनुमतियों के कारण प्रारंभ हुआ। कैमरा ट्रैपिंग को 29 बिल में घूर्णी आधार पर किया गया ताकि

अजगर की गतिविधि और अन्य प्रजातियों की निगरानी की जा सके। उन स्थानों से अजगरों की डॉर्सल ब्लॉच छवियाँ (n=48) कैमरा ट्रैपिंग, कोट सेटअप, और सीधे फोटोग्राफ का उपयोग करके एकत्र की गईं। बिल स्थलों के बाहर मिले आठ अजगरों के लिए ब्लॉच डेटा सीधे तस्वीरों का उपयोग करके प्राप्त किया गया। हमने थर्मल कैमरों और आसान लॉग का उपयोग करके 12 बिल में अजगरों के बास्किंग व्यवहार और थर्मल डेटा एकत्र किया। इसके अतिरिक्त, 28 बिल में, हमने वनस्पति नमूनाकरण पूरा किया और मानक प्रोटोकॉल का पालन करते हुए बिल मापविज्ञान डेटा एकत्र किया। अजगरों के शिकार आधार का अध्ययन करने के लिए, कैमरा ट्रैपिंग, शेरमैन ट्रैपिंग, लाइन ट्रांसेक्ट्स, और प्वाइंट काउंट्स पूरे पार्क में विशिष्ट प्रोटोकॉल के अनुसार किए गए।

परिणाम और निष्कर्ष: मंडला में 212 सर्वेक्षण किए गए, और 38 ग्रिडों में 507 व्यक्तियों से प्रतिक्रियाएँ एकत्र की गईं। सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व 21-50 आयु वर्ग से आया, जिसमें 251 व्यक्ति थे, उसके बाद 51 आयु वर्ग से 243 व्यक्ति थे। किसानों का प्रतिनिधित्व 444, मजदूरों का 19, चरवाहों का 16, छात्रों का 13, दुकानदारों का 10, और एक सरपंच का था। उत्तरदाताओं में से



मंडला, मध्य प्रदेश के प्रश्नावली स्थान और ग्रिड



अजगर ब्लॉच छवियाँ और कोट सेटअप, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

442 ने अपने क्षेत्र में अजगर देखे जाने की सूचना दी। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में, हमने 39 अजगर बिल की पहचान की, जिनमें से 17 नए बिल थे और 22 पिछले अध्ययन अवधि से थे। इनमें से 25 बिल में अजगर थे। अजगरों की डॉर्सल ब्लॉच छवियाँ (n=48) और आठ अतिरिक्त अजगरों के लिए ब्लॉच डेटा एकत्र किया गया। हमने 11 अजगरों के लिए बास्किंग व्यवहार डेटा भी एकत्र

किया। 28 बिल में वनस्पति नमूना और बिल मापविज्ञान डेटा एकत्र किया गया।

मील का पत्थर: टीम ने केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में 39 अजगर बिल की पहचान की, जिनमें 17 नए बिल और 22 पिछले अध्ययन के थे।

जारी परियोजना

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में पक्षी विविधता और जनसंख्या की दीर्घकालिक निगरानी

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के माध्यम से प्रकृति संरक्षण फाउंडेशन

अन्वेषक

डॉ. मांची शिरीष एस (सेकान) और डॉ. रॉबिन वीवी, आईआईएसईआर, तिरुपति

आरंभ होने की तिथि

फरवरी 2020

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

फरवरी 2025

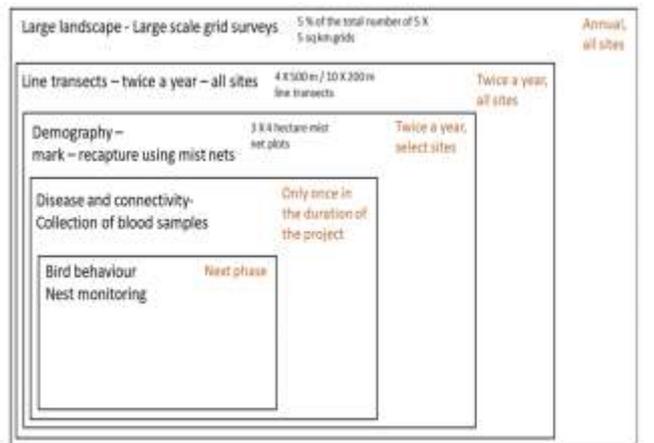
सैफोन

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना था: (i) विभिन्न स्थानों पर पर्यावरणीय प्रवणताओं (ऊंचाई, आवास परिवर्तन, भूमि-उपयोग शासन) के प्रति किसी विशिष्ट प्रजाति और पक्षी समुदायों की प्रतिक्रिया कैसी होती है, और ये प्रतिक्रियाएं परिदृश्यों में कैसे समान या भिन्न होती हैं? (ii) समय के साथ, विविध परिदृश्यों में किसी विशिष्ट प्रजाति और पक्षी समुदायों में क्या परिवर्तन होते हैं, और वे पर्यावरणीय परिवर्तनों, जिसमें जलवायु परिवर्तन और संबंधित वनस्पति और भूमि-उपयोग गतिशीलता शामिल हैं, के साथ कैसे संबंधित होते हैं?

प्रगति: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत के दीर्घकालिक पारिस्थितिकीय पर्यवेक्षण कार्यक्रम को छह परिदृश्यों में पक्षी विविधता और जनसंख्या की निगरानी करने के लिए कार्यान्वित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को पक्षी समुदायों, आवास परिवर्तनों, और जनसांख्यिकी प्रक्रियाओं को समझना है। इस पहल में अर्ध-संरचित डेटा संग्रहण और डेटा विश्लेषण शामिल हैं। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में, दक्षिण अंडमान के पहचाने गए स्थानों पर परियोजना कार्य का आरंभ करने के लिए मान्य अनुमतियों की कमी के कारण परियोजना कार्य प्रारंभ नहीं हो सका। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, मंत्रालय ने एक समीक्षा बैठक आयोजित की और परियोजना के लिए निरंतर समर्थन का

आश्वासन दिया। चूंकि कोई अनुदान जारी नहीं किया गया था, रिपोर्टिंग अवधि के दौरान कोई परियोजना गतिविधि नहीं की जा सकी।

परिणाम और निष्कर्ष: चूंकि अनुमतियों और धन की कमी के कारण कोई परियोजना कार्य नहीं किया गया था, इसलिए उल्लेख करने के लिए कोई परिणाम या निष्कर्ष नहीं हैं।



बड़े पैमाने से छोटे पैमाने तक विभिन्न उद्देश्यों के लिए नेस्टेड सैपलिंग योजना की रूपरेखा

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के चयनित भारतीय नागरिक हवाई क्षेत्रों में विमानों को पक्षियों से खतरों का आकलन— चरण II

(कोलिकोड अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, मलप्पुरम, लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, वाराणसी)

वित्तपोषण स्रोत

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

शोधकर्ता

डॉ. पी.एन अनुप राज,
पी.पी अशिक, आदित्य,
अर्जुन सुरेश और लिनी कलाधरन

आरंभ होने की तिथि

फरवरी 2022

अन्वेषक

डॉ. पी. प्रमोद और
डॉ. पी.वी करुणाकरण

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

फरवरी 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे: (i) हवाई क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में पक्षियों और जानवरों की सामुदायिक संरचना का अध्ययन करना और संघर्ष में शामिल प्रमुख प्रजातियों की पहचान करना, (ii) हवाई क्षेत्र के पास (10 किमी की त्रिज्या) में भूमि उपयोग, भूमि आवरण, हवाई क्षेत्र में पौधों की समुदाय संरचना और क्षेत्र के पक्षियों के आवास का मूल्यांकन करना, (iii) पक्षियों/जानवरों की गतिविधियों को प्रभावित करने वाले कारकों और अन्य व्यवहारिक पहलुओं का अध्ययन करना ताकि टकराव के लिए जिम्मेदार कारकों की पहचान की जा सके, और (iv) हवाई क्षेत्र में पक्षियों के टकराव को कम करने के लिए व्यापक और एकीकृत रणनीतियाँ विकसित करना।

प्रगति: दोनों हवाई अड्डों पर वार्षिक परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है, और निगरानी हेतु दौरे जारी हैं। हवाई अड्डे ने रिपोर्ट की सिफारिशों को लागू करना शुरू कर दिया है। सिफारिशों के कार्यान्वयन की प्रगति प्रत्येक दौरे के दौरान दर्ज की गई। इसके अतिरिक्त, कालीकट में, हवाई अड्डे के परिसर के भीतर सुनहरे गीदड़ों की गतिविधियों की निगरानी करने की योजना है, जो विमानन सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वन्यजीव खतरों के प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वाराणसी में, पक्षी से संबंधित डेटा नियमित रूप से एकत्र किया जा रहा है ताकि शमन रणनीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सके।



वाराणसी हवाई अड्डा – एपन से दृश्य

परिणाम और निष्कर्ष: हवाई अड्डे के ऑपरेटरों को वन्यजीव खतरे प्रबंधन की गंभीरता के बारे में संवेदनशील बनाया गया है। संबंधित अधिकारी हवाई अड्डे के आसपास कचरा प्रबंधन को प्राथमिकता देते हैं। परियोजना की अंतिम रिपोर्ट की सिफारिशों को अधिकारियों द्वारा लागू किया जा रहा है।

मील का पथर: निष्कर्षों के आधार पर सिफारिशों को कालीकट और वाराणसी हवाई अड्डों में लागू किया जा रहा है। शोधकर्ता सिफारिशों के कार्यान्वयन में अधिकारियों को अपना समर्थन दे रहे हैं।

दक्षिणी भारत के नदी बेसिनों में चिकनी खाल वाले ऊदबिलाव और छोटी – पंजों वाले एशियाई ऊदबिलाव की स्थानिक – कालिक आवास पारिस्थितिकी

वित्तपोषण स्रोत

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग,
इंस्पायर

शोधकर्ता

अंकित मौण

आरंभ होने की तिथि

सितंबर 2021

अन्वेषक

डॉ. रिद्धिका रमेश

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

अगस्त 2026



उद्देश्य: इस अध्ययन का उद्देश्य कोयंबटूर वन प्रभाग के भवानी-नॉयल नदी बेसिन में निर्धारित नदी मार्गों पर मौसमी ऊदबिलाव संकेत सर्वेक्षणों और कैमरा-ट्रैपिंग से ऊदबिलाव की आवास पारिस्थितिकी के स्थल-विशिष्ट पैटर्न को समझना है। बड़े पैमाने पर, हमारा उद्देश्य ऊदबिलाव प्रजातियों के वितरण की वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए निवास मॉडल का उपयोग करना है। परियोजना का उद्देश्य है: (i) चिकनी खाल वाले ऊदबिलाव और एशियाई छोटी-पंजों वाले ऊदबिलाव के स्थानिक-कालिक आवास उपयोग का आकलन करना (ii) दोनों प्रजातियों के ऊदबिलाव के मौसमी आवास उपयुक्तता की भविष्यवाणी करना और (iii) प्रायद्वीपीय नदी बेसिनों में जलवायु और भूमि उपयोग परिवर्तन का दोनों प्रजातियों के ऊदबिलाव पर प्रभाव का आकलन करना।

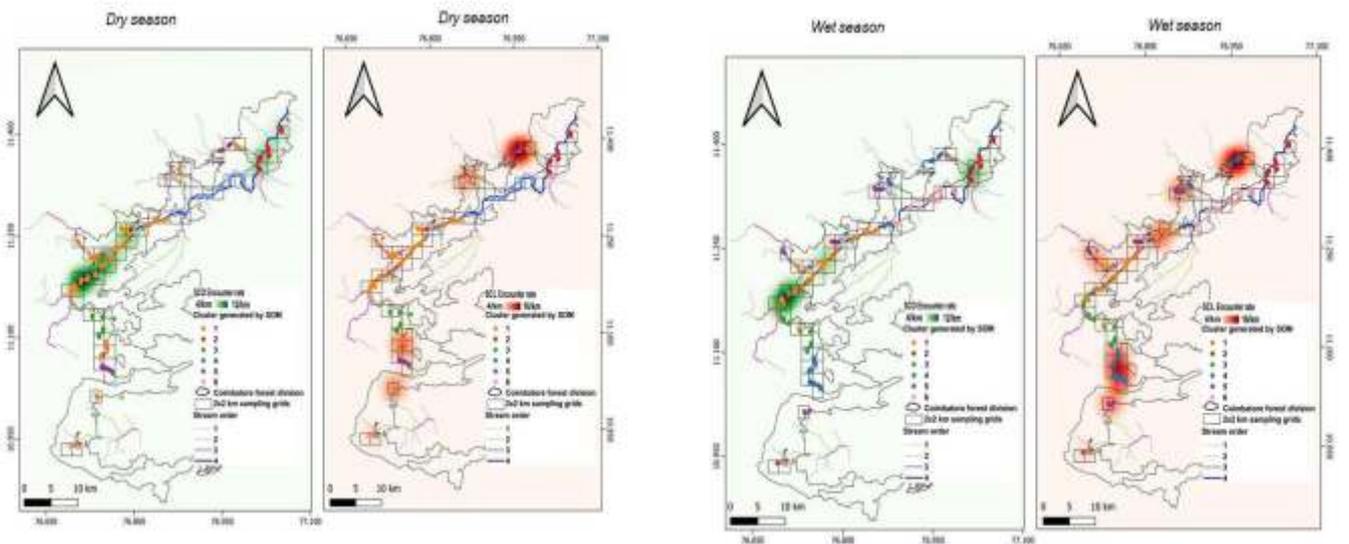
प्रगति: प्रथम उद्देश्य के लिए डेटा विश्लेषण पूरा किया गया, जहां हमने पर्यावरणीय मानकों (जल गुणवत्ता, जलविज्ञान, भूमि आवरण, नदी किनारे की वनस्पति और मानव व्यवधान) पर बड़े बहुसांख्यकीय क्षेत्र डेटा के आवास क्लस्टरों में कम करने के लिए स्वतः-संगठित मानचित्रों का उपयोग किया। परियोजना के दूसरे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पर्यावरणीय डेटा का इंटरपोलेशन और प्रत्येक पर्यावरणीय चर के लिए मौसमी मानचित्र विकसित करने के लिए ऑटो-क्रिगिंग विधियों का उपयोग किया गया। फिर, विभिन्न प्रजाति वितरण मॉडलों का उपयोग करके संयुक्त

आवास उपयुक्तता मानचित्र उत्पन्न किए गए। चिकनी खाल वाले ऊदबिलाव के लिए यह विश्लेषण दोनों मौसमों में किया गया।

तीसरे उद्देश्य के लिए, क्षेत्र सर्वेक्षणों और द्वितीयक डेटा स्रोतों से दोनों प्रजातियों के ऊदबिलाव के लगभग 60 रिकॉर्ड संकलित किए गए। इस संकलन को अभी भी संसाधित किया जा रहा है क्योंकि यह उम्मीद है कि प्रत्येक नदी बेसिन में पर्याप्त ऊदबिलाव रिकॉर्ड एकत्र किए जा सकते हैं। भारत के जल संसाधन सूचना प्रणाली (इंडिया-डब्ल्यूआरआईएस) से चयनित नदी बेसिनों के जल गुणवत्ता डेटा की सहायता से, कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करके जल गुणवत्ता डेटा का विशेषण करना है और विशेषण किए गए नदी बेसिनों को ऊदबिलाव रिकॉर्ड के साथ जोड़ा गया।

परिणाम और निष्कर्ष: एशियाई छोटी-पंजों वाले ऊदबिलाव ने निम्न श्रेणी की धाराओं का बार-बार उपयोग किया, जबकि चिकनी खाल वाले ऊदबिलाव ने उच्च श्रेणी की धाराओं को प्राथमिकता दी। हमने पाया कि स्वतः-संगठित मानचित्र एल्गोरिथम ने बड़े बहुसांख्यकीय पर्यावरणीय डेटा (32 चर) को छह आवास क्लस्टरों में वर्गीकृत किया जो आवास स्थितियों के एक प्रवणता का प्रतिनिधित्व करते हैं। रैंडम फॉरेस्ट एल्गोरिथम ने उच्च-गुणवत्ता वाले आवास क्लस्टरों में जलधारा और भूमि के सबस्ट्रेट, और नदी किनारे के आवास की विषमता को प्रभावी कारकों के रूप में पहचाना। निम्न-गुणवत्ता वाले आवास क्लस्टरों में कृषि, खरपतवार आवरण और मानव व्यवधान का उच्च अनुपात था जिसे रैंडम फॉरेस्ट एल्गोरिथम में प्रभावी कारकों के रूप में पहचाना गया। निम्न-गुणवत्ता वाले आवास क्लस्टरों में भवानी नदी की चौथी धारा शामिल थी, जहां हमने दोनों प्रजातियों के ऊदबिलाव के कोई प्रमाण नहीं पाए। उच्च-गुणवत्ता वाले आवास भवानी नदी के मिलन स्थानों के साथ पाए गए जहां भवानी नदी सिरुवानी और कोंडुगारापल्लम नदियों से मिलती है। हमने पाया कि एशियाई छोटी-पंजों वाले ऊदबिलाव के संकेत प्रमाण आद्र मौसम में शुष्क मौसम की तुलना में अधिक स्थानिक रूप से वितरित थे।

मील का पत्थर: इस अध्ययन के माध्यम से, हम क्षेत्रीय पैमाने पर ऊदबिलाव की सहजीवी प्रजातियों के लिए सूक्ष्म पैमाने के मौसमी आवास उपयुक्तता मानचित्र विकसित करने में सक्षम थे। अध्ययन निष्कर्ष और डेटा राष्ट्रीय जलीय पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण योजना, जल संरक्षण नीतियों, और जलवायु परिवर्तन नीतियों में सहायक होंगे।



चिकनी खाल वाले ऊदबिलाव और एशियाई छोटी-पंजों वाले ऊदबिलाव के छह आवास क्लस्टरों में सूखे और आद्र मौसम में संकेत मिलने की दर।

पूर्वोत्तर भारत के उष्णकटिबंधीय वनों में वानरों और चयनित पक्षी प्रजातियों के बीच अंतःप्रजातीय अंतःक्रियाएँ और निवास विभाजन

वित्तपोषण स्रोत
विज्ञान और इंजीनियरिंग
अनुसंधान बोर्ड

शोधकर्ता
धीरज कुमार दास

आरंभ होने की तिथि
सितंबर 2023

अन्वेषक
डॉ. एच.एन. कुमारा,
डॉ. मेवा सिंह और
डॉ. जिहोसुओ विश्वास

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
सितंबर 2026

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) वानरों और चयनित पक्षी प्रजातियों के बीच अंतःप्रजातीय अंतःक्रियाओं का अध्ययन करना, (ii) वानरों और पक्षियों की अंतःक्रियात्मक प्रजातियों के खाद्य विशिष्टता का निर्धारण करना, और (iii) वानरों और चयनित पक्षी प्रजातियों के बीच आवास उपयोग और खाद्य वस्तुओं के लिए निवास अतिच्छादन और विभाजन का आकलन करना।

प्रगति: असम वन विभाग से अध्ययन करने की अनुमति प्राप्त की गई और मार्च 2023 तक फील्डवर्क प्रारंभ हुआ। हमने अभ्यारण्य का शेषफाइल प्राप्त किया, और नक्शे पर 0.5 वर्ग किमी के ग्रिड बनाये, जिसके परिणामस्वरूप 46 ग्रिड बने। उनमें से हमने वानरों के अधिवास के लिए ~35 ग्रिड सेल्स को नमूने के रूप में चयनित किया। मार्च 2023 के अंत तक हमने 15 ग्रिड सेल्स का नमूना लिया, और हूलॉक गिबबन, हूलॉक हूलॉक, कैप्ड लंगूर, ट्रकिपीथेकस पाइलैटस, रीसस मकाक, मकाका मुलट्टा, पिग-टेल्ड मकाक, मकाका नेमेस्ट्रिना, और स्टंप-टेल्ड मकाक, मकाका आर्कटॉइड्स को दर्ज किया।

परिणाम और निष्कर्ष: वानरों की स्थानिक अधिवास का अध्ययन प्रारंभ किया गया, और विस्तृत अध्ययन के लिए वानर समूहों का चयन किया गया।



गिबबन वन्यजीव अभ्यारण्य में परियोजना फील्डवर्क का आरंभ

हरियाणा के अरावली पर्वतमाला में कशेरुकी जन्तुओं के शव परपोषण समुदाय की कार्यात्मक पारिस्थितिकी

वित्तपोषण स्रोत

वैज्ञानिक और औद्योगिक
अनुसंधान परिषद, उष्णकटिबंधीय
जीवविज्ञान और संरक्षण संघ
सीड ग्रांट

शोधकर्ता

हितेश कुमार

आरंभ होने की तिथि

नवंबर 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

अक्टूबर 2027

अन्वेषक

डॉ. रिद्धिका रमेश

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य है: (i) कशेरुकी परपोषकों द्वारा शव (जंगली और पशुधन) उपयोग का आकलन करना। इस उद्देश्य में, हमारा लक्ष्य शव विशेषताओं जैसे प्रजाति, शरीर का आकार, आयु, और अपघटन चरणों को परपोषकों के आगमन दर/आवृत्ति के साथ संबंधित करना है। (ii) कशेरुकी परपोषकों के बीच स्थानिक-कालिक अंतःप्रजातीय या अंतःप्रजातीय अंतःक्रियाओं का आकलन करना। (iii) कशेरुकी परपोषक समुदाय द्वारा प्रदान की गई पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं के बारे में स्थानीय लोगों की धारणा का अध्ययन करना।

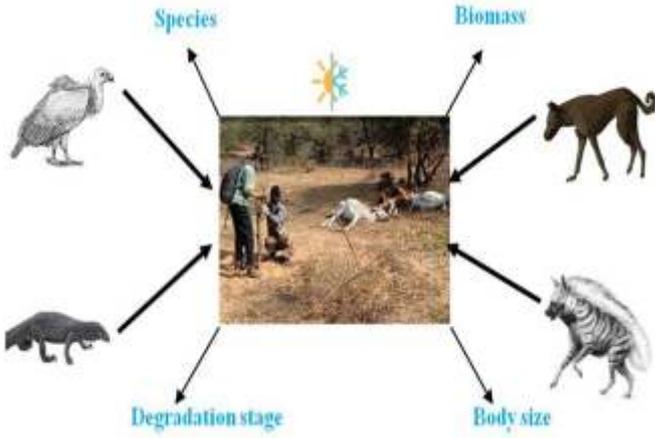
प्रगति: अध्ययन स्थलों में महेंद्रगढ़, चरखी दादरी और रेवाड़ी जिलों में अरावली पहाड़ियों के गैर-संरक्षित पश्चिमी क्षेत्र शामिल हैं। वित्तपोषण और लॉजिस्टिक सीमाओं के कारण, हमने गर्मी और सर्दी में महेंद्रगढ़ और रेवाड़ी जिलों के कुछ स्थानों का गहन सर्वेक्षण किया है। हमारे गहन अध्ययन स्थल में 20 गौशालाएँ और शव डंप स्थलों के पास लगभग 30 गांव समूह थे। क्षेत्र में अत्यधिक गर्मी और सर्दी होती है, और यह एक निम्न वर्षा क्षेत्र है जो अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में आता है। भूमि उपयोग पैटर्न से पता चलता है कि इस क्षेत्र में कृषि आवरण (70–80%) और अपेक्षाकृत कम वन आवरण (2–5%) है। पत्थर तोड़ना, उच्च-तीव्रता वाले विस्फोटों का उपयोग करके अवैध खनन, वनों की कटाई, रेखीय बुनियादी ढांचा, पर्यावरणीय रूप से असंवेदनशील स्थानिक योजना और क्षेत्र में जैव विविधता के लिए विधायी सुरक्षा की कमी अरावली के परिदृश्य में संकटग्रस्त परपोषक प्रजातियों के लिए प्रमुख खतरे हैं।

गौशालाओं और स्थानीय पंचायतों द्वारा प्रबंधित दस नियमित शव प्रावधान स्थलों की निगरानी की गई है, जहां पशुधन शवों का नियमित रूप से डंपिंग होता था, यानी 5–7 शव/सप्ताह। इन सामान्य शव स्थलों के अलावा, हमने 50 एकल शवों (गर्मी में 16 और सर्दी में 34) की निगरानी की है। हमने 120 उत्तरदाताओं, मुख्यतः स्थानीय कृषि-चराई समुदायों के लिए सर्वेक्षण प्रश्नावली आयोजित की। प्रश्नावली के माध्यम से, स्थानीय लोगों की

धारणाओं और कशेरुकी परपोषकों से संबंधित ज्ञान की जांच की गई। उनके परिप्रेक्ष्य में कशेरुकी परपोषकों की पारिस्थितिक तंत्र सेवा प्रावधान सूचकांक का मूल्यांकन करने वाले सामाजिक-जनसांख्यिक गुणों और मानव-पशु संघर्षों का आकलन किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: कैमरा-ट्रैपिंग डेटा के आधार पर, हमने शव डंप स्थलों पर कशेरुकी परपोषकों की लगभग 25 प्रजातियों (स्तनधारी, पक्षी और सरीसृप) को दर्ज किया है। जंगली कुत्ते, सुनहरे गीदड़ और धारीदार लकड़बग्घे परपोषक समुदाय में सबसे प्रबल थे। अधिकांश उत्तरदाताओं ने गिद्धों और रैप्टर्स को परपोषण सेवाओं और अस्तित्व मूल्य के लिए लाभदायक माना। इसके विपरीत, जंगली कुत्ते, तेंदुए, धारीदार लकड़बग्घे, और जंगली सूअर जैसे स्तनधारी पशुधन शिकार, मानव हमले और फसल क्षति के कारण लाभदायक और हानिकारक दोनों माने गए। बिना शरीर के आकार के भेदभाव के, औसतन सात दिनों में एकल शव पूरी तरह से खपत किए गए, जो यह संकेत देता है कि सामान्य परपोषक (गिद्ध) की अनुपस्थिति वाले क्षेत्रों में वैकल्पिक परपोषक पारिस्थितिक कार्य प्रदान कर रहे हैं और शव परपोषण के माध्यम से उच्च शव जैवभार हटाने की दर रखते हैं। जंगली कुत्तों उन शवों के पास नहीं गए जहां तेंदुओं ने बार-बार दौरा किया, जिससे यह संकेत मिलता है कि बड़े शरीर वाले परपोषकों में शव उपयोग में विविधताएं टॉप-डाउन प्रभावों द्वारा संचालित होती हैं।

यह पाया गया कि एकल शव, चयनित परपोषक प्रजातियों के लिए 'अस्थायी संसाधन पैच' थे। इसके विपरीत, सामान्य शव प्रावधान स्थल उच्च जैवभार प्रदान करते हैं, इस प्रकार एकल शवों की तुलना में उच्च कशेरुकी परपोषक समृद्धि का समर्थन करते हैं। डेटा से पता चलता है कि गौशाला प्राधिकरणों द्वारा बीमार पशुधन की पहचान के माध्यम से सामान्य शव डंप स्थलों का उचित प्रबंधन दीर्घकालिक संरक्षण के लिए समग्र पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करेगा।



© सैकोन



महेंद्रगढ़, दक्षिणी हरियाणा में कैमरा ट्रैप्स का उपयोग करके शव की निगरानी

मील का पत्थर: इस अध्ययन के माध्यम से, दक्षिणी हरियाणा में अरावली पर्वतमाला का निम्नीकरण, गैर-संरक्षित वनों में उनके अंतःक्रियाओं के माध्यम से कशेरुकी परपोषकों की कार्यात्मक भूमिका पर प्रथम अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई है। स्थानीय कृषि-चराई समुदायों द्वारा शव निपटान प्रथाओं के माध्यम से शव प्रावधान अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्रों में एक बड़े सामान्य परपोषक संघ के लिए निरंतर संसाधन उपलब्धता प्रदान करता है। इस प्रारंभिक

डेटा के माध्यम से, हम राज्य में अपने नमूना स्थलों के स्थानिक कवरेज को विस्तारित करेंगे, जिसमें उत्तरी हरियाणा के वनाच्छादित क्षेत्र शामिल हैं जहां गिद्ध प्रजातियां पर्याप्त पर्याप्त रूप से शवों के पास आते हैं। इसलिए, गिद्ध वाले और बिना गिद्ध वाले शव स्थलों पर परपोषकों के कार्यात्मक पारिस्थितिकी पहलुओं की तुलनात्मक समझ कशेरुकी परपोषकों की कार्यात्मक भूमिका की पूर्ण समझ प्रदान करेगी।

जारी परियोजना

बांदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक में बाहरी प्रजातियों और वनाग्नि पर विशेष ध्यान के साथ भारतीय गौर जनसंख्या के उपयुक्त आवास का मूल्यांकन

वित्तपोषण स्रोत
डीएसटी इंस्पायर फेलोशिप,
भारत सरकार

शोधकर्ता
सुभद्रा बारिक

आरंभ होने की तिथि
नवंबर 2022

अन्वेषक
डॉ. टी. रमेश

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
नवंबर 2027

सैकोन

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य है: (i) बांदीपुर बाघ रिजर्व में गौर के आवास उपयुक्तता पर परिदृश्य विन्यास की भूमिका का आकलन करना, (ii) लैंटाना कैमारा का गौर जनसंख्या पर प्रभाव का आकलन करना, और (iii) वनाग्नि का गौर जनसंख्या पर प्रभाव का आकलन करना।

प्रगति: परिदृश्य आवास संरचना परिवर्तन से प्रजातियों की प्रतिक्रिया के बारे में गहन ज्ञान की आवश्यकता थी, ताकि हमें दक्षिण भारत में भारतीय गौर के वर्तमान वितरण और उपयुक्त

आवासों के बारे में जानकारी हो सके। इसलिए, इस अध्ययन को दक्षिणी भारत के प्रमुख गौर संरक्षण स्थल, यानी बांदीपुर बाघ रिजर्व में आरंभ किया गया। अध्ययन परिदृश्य में लैंटाना और वनाग्नि के प्रभाव के संदर्भ में गौर के आवास उपयुक्तता का दस्तावेजीकरण करने वाला कोई विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन उपलब्ध नहीं है। ये दो समस्याएं विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वन्यजीव संरक्षण में प्रमुख चिंताओं के रूप में उभरे हैं। इसलिए, हमने इस अध्ययन को बांदीपुर बाघ रिजर्व में गौर के

आवास उपयुक्तता पर लैंटाना और वनाग्नि के प्रभाव का आकलन करने के लिए तैयार किया।

इस रिपोर्टिंग अवधि के लिए, भारतीय गौर के वर्तमान में उपयुक्त आवासों का व्यापक चर का उपयोग करके मानचित्रण किया गया। अध्ययन को जनवरी से दिसंबर 2023 तक एक व्यवस्थित पारिस्थितिक गिड-आधारित दृष्टिकोण का उपयोग करके संचालित किया गया। क्षेत्र डेटा (यानी, वनस्पति डेटा और प्रजाति उपस्थिति डेटा) और स्थानिक डेटा को क्षेत्र से और उपलब्ध द्वितीयक संसाधनों से प्राप्त किया गया। हमने फिर उन्हें एक साथ मिलाकर रिजर्व में गौर के वर्तमान उपयुक्त आवास के बारे में अंतिम निष्कर्ष प्राप्त किया। डेटा विश्लेषण के लिए हमने रैंडम फॉरेस्ट मॉडल का उपयोग किया।

परिणाम और निष्कर्ष: यह पाया गया कि भारतीय गौर के लिए बांदीपुर बाघ रिजर्व के कुल क्षेत्रफल का 40.56% उच्च उपयुक्त,

21.21% मध्यम उपयुक्त और 38.21% क्षेत्र निम्न उपयुक्त क्षेत्र में आता है। बीटीआर में गौर के आवास प्राथमिकता को समझने वाले कुछ महत्वपूर्ण चर हैं – झाड़ी आवरण का प्रतिशत, जड़ी-बूटी आवरण का प्रतिशत, आवास विषमता और जल विवर का घनत्व। बीटीआर में घास, जड़ी-बूटी और झाड़ी आवरण के प्रतिशत के साथ गौर की उपस्थिति का सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन ने बीटीआर में एक क्षेत्र के भीतर मौजूद जल विवर की संख्या और गौर की उपस्थिति के बीच सकारात्मक संबंध का पता लगाया। गौर की उपस्थिति और वन आवरण के बीच नकारात्मक संबंध भी पाया गया।

मील का पत्थर: अध्ययन बांदीपुर बाघ रिजर्व के अंदर एक सक्षम गौर जनसंख्या को बनाए रखने के लिए लैंटाना उन्मूलन और जल आपूर्ति की सिफारिश करता है। अध्ययन रिजर्व में बड़े शाकाहारी और बड़े मांसाहारी प्रजातियों के आवास प्रबंधन के लिए उपयोगी है।

परियोजना

बाह्य संस्थान द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान परियोजनाएं— कार्मोरेट महासागरीय विज्ञान परियोजना— वितरित, स्वायत्त, मापनीय, हाइड्रोग्राफिक चार्टिंग और मौसम विज्ञान और महासागर विज्ञान सैंपलिंग, प्रत्यक्ष अनुसंधान पहल के भाग के रूप में विस्तारित अनुसंधान

वित्तपोषण स्रोत
ओरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी

अन्वेषक
डॉ. महेंद्रन माइलस्वामी

आरंभ होने की तिथि
फरवरी 2022

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2026

संकलन

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य बायोलॉजिंग तकनीकों का उपयोग करके कार्मोरेट प्रजातियों की गतिविधि पैटर्न की निगरानी करना है।

प्रगति और निष्कर्ष: कार्मोरेट सर्वेक्षण सितंबर 2022 से फरवरी 2023 तक तमिलनाडु के पूर्वी तट पर संचालित किया गया। तमिलनाडु के पूर्वी तट के साथ कार्मोरेट प्रजातियों की उपस्थिति के लिए 51 से अधिक मुख्य स्थलों की पहचान की गई है। लिटिल कार्मोरेट और भारतीय कार्मोरेट तमिलनाडु के तटीय और आंतरिक क्षेत्रों में व्यापक रूप से वितरित पाए गए। ग्रेट कार्मोरेट को इस क्षेत्र में प्रवासी के रूप में दो स्थलों पर देखा गया। इसके अलावा, हमने कार्मोरेट के कुछ महत्वपूर्ण घोंसले के मैदानों में प्रजनन विफलता की प्रकृति और कारणों के बारे में कुछ प्रायोगिक परीक्षण योग्य विचारों का सुझाव दिया।



© शिबु आंच

कार्मोरेट प्रजातियों का आवास स्थल (सभी तीन प्रजातियां, अर्थात् लिटिल कश्चरमोरेट, भारतीय कार्मोरेट, और ग्रेट कार्मोरेट, चित्र में देखी जा सकती हैं) कन्याकुमारी जिले की एक आर्द्रभूमि में स्थित है

आरंभ की गई परियोजना

भावसं

भारत में राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों की प्रबंधन प्रभावशीलता का मूल्यांकन

वित्तपोषण स्रोत

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

शोधकर्ता

डॉ. अविलेख और अनन्या दास

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2023

अन्वेषक

डॉ. गौतम तालुकदार

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) देश के 116 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों की प्रबंधन प्रभावशीलता का आकलन करना और (ii) उनके प्रबंधन प्रणालियों और प्रथाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना।

प्रगति: स्वतंत्र क्षेत्रीय विशेषज्ञ समितियों की स्थापना और मुख्य वन्यजीव वार्डनों के साथ संपर्क किया गया। क्षेत्रीय विशेषज्ञ समितियों के साथ एक प्रारंभिक योजना कार्यशाला सितंबर 2023 में इंडिया हैबिटेड सेंटर, दिल्ली में आयोजित की गई। अक्टूबर में सक्रिय क्षेत्र दौरे शुरू हुए और 25 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों के लिए अभी भी जारी हैं।

परिणाम और निष्कर्ष: सभी क्षेत्र दौरों के पूरा होने के बाद रिपोर्ट लेखन शुरू होगा।

मील का पत्थर: अब तक 60 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों का मूल्यांकन किया गया है।



आरंभ की गई परियोजना

भावसं

कप्पाथगुड्डा वन्यजीव अभ्यारण्य और गडग प्रभाग के अन्य वन क्षेत्रों में भारतीय ग्रे भेड़ियों और संबंधित मांसाहारी प्राणियों की स्थिति, आवास और संरक्षण पर अध्ययन

वित्तपोषण स्रोत

गडग प्रभाग, कर्नाटक वन विभाग

शोधकर्ता

सुप्रिया हंगल

आरंभ होने की तिथि

अप्रैल 2023

अन्वेषक

डॉ. साल्वाडोर लिंगडोह और श्रीमती दीपिका बाजपाई

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2026



कप्पाथगुड्डा वन्यजीव अभ्यारण

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) गडग, कर्नाटक में भेड़ियों की स्थिति और जनसंख्या का निर्धारण करना और प्रमुख शिकार और शिकारियों की प्रजातियों पर आधारभूत जानकारी स्थापित करना (ii) खाद्य संसाधनों के संदर्भ में भेड़ियों और अन्य अंतर-गिल्ड शिकारियों की अंतःक्रिया का निर्धारण करना (iii) भेड़ियों के संरक्षण के संदर्भ में मानव चालकों और शिकार आधार की जांच करना और (iv) भेड़ियों की पारिस्थितिकी और संरक्षण के साथ-साथ वन्यजीवों के लिए नवीनतम निगरानी तकनीकों के संदर्भ में अग्रिम कर्मचारियों का क्षमता निर्माण करना।

प्रगति: अध्ययन का उद्देश्य स्तनधारी जीवों की स्थिति और वितरण का दस्तावेज बनाना और कप्पाथगुड्डा वन्यजीव अभ्यारण, गडग प्रभाग में उनकी विविधता, सामने आने की दर और प्रचुरता के अनुमान प्रदान करना था, जिसमें 23 बीट्स में गहन सर्वेक्षण किए गए, जिसमें रेखा ट्रांसेक्ट और कैमरा ट्रैप और सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण विधियों का उपयोग किया गया। शरणागार के माध्यम से रेखा ट्रांसेक्ट रखे गए थे ताकि शिकार-शिकारी की प्रचुरता का अध्ययन किया जा सके, जिसमें पांच प्रतिकृतियों के साथ कुल 230 किमी का प्रयास था। मांसाहारी डेटा एकत्र करने के लिए सभी बीट्स में 2-8 किमी की दूरी के लिए संकेत सर्वेक्षण किए गए। जीपीएस समन्वयों के साथ



सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के दौरान शोधकर्ता दल ने चरवाहों का साक्षात्कार किया



कैमरा ट्रैप सर्वेक्षण के दौरान देख गया भारतीय ग्रे भेड़िया

प्रत्यक्ष संकेत जैसे दिखे जाने और अप्रत्यक्ष संकेत जैसे मल, पंजे के निशान, खरोंच के निशान, कॉल और स्तनधारियों की हत्याएं दर्ज की गईं।

पहले के संकेत सर्वेक्षणों के आधार पर सक्रिय पशु पथों, दृश्य बिंदुओं और रणनीतिक स्थानों के आधार पर 48 स्थानों में युग्मित कैमरा ट्रैप तैनात किए गए थे। कुल 1,440 दिनों के कुल ट्रैप प्रयास के साथ कैमरा ट्रैप संचालित करने के लिए सेट किए गए थे। कैमरा ट्रैप सर्वेक्षण मुख्य रूप से स्तनधारियों के गतिविधि पैटर्न और सापेक्ष प्रचुरता को समझने के लिए किए गए थे। अध्ययन क्षेत्र में मानव-भेड़िया अंतःक्रिया को समझने के लिए मुक्त प्रश्नावली के साथ एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया।

अध्ययन के दौरान उपयोग किए गए रेखा ट्रांसेक्ट, संकेत सर्वेक्षण और कैमरा ट्रैपिंग जैसी क्षेत्रीय विधियों और तकनीकों के साथ वन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: कप्पाथगुड्डा अभ्यारण से कुल 19 स्तनधारी प्रजातियों को दर्ज किया गया, जिसमें चार अविकारी, दो प्राइमेट्स, तीन कैनिड्स, तीन फेलिड्स, दो विवेरिड्स, एक हाइनीड, एक हर्पेस्टिड, एक लेपोरिड, एक सुइड और एक हायस्ट्रिसिड प्रजातियाँ शामिल हैं।

सभी स्तनधारी प्रजातियों के लिए संकेत सर्वेक्षण और रेखा ट्रांसेक्ट डेटा के आधार पर प्रति किलोमीटर मुठभेड़ दर की गणना की गई। सबसे उच्च दर गोल्डन जैकाल (0.42 ± 0.14) की थी, इसके बाद भारतीय ग्रे वुल्फ (0.25 ± 0.02) और सबसे निम्न दर चिंकारा (0.02 ± 0.01) और ब्लैक-नेपेड हेयर (0.01 ± 0.006) की थी।

कैमरा ट्रैप में पकड़े गए सभी स्तनधारी प्रजातियों के लिए सापेक्ष प्रचुरता सूचकांक (आरएआई) प्रति 100 ट्रैप रातों की गणना की गई। इनमें से जैकाल (23.20 ± 7.73) और साही (11.54 ± 4.19) सबसे उच्च और निम्नतम भारतीय ग्रे वुल्फ (0.46 ± 0.23), तेंदुआ (0.31 ± 0.19) और पाम सिवेट (0.09 ± 0.09) थे। जैकाल, जंगल कैट, साही, छोटे भारतीय सिवेट, जंगली सुअर, और धारीदार हाइना जैसी स्तनधारी जीवों के गतिविधि पैटर्न को आर विश्लेषण का उपयोग करके विश्लेषित किया गया। निष्कर्षों ने इन स्तनधारी प्रजातियों के बीच विशिष्ट गतिविधि रुझानों का खुलासा किया, जबकि अधिकांश स्तनधारियों ने निशाचर व्यवहार प्रदर्शित किया,

जैकाल और जंगल कैट ने दिन में 12 बजे से 6 बजे के बीच दिनचर व्यवहार प्रदर्शित किया। साही ने 8 बजे से 2 बजे तक अधिक गतिविधि किया, और धारीदार हाइना ने निशाचर गतिविधियां प्रदर्शित कीं।

70 गांवों में किए गए सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण में 260 उत्तरदाताओं का डेटा दिखाता है कि मानव-भेड़िया संघर्ष वन क्षेत्र की तुलना में सीमा क्षेत्र में अधिक है, जो भेड़िये के लिए जंगली शिकार की कमी के कारण हो सकता है। सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षणों से पता चलता है कि भेड़िया सभी

बीट्स में लगभग समान घरेलू पशुओं पर निर्भर करता है। हालांकि, चरवाहों की गतिविधियों के संदर्भ में थोड़ी मौसमी भिन्नता है।

मील का पत्थर: एकीकृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण, कैमरा ट्रैप और रेखा ट्रांसेक्ट सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अवलोकन से पता चलता है कि भेड़ियों के लिए प्रमुख खतरों आवास क्षरण, मानव हस्तक्षेप, कुत्ते और बीमारियाँ हैं। इस प्रकार, आगे के अध्ययन कारणों की पहचान करने और कार्रवाई की सिफारिशें देने में मदद करेंगे।

भारत में वन्यजीव आवास के एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – जेरडन का कोर्सर

वित्तपोषण स्रोत

राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष
प्रबंधन और योजना प्राधिकरण

शोधकर्ता

पवित्रा गणेश

आरंभ होने की तिथि

मई 2023

अन्वेषक

डॉ. सुतीर्था दत्ता, डॉ. सुरेश आर.
कुमार, डॉ. पी. जेगन्नाथन

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) प्रजातियों की उपस्थिति, अधिभोग और प्रचुरता/सूचकांक का आकलन करने के लिए एक दृष्टिकोण विकसित करना, और (ii) इसकी अंतिम ज्ञात आवास और इसके वितरण में अन्य संभावित आवासों में प्रजातियों की उपस्थिति और स्थानीय उपयोग का आकलन करना।

प्रगति: प्रजातियों के ऐतिहासिक अभिलेखों की साहित्य समीक्षा पूरी हो चुकी है। प्रजातियों की उपस्थिति का पता लगाने के लिए श्री लंकामलेश्वर वन्यजीव अभ्यारण्य में तीव्रता से व्यवस्थित कैमरा ट्रैपिंग की गई। संभावित आवास में 250 वर्ग मीटर ग्रिड आकार के साथ लगभग 380 बिंदुओं को स्थापित किया गया। इन बिंदुओं के साथ, 70 इकाइयों के कैमरा ट्रैप को अक्टूबर 2023 से जून 2024 तक चरणबद्ध तरीके से तैनात किया गया। इन बिंदुओं में से, 250 सर्वेक्षण स्थानों को निर्दिष्ट समय सीमा के भीतर प्रत्येक 20-दिन

की अवधि के लिए सक्रिय रूप से कैमरा ट्रैप किया गया था। सभी कैमरा ट्रैप स्थानों पर वनस्पति डेटा भी रिकॉर्ड किया गया। इसके अलावा, अन्य संभावित क्षेत्रों की पहचान करने के लिए मदनपल्ले और गंडिकोटा रिजर्व के जंगलों के झाड़ियों के आवास में फील्ड सर्वेक्षण किए गए।

परिणाम और निष्कर्ष: लंकामल्ला अभ्यारण्य के सम्पूर्ण झाड़ी जंगल का आवास मापन। हालांकि अध्ययन दुर्लभ और लगभग विलुप्त जेरडन के कोर्सर की उपस्थिति को निष्कर्षित नहीं कर सका, लेकिन क्षेत्रीय सर्वेक्षणों को करने के लिए डिजाइन की गई व्यवस्थित विधियाँ और प्रजातियों की ऐतिहासिक उपस्थिति विश्लेषण का दस्तावेज इन प्रजातियों, इसके संभावित आवास के प्रबंधन और अन्य संबंधित प्रजातियों के लिए भविष्य के सर्वेक्षणों को सुव्यवस्थित करने में सहायक होंगे।

हाथी संघर्ष मुद्दों को समझने और संघर्ष को कम करने के उपाय सुझाने के लिए अध्ययन (छत्तीसगढ़, झारखंड, असम)

वित्तपोषण स्रोत

हाथी परियोजना, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता

डॉ. सुदीप बनर्जी, कल्पना रॉय, अनन्या दत्ता और अथिरा गणेशन

आरंभ होने की तिथि

अक्टूबर 2023

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

मार्च 2025

अन्वेषक

डॉ. बिलाल हबीब

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य छत्तीसगढ़, झारखंड और असम राज्यों में मानव-हाथी संघर्ष के पहलुओं को समझना है, जिसके निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं: (i) गांव-स्तरीय डेटाबेस का विकास। (ii) मानव-हाथी संघर्ष की वर्तमान स्थिति का आकलन। (iii) गांवों की संघर्ष के प्रति संवेदनशीलता का आकलन। (iv) लक्षित राज्यों में वन हानि और विखंडन के पैटर्न को ट्रैक करना। (v) संघर्ष के शमन के लिए उपाय सुझाना।

प्रगति: फील्डवर्क दिसंबर 2023 से जनवरी 2024 तक किया गया। छत्तीसगढ़, झारखंड और असम के विभिन्न प्रभागों में हाथी-मानव संघर्ष मुद्दों पर व्यापक डेटा और अंतर्दृष्टि एकत्र की गई। कार्य में विभिन्न क्षेत्रों के वन अधिकारियों के साथ समन्वय करना शामिल था ताकि संघर्ष घटनाओं का विवरण, उनके जीपीएस स्थान, अपनाए गए संघर्ष शमन उपाय और प्रभागीय मानचित्र अभिलेखों पर व्यापक और व्यवस्थित डेटा संग्रह सुनिश्चित किया जा सके। हाथी-मानव संघर्ष को कम करने के लिए उपयोग किए गए शमन उपायों पर विस्तृत जानकारी और हाथी झुंडों और उनके विचरण के डेटा को भी एकत्र किया गया। टीम ने वन अधिकारियों के साथ उनकी दृष्टियों और संघर्ष को

कम करने की योजनाओं को समझने के लिए भी बातचीत की। इसके अलावा, मानव और हाथी मृत्यु, फसलध्वंसपत्ति नुकसान और शमन उपायों पर डेटा सभी प्रभावित क्षेत्रों से एकत्र किया गया।

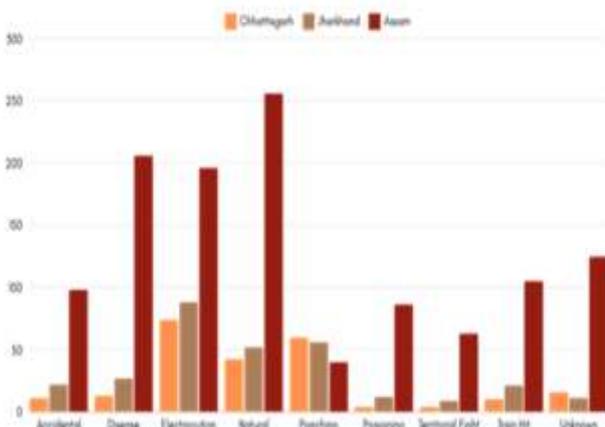
परिणाम और निष्कर्ष हाथी मृत्यु: (i) तीन राज्यों में मृत हाथियों के आयु समूहों की पहचान करना। (ii) नर और मादा हाथियों के बीच मृत्यु दर को समझना। (iii) मृत्यु के कारणों को समझना, जैसे विद्युत घात, शिकार, प्राकृतिक कारण और बीमारियाँ। (iv) मृत्यु के भौगोलिक स्थानों को मैप करना ताकि हॉटस्पॉट्स और विभिन्न मृत्यु दर वाले क्षेत्रों की पहचान की जा सके। (v) मौसमी फसल पैटर्न के कारण होने वाली वार्षिक अस्थायी मृत्यु दर को समझना, यदि कोई हो।

मानव मृत्यु: (i) नर और मादा के बीच मृत्यु दर में अंतर को समझना। (ii) घटना के प्रकार को समझना, जैसे मृत्यु या चोट। (iii) मनुष्यों की मृत्यु या घायल होने के लिए दी गई मुआवजा राशि को ज्ञात करना। (iv) मृत्यु या चोट के भौगोलिक स्थानों को मैप करना ताकि हॉटस्पॉट्स और विभिन्न मृत्यु दर वाले क्षेत्रों की पहचान की जा सके।

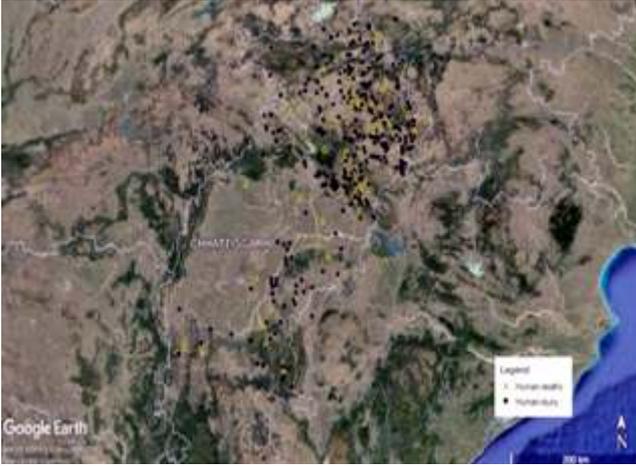
फसल/संपत्ति नुकसान: (i) घटना के सटीक भौगोलिक स्थान (गांव, जिला, क्षेत्र) की पहचान करना। (ii) क्षतिग्रस्त फसलों, संपत्ति नुकसान, भंडारण सुविधाओं, या दोनों के प्रकार की पहचान करना। (iii) प्रभावित फसलों के क्षतिग्रस्त क्षेत्र का मापन करना (एकड़/हेक्टेयर में), क्षतिग्रस्त फसलों के प्रकार और संपत्ति नुकसान की मात्रा को मापना। (iv) फसलध्वंसपत्ति नुकसान घटनाओं के लिए मुआवजा रुझानों को समझना।

उपयोग किए गए शमन उपाय: (i) तीन राज्यों में उपयोग किए जा रहे शमन उपायों की पहचान करना। (ii) उन बफर जोनों की पहचान करना जहां राज्यों में असंगत फसलें और गलियारे हैं। (iii) मानव-हाथी संघर्ष को कम करने के लिए विभिन्न प्रकार की चेतावनी प्रणालियों (अलार्म, चेतावनी प्रणालियाँ, मोबाइल अलर्ट) की पहचान करना।

मील का पत्थर: हाथी और मानव मृत्यु: हाथियों की मृत्यु पर डेटा, जिसमें आयु, मृत्यु के कारण, और भौगोलिक स्थान शामिल हैं, का विश्लेषण किया गया। मानव मृत्यु और चोट पर एकत्र किए गए



छत्तीसगढ़, झारखंड और असम में हाथियों की मृत्यु के दर्शाये गये कारण



डूम डूमा रेंज, असम में एक हाथी के विद्युतघात के प्रकरण के लिए क्षेत्र निरीक्षण



सिवसागर प्रभाग, असम में मानव-हाथी संघर्ष को कम करने के लिए सौर ऊर्जा चलित बाड़

डेटा, जो आयु, लिंग, और संघर्ष के स्थान जैसे कारकों पर केंद्रित हैं, का विश्लेषण किया गया। प्रवृत्तियों और मौसमी विविधताओं को पहचानने के लिए अस्थायी प्रवृत्तियों का भी विश्लेषण किया गया। संघर्ष मानचित्रों की तैयारी: संघर्ष क्षेत्रों को उजागर करने वाले

विस्तृत स्थानिक मानचित्र तैयार किए गए। मानचित्रों को घटनाओं की आवृत्ति, क्षति के प्रकार, और मानव बस्तियों के निकटता जैसे विभिन्न पहलुओं को दर्शाने के लिए विकसित किया गया।

परियोजना
आरंभ की गई
भावसं

पिट्टी द्वीप पक्षी अभ्यारण्य और लक्षद्वीप द्वीपसमूह के अन्य द्वीपों में घोंसला बनाने वाले समुद्री पक्षियों की गतिविधियों की ट्रैकिंग और जनसंख्या का आकलन – एक प्रारंभिक पहल

वित्तपोषण स्रोत
पर्यावरण और वन विभाग,
लक्षद्वीप केंद्रशासित प्रदेश

शोधकर्ता
राजदीप मित्र

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2023

अन्वेषक
डॉ. आर. सुरेश कुमार

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) पिट्टी द्वीप पक्षी अभ्यारण्य और लक्षद्वीप द्वीपों के अन्य स्थलों में घोंसला बनाने वाले समुद्री पक्षियों की जनसंख्या की स्थिति को समझना, (ii) उपग्रह टेलीमेट्री के साथ चयनित समुद्री पक्षी प्रजातियों की सूक्ष्म गतिविधियों का अध्ययन करना, और (iii) दक्षिणी हिंद महासागर में समुद्री पक्षी अनुसंधान के चल रहे दीर्घकालिक प्रयासों में योगदान देना।

प्रगति: लक्षद्वीप द्वीपों में घोंसला बनाने वाले समुद्री पक्षियों की व्यापक समझ प्राप्त करने के लिए, द्वीपसमूह के सभी सुलभ द्वीपों में व्यापक क्षेत्र सर्वेक्षण किए गए। इन सर्वेक्षणों का उद्देश्य समुद्री पक्षियों की घोंसला बनाने की गतिविधियों पर विस्तृत डेटा एकत्र करना था। इसके अलावा, पिट्टी द्वीप पक्षी अभ्यारण्य की विशेष रूप से निगरानी की गई, और घोंसला बनाने के डेटा को हर हफ्ते व्यवस्थित रूप से एकत्र किया गया। इसके अतिरिक्त, पिट्टी द्वीप से

एक सूट्टी टर्न (*ओनिचोप्रियन फुस्कटस*) और एक ब्राउन नोडी (*अनस स्टोलिडस*) को उपग्रह ट्रांसमीटरों के साथ टैग किया गया ताकि उनकी गतिविधि पैटर्न की ट्रैकिंग की जा सके, जो उनकी पारिस्थितिकी की व्यापक समझ में योगदान देता है।

परिणाम और निष्कर्ष: घोंसला बनाने की गतिविधि केवल दो द्वीपों, पिट्टी द्वीप पक्षी अभ्यारण्य और चेरबनियानी रीफ पर दर्ज की गई। व्यवस्थित डेटा संग्रह के माध्यम से यह देखा गया कि घोंसला बनाने की गतिविधि सर्दियों से गर्मियों तक और संभवतः पूरे वर्ष होती है, जिसमें मानसून की शुरुआत में गतिविधियां चरम सीमा पर होती हैं। पिट्टी द्वीप पर सबसे अधिक संख्या में घोंसले दर्ज किए, जिसमें सूट्टी टर्न के लिए 1,500 और ब्राउन नोडी के लिए 1,200 घोंसले गिने गए। उपग्रह ट्रैकिंग से और भी अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिसमें दो प्रजातियों के लिए विशिष्ट गतिविधि पैटर्न का पता चला। सूट्टी टर्न को पिट्टी द्वीप से 90

किमी दूर तक व्यापक रूप से यात्रा करते हुए देखा गया, संभवतः अपने बच्चे के लिए भोजन की खोज में, क्योंकि इसे भोजन वापस लाते हुए देखा गया था। इसके विपरीत, ब्राउन नोडी ज्यादातर पिट्टी द्वीप के आसपास रही, क्योंकि यह अंडे का ऊष्मायन कर रही थी।

मील का पत्थर: यह अध्ययन भारतीय क्षेत्र में समुद्री पक्षियों को टैग करने वाला पहला अध्ययन है। ट्रेकिंग डेटा अरब सागर के समुद्री पक्षियों के लिए प्रमुख चारागाह क्षेत्रों की पहचान में महत्वपूर्ण है। अध्ययन के दौरान एकत्र किए गए व्यवस्थित घोंसला बनाने के डेटा से लक्षद्वीप में प्रजनन करने वाले समुद्री पक्षियों की घोंसला बनाने की पारिस्थितिकी की समझ विकसित हुई है।

आरंभ की गई परियोजना
भावसं

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – हिम तेंदुआ

वित्तपोषण स्रोत
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

शोधकर्ता
अनुज जोशी और मुकेश कुमार

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2023

अन्वेषक
डॉ. एस. सत्यकुमार

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2024

उद्देश्य: हिम तेंदुए की संभावित वितरण श्रेणी में स्थानिक वितरण का व्यवस्थित आकलन करना और हिम तेंदुए की जनसंख्या का अनुमान लगाना और हिम तेंदुए की घनत्व में स्थानिक परिवर्तन को ज्ञात करना।

प्रगति: हिम तेंदुओं के स्थानिक वितरण का व्यवस्थित आकलन आवास सहवर्ती, अधिभोग (संकेत सर्वेक्षण/प्रश्नावली/धमकियों)



© धित्तमान मुखर्जी

और स्तरीकरण (कम, मध्यम, उच्च) का उपयोग करके किया गया। अनुसंधान टीम ने परिदृश्य की विषमता को ध्यान में रखते हुए 500 किमी² से अधिक के आवास पैच में कैमरा ट्रेपिंग और जेनेटिक्स का उपयोग करके जनसंख्या आकलन किया।

परिणाम और निष्कर्ष: हिम तेंदुए के संकेतों को रिकॉर्ड करने के लिए कुल 13,450 किमी का ट्रेल सर्वेक्षण किया गया। कैमरे चार राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में 1,971 स्थानों पर तैनात किए गए। कुल 20.2 लाख कैमरा ट्रेप का फोटोग्राफ किया गया और हिम तेंदुए की उपस्थिति को 93,392 किमी² और अनुमानित उपस्थिति को 1,00,841 किमी² में रिकॉर्ड किया गया। चयनित स्थलों में शिकार की जनसंख्या आकलन और आवास की गहन निगरानी जारी है।

मील का पत्थर: हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश और दो केंद्र शासित प्रदेशों, जम्मू और कश्मीर और लद्दाख में नमूना अभ्यास पूरा हो चुका है।

गोवा राज्य की तटीय और समुद्री जैव विविधता प्रोफाइल

वित्तपोषण स्रोत
गोवा वन विभाग

शोधकर्ता
दीक्षा मांडलिक

आरंभ होने की तिथि
दिसंबर 2023

अन्वेषक
सुश्री चिन्मया घाणेकर और
डॉ. जे.ए. जॉनसन

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) गोवा राज्य के तटीय और समुद्री वनस्पतियों और जीवों का दस्तावेजीकरण और (ii) गोवा के तट पर समुद्री स्तनधारियों के वितरण को समझना।

प्रगति: उत्तरी गोवा के केरीम से दक्षिण गोवा के पोलेम तक समुद्र तटों का प्रारंभिक सर्वेक्षण किया गया। सभी सुलभ समुद्र तटों पर आवासों की पहचान करने के लिए पैदल सर्वेक्षण किया गया। फील्ड टीम ने विभिन्न समुद्र तटों पर तैनात स्थानीय लाइफगार्ड्स और वन रक्षकों से भी जानकारी एकत्र की। मौसमी जैव विविधता सर्वेक्षणों के लिए सर्वेक्षण किए गए हिस्से में मैंग्रोव और चट्टानी इंटरटाइडल आवासों की पहचान की गई।

परिणाम और निष्कर्ष: गोवा के तट पर पांच मैंग्रोव क्षेत्र, जहां मुख्य रूप से रिजोफोरा एसपीपी. और एविसिनिया एसपीपी. पाए जाते हैं, छोटे मछलियों, केकड़ों और मोलस्कों के लिए जाने जाते हैं। अठारह चट्टानी इंटरटाइडल जोन पहचाने गए, जिनमें केरीम बीच, अंजुना बीच, बागा बीच, वागातोर बीच, कैंडोलिम, रीस मार्गोस, बोगमालो बीच, हॉलेंट बीच, अगांडा बीच, राजबाग बीच, तल्पोना बीच, गलगिबागा बीच और पोलेम बीच शामिल हैं। इन आवासों में केकड़े, गैस्ट्रोपोड्स और समुद्री एनीमोन प्रमुख हैं। चट्टानी इंटरटाइडल जोन में केकड़ों और मोलस्कों के सर्वेक्षण के लिए एक विधि मानकीकृत की गई है।

हिमालय के लिए धारा स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन प्रभावों की निगरानी के लिए एक संकेतक प्रजाति दृष्टिकोण: अमोलोप्स फॉर्मोसस का उपयोग करके परीक्षण

वित्तपोषण स्रोत
जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग
एजेंसी

शोधकर्ता
सौरव चौधरी

आरंभ होने की तिथि
मार्च 2024

अन्वेषक
डॉ. सल्वाडोर लिंगडोह

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
अगस्त 2025

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) हिमालयी धारा पारिस्थितिकी तंत्र के लिए पर्यावरणीय संकेतक के रूप में प्रजातियों का आकलन करना (ii) हिमाचल प्रदेश के चयनित क्षेत्रों में अमोलोप्स फॉर्मोसस की जनसंख्या आकार और घनत्व का अनुमान लगाना, स्थानिक रूप से स्पष्ट कैप्चर रीकैप्चर और एसईसीआरलिनियर विधियों का उपयोग करके (iii) विभिन्न मापदंडों (टीडीएस, लवणता, तापमान, संवाहकता, पीएच, ओआरपी, प्रवाह, कैनोपी, सबस्ट्रेट) के सापेक्ष प्रचुरता, घनत्व और वितरण पर प्रभाव का विश्लेषण करना।

प्रगति: चयनित संरक्षित क्षेत्रों में अमोलोप्स फॉर्मोसस की जनसंख्या और विविधता के बारे में आधारभूत डेटा एकत्र किया गया। प्रजातियों के अस्तित्व और संरक्षण के लिए आदर्श जल और पारिस्थितिक मापदंडों को मापा गया, प्रजातियों को हिमालयी धारा पारिस्थितिकी तंत्र की स्वास्थ्य निगरानी के लिए एक पर्यावरणीय संकेतक के रूप में स्थापित किया गया।



चूड़धार वन्यजीव अभ्यारण्य में अपने प्राकृतिक आवास में अमोलोप्स फॉर्मोसस

परिणाम और निष्कर्ष: चुड़धार वन्यजीव अभ्यारण्य की चयनित धाराओं का सर्वेक्षण किया गया। प्रजातियों के जनसंख्या और मापदंड डेटा एकत्र किए गए। तीन धाराओं में 46 *अमोलोप्स फॉर्मोसस* की पहचान की गई, जिनमें से प्रत्येक धारा में तीन बार

पुनः पाया गया। सब्सट्रेट की तुलना में व्यक्तियों का औसत निम्न तापमान दस्तावेज किया गया। डेटा विश्लेषण से यह पता चला कि धारा के प्रवाह और आसपास के तापमान जैसे मापदंडों का जनसंख्या परिवर्तनों पर प्रभाव पड़ता है।

परियोजना
आरंभ की गई

भावसं

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – भारतीय गैंडा

वित्तपोषण स्रोत

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास

शोधकर्ता

हर्षवर्धन सिंह राठौड़ और श्रेया यादव

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2024

अन्वेषक

श्री कमर कुरेशी और डॉ. विष्णुप्रिया कोलीपाकम

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) भारतीय गैंडे की वर्तमान जनसंख्या स्थिति का आकलन करना (ii) भारतीय गैंडे की जनसंख्या और उनके आवासों के लिए दीर्घकालिक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना और (iii) भारतीय गैंडे के पुनर्स्थापन के लिए उपयुक्त आवास की पहचान करना।

प्रगति: भारत में भारतीय गैंडे की जनसंख्या के आवास, वितरण, जनसंख्या रुझानों और संरक्षण मुद्दों पर व्यवस्थित साहित्य समीक्षा पूरी हो गई है। तराई, पूर्वोत्तर भारत और तेलंगाना तक के मध्य भारतीय क्षेत्रों को कवर करने वाला भूमि उपयोग/भूमि कवर वर्गीकरण प्रगति पर है। प्रचुरता के अनुमान के लिए क्षेत्र मूल्यांकन पूरा हो गया है। प्रजातियों के लिए देशव्यापी संरक्षण कार्य योजना की तैयारी प्रक्रिया में है।

परिणाम और निष्कर्ष: भारतीय गैंडे के पुनर्स्थापन के लिए

संभावित आवासों की पहचान आवास उपयुक्तता मॉडलिंग का उपयोग करके की गई। प्रभावी संरक्षण योजना के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की गई। भारतीय गैंडे की जनसंख्या और उनके आवास के लिए निगरानी विधियों को विकसित करने के लिए वर्तमान और ऐतिहासिक रेंज राज्यों के अधिकारियों और हितधारकों के साथ कार्यशालाओं और परामर्शों का आयोजन किया गया।

मील का पत्थर: भारतीय गैंडे के वर्तमान और ऐतिहासिक रेंज राज्यों के अधिकारियों और हितधारकों को भारतीय वन्यजीव संस्थान में कार्यशाला परामर्श के लिए आमंत्रित किया गया। टीम ने गूगल अर्थ इंजन का उपयोग करके भारतीय गैंडे के वर्तमान और संभावित रेंज के घास के मैदान और दलदली आवासों के वर्गीकरण की निगरानी की।

परियोजना
जांशी

भावसं

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – दलदली हिरण (2023–24)

वित्तपोषण स्रोत

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास

शोधकर्ता

डॉ. नेहा अवस्थी

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2024

अन्वेषक

श्री कमर कुरेशी और डॉ. विष्णुप्रिया कोलीपाकम

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) भारत में दलदली हिरण की वर्तमान स्थिति का आकलन करना और (ii) दलदली हिरण की जनसंख्या और उनके आवास के लिए दीर्घकालिक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना।

प्रगति: प्रजातियों के आवास, वितरण, जनसंख्या रुझानों और खतरों को कवर करने वाली विस्तृत साहित्य समीक्षा की गई। तराई, पूर्वोत्तर और मध्य भारत के क्षेत्रों को कवर करने वाला भूमि उपयोग/भूमि आवरण का वर्गीकरण प्रगति पर है। प्रचुरता के अनुमान के लिए क्षेत्र मूल्यांकन प्रगति पर है। प्रजातियों के लिए देशव्यापी कार्य योजना की तैयारी प्रक्रिया में है।

परिणाम और निष्कर्ष: संभावित आवासों की पहचान, वर्तमान जनसंख्या स्थिति और वितरण और प्रभावी संरक्षण योजना के लिए

दलदली हिरण के पुनर्स्थापन के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान। वर्तमान और ऐतिहासिक रेंज राज्यों के हितधारकों और अधिकारियों के साथ परामर्श के माध्यम से दलदली हिरण की जनसंख्या और उनके आवास के लिए निगरानी विधियों का विकास।

मील का पत्थर: कान्हा और सतपुड़ा बाघ रिजर्व के मध्य भारतीय परिदृश्यों में, और उत्तरी भारत में दुधवा में, और पूर्वोत्तर भारत में मानस टाइगर रिजर्व में दलदली हिरण के लिए क्षेत्र नमूनाकरण प्रशिक्षण आयोजित किया गया। भारत में दलदली हिरण के वर्तमान और ऐतिहासिक रेंज राज्यों के हितधारकों और अधिकारियों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की जानी है ताकि प्रजातियों और उनके आवास के लिए संरक्षण कार्य योजना की अंतिम तैयारी पर चर्चा की जा सके।

परियोजना
आरंभ की गई

आवास

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों का भारतव्यापी मूल्यांकन और निगरानी – जंगली जल भैंसा

वित्तपोषण स्रोत

वन्यजीव आवास का एकीकृत विकास

शोधकर्ता

हर्षवर्धन सिंह राठौड़ और अर्नव गंधे

आरंभ होने की तिथि

मार्च 2024

अन्वेषक

श्री कमर कुरैशी और डॉ. विष्णुप्रिया कोलीपाकम

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि

दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) जंगली जल भैंसा की वर्तमान स्थिति का आकलन करना और (ii) जल भैंसा की जनसंख्या और उनके आवासों के लिए दीर्घकालिक निगरानी प्रोटोकॉल विकसित करना।

प्रगति: भारत में जंगली जल भैंसा की जनसंख्या के आवास, वितरण, जनसंख्या रुझानों और खतरों जैसे पहलुओं को शामिल करने वाली एक व्यापक साहित्य समीक्षा पूरी हो गई है। तराई, पूर्वोत्तर भारत और तेलंगाना तक के मध्य भारतीय क्षेत्रों को कवर करने वाला भूमि उपयोग/भूमि कवर वर्गीकरण प्रगति पर है। प्रजातियों की प्रचुरता के अनुमान के लिए क्षेत्र मूल्यांकन और प्रजातियों के लिए देशव्यापी संरक्षण कार्य योजना की तैयारी की प्रक्रिया जारी है।

परिणाम और निष्कर्ष: जंगली जल भैंसा के पुनर्स्थापन के लिए संभावित शेष आवासों की पहचान आवास उपयुक्तता मॉडलिंग का

उपयोग करके की गई और प्रभावी संरक्षण योजना के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की गई। वर्तमान और ऐतिहासिक रेंज राज्यों के हितधारकों और अधिकारियों के साथ कार्यशाला परामर्श के माध्यम से जंगली जल भैंसा की जनसंख्या और उनके आवास के लिए निगरानी विधि का विकास किया गया।

मील का पत्थर: टीम ने गूगल अर्थ इंजन का उपयोग करके जंगली जल भैंसा के वर्तमान और संभावित रेंज के घास के मैदान और दलदली आवासों के वर्गीकरण की निगरानी की। भारत में जंगली जल भैंसा के वर्तमान और ऐतिहासिक रेंज राज्यों के हितधारकों और अधिकारियों को भारतीय वन्यजीव संस्थान में कार्यशाला परामर्श के लिए आमंत्रित किया गया। इंद्रावती बाघ रिजर्व, छत्तीसगढ़ में वन कर्मियों के लिए क्षेत्र नमूनाकरण प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

मुकुंदरा हिल्स बाघ रिजर्व और रामगढ़ विषधारी बाघ रिजर्व की दीर्घकालिक पारिस्थितिक निगरानी

वित्तपोषण स्रोत
राजस्थान वन विभाग

शोधकर्ता
मोहित कुमार पात्रा और
राजराजेश्वर ठाकुर

आरंभ होने की तिथि
मार्च 2024

अन्वेषक
श्री कमर कुरैशी, डॉ. अयान साधु
और डॉ. विष्णुप्रिया कोलीपाकम

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
मार्च 2028

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व और रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व में बाघ और सह-शिकारियों की जनसंख्या की दीर्घकालिक निगरानी करना, (ii) उपर्युक्त टाइगर रिजर्व में अविकारी जनसंख्या और आवास की निगरानी करना, और (iii) व्यापक एमएचटीआर-आरवीटीआर परिदृश्य में वन्यजीव गलियारों की निगरानी करना।

प्रगति: मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व और रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व में रेडियो टेलीमेट्री, कैमरा ट्रैपिंग और प्रत्यक्ष अवलोकनों के माध्यम से बाघों की गहन पारिस्थितिक और व्यवहारिक निगरानी की गई ताकि उनके गृह क्षेत्र, आवास उपयोग और रहने की अवधि को निर्धारित किया जा सके। दोनों बाघ रिजर्व में चरण 4 प्रोटोकॉल के अनुसार व्यवस्थित ग्रीड-आधारित कैमरा ट्रैपिंग और लाइन ट्रांसेक्ट सर्वेक्षण को लागू किया गया ताकि जानवरों की स्थानिक-कालिक गतिविधि की पहचान की जा सके और जंगली शिकार की घनत्व का निर्धारण किया जा सके। बाघों और अन्य मांसाहारियों द्वारा किए गए शिकार का निरीक्षण करके शिकार और स्थल की प्राथमिकता का मूल्यांकन किया गया। वन विभाग को उचित निगरानी और तकनीकी मार्गदर्शन सुनिश्चित करने के लिए अग्रिम कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यशालाओं और प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व में, नर बाघ एमटी-5 का वार्षिक गृह क्षेत्र 788.10 किमी² था और उसने कभी-कभी बाघ अभ्यारण्य के बाहर छोटे-छोटे दौरे किए, जबकि मादा बाघिनों ने अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्रों में विचरण किया (एमटी4 ' 256.95 किमी² और एमटी6 दृ 175.64 किमी²)।

रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व में, दोनों मादा बाघिनों के प्रभावी गृह क्षेत्र आपस में ओवरलैप नहीं हुए, जिससे स्थानिक पृथक्करण का संकेत मिलता है, जिसमें आरवीटी-02 ने 142.34 किमी² और आरवीटी-03 ने 179.62 किमी² विचरण किया। मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व और रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व में, नर बाघों का गृह क्षेत्र मादा बाघिनों के साथ काफी हद तक ओवरलैप हुआ। शिकार घनत्व के अनुमानों और कैमरा ट्रैप डेटा से दोनों टाइगर रिजर्व में मवेशियों और नीलगाय की प्रचुरता का संकेत मिलता है जबकि अन्य महत्वपूर्ण शिकार, जैसे सांभर और चीतल, की कमी है।

बाघों की शिकार निगरानी से रोचक परिणाम प्राप्त हुए। दोनों टाइगर रिजर्व में, मवेशियों का सबसे अधिक शिकार किया गया (>60%), जबकि जंगली शिकार में नीलगाय का प्रतिशत सबसे अधिक था (14% - 28%)। यह शिकार घनत्व अनुमानों के साथ संगत है। हालांकि एक महीने के दौरान कई शिकार किए गए, परिणाम बाघों की मवेशियों पर निर्भरता और जंगली शिकार की वृद्धि की आवश्यकता का संकेत देते हैं। निगरानी और डेटा संग्रह के लिए दोनों टाइगर रिजर्व में एम-एसटीआरआईपीईएस डेस्कटॉप और मोबाइल एप्लिकेशन को पूरी तरह से लागू किया गया है।

मील का पत्थर: वापस लाये गए बाघों को क्षेत्र का अन्वेषण और बसाने में 30 से 135 दिनों का समय लगा। एमएचटीआर में एमटी-5 का ट्रैकिंग करते समय नए मार्गों की पहचान की गई। यह संरक्षित क्षेत्रों के बीच सक्रिय गलियारों को सीमांकित करने में मदद कर सकता है। कुनो वन्यजीव अभ्यारण्य से एमएचटीआर और आरवीटीआर दोनों में तेंदुओं के लम्बी दूरी में विस्तार की पुष्टि की गई, जिससे संभावित गलियारों का सामना आये।



एम.एच.टी.आर. (बायें) आर.वी.टी.आर. (दायें) में पुनर्स्थापित बाघों का होम रेंज

भारत और मध्य यूरोप के शीर्ष मांसाहारी जानवरों के परिदृश्यों में मध्यम आकार के मांसाहारियों के वितरण पर शीर्ष शिकारी और आवास के प्रभाव का मॉडलिंग

वित्तपोषण स्रोत
डीएसटी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग
प्रभाग, भारत सरकार

शोधकर्ता
आशीष कुमार

आरंभ होने की तिथि
अप्रैल 2023

अन्वेषक
डॉ. टी. रमेश और
डॉ. रिद्धिका रमेश

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
अप्रैल 2025

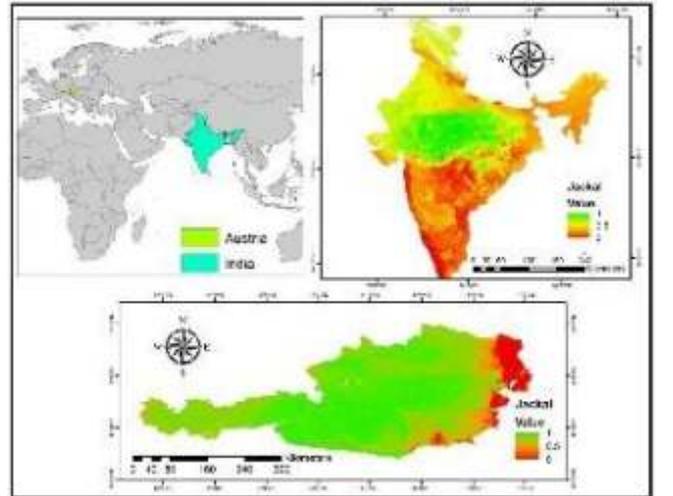
उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य है: (i) भारत और ऑस्ट्रिया के सभी संभावित बड़े शिकारी संरक्षण परिदृश्यों में धारीदार लकड़बग्घा और सुनहरे गीदड़ की वर्तमान जनसंख्या स्थिति का आकलन और मानचित्रण करना (ii) भारत के सभी संभावित बाघ संरक्षण परिदृश्यों में गीदड़ और धारीदार लकड़बग्घा की जनसंख्या गतिशीलता पर बड़े मांसाहारी जनसंख्या के प्रभाव को समझना।

प्रगति: यह परियोजना भारत में लकड़बग्घों और भारत एवं यूरोप में गीदड़ों पर शीर्ष शिकारी के संभावित प्रभाव का अध्ययन करता है (महाद्वीपीय पैमाने पर), जिसका लक्ष्य एक साथ टॉप-डाउन कंट्रोल के विभेदक और गैर-स्थिर पैटर्न को समझना है। एक व्यापक साहित्य समीक्षा के बाद, लकड़बग्घों, गीदड़ों, बाघों, तेंदुओं और उनकी दो प्रमुख शिकार प्रजातियों, चीतल और सांभर, पर विभिन्न डेटा स्रोतों से जानकारी को संकलित किया। गीदड़ और लकड़बग्घा की आवास उपयुक्तता का आकलन विभिन्न भूवैज्ञानिक कारकों और उनके सह-घटित शिकारी के टॉप-डाउन प्रभाव के रूप में किया गया। भारत में विभिन्न बाघ संरक्षण परिदृश्यों में दोनों मॉडलों को कैलिब्रेट करने के लिए एक रैंडम फॉरेस्ट विश्लेषणात्मक फ्रेमवर्क का उपयोग किया गया, और दोनों देशों के संयुक्त डेटा के साथ एक एकीकृत मॉडल का उपयोग किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: ऑस्ट्रिया में, हमने पाया कि गीदड़ों के स्थानिक वितरण को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक भेड़ियों की निकटता थी, जो एक उच्च नकारात्मक संबंध दर्शाता है। इसके विपरीत, 'बायो18' (सबसे गर्म तिमाही का वर्षा) चर गीदड़ों के स्थानिक वितरण को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक के रूप में प्रकट हुआ। एकीकृत गीदड़ मॉडल से प्लॉट किया गया आंशिक निर्भरता ग्राफ देश स्तर पर सबसे गर्म

तिमाही के दौरान वर्षा में वृद्धि गीदड़ों के आगमन संभावना को कम करेगी। इसके अतिरिक्त, चीतल, तेंदुए और बाघ की उपस्थिति, साथ ही जनसंख्या घनत्व, भी भारत में गीदड़ों के लिए आवास उपयुक्तता की भविष्यवाणी करने में एक महत्वपूर्ण कारक है।

मील का पत्थर: भारत और ऑस्ट्रिया में गीदड़ों के स्थानिक वितरण पर टॉप डाउन बलों के प्रभावों में स्पष्ट विपरीत अंतर, इन बलों के सर्वभौमिक न होने की ओर इशारा करते हैं, जो उनके शीर्ष प्रजातियों की उपस्थिति में निम्न श्रेणी के प्रजातियों के होने का निर्धारण निर्धारित करते हैं। स्थानीय पर्यावरणीय स्थितियाँ ऐसे प्रभावों को बढ़ाने या खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।



भारत और ऑस्ट्रिया में गीदड़ों के अनुमानित उपयुक्त आवास को दर्शाने वाला अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

स्पॉट-बिल्ड पेलिकन के प्रजनन क्षेत्र में आर्द्रभूमि आवास का विश्लेषण

वित्तपोषण स्रोत
विज्ञान और इंजीनियरिंग
अनुसंधान बोर्ड, भारत सरकार

अन्वेषक
डॉ. टी. रमेश और
डॉ. रिद्धिका रमेश

आरंभ होने की तिथि
अगस्त 2023

शोधकर्ता
राचवेलपुला श्रीजा

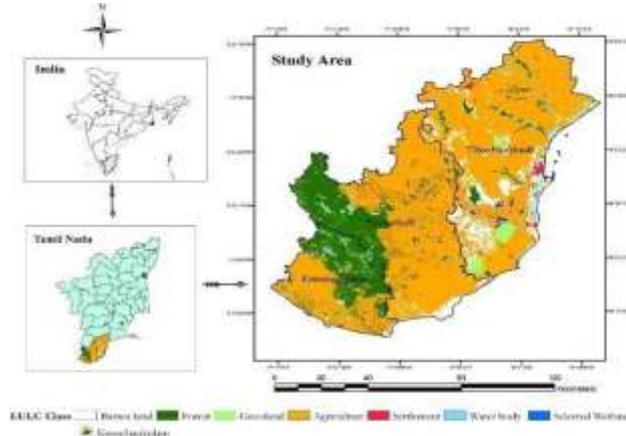
पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
अगस्त 2026

उद्देश्य: परियोजना के उद्देश्य हैं: (i) कुन्तनकुलम पक्षी अभ्यारण्य के सबसे दक्षिणी प्रजनन क्षेत्र से स्पॉट-बिल्ड पेलिकन की गतिविधि और आवास उपयोग पैटर्न की निगरानी करना, (ii) आर्द्रभूमि नेटवर्क के पार स्पॉट-बिल्ड पेलिकन की मौसमी आर्द्रभूमि स्थल उपयोग संभावना का आकलन करना और (iii) कुन्तनकुलम पक्षी अभ्यारण्य के आसपास के भूमि उपयोग परिवर्तनों का आकलन करना।

प्रगति: अध्ययन कुन्तनकुलम के 100 किमी की त्रिज्या में स्थित 51 आर्द्रभूमियों की आवास गुणवत्ता की जांच करता है, पेलिकन के स्थल उपयोग संभावना का आकलन करता है और दस वर्ष की अवधि में भूमि उपयोग परिवर्तनों का आकलन करता है ताकि स्पॉट-बिल्ड पेलिकन की प्रजनन जनसंख्या का समर्थन करने में आर्द्रभूमियों की भूमिका को समझा जा सके। विभिन्न भौतिक-रासायनिक जल मानकों जैसे पीएच, घुले हुए ऑक्सीजन, लवणता, कुल घुले ठोस, तापमान, ऑक्सीकरण-रिडक्शन संभाव्यता, चालकता, प्रतिरोधकता, वायुमंडलीय दबाव, अमोनिया और क्लोराइड को मापा गया। आवास विशेषताओं जैसे वनस्पति प्रकार, आर्द्रभूमि का आकार, जल स्तर की गहराई, प्रकाश का प्रवेश और व्यवधान प्रवणता को आवास स्वास्थ्य का आकलन करने के लिए मापा गया। पहले मौसम में एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण करने के लिए, हमने जल मानकों के संबंध में स्पॉट-बिल्ड पेलिकन की स्थल उपयोग संभावना का आकलन करने के लिए एकल-मौसम अधिवास मॉडलिंग का उपयोग किया।

परिणाम और निष्कर्ष: परिणामों ने पेलिकन के स्थल अधिवास के साथ लवणता और घुले हुए ऑक्सीजन के बीच सकारात्मक

संबंध दर्शाया। प्रकाश का प्रवेश और तापमान प्रत्येक स्थल में स्पॉट-बिल्ड पेलिकन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। लवणता का उचित स्तर मीठे पानी की प्रणालियों की तुलना में शिकार विविधता को बढ़ा सकता है, और घुले हुए ऑक्सीजन का उचित स्तर मछली की उत्पादकता को बढ़ा सकता है, इस प्रकार पेलिकन को लाभ होता है। प्रकाश का प्रवेश कम होने से पेलिकन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने वाली विरोधाभासी घटना को इस प्रकार समझा जा सकता है कि प्रकाश का प्रवेश कम होने से मैक्रोफाइट की वृद्धि सीमित होती है, जिससे फाइटोप्लांकटन के लिए प्रतिस्पर्धा कम होती है, परिणामस्वरूप प्राथमिक उत्पादन बढ़ता है और यह पेलिकन को आकर्षित करता है। जल तापमान बढ़ने से वाष्पीकरण दर बढ़ती है, इस प्रकार पेलिकन के लिए बाधा उत्पन्न होती है।



अध्ययन क्षेत्र जो तमिलनाडु के दक्षिणी जिलों में चयनित आर्द्रभूमियों को इंगित करता है

कच्छ, गुजरात, भारत में मानव-प्रभुत्व परिदृश्य से प्रजातियों-समृद्ध मांसाहारी समुदाय में सह-अस्तित्व के तंत्र

वित्तपोषण स्रोत
पैथेरा, न्यूयॉर्क

अन्वेषक
डॉ. शोमिता मुखर्जी और
डॉ. नंदिनी राजमणि,
आईआईएसईआर तिरुपति

आरंभ होने की तिथि
सितंबर 2023

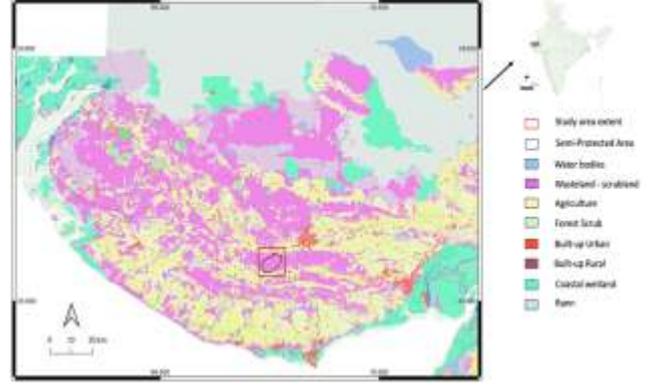
पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
सितंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (i) चादवा रखाल (आंशिक रूप से संरक्षित) के भीतर और आसपास की सवाना परिदृश्य में मांसाहारियों के स्थानिक-कालिक वितरण का आकलन करना, (ii) चयनित परिदृश्य में संभावित शिकार (चूहे और पक्षी) के वितरण का आकलन करना, (iii) चयनित परिदृश्य में मांसाहारियों के आहार की तुलना करना, और (iv) परिदृश्य में रहने वाले स्थानीय लोगों के साथ अध्ययन के परिणाम साझा करना।

प्रगति: फील्डवर्क नवंबर 2023 में शुरू हुआ, और स्वयंसेवक को कैमरा ट्रैप लगाने और आवास डेटा एकत्र करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। आईआईएसईआर, तिरुपति के प्रयोगशाला में मल विश्लेषण के माध्यम से आहार का अनुमान भी शुरू किया गया। मार्च 2024 तक, हमने 1x1 किमी के 74 ग्रिड में लगभग 1,480 दिनों के लिए कैमरे लगाए। 120 मल नमूनों में से, 100 को प्रजाति असाइनमेंट के लिए फेलिड प्राइमर्स का उपयोग करके विश्लेषित किया गया।

परिणाम और निष्कर्ष: अनुक्रमण के बाद, 69 मल विभिन्न बिल्ली प्रजातियों (रस्टी-धब्बेदार बिल्ली: 15, जंगली बिल्ली: 11 और अफ्रो-एशियाई वन्य बिल्ली: 43) से सम्बंधित थे। हमने 22 स्तनधारियों को दर्ज किया, जिसमें 17 जंगली प्रजातियां शामिल थीं। कैमरा ट्रैपिंग के परिणामों से पता चलता है कि मांसाहारी चादवा रखाल में वितरित थे, लेकिन कुछ क्षेत्रों में प्रजातियों की

अधिकता है। कुछ प्रजातियों को मल के माध्यम से बेहतर पहचाना गया (जैसे, रस्टी-धब्बेदार बिल्ली) जबकि अन्य को कैमरा ट्रैप के माध्यम से (जैसे, करकल), इसलिए बिल्लियों की उपस्थिति का दस्तावेजीकरण करने के लिए आणविक उपकरण और कैमरा ट्रैपिंग दोनों ही आवश्यक हैं। फील्डवर्क जारी है, और हम अब चादवा रखाल के बाहर के आसपास की फसल क्षेत्रों की जांच कर रहे हैं। लैब में बिल्लियों के आहार का अनुमान लगाने के लिए मल विश्लेषण का कार्य प्रगति पर है।



अध्ययन स्थल के साथ कच्छ जिले का भूमि उपयोग और भूमि आवरण मानचित्र

परियोजना
आरंभ की गई
सैकेन

बोनाल पक्षी संरक्षण रिजर्व में पक्षियों की विविधता पर आधारभूत जानकारी विकसित करना

वित्तपोषण स्रोत
कर्नाटक वन विभाग

शोधकर्ता
अरविंद कुमार पी.

आरंभ होने की तिथि
जनवरी 2024

अन्वेषक
डॉ. महेंद्रन माइलस्वामी और
विद्याधर अट्कोरे

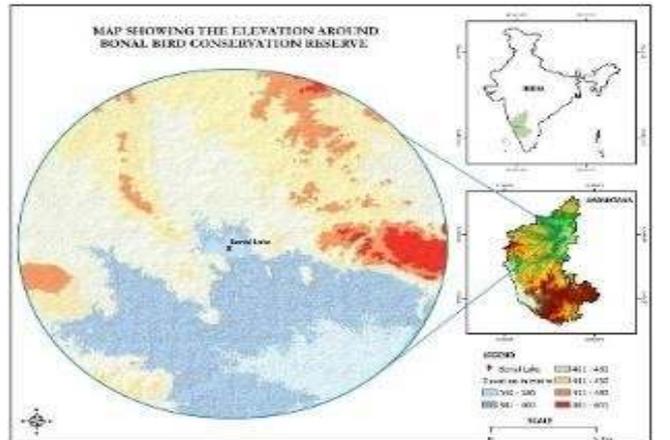
पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
फरवरी 2025

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य है: (i) बोनाल पक्षी संरक्षण रिजर्व में निवासी और प्रवासी पक्षियों के वितरण और स्थिति का अध्ययन करना, और (ii) रिजर्व के पिछले और वर्तमान पक्षी और जैव विविधता साहित्य का समेकन करना।

प्रगति: बोनाल पक्षी संरक्षण रिजर्व, जो चट्टानी पहाड़ियों और सिंचाई-समृद्ध कृषि क्षेत्रों से घिरे ग्रामीण पर्यावरण में स्थित है (16°31' 43-41' ऊ और 76°39' 17-71' पू), बोनाल गांव के पास स्थित है, जो शोरापुर शहर से पश्चिम में लगभग 10 किमी दूर यादगिर जिले, कर्नाटक में स्थित है। पक्षियों (जिसमें प्रवासी शामिल हैं) और झील आवास पर आधारभूत जानकारी एकत्र करने के लिए एक वैज्ञानिक अध्ययन आरंभ किया गया है।

परिणाम और निष्कर्ष: प्रारंभिक परिणाम बताते हैं कि यह झील एक महत्वपूर्ण पक्षी संरक्षण रिजर्व के रूप में कार्य करती है और लगभग 153 प्रजातियों के पक्षियों को आश्रय प्रदान करती है, जिसमें कई प्रवासी पक्षी भी शामिल हैं। अम्मापुरा गांव के मछुआरे विभिन्न प्रकार की गिल जाल और हुक जाल का उपयोग करते हैं,

साथ ही बांस के जाल बॉक्स जिन्हें कन्नड़ में 'बुट्टी' कहा जाता है का भी उपयोग करते हैं।



बोनाल पक्षी संरक्षण रिजर्व के आसपास के क्षेत्रों का ऊंचाई विवरण दर्शाने वाला मानचित्र

हिमाचल प्रदेश में रीसस मकाक, मकाका मुल्लाटा, जनसंख्या और सामाजिक संगठन का आकलन

वित्तपोषण स्रोत
वन विभाग, हिमाचल प्रदेश

शोधकर्ता
डॉ. आर. सासी और जी. प्रफुल

आरंभ होने की तिथि
जनवरी 2024

अन्वेषक
डॉ. एच.एन. कुमार

पूर्ण होने की प्रस्तावित तिथि
दिसंबर 2024

उद्देश्य: परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं (i) वन विभाग के साथ संबद्धता में रीसस मकाक जनसंख्या आकलन का समन्वय करना, (ii) राज्य-स्तरीय आकलन-2023 के डेटा का उपयोग करके हिमाचल प्रदेश के लिए रीसस मकाक की जनसंख्या स्थिति का आकलन करना, (iii) मकाक घनत्व मानचित्र विकसित करना, और पूरे हिमाचल प्रदेश के लिए उच्च मकाक घनत्व क्षेत्र की पहचान करना, और (iv) नसबंदी केंद्र के आसपास मकाक जनसंख्या के सामाजिक संगठन का आकलन करना ताकि उनकी प्रजनन दर का आकलन किया जा सके।

प्रगति: हमने 1 मार्च को शिमला में विभागीय कर्मचारियों के लिए मकाक आकलन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किया, फिर धर्मशाला और सुंदरनगर में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

परिणाम और निष्कर्ष: 7 मार्च 2024 को समकालीन सर्वेक्षण डबल ऑब्जर्वर सैपलिंग तकनीक का पालन करते हुए संचालित किया गया। लगभग 1,300 परीक्षण सही तरीके से किए गए, और

डेटा एकत्र किया गया। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान डेटा संकलन को शुरू किया गया।



हिमाचल प्रदेश में रीसस मकाक



© विप्रेषा कुमार जागिड़

अकादमिक और प्रशिक्षण गतिविधियाँ

शैक्षणिक कार्यक्रम

18वां एम.एस.सी. वन्यजीव विज्ञान पाठ्यक्रम

अठारहवां एम.एस.सी. वन्यजीव विज्ञान पाठ्यक्रम अगस्त 2022 में शुरू किया गया था। तीसरे सेमेस्टर की शुरुआत 1 अगस्त 2023 को हुई और सभी मॉड्यूल पाठ्यक्रम अनुसूची के अनुसार पूरे कर लिए गए। छात्रों को 11 अगस्त 2024 को पिंजौर में गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र के दौरे पर ले जाया गया। छात्रों ने 6-27 अक्टूबर 2023 के बीच पश्चिमी घाट के संरक्षण अभ्यास दौरे के दौरान कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के राष्ट्रीय उद्यानों, तटीय क्षेत्रों और वन प्रभागों का दौरा किया। छात्रों ने 13-14 नवंबर 2023 को अपनी शोध प्रस्ताव को डिफेंड करने के लिए प्रस्तुति दी। तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएँ 12-18 दिसंबर 2023 के बीच आयोजित की गईं।

अठारहवीं एम.एस.सी. पाठ्यक्रम का चौथा सेमेस्टर जनवरी 2024 में शुरू हुआ, और छात्र राज्य वन विभाग की संबंधित अनुमतियों के साथ अपने शोध प्रस्ताव के फील्डवर्क को पूरा करने के लिए अपनी अध्ययन साइट पर गए। छात्रों ने अपने फील्ड अध्ययन को पूरा किया और अंतिम प्रस्तुति के लिए अपना शोध पत्र लिखना शुरू कर दिया।

उन्नीसवां एम.एस.सी. (वन्यजीव विज्ञान) कोर्स 2023-25

उन्नीसवां एम.एस.सी. वन्यजीव विज्ञान कोर्स 7 अगस्त 2023 को शुरू हुआ, जिसमें आठ भारतीय वन्यजीव संस्थान प्रायोजित और 12 स्व-प्रायोजित छात्रों सहित 20 छात्रों की क्षमता थी। छात्रों का 11 राज्यों से विविध पृष्ठभूमि और रुचियाँ थीं। सभी पहले सेमेस्टर के मॉड्यूल पाठ्यक्रम कैलेंडर के अनुसार पूरे कर लिए गए।

पहले सेमेस्टर के दौरान निम्नलिखित दौरे आयोजित किए गए: (i) ओरिएंटेशन-कम-अध्ययन दौरा लैंसडाउन वन प्रभाग में 4-9 सितंबर 2023 के बीच आयोजित किया गया था। तकनीक टूर को 27 अक्टूबर से 10 नवंबर 2023 के बीच पन्ना टाइगर रिजर्व में ले जाया गया। पहले सेमेस्टर की परीक्षाएँ 11-20 दिसंबर 2023 के बीच आयोजित की गईं। ओडिशा में वेटलैंड प्रबंधन दौरा 19-28 फरवरी 2024 के बीच किया गया था।

एम.एस.सी. थीसिस

अभिमन्यु मधुसूदन, पूर्वी राजाजी और हरिद्वार वन प्रभाग में नर एशियाई हाथियों, *एलिफस मैक्सिमस* की जनसंख्या का आकार और सामाजिक संगठन। पर्यवेक्षक: डॉ. बिवाश पांडव, डॉ. एन लक्ष्मीनारायणन और डॉ. सम्राट मॉडल।

अभिषेक तंगरिया, उप-हिमालयी क्षेत्र, उत्तराखंड में मछली खाने वाले रैप्टर, पल्लास की फिश-ईगल, *हालीएटस ल्युकोरिफस* में घोंसला-स्थल चयन। पर्यवेक्षक: डॉ. आशीष झा, डॉ. बिवाश पांडव और डॉ. आर. सुरेश कुमार।

आदित्य सतीश, पश्चिमी हिमालय के ओक जंगलों में विघटन

ग्रेडिएंट पर मिश्रित-प्रजाति पक्षी समूहों की प्रतिक्रिया। पर्यवेक्षक: डॉ. नवेंदु पगे, डॉ. गजाला सहाबुद्दीन और डॉ. प्रीति बंगल।

अर्नब दे सरकार, गहिरमाथा तट के साथ ओलिव रिडले समुद्री कछुओं, *लेपिडोचेलिस ओलिवेसी* के प्रेरक कारक और निकटतम समूहों की स्थानिक गतिशीलता। पर्यवेक्षक: डॉ. नेहरू प्रभाकरण, डॉ. आर. सुरेश कुमार और डॉ. बिवाश पांडव।

अशिक सीएस, पूर्वी भारत के भितरकनिका मैंग्रोव में मछली पकड़ने वाले बिल्ली के सूक्ष्मवास उपयोग, अधिभोग और घनत्व का आकलन। पर्यवेक्षक: डॉ. बिवाश पांडव।

अस्लाम मोहम्मद, एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान, केरल में पर्यटन क्षेत्र और कोर में नीलगिरि ताहर, *नीलगिरिट्रागस हाइलोक्रियस* के व्यवहार और आवास उपयोग में अंतर का निर्धारण। पर्यवेक्षक: डॉ. सी. रमेश, डॉ. के. रमेश और डॉ. करुणाकरण।

बिंदु के, लायन टेल्ड मकाक, *मकाका सिलेनस* सामाजिक पदानुक्रम और आयु-लिंग वर्गों का इनके द्वारा बीजों के फैलाव पर प्रभाव। पर्यवेक्षक: डॉ. एच.एन. कुमारा, डॉ. रोहित नानीवाडेकर और डॉ. नवेंदु पगे।

चारुश्री संतोष, जंगल से परे: रीसस मकाक, *मकाका मुल्टा* में अंतरप्रजाति और प्रजातियों के बीच आक्रामकता। पर्यवेक्षक: डॉ. एच.एन. कुमारा और श्री प्रशांत महाजन।

डेविड फिनहास एन, नागरिक विज्ञान का उपयोग करके पक्षी निगरानी: नीलगिरी के पक्षी समूहों पर शहरीकरण के प्रभाव का आकलन पर केस स्टडी। श्री वरुण खेर और डॉ. रॉबिन विजयन।

कृष्णप्रिया एम, थार रेगिस्तान के मानव संशोधित परिदृश्य में रेगिस्तान लोमड़ी के द्वारा आवास का चयन। पर्यवेक्षक: डॉ. सुतीर्था दत्ता, डॉ. विष्णुप्रिया के. और डॉ. गौतम तालुकदार।

के नियाज अहमद, पॉइजन आन् प्लेट् तुंगभद्र ओटर कंजर्वेशन रिजर्व में स्मूथ-कोटेड ओटर, *लुट्रोगेल परपिसिलाटा* के आवास और आहार में संभावित विषाक्त तत्वों का जोखिम आकलन। पर्यवेक्षक: डॉ. जे.ए. जॉनसन, डॉ. एस.ए. हुसैन और सुश्री रुचिका साह।

मुकुल सुधाकर, स्लाथ बियर में व्यवहार और शारीरिक प्रतिक्रियाओं से सकारात्मक हस्तक्षेप की प्रभावशीलता को समझना। डॉ. ललियनपूई काव्लनी और डॉ. सुतीर्था दत्ता।

नंदिता मधु, उत्तरी पश्चिमी घाट के काजू बागानों में पक्षी विविधता और स्थायित्व को प्रभावित करने वाले स्थानीय और परिदृश्य-स्तरीय कारकों के प्रभाव। डॉ. राजा जयपाल और डॉ. नवेंदु पगे।

प्रकृति जीएम, भारतीय ट्रांस-हिमालय में हिमालयी ब्लू शीप और हिमालयी आइबेक्स के बीच सर्दियों के दौरान पारिस्थितिक पृथक्करण का पता लगाना। पर्यवेक्षक: डॉ. एस.

सत्यकुमार, डॉ. सल्वाडोर लिंगदोह और डॉ. यशवीर भटनागर।

रक्षित गौड़ा एचएन, केंद्रीय पश्चिमी घाट में सीतानदी नदी बेसिन में भूमि उपयोग परिवर्तन का ओडोनाट जमावड़े की संरचना पर प्रभाव। पर्यवेक्षक: श्री रितेश गौतम और डॉ. जे.ए. जॉनसन।

ऋषि बसुमतारी, गोल्डन लंगूर वितरण और गलियारा – कनेक्टिविटी: पैटर्न का आकलन करना और खतरों का समाधान करना। पर्यवेक्षक: डॉ. अनुकूल नाथ, डॉ. गोपी जी.वी. और डॉ. दिलीप छेत्री।

संजना वडके कुरुप्पथ, मुदुमलाई बाघ रिजर्व, भारत में कुत्तों की आबादी और वन्यजीव अंतःक्रिया का आकलन। पर्यवेक्षक: डॉ. के. रमेश और श्री वरुण खेर।

शशांक जगदीश नगराले, पश्चिमी राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड के पास और आसपास के कचरा स्थलों के साथ स्तनपायी के अंतःक्रिया को समझना। पर्यवेक्षक: डॉ. बिवाश पांडव और डॉ. शिवम श्रोत्रिय।

शिल्पा बिबूर, श्रीविल्लिपुथुर ग्रीजल्ड स्क्वरल वन्यजीव अभ्यारण्य, भूमि उपयोग परिवर्तन का तमिलनाडु के आसपास के आवासों और ग्रीजल्ड गिलहरी की प्रचुरता पर प्रभाव। पर्यवेक्षक: डॉ. गोपी जी.वी., श्री वरुण खेर और डॉ. सुरेंद्र प्रकाश गोयल।

टिवलिंगक्सियार लिंगदोह नोंग्रांग, खासी हिल्स, मेघालय, भारत में एपिफाइट्स पर मानवजनित विघटन प्रभाव का आकलन। पर्यवेक्षक: डॉ. अमित कुमार।

एम.एस.सी. शोध प्रबंध (बाह्य पर्यवेक्षित)

आर्य पी (2023): बचाए गए टेस्टुडाइन से पेशेवर महत्व के जूनोटिक बैक्टीरिया (साल्मोनेला एसपीपी) का पृथक्करण, पहचान और लक्षण वर्णन। ग्राफिक एसा डीमड टू बी यूनिवर्सिटी को प्रस्तुत, जैव प्रौद्योगिकी में मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री की आंशिक पूर्ति के लिए। पर्यवेक्षक: डॉ. ललियनपूर्ई काल्लनी।

ज्योति नागरकोटी (2023): निकोबार द्वीपसमूह, भारत के समुदायों में मानव-सांप अंतःक्रिया का नृवंशविज्ञानिक दृष्टिकोण। दून विश्वविद्यालय। पर्यवेक्षक: डॉ. रमेश चिन्नासामी और डॉ. सुनीत नैथानी।

सृष्टि नेगी (2023): पक्षी टकराव के खतरे को संबोधित करने के लिए एक हवाई क्षेत्र में पक्षियों की प्रजातियों का स्थानिक-कालिक वितरण। पर्यवेक्षक: डॉ. कुसुम अरुणाचलम और डॉ. आर. सुरेश कुमार।

हर्ष पी. चौहान (2023): उड़ान से भोजन तक: एक आकाशीय कीटपक्षी पक्षी, बार्न स्वैलो *हिरुंडो रस्टिका* के आहार का खुलासा, जो हिमालय में ग्रीष्मकालीन प्रजनन हेतु आता है। पर्यवेक्षक: डॉ. कुसुम अरुणाचलम और डॉ. आर. सुरेश कुमार।

अर्पित सिंह (2023): उत्तराखंड राज्य में ऊंचाई ग्रेडिएंट के

साथ हाउस स्पैरो, *पासर डोमेस्टिकस* की सापेक्ष प्रचुरता और जनसंख्या स्थिति। पर्यवेक्षक: डॉ. सुनीत नैथानी और डॉ. आर. सुरेश कुमार।

भारतीय वन्यजीव संस्थान में डॉक्टरल अनुसंधान की स्थिति

जमा किये गए शोध प्रबंध

कालजंग टार्गे (2023): चराई के पैटर्न, स्थानीय समुदाय द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्राकृतिक संसाधन और उनका जंगली उंगुलेट (आइबेक्स) आवासों पर प्रभाव, पिन वैली नेशनल पार्क, हिमाचल प्रदेश। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, गुजरात। पर्यवेक्षक: डॉ. बी.एस. अधिकारी और डॉ. सल्वाडोर लिंगदोह।

सरबजीत कौर (2024): पश्चिमी हिमालय में पवलगढ़ संरक्षण रिजर्व के अंदर और आसपास के महान स्लेटी कठफोड़वा की भोजन पारिस्थितिकी। पर्यवेक्षक: डॉ. गोपी जी.वी.

विष्णु सीएस (2023): भारतीय अजगर, *अजगर मोलुरुस* की स्थानिक-कालिक और थर्मल पारिस्थितिकी, मुदुमलाई और सत्यमंगलम टाइगर रिजर्व, तमिलनाडु। वन अनुसंधान संस्थान (डीमड टू बी यूनिवर्सिटी), देहरादून। पर्यवेक्षक: डॉ. रमेश चिन्नासामी और डॉ. गौतम तालुकदार।

प्रदान की गई

अमिरा शरीफ (2023): कस्तूरी मृग का संरक्षण: उत्तर पश्चिमी हिमालय में पारिस्थितिकी और आनुवंशिकी को एकीकृत करना। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात। पर्यवेक्षक: डॉ. रमेश चिन्नासामी, डॉ. ललित कुमार शर्मा और डॉ. मुकेश ठाकुर।

मनसा श्रीवास्तव (2024): सिस्टमैटिक्स, बायोजियोग्राफी, और पौधे की वंशावली *लॉनिसेरा* में अंग संलयन। येल विश्वविद्यालय, यूएसए। (बाहरी संबद्धता)। पर्यवेक्षक: प्रोफेसर माइकल डोनाघ्यू, डॉ. अमित कुमार और डॉ. जीएस रावत।

राहुल कुमार (2024): तुंगनाथ, पश्चिमी हिमालय में विभिन्न अल्पाइन समुदायों की जैविक उत्पादन और कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन संभावनाओं के पैटर्न में समय के साथ परिवर्तन। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय। पर्यवेक्षक: डॉ. बी.एस. अधिकारी।

उर्जित भट्ट (2024): मानस राष्ट्रीय उद्यान, असम, भारत के उष्णकटिबंधीय वन में स्तनधारी मांसाहारी जीवों का आवास उपयोग और अंत किया। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, गुजरात। पर्यवेक्षक: डॉ. बी.एस. अधिकारी और डॉ. सल्वाडोर लिंगदोह।

विनीत कुमार (2024): हिमालयी भूरा भालू, *अर्सस आर्कटोस इसाबेलिनस*, हॉर्सफील्ड 1826 के आवास, भोजन संसाधन उपयोग और लाहौल घाटी, हिमाचल प्रदेश में मानव के साथ संघर्ष। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, गुजरात। पर्यवेक्षक: डॉ. बी. एस. अधिकारी और डॉ. ललित के शर्मा।

पंजीकृत किये गए

शगुन ठाकुर (2023): पूर्वी हिमालय, भारत के जैव विविधता हॉटस्पॉट के बहु-उपयोग परिदृश्य में स्तनधारी की सामुदायिक पारिस्थितिकी। पर्यवेक्षक: डॉ. एस. सत्यकुमार।

तनु (2024): निकोबार द्वीपसमूह में रेटिक्युलेटेड अजगर, मलायोपाइथन रेटिक्युलेटस की संरक्षण पारिस्थितिकी। एसीएसआईआर। पर्यवेक्षक: डॉ. रमेश चिन्नासामी और डॉ. एस. के. गुप्ता।

टिवलिंगक्सियर लिंगदोह नोंग्रंग (2024): खासी हिल्स, मेघालय, भारत में एपिफाइट्स पर मानवजनित विघटन का प्रभाव का आकलन। पर्यवेक्षक: डॉ. अमित कुमार।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

उन्नत वन्यजीव प्रबंधन में 43 वां स्नातकोत्तर डिप्लोमा, देहरादून, 1 अक्टूबर 2022 से 31 जुलाई 2023 तक

दस महीने का पी.जी. डिप्लोमा कोर्स उन्नत वन्यजीव प्रबंधन में 1 अक्टूबर 2022 को संस्थान में शुरू हुआ, जिसमें दस अधिकारी प्रशिक्षु थे, जिनमें से एक महिला अधिकारी म्यांमार से थी। महिला अधिकारी का पद उप वन संरक्षक / सहायक वन संरक्षक और समकक्ष स्तर का था। इनमें ओडिशा से दो, उत्तर प्रदेश से दो और मध्य प्रदेश, राजस्थान, त्रिपुरा, मेघालय और मिजोरम से एक-एक अधिकारियों ने प्रतिनिधित्व किया।

रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, 'वन्यजीव और संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन के सिद्धांत और अभ्यास', 'स्थानान्तरण से संरक्षण और प्रबंधन', 'आर्गंतुक उपयोग प्रबंधन और व्याख्या योजना', 'वन्यजीव प्रबंधन के मानव आयाम और संघर्ष समाधान' और 'एकीकृत वन्यजीव प्रबंधन योजना और परिदृश्य स्तर की योजना' पाठ्यक्रम पूरे किए गए।

उन्नत वन्यजीव प्रबंधन में 44वां स्नातकोत्तर डिप्लोमा, देहरादून, 15 सितंबर 2023 से 15 जुलाई 2024 तक

यह पाठ्यक्रम 15 सितंबर 2023 को शुरू हुआ। कुल मिलाकर 16 अधिकारी प्रशिक्षु विभिन्न भारतीय राज्यों से थे: इनमें तीन ओडिशा और मध्य प्रदेश से, दो राजस्थान से और अरुणाचल, सिक्किम, मिजोरम, असम, उत्तर प्रदेश, केरल, एजीएमयूटी, और महाराष्ट्र से एक-एक थे।

रिपोर्टिंग अवधि के दौरान निम्नलिखित क्षेत्र दौरे आयोजित किए गए (i) 3 से 7 अक्टूबर 2023 के बीच लैंसडाउन वन क्षेत्र में परिचय दौरा। (ii) 13 से 19 नवंबर 2023 के बीच केदारनाथ और आसपास के क्षेत्र में उच्च ऊंचाई दौरा। (iii) 19 से 30 दिसंबर 2023 के बीच राजाजी टाइगर रिजर्व में तकनीक दौरा। (iv) 7 से 18 फरवरी 2024 के बीच ओडिशा में आद्रभूमि का दौरा। (v) 26 फरवरी 2024 से 10 मार्च 2024 के बीच दक्षिण भारत में प्रबंधन दौरा। (vi) 18 मार्च 2024 से 3 अप्रैल 2024 के बीच दक्षिण अफ्रीका में अध्ययन दौरा।

वन्यजीव प्रबंधन में 38वां प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, देहरादून, 1 नवंबर 2023 – 31 जनवरी 2024 तक

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम 1 नवंबर 2023 को शुरू हुआ। कुल 28 अधिकारी प्रशिक्षु भारत और विदेश के विभिन्न राज्यों से इस पाठ्यक्रम में शामिल हुए। पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे (क) वन्यजीव प्रबंधन की आधुनिक अवधारणाओं की समझ और ज्ञान प्रदान करना (ख) प्रासंगिक संरक्षण नीतियों और कानूनों के बारे में जानकारी प्रदान करना और उनके कार्यान्वयन तंत्र को वैश्विक और स्थानीय स्तर पर समझना (ग) जैव विविधता आकलन और संरक्षण लक्ष्यों की निगरानी के लिए आधुनिक वैज्ञानिक विधियों, तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करने में व्यावहारिक अनुभव और प्रशिक्षण प्रदान करना (घ) परिदृश्य दृष्टिकोण के लिए संरक्षण को समझना और वैज्ञानिक वन्यजीव प्रबंधन योजना के लिए कौशल विकसित करना, और (ङ) मानव-वन्यजीव संघर्ष को हल करने के लिए वैज्ञानिक कौशल विकसित करना जिसमें जंगली जानवरों को पकड़ना, संभालना, देखभाल और प्रबंधन शामिल है।

धरोहर प्रबंधन में प्रथम प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, देहरादून, 7 अगस्त 2023 – 15 सितंबर 2023 तक

विश्व प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन और एशिया और प्रशांत क्षेत्र के प्रशिक्षण के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान-श्रेणी 2 केंद्र द्वारा अधिकारी प्रशिक्षुओं को धरोहर संरक्षण के बहु-विषयक क्षेत्र में लागू अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रथाओं के साथ सुसज्जित करने के लिए धरोहर प्रबंधन में प्रथम प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शुरू किया गया था। इस 6 सप्ताह के पाठ्यक्रम के माध्यम से, प्रतिभागियों ने सीखा कि कैसे परिदृश्य स्तर के हस्तक्षेप सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और आर्थिक लाभों के रूप में अप्रत्याशित लाभकारी अंतर्संबंधों को अधिकतम करते हैं। कुल 7 प्रशिक्षु थे – मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, और त्रिपुरा के वन अधिकारी के साथ भारत के भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और महाराष्ट्र पर्यटन के समकक्ष अधिकारी शामिल थे। पाठ्यक्रम ने जैव विविधता और प्राकृतिक धरोहर, स्थल प्रबंधन, प्रकृति संस्कृति संबंध और धरोहर जोखिम प्रबंधन सहित मूलभूत और लागू विषयों को शामिल किया।

क्षमता निर्माण और व्यावसायिक विनिमय

प्रथम भारतीय संरक्षण सम्मेलन, मैसूरु, कर्नाटक, 9-11 अप्रैल 2023.

सम्मेलन का उद्देश्य प्रोजेक्ट टाइगर की 50वीं वर्षगांठ का उत्सव मनाना और ज्ञान साझाकरण के माध्यम से भारत में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के लिए क्षमता निर्माण करना था। इसे भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण और भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।

सम्मेलन में वन्यजीव प्रबंधक, नीति निर्माता, संरक्षणवादी, छात्र, और वैज्ञानिक शामिल हुए जो देश में बाघ संरक्षण, विश्व धरोहर और जलवायु परिवर्तन अनुसंधान से जुड़े थे। सम्मेलन में 100 से अधिक शोध अध्ययन थे।

विश्व धरोहर दिवस समारोह, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 18 अप्रैल 2023.

विश्व धरोहर दिवस पर, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने 'द जर्नी: ए नेचुरल हेरिटेज क्विज' आयोजित किया, जिसमें भारतीय वन्यजीव संस्थान विभागों/सेल्स/पाठ्यक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्व धरोहर सम्मेलन और विश्व धरोहर दिवस के परिचय के साथ की गई। इसके बाद प्रश्नोत्तरी हुई, जिसमें सात टीमों ने भाग लिया और प्रतिभागियों ने धरोहर की दुनिया के रहस्यों और चमत्कारों की यात्रा की। तीन दौर के प्रश्न थे, जिनमें संरक्षण आंदोलन के अग्रदूत, महत्वपूर्ण परिदृश्य और प्राकृतिक धरोहर को दर्शाने वाले जीव शामिल थे। एम.एस.सी. वन्यजीव विज्ञान टीम विजेता बनकर उभरी। डॉ. एस. सत्यकुमार ने विजेताओं को पुरस्कृत किया और प्रतिभागियों को ज्ञान में वृद्धि करने के लिए सक्रिय रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन प्रशिक्षण, देहरादून, 19 अप्रैल 2023.

उत्तराखंड वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी के रेंज वन अधिकारी प्रशिक्षुओं के लिए 'जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन' प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. एस. सत्यकुमार ने प्रशिक्षुओं को संबोधित किया। कुल मिलाकर 57 रेंज वन अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। भारतीय वन्यजीव संस्थान के 20 से अधिक संकाय सदस्यों और चार बाहरी संसाधन व्यक्तियों ने अपने बहुमूल्य अनुभव को साझा किया।

गौर पुनर्वास परियोजना का आरंभिक सह-प्रशिक्षण कार्यशाला, कान्हा बाघ रिजर्व, 26 अप्रैल 2023.

कान्हा बाघ रिजर्व में गौर पुनर्प्राप्ति पर आरंभिक सह-योजना कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में कुल 31 अधिकारी, जिनमें पार्क अधिकारी और पशु चिकित्सा अधिकारी शामिल थे, ने भाग लिया। पार्क प्रबंधन, वन्यजीव फोरेंसिक और स्वास्थ्य विद्यालय और वन्यजीव और वन सेवा, उज्जैन के विशेषज्ञों ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। श्री जेएस चौहान ने कार्यशाला का संचालन किया और बांधवगढ़ टीआर से पिछली गौर पुनर्प्राप्ति परियोजनाओं से सीख ली। डॉ. पराग निगम ने गौर पुनर्वास परियोजना की कार्य योजना प्रस्तुत की।

एशिया संरक्षित क्षेत्र साझेदारी की 7वीं तकनीकी कार्यशाला, देहरादून, 27-29 अप्रैल 2023.

इस कार्यशाला का उद्देश्य सहयोग, क्षमता निर्माण, और ज्ञान विनिमय का महत्व प्रदर्शित करना था, जिससे एशिया भर में संरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन और संरक्षण को मजबूत किया जा सके। इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, और आईयूसीएन एशिया क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकॉक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। कुल 70 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में श्री बिवाश रंजन, अतिरिक्त महानिदेशक वन (वन्यजीव), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार श्री वीरेंद्र तिवारी, निदेशक, भारतीय

वन्यजीव संस्थान श्री रकेड्बुल अमिन, प्रमुख, आईयूसीएन दक्षिण एशिया उप-क्षेत्र और श्री रोहित तिवारी, महानिरीक्षक वन (वन्यजीव), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की उपस्थिति में हुआ।

बारह सदस्य देश, मालदीव, इंडोनेशिया, कोरिया गणराज्य, बांग्लादेश, मंगोलिया, म्यांमार, नेपाल, वियतनाम, थाईलैंड, श्रीलंका और जापान के 30 प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। कार्यशाला के पहले दिन तीन सत्र आयोजित किए गए, जिसमें पहला सत्र कुन्मिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचा 2020 और लक्ष्य 3 (30x30) पर था। दूसरे और तीसरे सत्र में भाग लेने वाले प्रत्येक देश के स्थलीय, समुद्री और ताजे पानी के संरक्षित क्षेत्रों की योजना और लक्ष्य 3 के लिए अगला कदम शामिल था।

दूसरे दिन, प्रतिनिधियों ने एफआरआई संग्रहालय, भारतीय वन्यजीव संस्थान फोरेंसिक प्रयोगशाला का दौरा किया और राजाजी टाइगर रिजर्व के लिए एक क्षेत्र दौरे पर गए।

मिशन लाइफ के तहत शपथ समारोह, मई 2023.

शपथ ग्रहण गतिविधियों का आयोजन निम्नलिखित स्थानों पर किया गया: (i) 19 मई 2023 को सरकारी इंटर कॉलेज, गंगा भोगपुर, पौड़ी गढ़वाल में 200 स्कूली बच्चों के लिए। (ii) 19 मई 2023 को सरकारी इंटर कॉलेज, नागनी, टिहरी गढ़वाल में 524 स्कूली बच्चों के लिए। (iii) 20 मई 2023 को किसान इंटर कॉलेज, बिजनौर, उत्तर प्रदेश में 1,650 स्कूली बच्चों के लिए। (iv) 22 मई 2023 को आरएनआई, इंटर कॉलेज, भगवानपुर, हरिद्वार 2,700 स्कूली बच्चों के लिए। (v) 23 मई 2023 को सरकारी मिडिल स्कूल, ताजेवाला हेड, हरियाणा में 180 स्कूली बच्चों के लिए। (vi) 22 मई 2023 को सरकारी मॉडल इंटर कॉलेज, मतली, उत्तरकाशी में 250 स्कूली बच्चों के लिए। (vii) 23 मई 2023 को जानकी चिल्ड्रेन एकेडमी, देहरादून में 600 स्कूली बच्चों के लिए। (viii) 24 मई 2023 को एसजीआरआर बारकोट, उत्तरकाशी में 420 स्कूली बच्चों के लिए। (ix) 27 मई 2023 को जीआईसी चमराडा देवी, भरपूर में 100 स्कूली बच्चों और 10 शिक्षकों के लिए।

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस उत्सव के अंतर्गत ऑनलाइन चित्रकला प्रतियोगिता, 22 मई 2023.

मिशन जीवन को बढ़ावा देने और युवाओं में जागरूकता बढ़ाने के लिए, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र ने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाने के लिए 'मेरे आंगन में जैव विविधता' शीर्षक से एक ऑनलाइन चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता में बारहवीं कक्षा तक के सभी स्कूली छात्रों ने भाग लिया। 94 स्कूली छात्रों ने ऑनलाइन चित्रकला प्रतियोगिता में पंजीकरण किया और भाग लिया। शीर्ष तीन प्रविष्टियों को पुरस्कार प्रदान किए गए और तीन प्रविष्टियों को प्रशंसा पुरस्कार मिला।

भारतीय वन्यजीव संस्थान का स्थापना दिवस, 22 मई 2023.

भारतीय वन्यजीव संस्थान की स्थापना 22 मई 1982 को हुई थी। संस्थान ने अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस के साथ अपनी 41वीं

वर्षगांठ मनाई। उत्सव का आयोजन भारतीय वन्यजीव संस्थान सभागार में किया गया। लगभग 400 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें निदेशक, डीन, कुलसचिव, वर्तमान और सेवानिवृत्त संकाय सदस्य, शिक्षण और गैर-शिक्षण स्टाफ, शोधकर्ता, छात्र, पूर्व निदेशक, कर्मचारी और संकाय सदस्य के परिवार के सदस्य शामिल थे।

डीन, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और संस्थान के शुरुआती दिनों की पुरानी तस्वीरों की एक श्रृंखला को प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम के दौरान, संस्थान के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पिछले शोध कार्यों को प्रदर्शित करने वाली एक फिल्म भी दिखाई गई, जिससे दर्शकों को पुरानी यादें ताजा हो गईं। निदेशक महोदय ने सभा को संबोधित किया, और इस अवसर पर पूर्व निदेशकों और कर्मचारियों को सम्मानित किया। इसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें एक नृत्य प्रदर्शन और एक गायन प्रदर्शन शामिल थे। इसके अलावा, एआईसीटीई के अध्यक्ष और भारतीय वन्यजीव संस्थान के निदेशक ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जो देश में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों का प्रतीक था।

‘जैव विविधता और आर्द्रभूमि संरक्षण’ पर प्रशिक्षण कार्यशाला, मालदेवता, देहरादून, 22–23 मई 2023.

देहरादून के मालदेवता में ‘जैव विविधता और आर्द्रभूमि संरक्षण’ पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को जैव विविधता और आर्द्रभूमि के संरक्षण के बारे में जानकारी और जागरूकता बढ़ाना था। इसमें विशेषज्ञों के व्याख्यान, इंटरएक्टिव सत्र और आकर्षक गतिविधियाँ शामिल थीं। ‘मिशन लाइफ’ पर व्याख्यान ने पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली, टोस अपशिष्ट प्रबंधन और आर्द्रभूमि संरक्षण को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया। करीब 70 छात्रों और 11 प्रोफेसरों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

मिशन लाइफ गतिविधियाँ, मई – जून, 2023.

मिशन लाइफ के तहत शपथ ग्रहण गतिविधियों का आयोजन भारतीय वन्यजीव संस्थान-एनएमसीजी परियोजना के बैनर तले किया गया: (i) 18 मई 2023 को माध्यमिक विद्यालय, औरैया में 25 स्कूली छात्रों के लिए। (ii) 25 मई 2023 को सारनाथ चिड़ियाघर, वाराणसी में 50 उत्साही प्रतिभागियों के लिए। (iii) 27 मई 2023 को सुभाष चंद्र बोस अकादमी, देहरादून में 150 छात्रों और शिक्षकों के लिए। (iv) 27 मई 2023 को वाराणसी के हाथकरघा कामगार और बनारसी साड़ी विक्रेताओं के लिए 30 प्रतिभागियों के लिए। (v) 28 मई 2023 को काशी घाट, वाराणसी में सफाई अभियान में स्थानीय समुदाय के 20 सदस्यों के लिए। (vi) 29 मई 2023 को चौबेपुर, वाराणसी के नाइपाली धाम मंदिर गांव में स्थानीय समुदाय के 20 सदस्यों के लिए। (vii) 30–31 मई 2023 के दौरान गंगा दर्पण व्याख्या केंद्र में बड़ापुर के 20 ग्रामीणों और पर्वतपुर के 10 ग्रामीणों के लिए। (viii) 30–31 मई 2023 के दौरान वाराणसी के नवपुरा गांव में स्थानीय समुदाय के 45 सदस्यों के लिए।

विश्व पर्यावरण दिवस प्रश्नोत्तरी, 5 जून, 2023.

भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र और एम.एस.सी. (वन्यजीव विज्ञान), भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ने 5 जून 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान सभागार में एक क्विज का आयोजन किया। श्री वीरेंद्र आर. तिवारी, निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने डॉ. एस. सत्यकुमार, वैज्ञानिक-जी और रजिस्ट्रार और डॉ. के. रमेश, वैज्ञानिक-एफ और ईआईएसीपी कार्यक्रम समन्वयक की उपस्थिति में विजेता टीमों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए।

मिशन लाइफ कार्यक्रम का 59वें एसोसिएशन फॉर ट्रॉपिकल बायोलॉजी एंड कंजर्वेशन वार्षिक सम्मेलन 2023 में आयोजन, 6 जुलाई 2023, कोयंबटूर, तमिलनाडु

एसोसिएशन फॉर ट्रॉपिकल बायोलॉजी एंड कंजर्वेशन एक वैज्ञानिक पेशेवर समाज है, जिसकी स्थापना 1963 में एसोसिएशन फॉर ट्रॉपिकल बायोलॉजी के रूप में हुई थी। एटीबीसी अपने दायरे, सदस्यता और उद्देश्यों में वैश्विक है और यह उष्णकटिबंधीय जीव विज्ञान और संरक्षण के शोध, शिक्षा और संचार को बढ़ावा देने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संस्था के रूप में कार्य करता है। जुलाई 2023 में, एटीबीसी ने अपना 59वां वार्षिक सम्मेलन कोयंबटूर, तमिलनाडु में आयोजित किया, जिसका नेतृत्व डॉ. के. रमेश, वैज्ञानिक-एफ, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने किया। इस सम्मेलन के दौरान, ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने मिशन लाइफ कार्यक्रम का आयोजन किया।

स्थानीय स्कूल के 500 से अधिक स्कूली छात्रों ने भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र के स्टॉल का दौरा किया। डॉ. रमेश चिन्नास्वामी, वैज्ञानिक-ई, ने स्कूली छात्रों को मिशन लाइफ के सात थीम्स और ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र द्वारा किए जा रहे विभिन्न क्षमता निर्माण गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। एटीबीसी सम्मेलन के दौरान स्कूली छात्रों के लिए मिशन लाइफ प्रतिज्ञा का आयोजन किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य 500 से अधिक स्कूली बच्चों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और विदेशी प्रतिनिधियों को एक साथ लाकर मिशन लाइफ के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। यह मिशन पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के लिए ‘अंधाधुंध और विनाशकारी उपभोग के बजाय सचेत और विवेकपूर्ण उपयोग’ को बढ़ावा देने वाले एक जन आंदोलन के रूप में है, जिसे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1 नवंबर 2021 को ग्लासगो में आयोजित COP26 में पेश किया था।

इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों और वैज्ञानिकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने और सतत जीवनशैली को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस 2023 का आयोजन, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 29 जुलाई से 7 अगस्त 2023.

भारतीय वन्यजीव संस्थान, टाइम्स ऑफ इंडिया और स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय के सहयोग से 29 जुलाई से 7 अगस्त 2023 तक अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस 2023 का उत्सव मनाया गया। गढ़वाल मंडल विकास निगम, द टॉस ब्रिज स्कूल, होटल सैफरन

लीफ, कमल ज्वेलर्स, दून आर्ट काउंसिल और होटल इंद्रलोक ने इस कार्यक्रम को सहयोग दिया। उन्नीस स्कूलों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। छात्रों ने नेचर ट्रेल दौरे, वन्यजीव फोटोग्राफी, बाघ संरक्षण पर वार्ता, बाघ संरक्षण में प्रौद्योगिकी का उपयोग, फोटो प्रदर्शनी आदि सत्रों में भाग लिया। उत्तराखंड वन विभाग ने वन्यजीव फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया। अचिंत सिंह और जेनिशा अग्रवाल ने छात्रों के लिए वन्यजीव फोटोग्राफी कार्यशालाओं का संचालन किया।

उपस्थित स्कूलों में दून ग्लोबल स्कूल, वेलहम बॉयज स्कूल, दून गर्ल्स स्कूल, वेलहम गर्ल्स स्कूल, गुरु नानक अकादमी, सेंट जूड्स स्कूल, दून युधिष्ठिर पब्लिक स्कूल, हिमालय पब्लिक स्कूल, दून प्रेसीडेंसी स्कूल, द टॉस ब्रिज स्कूल, ओलिंपस हार्ड, राजा राम मोहन राय अकादमी, यूनिवर्सल अकादमी, पाइन हॉल, श्री राम सेंटेंनियल स्कूल, दून हेरिटेज स्कूल, रोज माउंट स्कूल, दून वैली इंटरनेशनल स्कूल और ब्रकलिन स्कूल शामिल थे।

समापन समारोह 7 अगस्त 2023 को संस्थान में आयोजित किया गया। संवाद 'हमारी धारियों का संरक्षण: बाघ, वन्यजीव और पर्यटन' पर केंद्रित था। प्रारंभ में, श्री वीरेंद्र आर. तिवारी, निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने भारतीय वन्यजीव संस्थान के प्रोजेक्ट टाइगर में योगदान के बारे में बताया, इसके बाद एक फिल्म 'शंजय टाइगर रिजर्व में गौर की शानदार वापसी' एक सफलता की कहानी की स्क्रिनिंग की गई, जिसे डॉ. पराग निगम, वैज्ञानिक-जी और श्री रितेश विश्वकर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस कार्यक्रम में तीन आकर्षक पैनल चर्चाएँ भी शामिल थीं: (i) मानव के साथ रहना, (ii) बाघ संरक्षण: चुनौतियाँ और आगे की राह, और (iii) बाघ और पर्यटन: अर्थशास्त्र और जिम्मेदारी का संतुलन।

इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को मानव, वन्यजीव, और सतत पर्यटन के बीच के संवाद को गहराई से समझने का अवसर प्रदान किया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी बुलेटिन 'भारत के बाघ अभ्यारण्यों की चित्रमय प्रोफाइल' का विमोचन, कॉर्बेट बाघ रिजर्व, 29 जुलाई 2023.

ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ने भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी बुलेटिन 'भारत के बाघ अभ्यारण्यों की चित्रमय प्रोफाइल' प्रकाशित किया, जिसे अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस, 29 जुलाई 2023 को कॉर्बेट टाइगर रिजर्व में माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी किया गया।

यह प्रकाशन हमारे देश में बाघों की संरक्षण स्थिति पर जानकारी प्रदान करता है और वन्यजीव संरक्षण में काम कर रहे शोधकर्ताओं और वन्यजीव प्रबंधकों के लिए एक मूल्यवान पुस्तिका के रूप में कार्य करता है।

ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र ऑनलाइन क्विज 'प्लास्टिक मुक्त जुलाई', 2023.

'प्लास्टिक मुक्त जुलाई' एक वैश्विक आंदोलन है जो लोगों को

जुलाई में प्लास्टिक उपयोग और अपशिष्ट को कम करने के लिए प्रेरित करता है। ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ने ऑनलाइन 'प्लास्टिक मुक्त जुलाई 2023' क्विज का आयोजन किया। ऑनलाइन क्विज में सभी के लिए भागीदारी खुली थी, और 110 से अधिक प्रतिभागियों ने इस ऑनलाइन प्रतियोगिता में अपना पंजीकरण कराया। इस ऑनलाइन गतिविधि का उद्देश्य एकल उपयोग वाले प्लास्टिक से जुड़े पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लोगों को अपने दैनिक जीवन में अधिक सतत विकल्प बनाने के लिए प्रेरित करना था।

थार में वन्यजीव संरक्षण पर हितधारकों की बैठक, 8 सितंबर 2023.

इस बैठक का आयोजन राजस्थान जैव विविधता बोर्ड और डब्ल्यूसीएस-इंडिया द्वारा किया गया। परियोजना दल ने अपने कार्य, अनुभव और अंतर्दृष्टियों को प्रस्तुत किया, जो रेगिस्तानी परिदृश्य में सामुदायिक संरक्षण पर केंद्रित था। इसके बाद थार के वन्यजीव और लोगों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों पर चर्चा हुई। बैठक का समापन सामुदायिक-आधारित संरक्षण प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए समूह द्वारा अवसरों की पहचान के साथ हुआ।

भारतीय वन्यजीव संस्थान का 34वां वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी, देहरादून, 21-22 सितंबर 2023.

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तत्वावधान में, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने अपनी बहुप्रतीक्षित वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी को देहरादून के सुरम्य परिसर में सफलतापूर्वक संपन्न किया। निदेशक, श्री वीरेंद्र आर. तिवारी द्वारा अग्रसित, दो-दिवसीय संगोष्ठी ने वन्यजीव और संरक्षण के क्षेत्र में दबावपूर्ण चुनौतियों, नवाचारी समाधानों और अत्याधुनिक अनुसंधान को उजागर किया। उद्घाटन संबोधन डॉ. राजेश गोपाल द्वारा दिया गया, जिन्होंने भारतीय वन्यजीव संस्थान और वन्यजीव शोधकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। विशिष्ट अतिथि, श्री भारत ज्योति, आईएफएस, निदेशक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी ने अपने विचार और अंतर्दृष्टियाँ साझा कीं, वन्यजीव संरक्षण के व्यापक संदर्भ में ऐसे सम्मेलनों के महत्व पर जोर दिया। एक जीवंत पोस्टर सत्र ने विविध विषयों पर आकर्षक प्रस्तुतियों को प्रदर्शित किया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेश गोपाल और सह-अध्यक्षता श्री वीरेंद्र आर. तिवारी ने की, जिसमें दो-दिवसीय चर्चा के मुख्य निष्कर्षों का सार प्रस्तुत किया गया। पुरस्कार खंड में उभरते हुए वन्यजीव विद्वानों और फोटोग्राफरों के शानदार कार्य को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने अपनी लेंस के माध्यम से प्रकृति की सुंदरता को कैद किया। एआरएस 2023 में छह प्रकाशनों का विमोचन, 6 प्रमुख वार्ताएं, 26 मौखिक प्रस्तुतियाँ, 11 वार्ताएं और आठ तकनीकी सत्रों में 31 पोस्टर प्रस्तुत किए गए।

XXXIV - वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी, 21-22 सितंबर 2023.

श्री वीरेंद्र आर. तिवारी, निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने कहा, 'संस्थान के वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी में विभिन्न प्रयासों को

प्रदर्शित किया गया, जो समृद्ध जैव विविधता को संरक्षित करने के

मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार

1. सुप्रतिम दत्ता
2. अकांक्षा सक्सेना
3. प्रियंका जस्टा

पोस्टर प्रस्तुति

1. थिरुमुरुगन वी.
2. शेखर सरकार
3. आरती चौहान
4. समीहा पठान

त्वरित वार्ताएं

1. सागर राजपुरकर
2. अक्षयी एएस
3. उदलक बिन्धानी

फोटोग्राफिक प्रतियोगिता

1. मौलिक सरकार
2. सागर राजपुरकर
3. अमेया

उद्देश्य को दर्शाते हैं। यह संस्थान में किए गए गहन अनुसंधान प्रयासों को प्रदर्शित करने वाला एक जीवंत मंच था। इन सत्रों में प्राप्त सामूहिक अंतर्दृष्टियां हमारे अनुसंधान पहलों को नए आयामों में ले जाती हैं, जिससे हमारे कार्य की गुणवत्ता में निरंतर सुधार सुनिश्चित होता है, जो वन्यजीव संरक्षण और अध्ययन के कठोर क्षेत्र के लिए मौलिक है।

मुख्य अतिथि, डॉ राजेश गोपाल, आईएफएस, महासचिव, ग्लोबल टाइगर फोरम, और टीआरएसी अध्यक्ष ने कहा, प्शरक्षण के परिदृश्य में, गहन अनुसंधान और ज्ञान की निरंतर खोज की महत्वपूर्ण भूमिका को कम नहीं आंका जा सकता, क्योंकि हम वर्तमान संरक्षण चुनौतियों से निपटते हैं। यह वन्यजीव शोधकर्ता हैं, जो आशा की किरण के रूप में खड़े हैं।

भारतीय वन्यजीव संस्थान परिसर में तितली विविधता का आकलन करने के लिए भ्रमण, देहरादून, 24 सितंबर 2023.

श्रेणी: विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

रोहन देसाई

श्रेणी: क्षेत्र अनुसंधान गतिविधि

1. रितेश विश्वकर्मा
2. गौरव पीजे
3. मौलिक सरकार

श्रेणी: गैर-थीम

1. मौलिक सरकार
2. अजय चौहान

श्रेणी: कैमरा ट्रैप

1. गौरव पीजे
2. अयान खानरा

भारतीय वन्यजीव संस्थान, तितली ट्रस्ट और दून नेचर वॉक के सहयोग से, संस्थान परिसर में तितली और अन्य कीड़ों की विविधता का आकलन करने के लिए भ्रमण का आयोजन किया गया। डॉ बी.एस. अधिकारी इस भ्रमण में भाग लिया।

भारत के 116 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों की प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन पर आरंभिक सह-योजना कार्यशाला, नई दिल्ली, 29 सितंबर 2023.

कार्यशाला का उद्देश्य नए एमईई टीमों को दिशा-निर्देश देना और 2023-24 की अवधि के लिए भारत के 116 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों का मूल्यांकन करने के लिए क्षेत्र योजना पर चर्चा करना था। इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारत पर्यावास केंद्र, नई दिल्ली में संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। कुल 64 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री बिवाश रंजन, एडीजीएफ-वन्यजीव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा की गई। श्री वीरेंद्र आर. तिवारी, निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान, ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और संक्षिप्त परिचय दिया। श्री आर. रघु प्रसाद, आईजीएफ-वन्यजीव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने अपने उद्घाटन विचार प्रस्तुत किए और एमईई अभ्यास के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि एमईई संरक्षित क्षेत्रों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है, जो राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हस्तक्षेपों को आकार देने में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है। तकनीकी सत्र-1 में, डॉ गौतम तालुकदार, वैज्ञानिक, भारतीय वन्यजीव संस्थान, ने एमईई अभ्यास का अवलोकन और एमईई फ्रेमवर्क के मानदंड और संकेतकों पर प्रस्तुति दी। तकनीकी सत्र ॥ में, सभी 116 उद्यानों के मूल्यांकन को अंतिम रूप देने के लिए एक समूह चर्चा आयोजित की गई।

वन्यजीव सप्ताह का आयोजन, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 2-8 अक्टूबर 2023.

7 अक्टूबर 2023 को भारतीय वन्यजीव संस्थान, सभागार में एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। बारह टीमों, प्रत्येक में तीन सदस्य, ने इस कार्यक्रम के लिए नामांकन किया। श्री वीरेंद्र आर.



तिवारी, निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान, डॉ. एस. सत्यकुमार, रजिस्ट्रार, भारतीय वन्यजीव संस्थान, और अन्य संकाय सहयोगी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। प्रारंभिक लिखित परीक्षा के बाद, आठ टीमों ने फाइनल में प्रवेश किया। टीम एसयूएस स्क्रोफा फाइनल राउंड के बाद विजेता के रूप में उभरी। श्री वीरेंद्र आर. तिवारी, निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने विजेताओं और पहले (वाइल्ड वंडरर्स) और दूसरे उपविजेता (नियोफेलिस) टीमों को पुरस्कार प्रदान किए।

35वें क्षमता उन्नयन पाठ्यक्रम के लिए भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए 'वन्यजीव और जैव विविधता संरक्षण' पर एक मॉड्यूल, देहरादून, 10-13 अक्टूबर 2023.

इस मॉड्यूल का उद्देश्य 35वें व्यावसायिक उन्नयन पाठ्यक्रम के लिए भारतीय वन सेवा अधिकारियों को प्रशिक्षित करना था, जिन्हें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून से नियुक्त किया गया था। यह भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा आयोजित किया गया था और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी द्वारा प्रायोजित था। कुल 46 भारतीय वन सेवा अधिकारी प्रशिक्षु ने इस मॉड्यूल में भाग लिया।

हाथी आरक्षित क्षेत्रों के लिए हाथी संरक्षण योजना की तैयारी के लिए ढांचे पर कार्यशाला, 13 अक्टूबर 2023.

कार्यशाला का उद्देश्य मानव-हाथी संघर्ष की चुनौतियों का समाधान करना, एशियाई हाथी की जनसंख्या को सुरक्षित रखना, और स्थायी संरक्षण प्राप्त करना था। इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान और हाथी परियोजना प्रभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। कुल 28 विशेषज्ञों ने कार्यशाला में भाग लिया। मुख्य बिंदुओं में पारिस्थितिक सुरक्षा, पुनर्स्थापन उपाय, हितधारकों की सहभागिता, और हाथी संरक्षण के लिए अधिक सहयोग और वित्तीय समर्थन की आवश्यकता पर चर्चा शामिल थी। दस्तावेज में एक मुख्य टीम की स्थापना, ईसीपी ढांचे पर चर्चा, संरक्षण दर्शन, योजना प्रक्रियाओं, और प्रमुख अध्यायों पर समूह चर्चा, जिसमें हितधारकों की सहभागिता, गलियारे की निगरानी, आनुवंशिक अनुसंधान, और वित्तीय योजना शामिल हैं, को उजागर किया गया है। कार्यशाला ने एशियाई हाथी की जनसंख्या की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए पारिस्थितिक, सामाजिक-आर्थिक, और सांस्कृतिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया।

सभी नदी डॉल्फिन सीमा देशों के लिए वैश्विक नदी डॉल्फिन घोषणा की बैठक, 23-24 अक्टूबर 2023.

वैश्विक नदी डॉल्फिन घोषणा की बैठक का आयोजन सभी नदी डॉल्फिन सीमा देशों के लिए किया गया ताकि नदी डॉल्फिन के मुख्य संरक्षण चुनौतियों का समाधान किया जा सके और दक्षिण अमेरिका और एशिया के सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता को समझा जा सके। भारत, बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, म्यांमार, चीन, कंबोडिया, इंडोनेशिया, पेरू, बोलीविया, कोलंबिया, ब्राजील, वेनेजुएला और इक्वाडोर सहित 14 सरकारों के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया। इस संबंध में, श्री वीरेंद्र आर. तिवारी,

निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान, और डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम, वैज्ञानिक-डी, को भारतीय प्रतिनिधिमंडल का प्रतिनिधित्व करने के लिए नामित किया गया।

भारत की प्रगति और उपलब्धियों पर एक प्रस्तुति दी गई, जिसमें सरकार द्वारा 9,000 किलोमीटर लंबी नदी सर्वेक्षण का प्रयास शामिल था। इसे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में बहुत सराहा गया, क्योंकि इसने देश के जल निकायों को सुरक्षित रखने के लिए 11 मंत्रालयों को शामिल कर परियोजना डॉल्फिन संचालन समिति का हिस्सा बनाया। बैठक का समापन वैश्विक घोषणा के आधिकारिक हस्ताक्षर के साथ हुआ। इसे सभी नदी डॉल्फिन सीमा सरकार के प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षरित किया गया।

वन्यजीव प्रबंधन और निष्क्रियता पर पाँच दिवसीय गहन पाठ्यक्रम, सरिस्का बाघ रिजर्व, 16-20 नवंबर 2023.

कार्यशाला के उद्देश्य थे (i) प्रभावी वन्यजीव प्रबंधन के लिए प्रजातियों की जीवविज्ञान, व्यवहार, और संघर्ष को समझना। (ii) वन्यजीवों की पकड़, दवाओं, उपकरणों, और निष्क्रियता तकनीकों के साथ प्रतिभागियों को परिचित कराना। (iii) व्यावहारिक शारीरिक विज्ञान, मूलभूत औषध विज्ञान, और निष्क्रियता के बाद की आपात स्थितियों को संबोधित करना। (iv) डार्ट सिस्टम, क्षेत्र प्रक्रियाओं, और पकड़ संचालन पर व्यावहारिक सत्र आयोजित करना। (v) संरक्षण रणनीतियों, रोग चुनौतियों, और परिवहन विधियों पर चर्चा करना।

कार्यशाला का आयोजन भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा वन्यजीव औषधि (प्रा.) लिमिटेड, दक्षिण अफ्रीका और एस्टोनियन जीवन विज्ञान विश्वविद्यालय, एस्टोनिया के साथ साझेदारी में किया गया था। कार्यशाला में भारत के 13 राज्यों से 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस पाठ्यक्रम को व्याख्यान की श्रृंखला के रूप में नहीं, बल्कि एक गहन अनुभव के रूप में डिजाइन किया गया था। व्यावहारिक अभ्यासों को क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों को दिखाने के लिए डिजाइन किया गया था, जिससे वास्तविक जीवन परिदृश्यों में सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करने का अद्वितीय अवसर मिला। इसमें जानवरों की निष्क्रियता, निष्क्रियता के बाद की निगरानी, सामान्य क्षेत्र प्रक्रियाएं और एक तेंदुआ, पैंथेरा पारडस की बंदी में और साम्बर, नीलगाय, धब्बेदार हिरण, और जंगली सुअर की स्वतंत्र क्षेत्र परिदृश्य में स्वास्थ्य आकलन शामिल था। इस अभ्यास ने प्रतिभागियों को व्यावहारिक औषध विज्ञान और संज्ञाहरण प्रोटोकॉल, निष्क्रियता के सर्वोत्तम अभ्यास और आपात स्थितियों से बचने के लिए निष्क्रियता के बाद की निगरानी, उपकरण के उपयोग के साथ क्षेत्र में प्रजाति-विशिष्ट और नैतिक विचारों से परिचित कराया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य एक शैक्षणिक प्रयास से अधिक था, यह एक परिवर्तनकारी अनुभव था, जिसने पशु चिकित्सा पेशेवरों के जंगल के साथ संवाद करने और उसे समझने के तरीके को नया रूप दिया, साथ ही आज के कार्यों में स्थायी और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व में योगदान की संस्कृति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंतिम उद्देश्य वन्यजीवों के जिम्मेदार प्रबंधन और संरक्षण के लिए समर्पित पेशेवरों के एक समुदाय को बढ़ावा देना था।

भौगोलिक सूचना प्रणाली दिवस समारोह—सह—कार्यशाला 2023: जीआईएस की क्षमता को उजागर करना हमारे विश्व का मानचित्रण, वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान, देहरादून, 21–22 नवंबर 2023.

कार्यशाला का उद्देश्य पारिस्थितिकी संबंधी प्रश्नों के उत्तर देने, वन्यजीव अनुसंधान और पर्यावरण संरक्षण के लिए जीआईएस तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित करना था। यह कार्यशाला भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा आयोजित की गई, जिसमें 135 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन भारतीय वन्यजीव संस्थान के निदेशक, डीन और रजिस्ट्रार ने किया, जिन्होंने जीआईएस क्षेत्र में अपने गहन अनुभव साझा किए। डॉ. गौतम तालुकदार, नोडल अधिकारी आईटी, आरएस और जीआईएस सेल, और श्री कमर कुरैशी, वैज्ञानिक ने उद्घाटन सत्र में अपने मूल्यवान अंतर्दृष्टियों से योगदान दिया।

एक श्रृंखला सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें आरएस जीआईएस विश्लेषण के लिए डेटा उपलब्धता (जे. हरिता और हिमानी खाती), कार्टोग्राफी के मूल बातें (श्री देबांजन सरकार और सुश्री शताक्षी शर्मा), क्यूजीआईएस पर व्यावहारिक सत्र (श्री आशीष मणि और सुश्री ऐश्वर्या आर.) जैसे विषय शामिल थे। उपस्थित लोगों ने गूगल अर्थ अन्वेषण क्विज कार्यक्रम (श्री वरुण खेर और सुश्री दीपाली बंसल) में भी भाग लिया।

रेलवे अधिकारियों के लिए हाथियों और अन्य वन्यजीवों पर रेलवे के प्रभाव को कम करने के लिए कार्यशाला, देहरादून, 23–25 नवंबर 2023.

कार्यशाला का उद्देश्य पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और रेल मंत्रालय के सहयोग से रेलवे से संबंधित वन्यजीव मृत्यु दर को कम करने के लिए सहयोगी बहु-प्रवर्धित प्रयासों के महत्व को पहचानना था। इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान और परियोजना हाथी प्रभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। कुल 18 कार्यरत रेलवे अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

अंतर-मंत्रालयी कार्यशाला का आयोजन भारतीय वन्यजीव संस्थान में किया गया, और क्षेत्र दौरे उत्तराखंड के राजाजी बाघ रिजर्व में किए गए।

कार्यशाला में रेलवे के विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया, जैसे सिग्नल और दूरसंचार, स्थायी मार्ग, निर्माण, यातायात, प्रशिक्षण, रेल सुरक्षा आदि। प्रतिभागियों ने बताया कि कार्यशाला ने उन्हें रेल-हाथी संघर्ष स्थिति को प्रबंधित करने में अपने कौशल को बढ़ाने और विविधता लाने का अवसर प्रदान किया।

हाथी आरक्षित क्षेत्र प्रबंधकों के लिए 'हाथी आरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन को मुख्यधारा में लाना' पर क्षमता निर्माण कार्यशाला, देहरादून, 28–29 नवंबर 2023.

यह कार्यशाला भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा हाथी परियोजना प्रभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला का उद्देश्य वन्यजीव प्रबंधन के साथ हाथी आरक्षित क्षेत्रों को मुख्यधारा में लाना और आवास और जनसंख्या सुधार के लिए हाथी विशिष्ट प्रबंधन आवश्यकताओं को मानकीकरण करना था। इसका उद्देश्य पूरे देश में हाथी आरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधकों को एक साथ लाना और मानव-हाथी संघर्ष के पहलुओं सहित हाथी संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श करना था।

कार्यशाला में आंध्र प्रदेश, असम, झारखंड, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के राज्य वन विभागों के 14 अधिकारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिक्रियाओं को साझा कर बताया कि कार्यशाला उनके ज्ञान में सुधार करने में प्रभावी थी और उन्हें हाथी आरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन में अपने कौशल को विविधता लाने और ज्ञान प्रवीणता प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।

सर्वोच्च सार्वभौमिक मूल्य की निगरानी के लिए फ्रंटलाइन कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान, 11–12 दिसंबर 2023.

भारतीय वन्यजीव संस्थान ने सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान के प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल के फ्रंटलाइन कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का फोकस कर्मचारियों को यह सिखाने में मदद करना था कि सुंदरबन एनपी को विश्व धरोहर स्थल के रूप में क्यों नामित किया गया और सर्वोच्च सार्वभौमिक मूल्य जो नामांकन के आधार बनते हैं। प्रशिक्षण का उद्देश्य कर्मचारियों को मूल्यों की निगरानी करने और अग्रणी स्तर पर उनके द्वारा अनुभव की गई वर्तमान प्रबंधन चुनौतियों का विश्लेषण करने में मदद करना था। स्थल के विभिन्न बीट और रेंज से 27 फ्रंटलाइन कर्मचारियों ने भाग लिया।

शहरी जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर तीन-दिवसीय संवेदनशीलता कार्यशाला, देहरादून, 13–15 दिसंबर 2023.

कार्यशाला का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के लिए शहरी जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर जागरूकता उत्पन्न करना था। यह कार्यशाला भारतीय वन्यजीव संस्थान और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित की गई थी। कुल 24 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान के निदेशक, श्री वीरेंद्र आर. तिवारी ने उद्घाटन भाषण दिया। विशेष टिप्पणियों द्वारा उद्घाटन सत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टियों से समृद्ध किया गया। डॉ. वी.बी. माथुर ने 'जैव विविधता संरक्षण: वैश्विक अवलोकन और शहरी जैव विविधता पर दृष्टिकोण' विषय पर मुख्य वक्तव्य दिया। संवेदनशीलता कार्यशाला एक पेशेवर दृष्टिकोण के साथ



आयोजित की गई। प्रमुख मुद्दों पर गहन चर्चाओं से पहले संदर्भ स्थापित किया गया। कार्यशाला ने एक इंटरैक्टिव प्रारूप अपनाया, जिसमें विशेषज्ञों और प्रतिभागियों के बीच विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए दोनों दिनों में पैनल चर्चा शामिल थी। शहरी जैव विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं, और संबंधित मुद्दों की समझ बढ़ाने के लिए क्षेत्र यात्राएं भी आयोजित की गईं।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन – भारतीय वन्यजीव संस्थान के तहत दूसरी ओरिण्टेशन कार्यशाला 'जलजः नदी और लोगों को जोड़ना' परियोजना, देहरादून, 27–29 दिसंबर 2023.

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन–भारतीय वन्यजीव संस्थान 'जलजः नदी और लोगों को जोड़ना' परियोजना के तहत नई भर्ती और गंगा प्रहरी के लिए दूसरी ओरिण्टेशन कार्यशाला भारतीय वन्यजीव संस्थान सभागार में आयोजित की गई थी। तीन दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला के दौरान 10 राज्यों के गंगा नदी बेसिन के 55 जिलों से कुल 80 प्रतिभागियों, जिनमें से 34 महिलाएं थीं, को प्रशिक्षित किया गया।

कार्यशाला में चार तकनीकी सत्र शामिल थे, जिनमें कक्षा और क्षेत्र यात्रा दोनों शामिल थे। प्रतिभागियों को क्षेत्रीय गतिविधियों की रिपोर्टिंग, सामाजिक-आर्थिक डेटा संग्रह, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी रिकॉर्ड कीपिंग पर जानकारी दी गई। इन विस्तृत सत्रों के अलावा, स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय प्रबंधन, बुक कीपिंग, ऑडिटिंग, नियमित बैठकों, प्रशिक्षण, व्यापार कानूनों, लेखांकन और कराधान के महत्व पर भी सत्र आयोजित किए गए। अंत में नए कर्मियों को भारतीय वन्यजीव संस्थान में वित्तीय प्रबंधन प्रणाली के नियमों और विनियमों पर समझाया गया।

प्रतिभागियों को भारतीय वन्यजीव संस्थान परिसर की वनस्पतियों और जीवों से परिचित कराने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान नेचर ट्रेल पर ले जाया गया।

भारत में विद्युत अधोसंरचना में विद्युताघात जोखिम को कम करने और वन्यजीव सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए समाधान खोजने की कार्यशाला, 11–13 जनवरी 2024.

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वन अधिकारियों, वन्यजीव वैज्ञानिकों और विद्युत क्षेत्र के अधिकारियों को एक साथ



लाने के उद्देश्य से एक अंतर-मंत्रालयी परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया ताकि वन्यजीव विद्युताघात से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की जा सके और उन्हें संबोधित करने के उपाय खोजे जा सकें। इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान और हाथी परियोजना प्रभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। कुल 40 कार्यरत अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कुल 40 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया। प्रतिभागियों में ओडिशा, झारखंड, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल के वरिष्ठ वन अधिकारी (डीसीएफ और उससे ऊपर), एनटीसीए, पावर ग्रिड कॉरपोरेशन, केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण और अन्य राज्य विद्युत वितरण और संचरण एजेंसियों के अधिकारी शामिल थे।

कुल मिलाकर, कार्यशाला ने सहयोग, ज्ञान विनिमय, और व्यावहारिक रणनीतियों को बढ़ावा दिया, जिससे भारत की विविध वनस्पतियों और जीवों को सुरक्षित रखते हुए ऊर्जा आवश्यकताओं को स्थायी रूप से पूरा किया जा सके।

गौर निगरानी और जनसंख्या अनुमान पद्धति पर कार्यशाला, बांधवगढ़ बाघ रिजर्व, 31 जनवरी 2024.

कार्यशाला के उद्देश्य थे (i) विभिन्न विधियों का उपयोग करके गौर के लिंग और आयु की पहचान में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना। (ii) विभिन्न रूपात्मक चिह्नों के माध्यम से व्यक्तिगत गोरों की पहचान करना। (iii) सामान्य विशेषताओं और पारिस्थितिक पहलुओं (व्यवहार, भोजन, और सामाजिक गतिशीलता) की समझ को बढ़ाना और अवलोकनों की रिकॉर्डिंग के महत्व पर जोर देना।

कार्यशाला का आयोजन भारतीय वन्यजीव संस्थान ने मध्य प्रदेश वन विभाग के सहयोग से किया था। कुल 26 अधिकारियों और



बांधवगढ़ बाघ रिजर्व के फ्रंटलाइन कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

हाथी संरक्षण योजना की तैयारी के ढांचे के अंतिम रूप पर कार्यशाला, देहरादून, 6 फरवरी 2024.

इस कार्यशाला का उद्देश्य हाथी संरक्षण योजना मसौदे को परिष्कृत करना था। इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान और हाथी परियोजना प्रभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। कुल 25 विशेषज्ञों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यकारी समूहों ने मानव-हाथी संघर्ष न्यूनीकरण, पारिस्थितिक स्थिरता, और प्रशासनिक सुधारों के उपाय प्रस्तावित किए। सुझावों में हितधारकों की सहभागिता, नवाचारी एचईसी समाधान, और वन्यजीव पशु चिकित्सा क्षमताओं को बढ़ाना शामिल था। संस्थागत प्रतिष्ठानों में पारदर्शिता और प्रबंधन इकाइयों में डेटाबेस प्रबंधन पर जोर दिया गया। कार्यशाला ने स्थल-विशिष्ट डेटा के लिए एक व्यापक 'हाथी संरक्षण पुस्तक' की वकालत की। कुल मिलाकर, इसने ईसीपी को परिष्कृत करने, प्रभावी संरक्षण रणनीतियों को सुनिश्चित करने, और हाथी आरक्षित क्षेत्रों के लिए प्रशासनिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य किया, जिससे हाथी संरक्षण के समग्र दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया जा सके।

वन्य पशु स्वास्थ्य-2024 पर हस्तक्षेप पर कार्यशाला, सरिस्का बाघ रिजर्व, 10-27 फरवरी 2024.

कार्यशाला के उद्देश्य थे: (i) स्थलीय वन्यजीव जनसंख्या निगरानी और जैविक प्रबंधन में महत्वपूर्ण समझ प्राप्त करना। (ii) मानव वन्यजीव इंटरफेस पर सर्वोत्तम हस्तक्षेप विधियों की जागरूकता बढ़ाना। (iii) रोगविज्ञानी परीक्षा और रोग प्रकोप जांच की योजना और क्षेत्र विधियों की प्रणालीगत समझ विकसित करना, और वन्यजीव रोग निगरानी कार्यक्रम का व्यावहारिक कार्यान्वयन करना। (iv) वन्यजीवों के स्वास्थ्य की निगरानी और प्रजातियों के पतन में रोग की भूमिका की जांच के क्षेत्र विधियों की महत्वपूर्ण जागरूकता प्राप्त करना। (v) स्थलीय वन्य जानवरों की पकड़ तकनीकों के सर्वोत्तम अभ्यास की व्यापक समझ प्राप्त करना।

यह कार्यशाला भारतीय वन्यजीव संस्थान, लंदन प्राणी विज्ञान समाज, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय, मेलबर्न विश्वविद्यालय और रॉयल पशु चिकित्सा महाविद्यालय के बीच एक सहयोगी पहल थी। कुल मिलाकर, दुनिया भर के 24 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया (यूनाइटेड किंगडम (2), जर्मनी (1), स्पेन (3), पुर्तगाल (1), फिलीपींस (1), ऑस्ट्रेलिया (1))।

अन्य सेवा अधिकारियों (समूह II और III) के लिए 'मानव-वन्यजीव संघर्ष के मुद्दे और न्यूनीकरण' पर प्रशिक्षण, देहरादून, 26-28 फरवरी 2024.

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य अन्य सेवा अधिकारियों (समूह II और III) को मानव-वन्यजीव संघर्ष के मुद्दे और न्यूनीकरण पर प्रशिक्षित करना था। यह कार्यक्रम भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा आयोजित किया गया था जिसे पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (आरटी डिवीजन) द्वारा प्रायोजित किया गया

था। कुल 20 अन्य सेवा अधिकारियों (समूह II और III) ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान के कर्मियों द्वारा भाग लिया गया

विश्व पशु चिकित्सा दिवस 2023, नई दिल्ली, 29 अप्रैल 2023.

कार्यक्रम का उद्देश्य पशु स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में जागरूकता पैदा करना था, जिसमें वैश्विक सहयोग और नेतृत्व की पेशकश करना शामिल था। यह भारत सरकार के मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन और मत्स्य पालन विभाग और भारतीय पशु चिकित्सा परिषद द्वारा आयोजित किया गया था। विश्व पशु चिकित्सा दिवस के हिस्से के रूप में, वीसीआई और डीएचएफ ने पशु चिकित्सा विज्ञान और पशु स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए तकनीकी सत्रों का आयोजन किया। डॉ. पराग निगम, वैज्ञानिक-जी ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में वन्यजीव संरक्षण और प्रबंधन के लिए पशु चिकित्सा हस्तक्षेप पर एक वार्ता दी। पूरे देश से 1,200 से अधिक प्रतिनिधियों ने इस सत्र में भाग लिया।

वन्य जीवों के मूल स्थान से बाहर प्रबंधन में दृष्टिकोण और प्रगति पर कार्यशालाएं, भोपाल, 16-18 अक्टूबर 2023

डॉ. पराग निगम, वैज्ञानिक-जी, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने वन विहार राष्ट्रीय उद्यान द्वारा केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला के लिए वन्य जीवों की पकड़, निष्क्रियता के बाद की आपात स्थितियों और उनके प्रबंधन, वन्य जीवों की बचाव और पुनर्वास की केंस स्टडीज, और चिड़ियाघरों में जब्त किए गए जानवरों के प्रबंधन के विकल्प और चिंताओं पर इनपुट प्रदान किया।

कार्यशाला के उद्देश्य थे: (i) बंद पर्यावरण में पशु कल्याण के महत्व पर जोर देना, विशेष रूप से चिड़ियाघर के जानवरों के जीवन को समृद्ध करना। (ii) पशु चिकित्सा, निदान, और शल्य चिकित्सा तकनीकों में नवीनतम प्रगति के बारे में पशु चिकित्सा अधिकारियों को अवगत कराना। (iii) बंदी जानवरों की व्यावहारिक आवश्यकताओं के प्रबंधन पर समझ विकसित करना। (iv) वन्यजीव संरक्षण में चिड़ियाघरों की भूमिका पर चर्चा करना और पशु चिकित्सक इन प्रयासों में कैसे योगदान दे सकते हैं। (v) प्राकृतिक आपदाओं, रोग प्रकोपों और अन्य संकटों के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया रणनीतियों पर ज्ञान बढ़ाना। (vi) गैर-देशी प्रजातियों और अवैध वन्यजीव व्यापार में जब्त प्रजातियों के प्रबंधन पर चर्चा करना।

तीन-दिवसीय कार्यशाला ने वन्यजीवों के संरक्षण और देखभाल में प्रयुक्त रणनीतियों और नवाचारों की व्यापक समझ प्रदान की, बाहरी प्रबंधन के ऐतिहासिक विकास, प्रजातियों की पुनर्प्राप्ति और संरक्षण में इसके योगदान, और इसके द्वारा उत्पन्न नैतिक दुविधाओं की जांच की।

कुल 10 राज्यों (मध्य प्रदेश, गुजरात, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, केरल, हैदराबाद, झारखंड, चेन्नई, उत्तराखंड) और 4

बाघ रिजर्व (बांधवगढ़ बाघ रिजर्व, कान्हा बाघ रिजर्व, पन्ना बाघ रिजर्व और संजय-डुबरी बाघ रिजर्व) के 37 वन्यजीव पशु चिकित्सकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

मानव-वन्यजीव इंटरफेस पर संक्रामक रोगों की निगरानी के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली, 17-18 अक्टूबर 2023.

डॉ. ललियनपूर्ई काव्लनी को राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र द्वारा आयोजित 'मानव-वन्यजीव इंटरफेस पर रोग निगरानी' पर एक वार्ता देने के लिए एक संसाधन वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

'पाल्क खाड़ी, तमिलनाडु में डुगोंग संरक्षण का समर्थन करने के लिए रणनीतियां विकसित करना' पर अंतर-क्षेत्रीय कार्यशाला, 19-20 अक्टूबर 2023.

सुश्री चिन्मया घाणेकर, वैज्ञानिक-सी, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने इस कार्यशाला में भाग लिया, जिसका आयोजन वन्यजीव संरक्षण सोसाइटी इंडिया द्वारा किया गया था। कार्यशाला का उद्देश्य हितधारकों के लिए समावेशी स्थान प्रदान करना था ताकि वे रचनात्मक चर्चाओं में भाग ले सकें, अपनी अंतर्दृष्टि साझा कर सकें और संभावित समाधानों पर सहयोग कर सकें। कार्यशाला में विशेषज्ञ प्रस्तुतियों पर विभिन्न विषयों पर जोर दिया गया, विशेष रूप से डुगोंग और समुद्री घास (सीग्रास) संरक्षण और क्षेत्र में मत्स्यपालन के मुद्दों पर। कार्यक्रम का उद्देश्य समुद्री संरक्षण पहलों को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करना था। कार्यशाला में एक प्रश्नोत्तर सत्र और पाल्क खाड़ी संरक्षण और प्रबंधन के लिए चुनौतियों की पहचान पर एक समूह चर्चा शामिल थी, जिसमें अनुसंधान और निगरानी, क्षमता विकास, और संरक्षण हस्तक्षेप शामिल थे।

भारतीय समुद्री स्तनपायी संघ, 4-5 नवंबर 2023.

सुश्री चिन्मया घाणेकर, वैज्ञानिक-सी, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने भारतीय समुद्री स्तनपायी संघ में भारतीय वन्यजीव संस्थान का प्रतिनिधित्व किया। संघ के उद्देश्य थे: (i) समुद्री स्तनपायी विज्ञान और संरक्षण से जुड़े अंतःविषय पेशेवरों को एक साथ लाना, ताकि वे जानकारी साझा कर सकें और सहयोग को बढ़ावा दे सकें। (ii) इसके दीर्घकालिक संचालन का समर्थन करने के लिए भारतीय समुद्री स्तनपायी संघ की संभावित प्रशासनिक संरचना पर चर्चा करना और सिफारिशें देना।

इसका आयोजन वन्यजीव संरक्षण सोसाइटी इंडिया द्वारा किया गया। एमएमसीओआई भारत में समुद्री स्तनपायियों और उनके आवासों पर काम करने वाले प्रबंधकों, शोधकर्ताओं, संरक्षणवादियों और कार्यकर्ताओं का एक अनौपचारिक निकाय है। कार्यशाला का फोकस प्रभावी समुद्री स्तनपायी संरक्षण के लिए शोधकर्ताओं, छात्रों, नीति निर्माताओं और हितधारकों के बीच सहयोग पर था। कार्यशाला में मुख्य भाषण, संस्थागत अद्यतन, शोधकर्ताओं की प्रस्तुतियां और इंटरैक्टिव सत्र शामिल थे।

'उड़ीसा राज्य के लिए जूनोटिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राज्य कार्य योजना विकसित करने के लिए परामर्श' पर कार्यशाला, भुवनेश्वर, 21-22 नवंबर 2023.

डॉ. ललियनपूर्ई कवल्ली ने राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र द्वारा आयोजित 'उड़ीसा राज्य के लिए जूनोटिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राज्य कार्य योजना विकसित करने के लिए परामर्श' पर कार्यशाला में भाग लिया।

एनएमएसएचई के तहत वेब-आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली के विकास के लिए अपोलो सर्वर कार्यक्षमता का अन्वेषण करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, देहरादून, 13-14 दिसंबर 2023.

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को डेटा-बेस प्रबंधन और जलवायु डेटा के दृश्यांकन के लिए अपोलो सर्वर की परिचालन कार्यक्षमताओं पर प्रशिक्षण देना था। इसे डीएसटी-एनएमएसएचई चरण II परियोजना, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा आयोजित किया गया था।

कुल 25 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया, जिसमें शोधकर्ता, पीएच.डी. विद्वान, और आईटी सेल के कर्मी शामिल थे। प्रशिक्षण सत्रों में सर्वर की आवश्यकताओं और रखरखाव प्रक्रियाओं की डिजाइनिंग शामिल थी। विभिन्न निर्णय-निर्माताओं के लिए सामंजस्य सुनिश्चित करने के लिए डेस्कटॉप सुविधाओं को सुधारने पर विस्तृत चर्चाएं की गईं। इसके अतिरिक्त, भागीरथी नदी बेसिन से क्षेत्र-आधारित डेटा का उपयोग करके एक व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया, जिससे बाद की प्रक्रिया और गहन विश्लेषण की सुविधा मिली। डॉ. एस. सत्यकुमार, वैज्ञानिक-जी और रजिस्ट्रार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

बस्टर्ड संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: सीएमएस सीओपी-14 में साइड इवेंट (वर्चुअल), 12-17 फरवरी 2024.

डॉ. सुतिर्था दत्ता, वैज्ञानिक-ई, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने बस्टर्ड संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में एक मौखिक वार्ता प्रस्तुत की, जिसे सीएमएस सीओपी/आईयूसीएन एसएससी बस्टर्ड विशेषज्ञ समूह द्वारा आयोजित किया गया था। महान भारतीय बस्टर्ड गंभीर रूप से संकटग्रस्त है, जिसमें भारत में लगभग 140 व्यक्तियों में से अधिकांश जैसलमेर में हैं। वार्ता में बस्टर्ड पुनर्प्राप्ति कार्यक्रम के तहत किए गए कार्यों को शामिल किया गया, जैसे संरक्षण प्रजनन और प्रवर्तन एजेंसियों के लिए आवास पुनर्स्थापन के लिए विज्ञान-आधारित इनपुट। प्रजातियों की स्थिति में सुधार के लिए संरक्षण प्रजनन और आवास पुनर्स्थापन को जारी रखने के लिए एक राष्ट्रीय दृष्टि योजना लागू है।

भारत में शार्क के संरक्षण और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना पर हितधारक परामर्श, कोच्चि, 19 फरवरी 2024.

सुश्री चिन्मया घाणेकर, वैज्ञानिक-सी, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने भारत में शार्क के संरक्षण और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित हितधारक कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान का प्रतिनिधित्व किया। यह कार्यशाला बंगाल की खाड़ी कार्यक्रम अंतरसरकारी संगठन द्वारा आयोजित की गई थी। एफएओ, रोम में वरिष्ठ मत्स्य संसाधन अधिकारी डॉ किम फ्रीडमैन ने शार्क प्रबंधन के वैश्विक दृष्टिकोण पर प्रस्तुत किया। आईसीएआर-सीएमएफआरआई के

निदेशक डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने विशेष टिप्पणी दी, इसके बाद उद्घाटन संबोधन सुश्री नीतू कुमारी प्रसाद, संयुक्त सचिव, डीओएफ, भारत सरकार द्वारा दिया गया। कोच्चि में सीएमएफआरआई के एक प्रतिनिधि द्वारा भारत में शार्क मत्स्य की स्थिति पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का समापन श्री ए. एंटनी जेवियर, एफडीसी, डीओएफ, भारत सरकार द्वारा आगे की दिशा पर चर्चा के साथ हुआ।

वैज्ञानिक प्रबंधन और सहयोग के माध्यम से भविष्य के चिड़ियाघरों को आकार देने पर प्रशिक्षण, जामनगर, 11-12 मार्च 2024.

डॉ. पराग निगम, वैज्ञानिक-जी, ने 'बंदी वन्यजीवों के स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अनुकूलित करना' पर अपने इनपुट प्रदान किए। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य चिड़ियाघर निदेशकों, क्यूरेटर्स, प्रभारी अधिकारियों की क्षमताओं को विकसित करना था, ताकि उनके ज्ञान को बढ़ाया जा सके और कौशल को निखारा जा सके। यह कार्यक्रम ग्रीन्स जूलॉजिकल रेस्क्यू एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर, जामनगर द्वारा आयोजित किया गया था। दो दिवसीय प्रशिक्षण ने चिड़ियाघर अधिकारियों को वैज्ञानिक सत्रों और विभिन्न सुविधाओं के क्षेत्र दौड़ों के माध्यम से बाहरी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया। बंदी

वन्यजीवों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर जोर दिया गया, जिसमें पशु कल्याण संबंधी चिंताओं का विशेष ध्यान रखा गया।

जीनोमिक्स युग में जैव विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, पचहुंगा विश्वविद्यालय कॉलेज, आइजोल, मिजोरम, 22-23 मार्च 2024.

डॉ. लालियनपूर्ई कवल्ली ने जीनोमिक्स युग में जैव विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मिजोरम के संरक्षित क्षेत्रों में जनसंख्या अध्ययन और रोग निगरानी के साथ आनुवंशिक विश्लेषण का एकीकरण: संरक्षण और मानव-वन्यजीव सह-अस्तित्व के लिए निहितार्थ पर एक मौखिक प्रस्तुति दी।

अध्ययन यात्रा और दौरे

हौबारा और अरबी बस्टर्ड्स में कृत्रिम प्रजनन तकनीकों पर स्टाफ का प्रशिक्षण, अबू धाबी, 26 मार्च – 5 अप्रैल 2023. राष्ट्रीय पक्षी अनुसंधान केंद्र, अबू धाबी में जीआईबी परियोजना के लिए तकनीकी साझेदारों ने भारतीय वन्यजीव संस्थान की परियोजना वैज्ञानिक सुश्री तुषना करकाड़िया को कृत्रिम प्रजनन तकनीकों जैसे वीर्य संग्रह, भंडारण और कृत्रिम गर्भाधान पर प्रशिक्षित किया। यह प्रशिक्षण राजस्थान वन विभाग द्वारा वित्तपोषित और राष्ट्रीय पक्षी अनुसंधान केंद्र द्वारा समर्थित था।

सैकोन

(भा.व.स. का दक्षिण भारत केन्द्र)

शैक्षणिक कार्यक्रम

वन्यजीव विज्ञान (पक्षीविज्ञान) में एम.एससी:

रिपोर्टिंग अवधि के दौरान शैक्षणिक कार्यक्रम में तीन सेमेस्टर शामिल थे, प्रत्येक सेमेस्टर में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की गईं। पहले सेमेस्टर के समापन के दौरान, छात्रों ने वन्यजीव तकनीक टूर में भाग लिया, तथा 16–22 अप्रैल 2023 से कर्नाटक के बांदीपुर बाघ रिजर्व का दौरा किया। इस टूर का समन्वय डॉ. टी. रमेश और डॉ. विद्यार्थी अटकुरे द्वारा किया गया, जिसमें छात्रों को बीटीआर जीवविज्ञानी द्वारा फील्ड प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त, बीटीआर के फील्ड निदेशक, आईएफएस, डॉ. रमेश कुमार ने छात्रों के साथ जुड़कर एक बाघ रिजर्व के प्रबंधन चुनौतियों के बारे में अंतर्दृष्टि साझा की। इस टूर में मुदुमलाई बाघ रिजर्व का दौरा भी शामिल था। अपनी वापसी पर, छात्रों ने दो मॉड्यूल, अर्थात् हर्पेटोलॉजी और इचिथियोलॉजी और अकशेरुकी जीवविज्ञान को पूरा किया, इसके बाद उन्होंने 11–16 मई 2023 से अपने प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएँ दीं।

दूसरा सेमेस्टर 12 जून 2023 को शुरू हुआ, जिसमें 12 मॉड्यूल शामिल थे, जिनमें ओरिथोलॉजी-II, संरक्षण जीवविज्ञान-I, परिदृश्य पारिस्थितिकी, जल और समुद्री पारिस्थितिकी, पशु व्यवहार और विकासवादी पारिस्थितिकी, और पारिस्थितिकी-II की मूलभूत अवधारणाएँ शामिल थीं। आर्द्रभूमि टूर के हिस्से के रूप में, छात्रों ने 2–13 सितंबर 2023 को ओडिशा की यात्रा की, जहाँ उन्होंने आर्द्रभूमि संरक्षण और प्रबंधन में फील्ड अनुभव प्राप्त किया। इस टूर में रुशिकुल्या, चिलिका झील, मंगलाजोडी आर्द्रभूमि और भीतारकनिका मैंग्रोव का दौरा शामिल था, जहाँ छात्रों ने चिलिका झील में तियासा आध्या के मछली बिल्ला संरक्षण कार्यक्रम के साथ जुड़ाव किया। दूसरे सेमेस्टर में, छात्रों ने 23 अगस्त 2023 को तमिलनाडु के अनामलाई बाघ रिजर्व का दौरा किया, इसके बाद 13–16 अक्टूबर 2023 को संरक्षण जीवविज्ञान मॉड्यूल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वालपराई पठार का दौरा किया। इस एक्सपोजर यात्रा के दौरान, प्रकृति संरक्षण फाउंडेशन के जीवविज्ञानी ने पारिस्थितिकी पुनर्संस्थापन के सिद्धांतों और चुनौतियों पर विस्तार से बताया। दूसरे सेमेस्टर की परीक्षाएँ 1–7 नवंबर 2023 को आयोजित की गईं।

तीसरा सेमेस्टर 18 दिसंबर 2023 को शुरू हुआ, जिसमें दस मॉड्यूल पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें वन्यजीव विज्ञान के अनुप्रयुक्त पहलू शामिल थे, जिनमें संरक्षण जीवविज्ञान-II, अनुप्रयुक्त और आर्थिक पक्षीविज्ञान, वन्यजीव स्वास्थ्य और चिड़ियाघर विज्ञान, और वन्यजीव प्रबंधन और नीति जैसे मूल विषय शामिल थे। जलवायु परिवर्तन मॉड्यूल के हिस्से के रूप में, डॉ. रिद्धिका रमेश ने छात्रों के साथ 24 जनवरी 2024 को तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोक्लाइमेट अनुसंधान केंद्र

का दौरा किया। दो विशेष मॉड्यूल, पशु को पकड़ना और वन्यजीव स्वास्थ्य और चिड़ियाघर प्रबंधन, 14–20 मार्च 2024 को श्री चामराजेंद्र प्राणी उद्यान, मैसूरु में संचालित किए गए। इन सत्रों का आयोजन डॉ. एच.एन. कुमारा और डॉ. मांची शिरीष एस. द्वारा किया गया, जिसमें चिड़ियाघर जीवविज्ञानी और पशु चिकित्सकों द्वारा प्रशिक्षण शामिल था। छात्रों ने डॉ. एम. महेंद्रन के मार्गदर्शन में मैसूरु के क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय का भी दौरा किया।

तीसरे सेमेस्टर के दौरान, छात्रों ने चौथे सेमेस्टर के लिए शोध प्रस्ताव विकसित किए और 22 मार्च 2024 को एक खुले सेमिनार में सफलतापूर्वक उनका बचाव किया। संबंधित अधिकारियों के शोध परमिट के लिए अंतिम प्रस्तावों को जमा किया गया।

रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, कई बाहरी विशेषज्ञों को एम.एससी. छात्रों को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया, जो उनके शैक्षणिक अनुभव को समृद्ध करते हैं।



बांदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक में कैमरा ट्रैप लगाते एम.एससी. छात्र



क्षेत्र में मछली नमूनाकरण पर प्रशिक्षण सत्र में एम.एससी. छात्र

सेकान वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में एम.एससी. थीसिस

मेरिन रॉय (2023). पूर्वी अरुणाचल प्रदेश, भारत में भूमि उपयोग और भूमि आवरण का नदी आवासों, जल गुणवत्ता और मछली समुदायों पर प्रभाव। एम.एससी. पर्यावरण विज्ञान में थीसिस, केरल मत्स्य और महासागर अध्ययन विश्वविद्यालय, कोच्चि, केरल। पर्यवेक्षक: डॉ. विद्यार्थी अटकुरे।

सानोबर इमाम (2023). ठाणे क्रीक के पास रहने वाले मछली पकड़ने वाले समुदायों की आजीविका पर विकास परियोजनाओं और शहरीकरण का प्रभाव। एम.एससी. जल नीति और शासन केंद्र, आवास अध्ययन विद्यालय, टीआईएसएस—मुंबई में। मूल्यांकनकर्ता: डॉ. विद्याधर अटकोरे।

तक यू (2023). केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर में रीसस मकाक की जनसंख्या स्थिति, गतिविधि पैटर्न और आवास उपयोग। एम.एससी. कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान को प्रस्तुत थीसिस। पर्यवेक्षक: डॉ. अदिति मुखर्जी।

सेकान में डॉक्टरल रिसर्च की स्थिति

आकृति सिंह (2024). हाथियों की पारिस्थितिकी, एलेफस मैक्सिमस, और पश्चिम बंगाल, भारत में मानव के साथ उनकी अंतःक्रियाएँ। मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी। पर्यवेक्षक: डॉ. एच. एन. कुमारा।

अनूप वी (2023). हरपनहल्लि, दावणगेरे, कर्नाटक में शुष्क पर्णपाती वन के चयनित जीव घटकों पर पवन ऊर्जा फार्म का प्रभाव। पीएचडी थीसिस। भारथियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर। पर्यवेक्षक: डॉ. अरुण पीआर।

थीसिस प्रस्तुत

अनूप राज पीएन (2024). भरतपुड़ा नदी बेसिन में पक्षियों की विविधता। मणिपाल उच्च शिक्षा विश्वविद्यालय, मणिपाल, कर्नाटक। पर्यवेक्षक: डॉ. पी. प्रमोद।

गुजरपाध्ये प्रथमेश हेमंत अंजलि (2023). एंडेमिक अंडमान एडिबल-नेस्ट स्विफ्टलेट का अंतः-उपनिवेश प्रेषण पैटर्न। भारथियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर। पर्यवेक्षक: डॉ. मांची शिरीष एस. और डॉ. राम प्रताप सिंह।

पंजीकृत

ऋतिका सिंह सी (2023). ऊपरी नीलगिरियों में चयनित अधोस्तरीय स्थल पर पक्षियों की बहुतायत, घोंसला स्थल चयन और घोंसलों की सफलता दर पर आवास विशेषताओं का प्रभाव। मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी। पर्यवेक्षक: डॉ. एस. बाबू।

सुजिन एनएस (2023). पश्चिमी घाट, भारत में संकटग्रस्त बनासुरा लाफिंगथ्रश *मॉटेसिला जेरडोनी* की पारिस्थितिकी और संरक्षण। मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी। पर्यवेक्षक: डॉ. एस. बाबू।

भावानी सबत (2023). मापविज्ञान और आणविक दृष्टिकोण को एकीकृत करके भारत के चयनित गैलिफोर्म्स की वर्गीकृत विशेषता। भारथियार विश्वविद्यालय। पर्यवेक्षक: डॉ. अशुतोष सिंह और डॉ. रिद्धिका रमेश।

देविका मारदाचलम (2023). अनैकट्टी पहाड़ियां, दक्षिणी पश्चिमी घाट के चयनित प्राकृतिक और मानव-संशोधित परिदृश्य में मकड़ियों की पारिस्थितिकी और विविधता। विश्वविद्यालयरु भारथियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर, तमिलनाडु। पर्यवेक्षक: डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस।

कंचन चौधरी (2023). तमिलनाडु की जैव विविधता संपन्न आर्द्रभूमियों में कार्बन अनुबंध का आकलन। भारथियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर, तमिलनाडु। पर्यवेक्षक: डॉ. विद्याधर अटकोरे।

अनिरुधकुमार वसावा (2023). केंद्रीय गुजरात में मगरमच्छ क्रोकोडायलस पलस्ट्रिस संरक्षण के मानवी आयाम। पर्यवेक्षक: डॉ. विद्याधर अटकोरे।

केवल पल्या (2023). घास-मैदान-कृषि विविध परिदृश्यों के पारिस्थितिक नेटवर्क में पंक्षियां। भारथियार विश्वविद्यालय। पर्यवेक्षक: डॉ. रिद्धिका रमेश।

आर. किशोर (2023). बोनट मकाक *मकाका रेडियाटा* में संतति के लिंग के संदर्भ में माता की प्रभुत्व रैंक के साथ संबंधित अभिभावकीय लगाव पैटर्न का अध्ययन। भारथियार विश्वविद्यालय, पर्यवेक्षक: डॉ. एचएन कुमारा।

आर. श्रीजा (2023). स्पॉट-बिलड पेलिकन पेलीकेनस फिलिपेन्सिस की गतिविधि पैटर्न और भारत में उनके सबसे दक्षिणी प्रजनन क्षेत्र में आर्द्रभूमियों की विशेषता। भारथियार विश्वविद्यालय। पर्यवेक्षक: डॉ. टी. रमेश।

सस्वथी मिश्रा (2023). कर्नाटक, भारत में मानव-हाथी *एलेफस मैक्सिमस* अंतःक्रियाओं के आयाम। मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी, पर्यवेक्षक: डॉ. एच.एन. कुमारा।

गौरव सोनावणे (2023). केओलादेवो राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान और उसके आसपास के मांसाहारियों की जनसंख्या स्थिति – विशेष ध्यान –धारीदार लकड़बग्घा और सुनहरे गीदड़ पर। भारथियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर, तमिलनाडु। पर्यवेक्षक: डॉ. अदिति मुखर्जी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

सेकान एवं अन्य संस्थानों के सहयोग से आयोजित लघु पाठ्यक्रम / कार्यशालाएं / सेमिनार

हिमालय का मीठा जल पर एक दिवसीय कार्यशाला: हिमालय में ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र की सेवा और संवेदनशीलता का आकलन, आईआईटी रुड़की, उत्तराखंड, 6 जून 2023। कार्यशाला के उद्देश्य थे: (i) हिमालय में ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र और इसकी सेवाओं की स्थिति और रुझानों पर चर्चा और समझना, और (ii) हिमालय में ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र के संभावित खतरों और संवेदनशीलता पर चर्चा करना। इसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की के जलविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित किया गया था। एशिया-प्रशांत नेटवर्क ने कार्यशाला को ग्लोबल चेंज रिसर्च के लिए प्रायोजित किया।

हिमालय ताजे पानी का प्रमुख स्रोत है, और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं लाखों लोगों की आजीविका को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि, क्षेत्र में मानव गतिविधियों पर एफईएस की उपलब्धता और विषम जलवायु घटनाओं के प्रभाव के संबंध में एक व्यापक ज्ञान अंतराल है। इस अंतर को भरने के लिए हिमालय का मीठा जल पर कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की गई है। इससे भारत के ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में विचार-विमर्श और विचार-मंथन में मदद मिलेगी। डॉ. विद्यार्थी अटकुरे ने कार्यशाला में भाग लिया।

भारतीय वायुसेना अधिकारियों के लिए 'विमान के लिए पक्षी संबंधी खतरों के प्रबंधन' पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, कोयंबटूर, 24-28 जुलाई 2023। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र ने अपने अनैकट्टी, कोयंबटूर परिसर में भारतीय वायुसेना के अधिकारियों के लिए 'विमान के लिए पक्षी संबंधी खतरों के प्रबंधन' पर केंद्रित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में भारतीय वायुसेना के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान, प्रतिभागियों ने 11 तकनीकी सत्रों में भाग लिया और तीन पक्षी देखने की गतिविधियों में हिस्सा लिया। प्रशिक्षण ने पक्षियों और पशु समुदायों की पारिस्थितिकी को समझने और हवाई अड्डों पर वन्यजीव-संबंधी खतरों के जोखिम को कम करने के लिए शमन रणनीतियों को लागू करने पर जोर दिया। प्रतिभागियों को हवाई अड्डों पर मौजूद वनस्पति और जीवों



की निगरानी और दस्तावेजीकरण में भी प्रशिक्षित किया गया। सत्रों में वैश्विक पक्षी खतरे प्रबंधन पहलों, सफलता की कहानियों और केस स्टडीज पर चर्चा शामिल थी ताकि व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान की जा सके। कार्यक्रम का समापन अनुभव साझा करने वाले सत्र, प्रमाण पत्र वितरण और समापन समारोह के साथ पांचवें दिन हुआ।

तमिलनाडु वन अकादमी अधिकारियों के लिए पक्षियों के पहचान और फॉरेंसिक्स पर लघु अवधि का पाठ्यक्रम (5-दिवसीय), कोयंबटूर, 8-12 जनवरी 2024.

तमिलनाडु वन बल के आधुनिकीकरण योजना के तहत, सेकान ने तमिलनाडु के 20 वन अधिकारियों के लिए 'पक्षियों के पहचान और फॉरेंसिक्स' पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसका उद्देश्य पक्षी पहचान कौशल को बढ़ाना और वन्यजीव अपराध जांच के लिए फॉरेंसिक तकनीकों को प्रस्तुत करना था। इस प्रशिक्षण में पक्षी जनगणना तकनीकों, प्रजातियों की पहचान, और संरक्षण में फॉरेंसिक्स के अनुप्रयोग को शामिल किया गया। सत्रों में व्याख्यान, आर्द्रभूमियों की फील्ड यात्राएं, प्रत्यक्ष फॉरेंसिक अभ्यास, और सेकान के एवियन फॉरेंसिक्स प्रयोगशाला का दौरा शामिल था, जिससे प्रतिभागियों को पक्षी संरक्षण और अपराध जांच के लिए व्यावहारिक कौशल प्राप्त हुए।

वन्यजीव संरक्षण पर तीन दिवसीय कार्यशाला 'अन्य सेवाओं के कर्मचारियों का प्रशिक्षण' के हिस्से के रूप में, कोयंबटूर, 22-24 जनवरी 2024.

कार्यशाला के उद्देश्य थे: (i) भारत की समृद्ध जैव विविधता और संरक्षण मुद्दों का अवलोकन प्रदान करना, (ii) हितधारकों को वर्तमान वन्यजीव चिंताओं और संरक्षण उपायों के बारे में बहुआयामी ज्ञान प्रदान करना, (iii) विभिन्न वन्यजीव संरक्षण पहलों की उपलब्धियों के बारे में जानकारी का प्रसार करना, (iv) वन्यजीव संरक्षण के लिए अंतर्विभागीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अन्य विभागों के हितधारकों को उनकी भागीदारी के बारे में संवेदनशील बनाना, और (v) वन्यजीव संरक्षण में शामिल विभिन्न प्रयोगशाला अभ्यासों का अवलोकन प्रदान करना।

इसे भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित किया गया था। कार्यशाला में कुल 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

महसीर निगरानी कार्यशाला—सह-क्षेत्र प्रशिक्षण, मोयार नदी, बांदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक, 26–28 जनवरी 2024.

कार्यशाला के उद्देश्य थे: (i) वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग करके जलीय जैव विविधता (हम्पबैकड महसीर और मोयार के सहयोगी मछलियों) का आकलन करना और (ii) वन विभाग के कर्मचारियों की क्षमता निर्माण विकसित करना।

इसे बांदीपुर बाघ रिजर्व के फील्ड निदेशक द्वारा आयोजित और प्रायोजित किया गया था। बांदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक द्वारा एक क्षेत्र प्रशिक्षण—सह-क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई। कुल 40 वन विभाग के कर्मचारियों, जिनमें सहायक वन संरक्षक, रेंज वन अधिकारी, वन रक्षक, और वन प्रहरी शामिल थे, को जलीय जैव विविधता का आकलन करने में प्रशिक्षित किया गया। नदी आवास की विशेषताओं (चौड़ाई, गहराई, प्रवाह, सबस्ट्रेट संरचना, तट की वनस्पति) को मापना, मछली नमूनाकरण और पहचान का अभ्यास किया गया। डॉ. विद्यार्थी अटकुरे ने कार्यशाला—सह-क्षेत्र प्रशिक्षण में भाग लिया।

कार्यशालाएं, सेमिनार, सम्मेलनों और बैठकों में सेकान कर्मियों ने भाग लिया

कांगर घाटी राष्ट्रीय उद्यान को नामित करने के लिए एक प्रस्ताव विकसित करने पर परामर्श कार्यशाला, 12 जून 2023.

परामर्श कार्यशाला के दौरान, डॉ. अशुतोष सिंह ने कांगर घाटी राष्ट्रीय उद्यान को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित करने के लिए एक प्रस्ताव विकसित करने पर इनपुट दिए।

उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक, कोयंबटूर, तमिलनाडु, 2–6 जुलाई 2023।

उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक भारतीय क्षेत्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकी संघ, कुमारगुरु संस्थान और एटीबीसी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई थी। सम्मेलन का विषय ष्विज्ञान, संरक्षण और समाज का संतुलन था। वार्षिक बैठक का उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमियों और दुनिया भर के शोधकर्ताओं, संरक्षणविदों, निर्णयकर्ताओं और शिक्षाविदों के बीच उष्णकटिबंधीय जैव विविधता पर सक्रिय बातचीत का अवसर प्रदान करना था। वार्षिक सम्मेलन में 11 देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले 450 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। सेकान का प्रतिनिधित्व संकाय सदस्यों द्वारा किया गया। डॉ. पीवी करुणाकरण (आयोजन समिति), शोमिता मुखर्जी और राजा जयपाल (दोनों वैज्ञानिक समिति में)। काविन डी और अटकुरे वी ने पूर्वी अरुणाचल प्रदेश के नामदफा बाघ रिजर्व की ताजे पानी की मछली जीवों का प्रारंभिक आकलन पर बात की और संदीप पी, शरीफ एमयू, करुणाकरण पीवी, कुमारा एचएन और बाबू एस ने मेघालय में समुदाय आरक्षित क्षेत्रों की प्रबंधन व्यवस्था और इसके फूलों की संरचना और संरचना पर प्रभाव पर एक पोस्टर प्रस्तुत किया।

तिरुमला तिरुपति देवस्थान में परामर्श/योजना बैठक और साइट यात्रा, 27–28 सितंबर 2023.

डॉ. अशुतोष सिंह ने मानव-वन्यजीव इंटरफेस पर विस्तृत स्थिति विश्लेषण और रोकथाम रणनीतियों की तैयारी के लिए तिरुमला तिरुपति देवस्थान में एक परामर्श/योजना बैठक और साइट

यात्रा में भाग लिया। साइट सर्वेक्षण के आधार पर, कुछ अल्पकालिक और दीर्घकालिक शमन रणनीतियाँ सुझाई गईं जिनमें कचरा प्रबंधन, शिकार और शिकारी की नकारात्मक कंडीशनिंग, रणनीतिक बाड़ और हवाई वॉकवे, विचरण प्रतिबंध और प्रारंभिक चेतावनी, अंडरपास/ओवरपास का विकास, शिकार और शिकारी जनसंख्या की दीर्घकालिक निगरानी, व्यापक आउटरीच कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से समुदाय संवेदनशीलता और भागीदारी शामिल हैं।

जीईएफ-7 परियोजना के लिए योजना और अभिविन्यास बैठक – छोटे बिल्लियाँ और तेंदुआ संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करके वैश्विक रूप से महत्वपूर्ण जंगली बिल्लियों के संरक्षण प्रयास को मजबूत करना, नई दिल्ली, 30–31 अक्टूबर 2023.

बैठक का उद्देश्य छोटे बिल्लियों पर जीईएफ-7 परियोजना की योजना बनाना और अभिविन्यास करना था। बैठक का प्रायोजन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम और ग्लोबल टाइगर फोरम ने किया। राज्यों (यूपी और अरुणाचल) द्वारा उनके क्षेत्र स्थलों (दुधवा बाघ रिजर्व, यूपी और पक्के बाघ रिजर्व, ईगलनेस्ट वन्यजीव अभ्यारण्य, अरुणाचल प्रदेश) में परियोजनाओं की प्रगति पर प्रस्तुतियाँ दी गईं। कार्यशाला ने भविष्य के कार्य और बजट के लिए दिशानिर्देश प्रदान किए। डॉ. शोमिता मुखर्जी ने बैठक में भाग लिया।

‘म्हादेई: एक बहु-विषयक अन्वेषण’ पर कार्यशाला, गोवा विश्वविद्यालय, 30–31 अक्टूबर 2023.

डॉ. विद्यार्थी अटकुरे ने कार्यशाला में ऑनलाइन भाग लिया और ‘पर्यावरणीय चर के प्रभाव का म्हादेई नदी, गोवा की ताजे पानी की मछली विविधता’ पर व्याख्यान दिया।

पौध जैव विविधता, आनुवंशिकी, प्रजनन और जैव प्रौद्योगिकी (जीएमएफ सेमिनार 2023) पर राष्ट्रीय सेमिनार, कोझिकोड, केरल, 7–8 दिसंबर 2023.

डॉ. पीवी करुणाकरण ने पौध जैव विविधता, आनुवंशिकी, प्रजनन और जैव प्रौद्योगिकी (जीएमएफ सेमिनार 2023) पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया, जिसे कैलिकट विश्वविद्यालय, केरल के वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित किया गया था और ‘भारत में समुदाय संरक्षण – मेघालय के समुदाय आरक्षित क्षेत्रों पर एक केस स्टडी’ पर एक पेपर प्रस्तुत किया।

आर्द्रभूमियों के एकीकृत प्रबंधन योजना के लिए कार्यशाला, पटना, बिहार, 12–13 दिसंबर 2023.

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग, बिहार सरकार, और जीआईजेड इंडिया ने आर्द्रभूमियों के एकीकृत प्रबंधन योजना के लिए एक कार्यशाला आयोजित की। डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस ने कार्यशाला में सेकान का प्रतिनिधित्व किया।

‘मानव-वन्यजीव संघर्ष, आगे की राह’ पर राष्ट्रीय सेमिनार, कोलिकोड, मीनचंदा, 19 दिसंबर 2023.

पर्यावरणीय प्रभाव आकलन का उपयोग संघर्ष शमन के लिए एक प्रारंभिक उपकरण के रूप में किया जाता है। डॉ. अरुण पीआर को ‘मानव-वन्यजीव संघर्ष आगे की राह’ पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में बात करने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसे

जूलोजी विभाग, सरकारी कला और विज्ञान कॉलेज, कोलिकोड, मीनचंदा द्वारा आयोजित किया गया था।

जीईएफ-7 परियोजना के लिए कार्यशाला: छोटे बिल्ली और तेंदुआ संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करके वैश्विक रूप से महत्वपूर्ण जंगली बिल्लियों के संरक्षण प्रयासों को मजबूत करना, नई दिल्ली, 11-12 जनवरी 2024.

कार्यशाला का उद्देश्य संरक्षण मुद्दों, जैसे शिकार, अवैध वन्यजीव व्यापार, और मानव-वन्यजीव अंतःक्रियाओं को कवर करना था ताकि जीईएफ-7 छोटे बिल्लियों की परियोजना पर सहयोगात्मक संयुक्त कार्रवाई के लिए एक रोडमैप विकसित किया जा सके। इसका प्रायोजन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, और ग्लोबल बाघ फोरम ने किया।

पहले दिन, देशों (भारत, भूटान, नेपाल) द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गईं, और सीमा पार क्षेत्रों में अवैध वन्यजीव व्यापार पर खुफिया जानकारी साझा करने और छोटे बिल्ली जनसंख्या की निगरानी के लिए अनुसंधान तकनीकों और प्रोटोकॉल पर विचार-विमर्श हुआ। दूसरे दिन, संयुक्त कार्य योजना और वित्त पोषण पर चर्चा की गई। डॉ. शोमिता मुखर्जी ने कार्यशाला में भाग लिया।

आईआरएएलई सम्मेलन 2024, मूर्ति, पश्चिम बंगाल, 21-23 फरवरी 2024.

डॉ. विद्यार्थी अटकुरे आईआरएएलई सम्मेलन 2024 में मुख्य व्याख्यान सत्र के संयोजक और समन्वयक थे।

पक्षी जीवविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और भारतीय पक्षी जीवविज्ञानी संघ की 5वीं वार्षिक बैठक, देहरादून, 23-25 फरवरी 2024.

ग्राफिक एरा (डीमड टू बी यूनिवर्सिटी) द्वारा आयोजित, संगोष्ठी का उद्देश्य आमंत्रित वार्ता और पोस्टर प्रस्तुतियों के माध्यम से पक्षी जीवविज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत और चर्चा को बढ़ावा देना था। 22 संस्थानों के 80 प्रतिभागियों ने बैठक में भाग लिया।

संगोष्ठी के दौरान वन पक्षियों का अध्ययन किया गया। गैलिफोर्म्स का अधिकतम प्रतिनिधित्व था, जबकि फाल्कोनिफोर्म्स, कोलंबिफोर्म्स, और सिकोनीफोर्म्स इन अध्ययनों में सबसे कम प्रतिनिधित्व था। विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, भूमि उपयोग, आदि से डेटा अधिग्रहण में कई सीमाएँ हैं। इसलिए, पक्षीविज्ञानियों और दूरसंवेदी विशेषज्ञों के बीच सहयोग और लोगों को डेटा अधिग्रहण में शामिल करना (जैसे, पौध फेनोलॉजी और मानव स्वास्थ्य पर नागरिक विज्ञान डेटा) पक्षी संरक्षण और मानव कल्याण के लिए नीतियों के विकास की दिशा में व्यावहारिक कदम होंगे। डॉ. अशुतोष सिंह ने संगोष्ठी में भाग लिया।

पूर्वी क्षेत्र राज्यों के लिए आर्द्रभूमि संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग पर क्षेत्रीय कार्यशाला, भुवनेश्वर, ओडिशा, 6-7 मार्च 2024.

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, आर्द्रभूमि प्रभाग, और चिलिका विकास प्राधिकरण, ओडिशा ने पूर्वी क्षेत्र राज्यों के लिए आर्द्रभूमि संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग पर क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। डॉ. गोल्डिन क्वाड्रोस ने कार्यशाला और आर्द्रभूमियों के विवेकपूर्ण उपयोग और कार्बन अनुबंध पर पैनल चर्चा में भाग लिया।

अध्ययन यात्राएं और दौरे

11वां अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकी संघ विश्व कांग्रेस 2023, नैरोबी, केन्या, 10-15 जुलाई 2023.

यह अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकी संघ द्वारा आयोजित किया गया था। विश्व कांग्रेस में 500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. पीवी करुणाकरण ने सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र का प्रतिनिधित्व किया।

आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी और इसका प्रबंधन, 2022-24 एसएफएस इंडक्शन कोर्स के अधिकारी प्रशिक्षुओं की आर्द्रभूमि यात्रा, कृष्णाम्पथी और पेरुर झीलें, बर्निहाट, असम, 7 दिसंबर 2023.

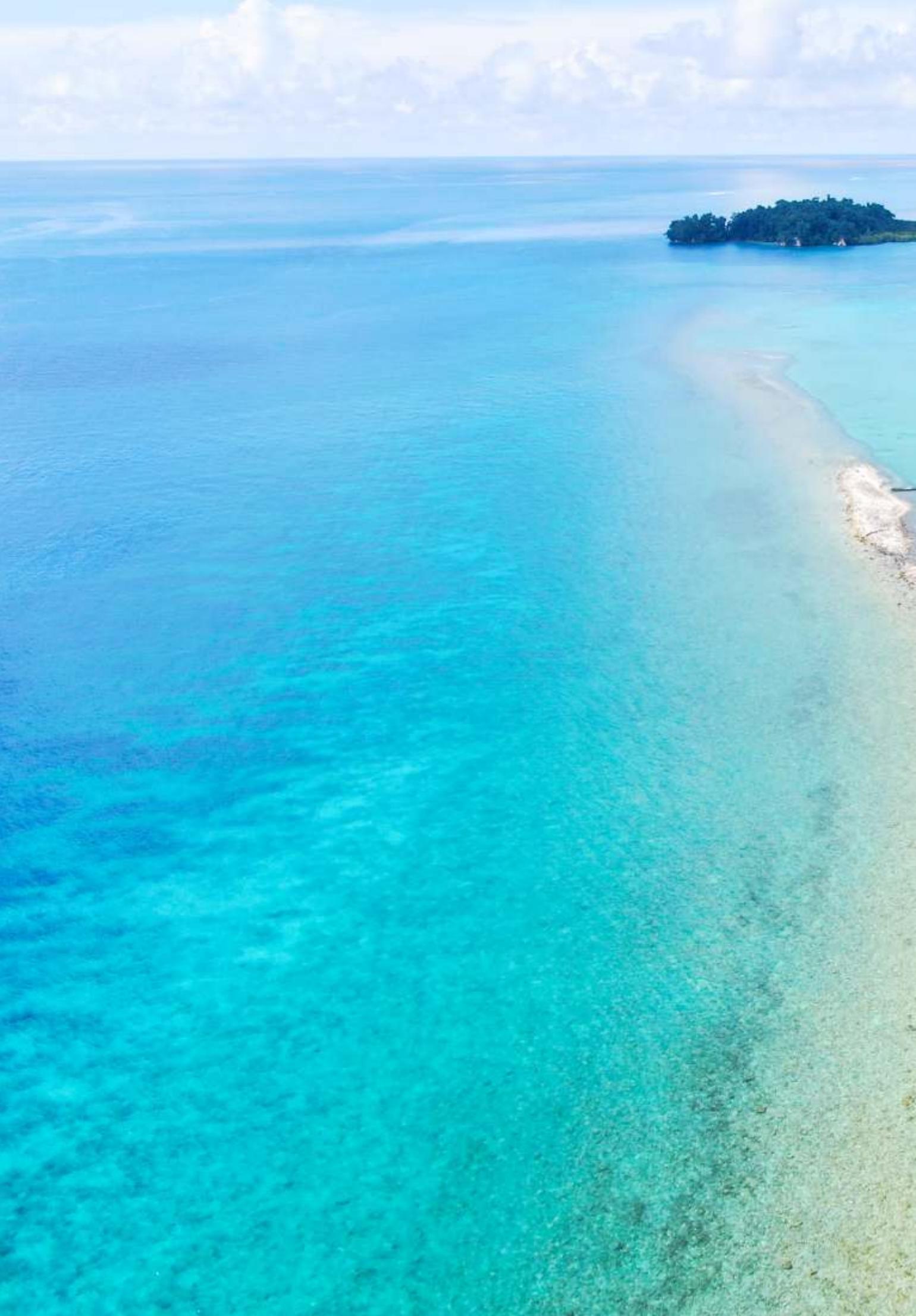
आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी और इसका प्रबंधन, 2022-24 एसएफएस इंडक्शन कोर्स के अधिकारी प्रशिक्षुओं की आर्द्रभूमि यात्रा का संयुक्त रूप से आयोजन सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र और केंद्रीय राज्य वन सेवा अकादमी, बर्निहाट द्वारा किया गया। यात्रा में कुल 47 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी और प्रबंधन मॉड्यूल (2 दिन) के हिस्से के रूप में कोयंबटूर की आर्द्रभूमियों का दौरा, कैसफोस बर्निहाट अधिकारी, 7 दिसंबर 2023.

दक्षिण भारत दौरे के हिस्से के रूप में कैसफोस, बर्निहाट, असम के एसएफएस इंडक्शन कोर्स 2022-2024 बैच के 47 अधिकारी प्रशिक्षुओं के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण 06 और 07 दिसंबर 2023 को आयोजित किया गया था, जिसमें आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी और इसका प्रबंधन पर विभिन्न सेकान संकायों के साथ व्याख्यान और बातचीत और कोयंबटूर की कुछ आर्द्रभूमियों का फील्ड दौरा शामिल था।

तमिलनाडु वन अकादमी अधिकारियों के लिए पक्षी पहचान और फॉरेंसिक्स पर लघु अवधि के पाठ्यक्रम (5 दिन) के हिस्से के रूप में कोयंबटूर की आर्द्रभूमियों का दौरा, 11 जनवरी 2024.

कुल 18 प्रतिभागियों ने दौरे में भाग लिया। तमिलनाडु वन अकादमी के लिए 'पक्षी पहचान और फॉरेंसिक्स' पर पांच दिवसीय लघु अवधि के पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में, 18 अधिकारियों ने 11 जनवरी 2024 को कोयंबटूर की आर्द्रभूमियों का दौरा किया। फील्ड यात्रा में कृष्णाम्पथी झील, पेरुर झील, और सिंगनल्लूर झील भी शामिल थे, जहां प्रतिभागियों ने वास्तविक दुनिया में अपनी पक्षी पहचान कौशल का उपयोग किया। आर्द्रभूमियों ने पक्षियों की एक समृद्ध विविधता प्रदान की, जिससे अधिकारियों को पाठ्यक्रम के दौरान सीखे गए क्षेत्र गाइड और पक्षी जनगणना तकनीकों का उपयोग करते हुए अपने प्राकृतिक आवासों में विभिन्न जलपक्षियों और अन्य प्रजातियों का अवलोकन करते हुए अभ्यास करने का अवसर मिला। फील्ड यात्रा के दौरान, प्रतिभागियों को इन महत्वपूर्ण आवासों को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में भी सूचित किया गया। चर्चाओं में आर्द्रभूमियों के सामने आने वाली चुनौतियों, जैसे प्रदूषण, आवास क्षरण, और शहरीकरण के प्रभावों पर प्रकाश डाला गया। इन पर्यावरणीय चिंताओं को समझकर, अधिकारियों ने संरक्षण प्रयासों के महत्व और पक्षी जनसंख्या और उनके पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए स्थायी प्रबंधन प्रथाओं की आवश्यकता पर व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त किया।





© सागर राजपुरकर

पेशेवर सहायता एवं गतिविधियाँ



सहयोग

भारतीय वन्यजीव संस्थान ने 12 अन्य राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर भारत के पक्षियों की स्थिति रिपोर्ट 2023 बनाई है (<https://stateofindiasbirds-in/> पर उपलब्ध)।

भारत के पक्षियों की स्थिति रिपोर्ट का उद्देश्य देश में नियमित रूप से पाई जाने वाली अधिकांश प्रजातियों के संरक्षण की स्थिति का मूल्यांकन करना था। यह 30 मिलियन से अधिक पर्यवेक्षणों का उपयोग करके प्राप्त किया गया, जिन्हें 30,000 से अधिक पक्षीप्रेमियों द्वारा ईबर्ड प्लेटफॉर्म पर अपलोड किया गया, ताकि 942 भारतीय पक्षियों के वितरण क्षेत्र के आकार और उनकी लंबी अवधि (25 वर्षों) और वर्तमान में (2015 से) प्रचुरता में रुझानों का मूल्यांकन किया जा सके। इन तीन मापदंडों का उपयोग करके, और आईयूसीएन रेड लिस्ट के वैश्विक खतरे की स्थिति से जानकारी के साथ, इस रिपोर्ट में भारतीय प्रजातियों को भारत के लिए निम्न, मध्यम और उच्च संरक्षण प्राथमिकता की श्रेणियों में रखा गया है। कई प्रजातियाँ जो आम और व्यापक मानी जाती हैं, उन्हें उच्च संरक्षण प्राथमिकता के रूप में पाया गया है।

प्रकोष्ठ

सूचना प्रौद्योगिकी, रिमोट सेंसिंग और जीआईएस और ऑडियो-विजुअल प्रकोष्ठ

सूचना प्रौद्योगिकी, रिमोट सेंसिंग, और भौगोलिक सूचना प्रणाली सुविधाएँ सभी वन्यजीव अनुसंधान परियोजनाओं, शिक्षा, और प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह सुविधा संस्थान के साथ काम करने वाले संकाय सदस्यों, प्रशिक्षुओं, शोधकर्ताओं, छात्रों और सहयोगियों के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध है। समर्पित प्रयोगशालाओं में डेटा प्रोसेसिंग के लिए एमएस विंडोज, लिनक्स, और विशेष विश्लेषणात्मक सॉफ्टवेयर के साथ कई डेस्कटॉप कंप्यूटर उपलब्ध हैं।

कंप्यूटर सुविधा में उच्च-स्तरीय सर्वर, स्टोरेज एरिया नेटवर्क, और नेटवर्क अटैचड स्टोरेज सिस्टम से जुड़ी हार्डवेयर सेटअप की विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जो इंटरनेट, इंटरनेट, डेटाबेस प्रबंधन और पुस्तकालय स्वचालन सेवाओं के लिए आवश्यक है। 400 से अधिक नोड्स और 700 से अधिक उपयोगकर्ताओं की सेवा करते हुए, भारतीय वन्यजीव संस्थान का स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (एलएएन) सुचारु कनेक्टिविटी सुनिश्चित करता है। इसके अलावा, वाई-फाई पहुँच मुख्य क्षेत्रों जैसे छात्रावास, अतिथि गृह, कक्षाओं, सभागारों, बोर्ड रूम और पोर्टा कैबिन तक फैली हुई है। संस्थान के पास बीएसएनएल के माध्यम से 500 एमबीपीएस (फाइबर) इंटरनेट लीज्ड लाइन कनेक्टिविटी है।

रिमोट सेंसिंग और जीआईएस लैब संस्थान के अनुसंधान और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करती है। प्रयोगशाला में कई उच्च-स्तरीय वर्कस्टेशन, उच्च-स्तरीय स्कैनर-कम-प्लॉटर, और सॉफ्टवेयर पैकेज, जैसे आर्कजीआईएस, ईआरडीएस इमेजिनग्ज़ोन इमेज प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर परिदृश्य स्तर के विश्लेषण के लिए सुसज्जित हैं। एक समर्पित टीम एम.एस.सी. इन वाइल्डलाइफ साइंस के छात्रों, शोधकर्ताओं, और उन्नत पीजी डिप्लोमा और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में नामांकित प्रशिक्षुओं को आईटी और भू-सूचना विज्ञान में समर्थन और प्रशिक्षण प्रदान करती है।

प्रशिक्षण अन्य स्नातक, स्नातकोत्तर छात्रों और इंटरनर्स के लिए भी विस्तारित किया जाता है। सॉफ्टवेयर के अलावा, प्रयोगशाला शिक्षण और प्रशिक्षण उद्देश्यों के लिए क्यूजीआईएस, जीआरएएस और आर जैसे ओपन-सोर्स टूल्स का भी उपयोग करती है।

ऑनलाइन कार्यशाला / वेबिनार / बैठक / व्याख्यान की सुविधा: आईटी और आरएस / जीआईएस प्रकोष्ठ लगातार संस्थान और उपयोगकर्ताओं के कार्यालय डेस्कटॉप में विभिन्न स्थानों पर ऑनलाइन संचार सॉफ्टवेयर जैसे माइक्रोसॉफ्ट टीम, वेबेक्स, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा का उपयोग करके ऑनलाइन बैठकों, कार्यशालाओं, वेबिनारों की मेजबानी के लिए सुविधा प्रदान करता है।

इंटरनेट लीज्ड लाइन सुविधा का उन्नयन: संस्थान की विशेष इंटरनेट लीज्ड लाइन कनेक्शन को बीएसएनएल द्वारा 350 से 500 एमबीपीएस तक अपग्रेड किया गया है। जियो से वैकल्पिक इंटरनेट लीज्ड लाइन भी स्थापित की गई है, जो 500 एमबीपीएस की गति प्रदान करती है।

लिनक्स-आधारित सर्वर पर नई इंटरनेट संचार और ईमेल सेवा का कार्यान्वयन: एक नई इंटरनेट संचार और ईमेल सेवा, जो लिनक्स-आधारित सर्वर पर आधारित है, को लागू किया गया है। यह सेवा सभी ईमेल उपयोगकर्ताओं के लिए स्पैमफ्लॉइलिंग ईमेल को रोकने और दैनिक एंटी-स्पैम रिपोर्ट्स की सुरक्षा उपायों के साथ सुरक्षित संचार और संग्रहण सुनिश्चित करती है। प्रत्येक उपयोगकर्ता को नए मेल सर्वर पर 50 जीबी की जगह प्रदान की गई है।

ई-ऑफिस का कार्यान्वयन: संस्थान ने अपने विभागों, प्रकोष्ठों, और बाहरी कार्यालयों, जिसमें सह-संगठन और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय शामिल हैं, के बीच पत्राचार को सुव्यवस्थित और बढ़ाने के लिए एक ई-ऑफिस प्रणाली को पेश किया है। इस पहल के तहत, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के परामर्श से सभी स्थायी कर्मचारियों के लिए "gov-in" डोमेन पर ईमेल आईडी बनाई गई हैं। इसके अतिरिक्त, सभी उपयोगकर्ताओं के लिए वीपीएन कनेक्शन स्थापित करने के उपाय किए गए हैं, जिससे एमओईएफसीसी ई-ऑफिस पोर्टल तक पहुँच सक्षम हो सके।

ऑनलाइन विंडो पर स्मार्ट प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट रिकॉर्डिंग (स्पैरो): ई-गवर्नेंस निर्देशों के अनुपालन में, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने संस्थान में सेवा करने वाले और विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लेने वाले भारतीय वन सेवा अधिकारियों के मूल्यांकन रिपोर्ट के लिए स्पैरो पोर्टल को लागू किया है। यह डिजिटल पहल मूल्यांकन प्रक्रिया में पारदर्शिता, दक्षता, और मानकीकरण सुनिश्चित करती है, जो समकालीन शासन प्रथाओं के अनुरूप है।



विदेशी छात्र सूचना प्रणाली: ई-गवर्नेंस निर्देशों और आव्रजन ब्यूरो से समय-समय पर मिलने वाले निर्देशों के अनुसार, भारतीय वन्यजीव संस्थान विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में नामांकित विदेशी नागरिकों के बारे में जानकारी बीओआई पोर्टलों के माध्यम से नियमित रूप से साझा करता है। यह इसके अतिरिक्त, संस्थान में अतिथि गृहों में ठहरने वाले विदेशी आगंतुकों के पंजीकरण की सुविधा भी प्रदान करता है। यह सक्रिय दृष्टिकोण आव्रजन नियमों के पालन को सुनिश्चित करता है और संस्थान परिसर में विदेशी नागरिकों की गतिविधियों के प्रबंधन में पारदर्शिता को बढ़ाता है।

सरकारी भूमि सूचना प्रणाली: सरकारी भूमि सूचना प्रणाली के संबंध में ई-गवर्नेंस निर्देशों के तहत, भारतीय वन्यजीव संस्थान सभी संस्थान की भूमि और भवन विवरणों को जीएलआईएस पोर्टल पर नियमित रूप से अपडेट करता है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म भारतीय वन्यजीव संस्थान की भूमि और भवन संपत्तियों पर सटीक और अद्यतन जानकारी सुनिश्चित करता है, जिससे संसाधनों के प्रबंधन में पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ावा मिलता है।

ई-प्रोक्योरमेंट/जेम सेवाएँ: भारतीय वन्यजीव संस्थान, भारत सरकार के ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल के सभी टेंडरों की मेजबानी करता है और जेम पर भी संचालित होता है। आईटी, आरएस और जीआईएस प्रकोष्ठ दोनों पोर्टलों के लिए तकनीकी समर्थन प्रदान करते हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान इन प्लेटफॉर्मों के प्रोक्योरमेंट दिशानिर्देशों और नियमों का सख्ती से पालन करता है, जिससे नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करता है।

वेबसाइट का स्वतः हिंदी में रूपांतरण: संस्थान की वेबसाइट में वेब सामग्री को हिंदी भाषा में स्वचालित रूप से रूपांतरित करने की सुविधा जोड़ी गई है।

सोशल मीडिया अपडेट्स: संस्थान के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल (जैसे ट्विटर, फेसबुक, क्यू, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब) हैं। मंत्रालय ने संस्थान के अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधि को इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर सक्रिय रूप से साझा करने और मंत्रालय को सांख्यिकी अपलोड/साझा करने के लिए कहा है। संस्थान के ट्विटर खाते को एक ब्लू टिक (सत्यापित खाता) प्रदान किया गया, जिससे लोगों को पता चले कि यह सार्वजनिक हित का एक प्रामाणिक खाता है।

ऑनलाइन वेबिनार/साक्षात्कार/बैठक: सहयोग, स्क्रीन शेयरिंग, और संचार के लिए माइक्रोसॉफ्ट टीम्स का उपयोग ऑनलाइन वेबिनार, साक्षात्कार, और वर्चुअल बैठकों के लिए किया जा रहा है।

आवास परिसर में इंटरनेट कनेक्टिविटी में सुधार: बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिए फैंकल्टी आवास क्षेत्र में सुधार कार्य किया गया है।

लाइव स्ट्रीमिंग: राष्ट्रीय और महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को संस्थान की वेबसाइट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर लाइव-स्ट्रीम किया गया।

सुरक्षा गार्डों के लिए विजिटर मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर का कार्यान्वयन/प्रशिक्षण: विजिटर मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर पर सुरक्षा गार्डों को प्रशिक्षित और कार्यान्वित किया गया, जिससे आगंतुकों की मात्रा, मौजूदा सिस्टम के साथ एकीकरण क्षमताओं, और उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस की सहजता जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा प्रोटोकॉल में और सुधार हुआ।

छुट्टी और उपस्थिति प्रबंधन प्रणाली: ई-गवर्नेंस निर्देशों के अनुसार, सभी स्थायी अनुबंधित कर्मचारी और शोधकर्ता भारतीय वन्यजीव संस्थान में बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली में नामांकित हैं। दैनिक उपस्थिति, छुट्टी, और दौरे वेब-आधारित सॉफ्टवेयर के माध्यम से प्रबंधित किए जाते हैं। वर्तमान में, 745 कर्मचारी और शोधकर्ता इसमें नामांकित हैं।

डेटा भंडारण प्रणाली का विस्तार: इस प्रकोष्ठ में बाघ परियोजना डेटाबेस के लिए 240 टीबी क्षमता का नेटवर्क एरिया स्टोरेज स्थापित किया गया है।

सभागार में वीडियो वॉल की स्थापना: सभागार में वीडियो वॉल की स्थापना की गई ताकि यह सुचारू रूप से कार्य कर सके और वीडियो वॉल को स्थापित करने के लिए एक पेशेवर एवी स्थापना टीम को काम पर रखा गया। वीडियो वॉल को सभागार के ऑडियोविजुअल सिस्टम जैसे साउंड सुदृढीकरण, प्रकाश व्यवस्था, और नियंत्रण प्रणालियों के साथ एकीकृत किया गया।

बूम बैरियर और आरएफआईडी सिस्टम की स्थापना: मुख्य गेट में बूम बैरियर और आरएफआईडी की स्थापना की गई ताकि सुचारू संचालन और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। इस प्रकोष्ठ ने बूम बैरियर, आरएफआईडी रीडर, आरएफआईडी टैग/कार्ड, नियंत्रण पैनल, वायरिंग और अन्य आवश्यक उपकरणों की खरीद में योगदान दिया। फैंकल्टी/स्टाफ के वितरण के लिए एस्टेट कार्यालय को आरएफआईडी प्रदान किए गए हैं।

जीआईएस डोमेन में स्थानिक डेटा: जीआईएस डोमेन में, हम भारत के संरक्षित क्षेत्र नेटवर्क और जैव भौगोलिक क्षेत्रों/प्रातों का स्थानिक डेटाबेस बनाए रखते हैं और इसे संस्थान और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के साथ साझा करते हैं।

अनुसंधान परियोजनाओं में भू-सूचना विज्ञान का अनुप्रयोग: संस्थान की अधिकांश अनुसंधान परियोजनाओं में वन्यजीव अनुसंधान और संरक्षण के लिए जीआईएस, आरएस, जीपीएस, और मोबाइल ऐप्स का उपयोग किया जाता है। देश के राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव अभ्यारण्यों, संरक्षण आरक्षित क्षेत्रों और सामुदायिक आरक्षित क्षेत्रों की सीमाओं पर स्थानिक डेटाबेस विकसित करने का कार्य प्रगति पर है।

पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र

भारतीय वन्यजीव संस्थान का पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र छात्रों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और वन्यजीव प्रबंधकों जैसे विभिन्न उपयोगकर्ताओं की सूचना सम्बन्धी मांग को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है। इसे जैव विविधता के संरक्षण और प्रबंधन के लिए एक बहुआयामी सूचना और सीखने का संसाधन केंद्र के रूप में सेवा देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं: (i) भारत में प्रकाशित सभी वन्यजीव-संबंधित साहित्य को प्रसारित करने के लिए एक सूचना केंद्र के रूप में सेवा देना (ii) जैव विविधता संरक्षण और संबंधित क्षेत्रों पर सभी प्रासंगिक साहित्य का अधिग्रहण, संगठन और प्रसार करना (iii) सामान्य और विशेष पुस्तकालय और सूचना सेवाओं के माध्यम से उपयोगकर्ता की सेवा करना (iv) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचना के मुक्त प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए भारत और अन्य देशों में अन्य राष्ट्रीय सूचना प्रणालियों के साथ लिंक स्थापित करना और बनाए रखना (v) उपयोगकर्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में सेवा देना और (vi) ईआईसीएपी बुलेटिन और भारतीय वन्यजीव संस्थान के प्रकाशनों



के लिए विभिन्न विषयों पर ग्रंथ सूचियों का संकलन, प्रगति में अनुसंधान, अप्रकाशित शोध साहित्य जैसे थीसिस, शोध प्रबंध और वर्तमान सामग्री पर आवधिक अद्यतन/बुलेटिन जारी करना।

मुख्य पुस्तकालय के पीछे और पहली मंजिल पर क्रमशः 48 और 80 सीटों के साथ 'शोधकर्ताओं के कक्ष' नामक दो बैठने के स्थान मौजूद हैं।

लगभग 28,570 पुस्तकें, 9,372 मानचित्र और टोपोशीट, 8,352 से अधिक प्राचीन और दुर्लभ पत्रिकाओं की बाउंड वॉल्यूम, 104 सीडी और डीवीडी जो वन्यजीव साहित्य से संबंधित हैं, और 11,400 तक वैज्ञानिक लेखों का अच्छा संग्रह एल एंड डीसी पुस्तकालय द्वारा संग्रहीत किया गया है।

इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र बायोवन पैकेज के माध्यम से 250 से अधिक जर्नल्स के साथ-साथ फ्लैट साइंस के प्रिंट संस्करण और 'इंडियन फॉरेस्टर' के ऑनलाइन संस्करण तक पहुंच की क्षमता प्रदान करता है। पुस्तकालय संसाधन आरएफआईडी तकनीकों से सुसज्जित हैं और वेब-सेंट्रिक लाइब्रिस 10 (पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर) का उपयोग करके स्वचालित किए गए हैं।

पुस्तकालय सुविधा से जुड़े होने के कारण, उपयोगकर्ता सभी इन-हाउस डेटाबेस जैसे पुस्तकें, रिप्रिंट्स, भारतीय वन्यजीव सारांश, मानचित्र/टोपोशीट संग्रह, प्रेस क्लिपिंग्स, और विशेष ग्रंथ सूची डेटाबेस का उपयोग कर सकते हैं। एल एंड डीसी अपने उपयोगकर्ताओं को विभिन्न पुस्तकालय और सूचना सेवाएँ प्रदान करता है।

पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र के बुनियादी ढांचे और भौतिक संरचना को पुनर्गठित किया गया है। इस अवधि के दौरान लगभग 15,000 दस्तावेज जारी और परामर्श किए गए। लगभग 800 उपयोगकर्ताओं को वैल्यू एडेड सेवाध्वैयार संदर्भ सेवा प्रदान की गई।

बाहरी उपयोगकर्ताओं के 100 से अधिक प्रश्नों का उत्तर दिया गया और 2,000 से अधिक ग्रंथसूची संदर्भ प्रदान किए गए। इस अवधि के दौरान बाहरी उपयोगकर्ताओं को ई-डॉक्यूमेंट डिलीवरी सेवा भी प्रदान की गई। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान इन-हाउस डेटाबेस को नियमित रूप से अपडेट किया गया।

बाघ प्रकोष्ठ

विज्ञान आधारित समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से बाघ संरक्षण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के सहयोग से बाघ प्रकोष्ठ की स्थापना अप्रैल 2016 में भारतीय वन्यजीव संस्थान में की गई थी। पिछले वर्ष के दौरान प्रकोष्ठ की प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं:

- (i) देशव्यापी बाघों, सह-शिकारियों, शिकार और उनके आवास का आकलन: (i) एमएसट्राइप्स ढांचे में चरण। डेटा के व्यवस्थित संग्रह के लिए देश के 720 वन प्रभागों के लिए अनुकूलित शैपफाइल। (ii) भारत के लगभग 597 वन प्रभागों से चरण। डेटा का विश्लेषण करके बाघों, सह-शिकारियों और शिकार के लिए देशव्यापी अधिभोग और वितरण मानचित्र तैयार करना। (iii) चरण II में, बाघ अधिभोग और प्रचुरता को मॉडल करने के लिए दूरस्थ संवेदी डेटा से आवास विशेषताओं और मानव प्रभावों पर जानकारी प्राप्त किए गए। (iv) 32,588 कैमरा ट्रैप स्थानों के साथ 174 साइटों से प्राप्त लगभग 4.70 करोड़ कैमरा ट्रैप छवियों को संसाधित और विश्लेषण किया। (v) व्यक्तिगत पहचान के लिए एक्सट्रैक्टकंपेयर कार्यक्रम में 97,399 बाघ छवियों और 85,488 तेंदुए छवियों का विश्लेषण किया गया। इन छवियों से, 3,080 अद्वितीय बाघ और 6,889 अद्वितीय तेंदुए पहचाने गए। (vi) 'भारत में बाघों की स्थिति 2022' शीर्षक वाली सारांश रिपोर्ट को भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 9 अप्रैल 2023 को प्रोजेक्ट बाघ के 50 वर्षों के अवसर पर जारी किया गया। (vii) माननीय राज्य मंत्री, वन और जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार ने 29 जुलाई 2023 को विश्व बाघ दिवस के अवसर पर 'भारत में बाघों, सह-शिकारियों और शिकार की स्थिति 2022' शीर्षक वाली विस्तृत रिपोर्ट जारी की। (viii) 'भारत में तेंदुए की स्थिति, 2022' शीर्षक वाली व्यापक रिपोर्ट को भारत के माननीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री द्वारा 29 फरवरी 2024 को जारी किया गया। (ix) बाघों के लिए निगरानी प्रणाली: गहन सुरक्षा और पारिस्थितिक स्थिति (एमएसट्राइप्स): (i) क्षेत्र से प्राप्त कैमरा ट्रैप छवियों के भू-टैगिंग के लिए कैमरा ट्रैप डेटा रिपॉजिटरी और विश्लेषण उपकरण (कैट्राट) नामक एक छवि प्रसंस्करण सॉफ्टवेयर विकसित और उपयोग किया गया।
- (ii) एमएसट्राइप्स: (i) बाघ आरक्षित क्षेत्रों में एमएसट्राइप्स को लागू करने में समन्वय। (ii) बाघ आरक्षित क्षेत्रों के अलावा अन्य संरक्षित क्षेत्रों के लिए एमएसट्राइप्स प्रणाली का विकास और अद्यतन। (iii) एमएसट्राइप्स गश्ती और पारिस्थितिक मॉड्यूल के लिए बहुभाषी एंड्रॉइड मोबाइल अनुप्रयोगों को वैचारिक बनाना, डिजाइन करना और अनुकूलित करने में नियमित इनपुट प्रदान करना। (iv) उत्तरपूर्व, हिमालय और सुंदरबन में जटिल भूभाग के लिए एमएसट्राइप्स बहुभुज खोज मॉड्यूल ऐप विकसित किया गया।
- (iii) एनटीसीए द्वारा सौंपा गया अन्य तकनीकी कार्य : (i) राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के लिए बाघ परिदृश्यों में वन्यजीव मंजूरी (<100) के लिए विकास परियोजनाओं का मूल्यांकन।
- (iv) बाघों के कैमरा ट्रैप फोटोग्राफ्स के लिए राष्ट्रीय भंडार: (i) प्रकोष्ठ में राष्ट्रीय बाघ फोटो डेटाबेस लाइब्रेरी के तहत 80,000 से अधिक बाघ फोटोग्राफ्स बनाए गए हैं। राष्ट्रीय बाघ आकलन, 2022 के हिस्से के रूप में प्राप्त नए बाघ फोटोग्राफ्स को संग्रहीत किया गया है और उन्हें भटकने वाले बाघ और जब्त किए गए बाघ की खाल के स्रोत को ट्रैक करने के लिए उपयोग किया जाता है। (ii) बाघ के शव और जब्त किए गए बाघ की खाल की तस्वीरों का मिलान किया जाता है और बाघों की पहचान सुनिश्चित की जाती है, साथ ही उनकी फोटो-कैप्चर इतिहास और जानकारी को एनटीसीए और राज्य वन विभागों के साथ साझा किया जाता है।

(v) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण: एनटीसीए, भारत सरकार और राज्य वन विभागों को अनुसंधान और तकनीकी सहायता: (i) पूरे देश के बाघ परिदृश्यों में विकास परियोजनाओं पर लगभग 28 प्रस्तावों का मूल्यांकन और राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति के लिए एनटीसीए और वन्यजीव विभाग, एमओईएफसीसी को रिपोर्ट्स संप्रेषित की गई। (ii) अनुसंधान परियोजनाओं की निगरानी (a) कान्हा में बाघ, सह-शिकारियों और शिकार की गहन निगरानी, (b) पलामू बाघ रिजर्व, झारखंड में बाघ गलियारे की व्यवहार्यता और बाघ और शिकार की स्थिति, (c) राजाजी-कॉर्बेट बाघ रिजर्व, उत्तराखंड में बाघों की वहन क्षमता, (d) रामगढ़ विशधारी और मुकुंदरा हिल्स बाघ रिजर्व की दीर्घकालिक पारिस्थितिक निगरानी, (e) मुकुंदरा हिल्स बाघ रिजर्व में संरक्षित क्षेत्रों के पुनर्निर्माण के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान अध्ययन। (iii) क्षमता निर्माण के संबंध में एनटीसीए और लेपर्ड राष्ट्रीय उद्यान, रूस के बीच समझौता ज्ञापन के हिस्से के रूप में, बाघ प्रकोष्ठ ने रूस के लेपर्ड नेशनल पार्क से अमूर बाघ और अमूर तेंदुए के डेटा की तैयारी और विश्लेषण की निगरानी की। यहाँ बायोलॉजिस्ट को ओपन कैचर-मार्क रिकैचर विश्लेषण और पीएचवीए मूल बातें में प्रशिक्षण भी प्रदान किया। (iv) डॉ. साकेत आनंद, आईआईटी दिल्ली के सहयोग से, हमने रूस के लेपर्ड नेशनल पार्क के लिए एआई-आधारित प्रजाति पृथक्करण सॉफ्टवेयर तैयार किया। (v) एनटीसीए द्वारा आयोजित समीक्षा बैठकों, तकनीकी समिति बैठकों, मुख्य वन्यजीव वार्डन बैठकों और क्षेत्र निदेशकों की बैठकों में नियमित इनपुट प्रदान किए जाते हैं। (vi) भारतीय वन्यजीव संस्थान के पीजी डिप्लोमा, प्रमाणपत्र, एम.एससी., पीएचडी पाठ्यक्रमों में नियमित इनपुट। (vii) भारतीय वन्यजीव संस्थान में आगंतुक कक्षाओं के लिए नियमित इनपुट प्रदान किये।

उपलब्धियाँ: (i) 'भारत में बाघों, सह-शिकारियों, और शिकार की स्थिति 2022' पर व्यापक रिपोर्ट तैयार की गई, जो दुनिया के सबसे बड़े कैमरा ट्रैप सर्वेक्षण पर आधारित है। इसमें भारत में बाघों



प्रोजेक्ट टाईगर के 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 9 अप्रैल, 2023 को बाघ स्थिति रिपोर्ट, माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा जारी किया गया।

और संबंधित प्रजातियों की नवीनतम स्थिति को दर्शाया गया है। (ii) 'भारत में तेंदुओं की स्थिति 2022' पर व्यापक रिपोर्ट तैयार की गई, जिसमें भारत में तेंदुओं की नवीनतम स्थिति प्रस्तुत की गई और प्रजातियों के सामने आने वाली संरक्षण मुद्दों को उजागर किया गया।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 9 अप्रैल 2023 को प्रोजेक्ट बाघ के 50 वर्षों के अवसर पर बाघ स्थिति रिपोर्ट 2022 जारी किया गया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून में 'पशमीना प्रमाणन केंद्र' की स्थापना

भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री के प्रेरणा और पहल से, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ने 05



EPCH
Export Promotion Council
for Handicrafts
Connecting. Empowering. Transforming.



जनवरी 2023 को नई दिल्ली के हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के साथ 'पशमीना प्रमाणन केंद्र' स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से, ईपीसीएच ने पशमीना व्यापार में संलग्न अपने सहयोगियों के लिए एक पशमीना प्रमाणन केंद्र स्थापित करने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान के साथ सहयोग किया। ईपीसीएच ने व्यापारियों से पशमीना खेपों की निरंतर आपूर्ति का आश्वासन दिया है। ईपीसीएच ने स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी की खरीद शुरू की है, जिसे विश्लेषण उद्देश्यों के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान में स्थानांतरित किया जाएगा। इसका उद्घाटन 19 मई 2023 को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव द्वारा औपचारिक रूप से किया गया था, जिसमें पहले अद्वितीय आईडी बारकोड को टैग किया गया और एक पीसीसी प्रमाण पत्र जारी किया गया।



पीसीसी ने केंद्र के संचालन के लिए 4 लाइट माइक्रोस्कोप और अन्य संबंधित सुविधाएं खरीदी हैं और इसके नियमित संचालन के लिए विभिन्न स्तरों पर 11 पेशेवरों को नियुक्त किया है। इस प्रयोगशाला का उद्देश्य पश्मीना व्यापार को सुव्यवस्थित करना और संबंधित निर्माताओं, निर्यातकों और व्यापारियों को वास्तविक पश्मीना उत्पादों को प्रमाणित करने के लिए एक वन-स्टॉप परीक्षण सुविधा प्रदान करना है। सभी परीक्षण किए गए उत्पादों को एक अद्वितीय पहचान टैग के साथ चिह्नित किया जाएगा और व्यक्तिगत ई-प्रमाण पत्र जारी किए जाएंगे, जिससे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में ऐसे उत्पादों का निरंतर व्यापार संभव हो सके। देश में ऐसी सुविधा के अभाव में, व्यावसायिक ऊनी उत्पाद देश के निकास बिंदुओं पर जांच के अधीन होते हैं, जिससे मंजूरी में देरी होती है और संबंधित विलंब शुल्क और वित्तीय/व्यवसायिक नुकसान होता है। देहरादून में भारतीय वन्यजीव संस्थान में पीसीसी वास्तविक पश्मीना उत्पादों के व्यापार में संलग्न प्रामाणिक निर्यातकों और व्यापारियों की सहायता करता है। भारत में ऐसी सुविधा स्थापित करने से प्रामाणिक प्रमाणन के साथ वास्तविक पश्मीना उत्पादों के निरंतर व्यापार के लिए यह एक गेम चेंजर होगा।

केन्द्र सरकार की नीति के अनुरूप, यह एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल पर आधारित सुविधा है, जो प्रमाणित और वास्तविक पश्मीना उत्पादों को बेचने के लिए प्रामाणिकता प्रमाणपत्र प्राप्त करने में पश्मीना व्यापारियों की सहायता करती है। इस समझौता ज्ञापन के तहत, उन्नत तकनीकों को एक एकल सुविधा में रखा गया है, जो पश्मीना परीक्षण प्रक्रियाओं का समर्थन करती है। यह एक सरकारी संगठन में आत्मनिर्भर और राजस्व-सृजन सुविधा का उदाहरण है, जो संबंधित निर्यातकों और व्यापारियों को भुगतान के आधार पर समर्थन करती है।

इस सुविधा ने पीपीपी मॉडल पर उभरते पेशेवरों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न किए हैं। यह खरीदारों को प्रमाणित और प्रमाणित पश्मीना उत्पादों को खरीदने में मदद करेगा। आगे, इससे निषिद्ध फाइबर के उपयोग को हतोत्साहित किया जाएगा, जिससे तिब्बती मृग (चिरु) का संरक्षण होगा। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान पीसीसी ने 6,000 से अधिक शॉल की 24 खेपों की जांच की है।

वन्यजीव स्वास्थ्य सेवाएं

रणथंभौर में बाघों को पकड़ना और अन्य अभ्यारण्यों में स्थानांतरण करने में तकनीकी सहायता, 31 जुलाई 2023 से 5 अगस्त 2023 और 8-13 अगस्त 2023.

जनसंख्या वृद्धि अभ्यास के हिस्से के रूप में, राजस्थान वन विभाग ने राजस्थान के विभिन्न अभ्यारण्यों में बाघ जनसंख्या को पूरकवृद्धि करने के लिए एक परियोजना शुरू की। रणथंभौर से अन्य अभ्यारण्यों में बाघों को पकड़ना और स्थानांतरण में तकनीकी सहायता भारतीय वन्यजीव संस्थान से मांगी गई। डॉ. पराग निगम, वैज्ञानिक-जी ने रणथंभौर से रामगढ़ विषधारी बाघ रिजर्व और मुकुंदरा बाघ रिजर्व तक दो बाघियों को पकड़ने और स्थानांतरण में तकनीकी सहायता प्रदान की। फील्ड ऑपरेशन जुलाई और अगस्त 2023 के दौरान किया गया और दो बाघियों को सफलतापूर्वक रामगढ़ विषधारी बाघ रिजर्व और मुकुंदरा बाघ रिजर्व में पूरक किया गया।

बाघिन को सफलतापूर्वक निष्क्रिय किया गया, कॉलर लगाया गया, और अभ्यारण्य में छोड़ा गया, नवेगांव



नागझीरा बाघ रिजर्व, महाराष्ट्र, 17-20 मई 2023.

नवेगांव नागझीरा बाघ रिजर्व, महाराष्ट्र में जनसंख्या वृद्धि अभ्यास के हिस्से के रूप में, दो बाघियों को सफलतापूर्वक निष्क्रिय किया गया, कॉलर लगाया गया, और अभ्यारण्य में छोड़ा गया। फील्ड ऑपरेशन महाराष्ट्र वन विभाग और भारतीय वन्यजीव संस्थान की टीम द्वारा किया गया। डॉ. पराग निगम, वैज्ञानिक-जी और डॉ. बिलाल हबीब, वैज्ञानिक-एफ ने फील्ड ऑपरेशन का नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप दो बाघियों को नवेगांव नागझीरा बाघ रिजर्व में सफलतापूर्वक छोड़ा गया।



गौर, बोस गॉरस गॉरस का कान्हा बाघ रिजर्व और सतपुड़ा बाघ रिजर्व से संजय बाघ रिजर्व में पुनर्स्थापन, 1-7 जून 2023 और 26-30 जून 2023.

मध्य प्रदेश वन विभाग और भारतीय वन्यजीव संस्थान के बीच सहयोगी पहल के हिस्से के रूप में, कुल 50 गौर, बोस गॉरस गॉरस को कान्हा बाघ रिजर्व और सतपुड़ा बाघ रिजर्व से संजय



बाघ अभ्यारण में पुनर्स्थापन के लिए योजना बनाई गई थी। इस परियोजना में स्रोत जनसंख्या से गौर और झुंडों की पहचान करना, उनके स्वास्थ्य का आकलन करना, और उन्हें पकड़कर संजय बाघ रिजर्व में स्थानांतरित करना शामिल था। भारतीय वन्यजीव संस्थान और वन्यजीव फॉरेंसिक और स्वास्थ्य स्कूल, एनडीवीएसयू, जबलपुर की टीम ने कान्हा बाघ रिजर्व और सतपुड़ा बाघ रिजर्व में गहन नमूना संग्रहण के माध्यम से विस्तृत स्वास्थ्य आकलन किया और परजीवी विविधता और भार के साथ-साथ चयनित संक्रामक रोगों के लिए प्रयोगशाला विश्लेषण किया। परिणामों के आधार पर, केवल स्वस्थ झुंडों की पहचान की गई और गौरों को पकड़कर संजय बाघ रिजर्व में स्थानांतरित किया गया। 1-7 जून 2023 और 26-30 जून 2023 के बीच कान्हा बाघ रिजर्व से 28 गौर और सतपुड़ा बाघ रिजर्व से 16 गौर पकड़े गए और संजय डुबरी टीआर में स्थानांतरित किए गए।

‘नैनीताल जिले में भीमताल के पास के क्षेत्रों में मानव हानि के लिए जिम्मेदार जानवर की पहचान पर टिप्पणियाँ’ पर रिपोर्ट, 26 दिसंबर 2023.

माननीय उत्तराखंड उच्च न्यायालय द्वारा स्वप्रेरित डब्ल्यूपीपीआईएल 218/2023 में पारित आदेश के अनुसार और पीसीसीएफ (वन्यजीव) और मुख्य वन्यजीव वार्डन, उत्तराखंड के पत्र संख्या 16466-28 दिनांक 21 दिसंबर 2023 के अनुरोध के आधार पर, ‘नैनीताल जिले में भीमताल के पास के क्षेत्रों में मानव हानि के लिए जिम्मेदार जानवर की पहचान पर टिप्पणियाँ’ शीर्षक वाली रिपोर्ट 26 दिसंबर 2023 को प्रस्तुत की गई।

अन्य गतिविधियाँ

‘संजय बाघ रिजर्व में गौर का पुनर्स्थापन: एक सफल प्रयास’ शीर्षक से एक फिल्म बनाई गई, जो संजय बाघ रिजर्व, मध्य प्रदेश में गौर की स्थापना शीर्षक परियोजना के तहत किए गए कार्य पर आधारित थी और यूट्यूब पर होस्ट की गई (<https://www->



[youtube.com/watch?v=y357ccCIkxA](https://www.youtube.com/watch?v=y357ccCIkxA))।

‘संजय बाघ रिजर्व में शानदार गौर की वापसी: एक सफलता की कहानी’ शीर्षक से एक इन-हाउस फिल्म बनाई गई और यूट्यूब पर होस्ट की गई (<https://www.youtube.com/watch?v=>



[Cjp85qTIOr0&t=174s](https://www.youtube.com/watch?v=Cjp85qTIOr0&t=174s))। यह फिल्म संजय टाइगर रिजर्व, म.प्र. में गौर की स्थापना परियोजना का हिस्सा थी, जिसे भारतीय वन्यजीव संस्थान ने मध्य प्रदेश वन विभाग के साथ साझेदारी में किया। इस वृत्तचित्र में न केवल गौर पुनर्स्थापन की यात्रा को दर्शाया गया है, बल्कि हमारे प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण के महत्व को भी उजागर किया गया है। यह मानव और वन्यजीव के बीच के नाजुक संतुलन को दर्शाता है और हमें अपनी समृद्ध जैव विविधता की रक्षा और संरक्षित करने की जिम्मेदारी की याद दिलाता है। आइए इस प्रक्रिया के दौरान सामने आई जीत और चुनौतियों से प्रेरित हों और इसे सहयोग की शक्ति और प्रजातियों की पुनर्प्राप्ति पहलों के माध्यम से पारिस्थितिक संतुलन को बहाल करने की हमारी क्षमता का एक प्रमाण बनने दें।

‘संजय बाघ रिजर्व में गौर का पुनर्प्रतिष्ठान: यात्रा अनावरण’ शीर्षक से एक प्रारंभिक फिल्म, जिसे ‘संजय बाघ रिजर्व में गौर की



पुनर्स्थापन’ शीर्षक सहयोगी परियोजना के हिस्से के रूप में भारतीय वन्यजीव संस्थान-एमपीएफडी द्वारा किए गए प्रयासों पर आधारित इन-हाउस बनाई गई और यूट्यूब (<https://www.youtube.com/watch?v=AGek3dPC9SE&t=344s>) पर होस्ट की गई।

भारतीय वन्यजीव संस्थान में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ, 22 मार्च 2024.

संस्थान में 22 मार्च 2024 को एक आधिकारिक भाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के डीन डॉ. रुचि बडोला और रजिस्ट्रार डॉ. एस. सत्यकुमार सहित संस्थान के

27 अधिकारी और कर्मचारी कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यशाला का विषय था 'सरकारी कामकाज में हिंदी की अनिवार्यता'। डॉ. रुचि बडोला ने इस विषय पर एक रोचक व्याख्यान दिया और सरकारी कामकाज को यथासंभव हिंदी में करने के निर्देश दिए गए। रजिस्ट्रार ने प्रतिभागियों को हिंदी की आवश्यकता पर मार्गदर्शन दिया।

पर्यावरण प्रभाव आकलन प्रकोष्ठ

डॉ. गोपी जी.वी., वैज्ञानिक-एफ ने पूर्वोत्तर भारत के प्राइमेट रिसर्च सेंटर को कुछ विशिष्ट स्थानों पर गोल्डन लंगूर की गति को बढ़ाने के लिए सड़क ओवरपास के रूप में कृत्रिम चंदवा पुल स्थापित करने के लिए तकनीकी इनपुट प्रदान किए।

पर्यावरण सूचना जागरूकता क्षमता निर्माण और आजीविका कार्यक्रम

ईआईएसीपी केंद्र संसाधन भागीदार 'वन्यजीव और संरक्षित क्षेत्र', भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, जिसे पहले ईएनवीआईएस के रूप में जाना जाता था, सितंबर 1997 में भारत में 23वें पर्यावरण सूचना प्रणाली केंद्र के रूप में स्थापित किया गया था। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र 'वन्यजीव और संरक्षित क्षेत्र', भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया:

विश्व पर्यावरण दिवस प्रश्नोत्तरी, देहरादून, 5 जून 2023.

ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र और एम.एस.सी. (वन्यजीव विज्ञान) टीम ने मिलकर विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के लिए एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। विजेताओं को भारतीय वन्यजीव संस्थान के निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया।



मिशन लाइफ कार्यक्रम का आयोजन 59वीं वार्षिक बैठक उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ सम्मेलन, कोयंबटूर, तमिलनाडु, 6 जुलाई 2023.

उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ ने कोयंबटूर में अपनी 59वीं वार्षिक बैठक सम्मेलन आयोजित की, जिसका नेतृत्व डॉ. के. रमेश, वैज्ञानिक-एफ ने किया। बैठक का उद्देश्य उन वैज्ञानिकों के योगदान को सम्मानित और मनाना था, जिनके कार्यों ने उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण में दीर्घकालिक रूप से महत्वपूर्ण प्रगति की है। इस कार्यक्रम के दौरान, ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने स्कूल छात्रों को मिशन लाइफ के तहत सात विभिन्न विषयों पर जानकारी देने के लिए एक मिशन लाइफ कार्यक्रम आयोजित किया। कुल 500 स्कूल

छात्रों ने सम्मेलन के दौरान मिशन लाइफ की शपथ ली।

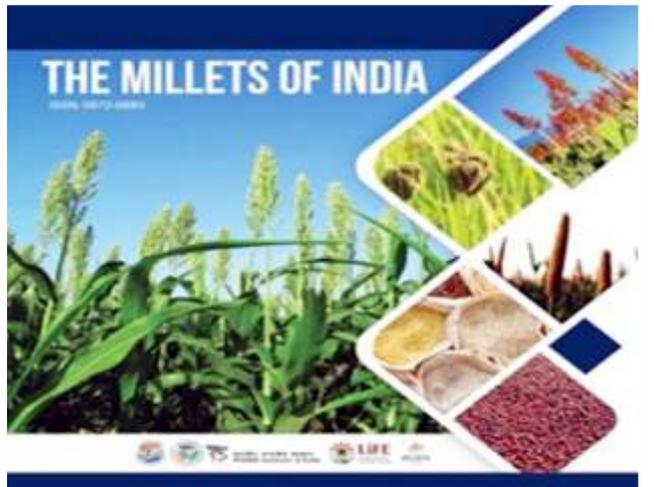
भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी बुलेटिन 'भारत के बाघ अभ्यारण्यों की चित्रमय प्रोफाइल' का विमोचन, कॉर्बेट बाघ रिजर्व, 29 जुलाई 2023.

भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून में ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र ने भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी बुलेटिन 'भारत के बाघ अभ्यारण्यों की चित्रमय प्रोफाइल' प्रकाशित किया, जिसे माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस, 29 जुलाई 2023 को कॉर्बेट बाघ रिजर्व में जारी किया। बुलेटिन में भारत के 53 बाघ अभ्यारण्यों की स्थिति के बारे में राज्यवार प्रोफाइल प्रदान की गई है, जो वन्यजीव शोधकर्ताओं के लिए एक मूल्यवान पुस्तिका बन गई है। प्रत्येक राज्य के प्रोफाइल में कुल, कोर और बफर क्षेत्रों का अनुमान, वर्तमान बाघ जनसंख्या, बाघ अभ्यारण्य जैव विविधता, राजपत्र अधिसूचनाएं और प्रत्येक अभ्यारण्य के भूमि कवर मानचित्र शामिल हैं।



ईआईएसीपी बुलेटिन 'भारत के मिलेट्स' का विमोचन

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023 की मान्यता में, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र ने ईआईएसीपी बुलेटिन 'भारत के मिलेट्स' को प्रकाशित किया, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा नामित अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023 को स्मरण करता है। इस प्रकाशन में भारत में पाए जाने वाले सभी प्रकार के मिलेट्स का संक्षिप्त अवलोकन, उनके लाभ और पोषण मूल्य प्रदान किए गए हैं।



अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस, 11 दिसंबर 2023

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस को एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में अपनाया। 2023 के लिए विषय था 'पर्वत पारिस्थितिकी तंत्र का पुनर्स्थापन'। पर्वत जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से ग्रस्त हैं। नतीजतन, अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को उनकी जैव विविधता की रक्षा के लिए कदम उठाने की एक आवश्यक याद दिलाता है। इन शानदार परिदृश्यों और उनकी समृद्ध जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान के ईआईएसीपी केंद्र ने अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाने के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में ग्राफिक एरा डीमंड यूनिवर्सिटी, देहरादून, दून विश्वविद्यालय, देहरादून, भारतीय वन्यजीव संस्थान के संकाय और कर्मचारी सहित 52 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।



विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाने के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, आसन आर्द्रभूमि संरक्षण रिजर्व, 2 फरवरी 2024

भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के ईआईएसीपी केंद्र ने उत्तराखंड वन विभाग, चकराता डिवीजन, कालसी के सहयोग से स्थानीय स्कूल के बच्चों के लिए शिशु विद्या मंदिर, ढालीपुर के छात्रों के लिए विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाने के लिए एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य आर्द्रभूमि के मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। 38 प्रतिभागियों ने अपने दृष्टिकोण को कला के माध्यम से व्यक्त करते हुए अपनी कलात्मक प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय समुदाय, स्कूल के बच्चों, चकराता वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी, वन प्रशिक्षुओं, पर्यावरण प्रेमियों, और प्रतिष्ठित स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों से उत्साही भागीदारी मिली।



प्रकृति यात्रा और स्वच्छता अभियान, आसन आर्द्रभूमि संरक्षण रिजर्व, 2 फरवरी 2024.

आसन आर्द्रभूमि संरक्षण रिजर्व में विश्व आर्द्रभूमि दिवस के उत्सव के रूप में एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में प्रकृति यात्रा और स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। 70 से अधिक प्रतिभागियों, जिनमें वन अधिकारी, वन रक्षक प्रशिक्षु, कर्मचारी, स्कूल के छात्र, शिक्षक, और भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी केंद्र के अधिकारी शामिल थे, ने इन गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसका नेतृत्व रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर और वन दरोगा प्रशिक्षुओं के द्वारा किया गया। स्वच्छता अभियान ने साफ प्राकृतिक स्थानों, विशेष रूप से आसन बैराज के आसपास के महत्व पर जोर दिया। इस पहल का उद्देश्य प्रतिभागियों के बीच पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।

स्वच्छता अभियान के बाद, बच्चों के लिए एक प्रकृति यात्रा का आयोजन किया गया, जो आसन बैराज में प्रवासी पक्षियों के महत्व पर केंद्रित था। इस परस्पर संवादात्मक अनुभव ने प्रतिभागियों को आर्द्रभूमि की समृद्ध जैव विविधता और उनके आवास की सुरक्षा के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की। दिन का समापन एक निबंध लेखन प्रतियोगिता के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने आर्द्रभूमि संरक्षण पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में अपने धैर्य और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।



निबंध लेखन प्रतियोगिता, आर्य इंटर कॉलेज, सुभाष नगर, देहरादून, 2 फरवरी 2024

भारतीय वन्यजीव संस्थान के ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र ने आर्य इंटर कॉलेज, सुभाष नगर के छात्रों के लिए आर्द्रभूमि और उनके मानव और पर्यावरण के लिए महत्व के विषय पर एक निबंध लेखन



प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस कार्यक्रम ने छात्रों को आर्द्रभूमि संरक्षण पर अपनी समझ और दृष्टिकोण व्यक्त करने का एक मंच प्रदान किया। श्री ज्योति प्रसाद नौटियाल, कार्यक्रम अधिकारी, ईआईएसीपी-भारतीय वन्यजीव संस्थान ने छात्रों को दिन के महत्व और हमारी आर्द्रभूमियों को कैसे बचाया जा सकता है और कैसे हम दूसरों को प्रकृति के लिए ऐसा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, के बारे में बताया। उच्च स्तर की भागीदारी और प्रस्तुत निबंधों की गुणवत्ता ने कार्यक्रम की सफलता को दर्शाया, जिसमें विजेताओं को प्रमाणपत्र और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाने के लिए, 2 फरवरी 2024.

भारतीय वन्यजीव संस्थान के ईआईएसीपी कार्यक्रम केंद्र ने भी एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें 789 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपनी भागीदारी के लिए



ई-प्रमाण पत्र प्राप्त किया। आर्द्रभूमियों पर इस ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन करने का उद्देश्य छात्रों और भारत के नागरिकों के बीच आर्द्रभूमियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।

ग्रेट बैकयार्ड बर्ड काउंट के तहत कैंपस पक्षी गणना, 16-19 फरवरी 2024.

ग्रेट बैकयार्ड बर्ड काउंट एक वार्षिक, चार दिवसीय कार्यक्रम है जो दुनिया भर के सभी उम्र के पक्षी प्रेमियों को शामिल करता है। जीबीबीसी के दौरान, प्रतिभागी अपने-अपने स्थानों पर पक्षियों की गणना करते हैं और अपने अवलोकनों को जीबीबीसी वेबसाइट या मोबाइल ऐप के माध्यम से जमा करते हैं। यह सामूहिक प्रयास विभिन्न क्षेत्रों में पक्षी आबादी और वितरण का एक वास्तविक समय का स्नैपशॉट बनाता है। जीबीबीसी वैज्ञानिकों और संरक्षणवादियों को पक्षी प्रवास पैटर्न, आबादी के रुझान और पक्षी प्रजातियों के समग्र स्वास्थ्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। यह प्रकृति से जुड़ने और नागरिक विज्ञान प्रयासों में योगदान करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने वाली एक रोचक शैक्षिक गतिविधि के रूप में भी कार्य करता है। 16-19 फरवरी 2024 के तहत महान ग्रेट बैकयार्ड बर्ड काउंट में, भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी केंद्र संस्थान के परिसर में कैंपस पक्षी गणना का आयोजन करता है - छात्रों, शोधकर्ताओं, और कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

मिशन लाइफ और ईआईएसीपी गतिविधियाँ प्रदर्शनी स्टाल, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 18 मार्च 2024.

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने एक महत्वपूर्ण पहल के तहत 18 मार्च

2024 को 'मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवनशैली)' पर एक जागरूकता और प्रदर्शनी कार्यक्रम की मेजबानी की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न ईआईएसीपी केंद्रों जैसे भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया, एफआरआई-ईआईएसीपी, और पंजाब ईआईएसीपी केंद्र के सहयोग से छात्र समुदाय को सतत और पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली विकल्पों के प्रति संवेदनशील और प्रेरित करना था। कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने मिशन लाइफ कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जो पर्यावरण प्रबंधन के प्रति उत्साह और प्रतिबद्धता का संकेत देता है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो. सोमनाथ सचदेवा के उद्घाटन भाषण से हुआ, जिसमें हमारे दैनिक जीवन में पर्यावरण चेतना को एकीकृत करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर जोर दिया गया। उद्घाटन के बाद, प्रो. सोमनाथ ने प्रदर्शनी स्टालों का दौरा किया। प्रत्येक स्टाल, जिसमें भाग लेने वाले ईआईएसीपी केंद्रों द्वारा पोस्टर, इन्फोग्राफिक्स, बुलेटिन और अन्य प्रकाशन शामिल थे, ने उनके हालिया शोध, मिशन लाइफ के तहत आउटरीच प्रयासों को प्रदर्शित किया।

मिशन लाइफ की शपथ ली गई थी, जिसे सभी छात्रों ने लिया, अपने जीवन में पर्यावरणीय स्थिरता का समर्थन करने वाली जीवनशैली को अपनाने की प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए। 1,500 से अधिक छात्रों ने मिशन लाइफ की शपथ ली। इस उद्देश्य में सक्रिय भागीदारी का प्रतीक, एक मैराथन रैली का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों और संकाय के उत्साही भागीदारी देखी गई, जो पर्यावरण जागरूकता के लिए एकत्रित हुए थे। भारतीय वन्यजीव संस्थान-ईआईएसीपी केंद्र ने आउटरीच पहलों, प्रकाशनों, ग्रीन स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम कोर्स और मिशन लाइफ के तहत विभिन्न गतिविधियों पर एक प्रस्तुति प्रस्तुत की। प्रस्तुति ने पर्यावरण संरक्षण और सतत जीवन को बढ़ावा देने के लिए केंद्र द्वारा किए गए प्रयासों का व्यापक अवलोकन प्रदान किया।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम ने शैक्षिक समुदाय के भीतर पर्यावरण चेतना की संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम को चिह्नित किया। प्रो. सोमनाथ ने सिफारिश की कि ऐसी पहलें विश्वविद्यालय कैलेंडर पर एक नियमित फीचर बनें, छात्रों की पर्यावरणीय मुद्दों में निरंतर सहभागिता को प्रोत्साहित करते हुए और भविष्य में अधिक ईआईएसीपी केंद्रों के साथ सहयोग की संभावनाएँ भी विकसित हों। इस विशेषज्ञता को शैक्षिक अनुभव को समृद्ध करने और छात्रों को पर्यावरणीय प्रबंधन के राजदूत के रूप में तैयार करने के लिए उपयोग किया जाए।

परिसर विकास

गंगा भवन के सामने सीमेंट कंक्रीट सड़क निर्माण का कार्य, संस्थागत ब्लॉक में शौचालयों का नवीनीकरण ब्लॉक। और ब्लॉक III में प्रकार - IV, V, III और प्रकार II क्वार्टरों में बिटुमिनस



रोड सरफेस कारपेटिंग का काम कैंटीन रोड और खेल मैदान सड़क, ब्लॉक I और IV में एमएस ग्रिल के साथ ईट की सीमा दीवार का निर्माण प्रकार II, III, IV और V क्वार्टरों में आंतरिक और बाहरी फिनिशिंग (पेंटिंग) कार्यय और प्रशासन ब्लॉक, शिक्षण ब्लॉक, नया संस्थागत ब्लॉक, पुस्तकालय, सभागार हॉल, पुराना छात्रावास, नया छात्रावास और अतिथि गृह में बाहरी फिनिशिंग (पेंटिंग) का काम रिपोर्टिंग अवधि के दौरान पूरा किया गया है। ब्लॉक III में स्मारिका दुकान और ईट की सीमा दीवार का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

भारतीय वन्यजीव संस्थान—श्रेणी 2 केंद्र

मिशन और उद्देश्य

केंद्र का मिशन एशिया और प्रशांत क्षेत्र में विश्व धरोहर सम्मेलन के कार्यान्वयन को मजबूत करना है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक धरोहर स्थल के पंजीकरण, संरक्षण, प्रबंधन, अनुसंधान, सूचना प्रसार और नेटवर्क निर्माण में शामिल सभी पेशेवरों और निकायों की क्षमता को बढ़ाना है। समग्र उद्देश्य प्राकृतिक धरोहर संरक्षण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना है, जिसका उद्देश्य (i) क्षेत्र में प्राकृतिक विश्व धरोहर के प्रबंधन में क्षमताओं को मजबूत करने में योगदान देना, (ii) एशिया और प्रशांत क्षेत्र की संपत्तियों के विश्व धरोहर सूची में अधिक संतुलित प्रतिनिधित्व को प्राप्त करना, (iii) आम जनता और विशेष रूप से युवाओं में प्राकृतिक विश्व धरोहर के महत्व और इसकी रक्षा की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाना, और (iv) प्राकृतिक विश्व धरोहर पहलों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है।

2023–24 के दौरान की गई गतिविधियाँ

क्षमता निर्माण कार्यक्रम और आउटरीच:

- नेचुरल हेरिटेज सत्र, आईसीसीओएन सम्मेलन, मैसूर, 9–11 अप्रैल 2023
- विश्व धरोहर दिवस, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 18 अप्रैल 2023
- मिशन लाइफ कार्यक्रम, 5 मई – 5 जून 2023
- अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता सम्मेलन पर मॉड्यूल, आईएफएस अधिकारी, भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून, 23 अगस्त 2023
- हेरिटेज मैनेजमेंट में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, 7 अगस्त – 15 सितंबर 2023
- संयुक्त राष्ट्र वन मंच, एफआरआई देहरादून में भागीदारी, 26–27 अक्टूबर 2023
- विश्व प्राकृतिक धरोहर स्थल प्रबंधक बैठक राउंड-फ्लू भूमिका, जिम्मेदारियां और साझेदारी, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, राजस्थान, 27–28 अक्टूबर 2023
- शिक्षकों के बीच शिक्षा, जागरूकता और नेटवर्क निर्माण के माध्यम से प्राकृतिक धरोहर, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, राजस्थान, 29 अक्टूबर 2023

- विश्व धरोहर नामांकन के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम, भेड़ाघाट—लमेताघाट के लिए एमपीटीबी स्टाफ, वन और पर्यटक गाइड, 6–7 नवंबर 2023
- एशियाई रेंजर फोरम सत्र, गुवाहाटी, असम, 5–8 दिसंबर 2023
- उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य की निगरानी पर, फ्रंटलाइन स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान, सजनेखाली, सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान, 11–12 दिसंबर 2023
- अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार, एशिया—प्रशांत में धरोहर: प्रकृति, संस्कृति और विश्व धरोहर सम्मेलन, 18 दिसंबर 2023
- पर्यटन और प्राकृतिक धरोहर संरक्षण में नागरिक समाज की भूमिका, 29–31 जनवरी 2024
- यूनेस्को विश्व धरोहर की घोषणा के लिए क्षमता निर्माण, मंगलुरु/कार्कला, 5–9 फरवरी 2024
- नेचरएँस कोरसरू: काजीरंगा और उससे परे से धरोहर कथाएँ, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, 12–13 फरवरी 2024
- प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, 19 फरवरी – 15 मार्च 2024

पहचान किए गए विश्व धरोहर प्राथमिकता मुद्दों पर अनुसंधान गतिविधियाँ:

- केइबुल लामजाओ संरक्षण क्षेत्र, मणिपुर विश्व धरोहर नामांकन डोजियर की तैयारी, जून 2023
- कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान विश्व धरोहर पंजीकरण प्रक्रिया पर परामर्श बैठक, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, 12 जून 2023
- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के लिए आईयूसीएन प्रतिक्रियाशील निगरानी मिशन की रिपोर्ट, जुलाई 2023
- आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची बैठक, जकार्ता, 16 अगस्त 2023
- आईसीओएमओएस महासभा, सिडनी, 1–9 सितंबर 2023
- संरक्षण रिपोर्टों की स्थिति की समीक्षा और विश्व धरोहर समिति के 45वें सत्र के लिए नामांकन डोजियर, रियाद, 10–25 सितंबर 2023
- एशिया और प्रशांत क्षेत्र के लिए त्रिचक्र विश्व धरोहर आवधिक रिपोर्टिंग पर हेरिटेज एशिया—प्रशांत चोट, वर्चुअल बैठक, 18 अक्टूबर 2023।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान—सी2सी और भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के बीच ज्ञान—साझाकरण बैठक, वर्चुअल बैठक, 18 अक्टूबर 2023
- भारतीय वन्यजीव संस्थान—सी2सी और एएसआई के बीच बैठक, नई दिल्ली, 1 नवंबर 2023
- आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची बैठक, वर्चुअल, 6 दिसंबर 2023

- भूवैज्ञानिक विरासत स्थलों और भू-उद्यानों की विश्व धरोहर पंजीकरण पर भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के साथ बैठक, 14 दिसंबर 2023
- धाला क्रेटर, मध्य प्रदेश और लोनार क्रेटर, महाराष्ट्र में पुनरुसर्वेक्षण, 16-19 जनवरी 2024
- रामगढ़ क्रेटर यात्रा, 29 अक्टूबर 2023
- प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थलों की संरक्षण रिपोर्टों की स्थिति का मूल्यांकन, नवंबर 2023 – जनवरी 2024

विश्व धरोहर हितधारकों और विशेषज्ञ विनिमयों के साथ समन्वित गतिविधियाँ:

- यूनेस्को उप-क्षेत्रीय सम्मेलन में विश्व धरोहर और जलवायु परिवर्तन सत्र, भोपाल, 17-18 अप्रैल 2023
- विश्व धरोहर स्वयंसेवक कार्यक्रम, सिक्किम, 15-24 अप्रैल 2023
- आईयूसीएन एशिया संरक्षित क्षेत्र साझेदारी, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 27-29 अप्रैल 2023
- 8वीं वार्षिक सी2सी समन्वय बैठक, सेजोंग, कोरिया, 31 मई – 2 जून 2023
- आईसीसीआरओएम एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय सूचना बैठक – ऑनलाइन, 26 जून 2023
- यूनेस्को द्वारा प्रारंभिक कार्यशाला प्शांति के लिए धरोहररू एशिया में प्राकृतिक और मिश्रित विश्व धरोहर स्थलों के लिए सीमा पार और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाना – ऑनलाइन, 6 जुलाई 2023
- बर्न III सम्मेलन, जैव विविधता-संबंधी सम्मेलनों के बीच सहयोग के लिए कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के कार्यान्वयन के लिए, बर्न, स्विट्जरलैंड, 22-26 जनवरी 2024
- भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी के लिए यूनेस्को और भारत सरकार के बीच समझौते के नवीनीकरण मूल्यांकन के लिए यूनेस्को मिशन का दौरा, 5-10 मार्च 2024

विरासत प्रबंधन में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, देहरादून, 7 अगस्त – 15 सितंबर, 2023.

विरासत अध्ययन एक रोमांचक एवं नया अंतःविषय क्षेत्र है जो इतिहास, पुरातत्व, नृविज्ञान, समाजशास्त्र, कला इतिहास, जीवविज्ञान, भूगोल, पाठ विश्लेषण और दृश्य संचार सहित कई शैक्षणिक विषयों और कौशलों पर आधारित है। विरासत कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंडों में एक प्रबंधन जनादेश बन रही है, और पेशेवरों की आवश्यकता हर दिन बढ़ रही है।

विरासत प्रबंधन पर पहला प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम 7 अगस्त 2023 को शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य अधिकारी प्रशिक्षुओं को बहुविषयक क्षेत्र में कार्यान्वित अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रथाओं के साथ सुसज्जित करना था। इस 6-सप्ताह के पाठ्यक्रम के माध्यम से, प्रतिभागियों ने सीखा कि किस प्रकार लैंडस्केप-स्तरीय हस्तक्षेप सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और आर्थिक लाभों के संयोजन के रूप में अप्रत्याशित लाभकारी अंतर्संबंधों की संभावना को अधिकतम



करते हैं। कक्षा में 7 छात्र शामिल थे – मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, और त्रिपुरा के वन अधिकारी, साथ ही भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और महाराष्ट्र पर्यटन के अधिकारी।

पाठ्यक्रम में जैव विविधता और प्राकृतिक धरोहर, स्थल प्रबंधन, प्रकृति-संस्कृति संबंध और धरोहर जोखिम प्रबंधन सहित मौलिक विषयों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों ने इंटरएक्टिव प्रस्तुतियों और चर्चाओं, सर्वश्रेष्ठ अभ्यास दिशानिर्देशों और हालिया नीतियों, प्रबंधन तकनीकों, धरोहर विशेषज्ञ वार्ता और क्षेत्र यात्राओं के माध्यम से धरोहर अध्ययन की अवधि और विविधता की एक व्यापक समझ विकसित की, जिनमें केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान, आगरा, और जयपुर शामिल थे।

संयुक्त राष्ट्र वन मंच में भागीदारी, एफआरआई, देहरादून, 26-27 अक्टूबर, 2023.

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड में 26-28 अक्टूबर 2023 को संयुक्त राष्ट्र वन मंच के हिस्से के रूप में एक देश-नेतृत्वित पहल कार्यक्रम का आयोजन किया। संयुक्त राष्ट्र वन मंच सभी प्रकार के



वन प्रबंधन, संरक्षण, और सतत विकास को बढ़ावा देता है। भारत को यूएनएफएफ का संस्थापक सदस्य होने का गौरव प्राप्त है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2017 से 2030 तक के लिए पहला संयुक्त राष्ट्र रणनीतिक योजना अपनाई। यह रणनीतिक योजना सभी प्रकार के वन प्रबंधन, वन क्षरण और वनों की कटाई का मुकाबला करने के लिए सभी स्तरों पर कार्यों के लिए एक वैश्विक ढांचा प्रदान करती है। सीएलआई का मुख्य उद्देश्य सतत वन प्रबंधन और यूएन रणनीतिक योजना के कार्यान्वयन के बारे में यूएनएफएफ की चर्चाओं में योगदान देना है। इसका उद्देश्य यूएनएफएफ सदस्य राज्यों के बीच एसएफएम और यूएनएसपीएफ के कार्यान्वयन के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के साझा करने को भी सुगम बनाना है। सीएलआई वन अग्नि और वन प्रमाणन सहित विषयगत क्षेत्रों पर चर्चा करेगा। इस कार्यक्रम के दौरान, यूएनएफएफ सदस्य देशों, यूएन संगठनों, क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय भागीदारों, और महत्वपूर्ण समूहों के विशेषज्ञ विषयगत मुद्दों पर विचार-विमर्श करेंगे। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी स्टाफ ने प्राकृतिक धरोहर के महत्व और दुनिया के कुछ सबसे संरक्षित पारिस्थितिक आवासों के साथ इसके बड़े संघों पर पोस्टर प्रस्तुतियां प्रस्तुत करके कार्यक्रम में भाग लिया।

प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, 19 फरवरी – 15 मार्च 2024.

प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन पर एक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम 19 फरवरी से 15 मार्च 2024 तक भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी में आयोजित किया गया, जिसे विदेश मंत्रालय – भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम द्वारा प्रायोजित किया गया। इस पहले अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में, 8 देशों (कोस्टा रिका, बुल्गारिया, इथियोपिया, केन्या, तंजानिया, मेडागास्कर, श्रीलंका और मंगोलिया) के 12 प्रतिभागियों को विरासत के मुख्य सिद्धांतों और सिद्धांतों पर प्रशिक्षित किया गया, साथ ही उन्हें उनके आधिकारिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों में शामिल करने की क्षमता भी प्रदान की गई। इस पाठ्यक्रम ने भारतीय वन्यजीव संस्थान की वन्यजीव संरक्षण और प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन में विशेषज्ञता और अधिकारी प्रशिक्षुओं की वैश्विक विविधता पर जोर देते हुए क्रॉस-लर्निंग को बढ़ावा दिया।

यह 4-सप्ताह का पाठ्यक्रम प्रशिक्षुओं को अवधारणाएं और सम्मेलन, धरोहर प्रबंधन, और धरोहर व्याख्या जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण कौशलों से सुसज्जित करता है। कक्षा के विषयों में व्यक्तिगत से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य तक धरोहर मूल्य, प्रकृति-संस्कृति संबंध और सतत विकास, पहाड़ी विश्व धरोहर स्थलों का प्रबंधन, प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन के मानव आयाम, दृश्य संचार और धरोहर और व्याख्या सिद्धांत और योजना शामिल थे।



प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन के व्यावहारिक पहलुओं को भी कई फील्ड डे-ट्रिप्स (वाडिया संस्थान, एफआरआई और राजाजी राष्ट्रीय उद्यान) और 5-दिवसीय फील्ड ट्रिप के माध्यम से संबोधित किया गया, जिसमें भारतीय धरोहर संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और भरतपुर, दिल्ली और आगरा में स्थित 5 विश्व धरोहर स्थलों की यात्राएं शामिल थीं। इस अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ने पर्याप्त प्रमाण प्रदान किया कि दुनिया भर में, धरोहर संवर्धन और संरक्षण को संतुलित करने की चुनौती बनी हुई है और प्रकृति-संस्कृति संबंधों के अध्ययन की आवश्यकता को मजबूती से बढ़ाया।

पहचाने गए विश्व धरोहर प्राथमिकता मुद्दों पर अनुसंधान गतिविधियाँ पहले बताए गए कार्यशालाओं, पाठ्यक्रमों, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और क्षमता निर्माण के लिए आउटरीच पहलों के अलावा, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी का एक महत्वपूर्ण कार्य विश्व प्राकृतिक धरोहर संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित पहचाने गए प्राथमिकता मुद्दों पर अनुसंधान करना है। यह अनुसंधान प्राकृतिक डब्ल्यूएचएस की रिपोर्टिंग और निगरानी आवश्यकताओं, विभिन्न हितधारकों को परामर्श सेवाओं और प्राकृतिक/मिश्रित विश्व धरोहर स्थलों के नामांकन के लिए किया जाता है। केंद्र विश्व धरोहर सम्मेलन की प्रमुख अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाने का प्रयास करता है और सुनिश्चित करता है कि सभी हितधारक सम्मेलन का अधिकतम प्रभावी उपयोग कर सकें ताकि विश्व धरोहर संरक्षण को समर्थन मिल सके। केंद्र भारत के केंद्रीय और राज्य सरकारों, अन्य देशों के अनुरोध पर, यूनेस्को परामर्श निकायों और अन्य संबंधित संस्थानों को विश्व प्राकृतिक और मिश्रित धरोहर मुद्दों पर परामर्श सेवाएं और तकनीकी इनपुट प्रदान करता है, जिसमें विश्व धरोहर स्थलों का संरक्षण और प्रबंधन, संरक्षण की स्थिति रिपोर्ट, विश्व धरोहर केंद्र सत्रों में राज्य पक्ष की हस्तक्षेप शामिल हैं। प्राकृतिक या मिश्रित संपत्तियों के विश्व धरोहर सूची में प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की दिशा में योगदान देने के लिए, केंद्र विश्व धरोहर स्थलों के नामांकन प्रक्रिया में राज्य पक्षों को तकनीकी

Nomination Dossier for Keibul-Lamjao Conservation Area, Manipur

- The site was inscribed in 2016
- Category: Mixed World Heritage Site
- Criteria: (i)(ii)(iii)
- Visiting in the Extension No.

Criteria under which inscription is proposed

- Criterion (i)** is an outstanding example of a traditional human settlement, architecture or landscape which is representative of a culture (or cultures), or human interaction with the environment especially where it has become vulnerable under the impact of natural changes.
- Criterion (ii)** is an outstanding example of traditional human settlement, architecture or landscape which is representative of a culture (or cultures), or human interaction with the environment especially where it has become vulnerable under the impact of natural changes.
- Criterion (iii)** is an outstanding example of a traditional human settlement, architecture or landscape which is representative of a culture (or cultures), or human interaction with the environment especially where it has become vulnerable under the impact of natural changes.

• IUCN nominated the unique natural system of charlands, endemic biodiversity in the form of Sangai, Reddy's female attachment

Nomination Dossier for Keibul-Lamjao Conservation Area, Manipur

- Outstanding value:** Mixed, IUCN, Physiography, Soil, Climate, Biogeography
- History and development:** State's history, Local communities, Conservation history
- Cultural heritage (cultural or natural):** Cultural Inherit, Aesthetics, Ecological processes, Conservation
- Location and integrity:** Site and its context
- Management of authenticity:** Culture, Legislative, Institutional framework
- Comparative analysis:** Based on Outstanding Universal Value (OUV)

Map of the Keibul-Lamjao Conservation Area

Site Description: The site is a natural system of charlands, endemic biodiversity in the form of Sangai, Reddy's female attachment. It is a unique natural system of charlands, endemic biodiversity in the form of Sangai, Reddy's female attachment.

समर्थन प्रदान करता है। इस संबंध में, 2023-24 में, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने प्रकृति-संस्कृति चर्चाओं, नए शुरू किए गए धरोहर सम्मेलनों पर सलाह, भूवैज्ञानिक धरोहर को बढ़ावा देने और संरक्षण की स्थिति रिपोर्टों पर विशेषज्ञता प्रदान करने के माध्यम से कई जांच विधाओं का अनुसरण किया है।

केडुबुल लामजाओ संरक्षण क्षेत्र, मणिपुर विश्व धरोहर नामांकन डोजियर की तैयारी, जून 2023.

2018 में, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने सफलतापूर्वक केडुबुल लामजाओ संरक्षण क्षेत्र को भारत की अस्थायी सूची में शामिल करने में सहायता की। अब इस समझौते को साइट का पूर्ण नामांकन डोजियर तैयार करने के लिए क्रियान्वित किया गया है। केडुबुल लामजाओ संरक्षण क्षेत्र एक अद्वितीय प्राकृतिक प्राचीनता, विविधता, सुंदरता और मानव संबंध की कहानी को दर्शाता है, जिसमें केडुबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान का कोर क्षेत्र (40 वर्ग किमी) और लोकटक झील (140 वर्ग किमी) और पुमलेन पाट (43 वर्ग किमी) का बफर क्षेत्र शामिल है। संपत्ति और बफर क्षेत्र मणिपुर, भारत के बिष्णुपुर जिले के दक्षिणी भाग और थोबल जिले के पूर्वी भाग में स्थित हैं। यह पूरा क्षेत्र इंडो बर्मा जैव विविधता हॉटस्पॉट में समृद्ध प्राकृतिक वनस्पति और जीवों का इतिहास समेटे हुए है। यह विविध मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जाना जाता है, जो विभिन्न भू-आकृति और पारिस्थितिकी व्यवस्थाओं के अंतर्गत आता है।

यह राष्ट्रीय उद्यान, 40 वर्ग किमी के क्षेत्र को कवर करता है, जो दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है और मणिपुर के ब्राउ एंटलर वाले हिरण, *रुसेर्वस एल्डी एल्डी* का अंतिम प्राकृतिक आश्रय है, जिसे स्थानीय रूप से संगई कहा जाता है, जो मणिपुर का राज्य पशु है। लगभग 29 वर्ग किमी क्षेत्र फुमदीस की एक मोटी और लगभग निरंतर चटाई से ढका हुआ है, जो मिट्टी, वनस्पति और विभिन्न विघटन चरणों में जैविक पदार्थ का मिश्रण है। प्रस्तावित साइट के लिए एक नामांकन दस्तावेज का मसौदा तैयार किया जा रहा है, जिसके बाद क्षेत्रीय स्तर पर शांति बहाली के आधार पर साइट-स्तरीय परामर्श होंगे।

आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची बैठक, जकार्ता, 16 अगस्त 2023.

भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने 16 अगस्त 2023 को जकार्ता, इंडोनेशिया में आसियान सचिवालय में आयोजित दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) सांस्कृतिक धरोहर सूची (एसीएचएल) के विकास में व्यावहारिकता पर एक्सपर्ट पैनल बैठक में भाग लिया। आसियान कला और संस्कृति क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने के प्रयासों के हिस्से के रूप में, 2019 में संस्कृति और कला के लिए आसियान के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक (एसओएमसीए) ने आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची के विकास के प्रस्तावित विचार को बल दिया। इसमें 10 आसियान सदस्य देशों के प्रतिनिधियों, 2 यूनेस्को विशेषज्ञों, 3 बाहरी विशेषज्ञों और सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर (भारतीय वन्यजीव संस्थान) विशेषज्ञता के साथ दो भारतीय विशेषज्ञों ने भाग लिया। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी से श्री नीरज ककाति ने प्राकृतिक धरोहर घटक से भारत का प्रतिनिधित्व किया। बैठक का उद्देश्य एसीएचएल के लिए व्यावहारिकता अध्ययन को विकसित करना और एसीएचएल की स्थापना से संबंधित विषयगत और परिचालन मामलों पर सिफारिशें प्रदान करना था। प्रमुख परिणामों में शामिल थे कि एसीएचएल को एक प्रतिमान परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है और मौजूदा यूनेस्को विश्व धरोहर की अवधारणा ष्साधारण श्वैश्विक से श्क्षेत्रीय मूल्य से अलग किया जा सकता है साथ-साथ क्षेत्रीय धरोहर के साथ-साथ व्यक्तिगत देश



संपत्तियों पर विचार करने की आवश्यकताय संस्कृति-संवेदनशील शब्दावली का उपयोग धरोहर की सुरक्षा और संरक्षण में क्षमता निर्माण की आवश्यकता, समुदाय की भागीदारी, सांस्कृतिक धरोहर सूची मानचित्रण, स्थायित्व सिद्धांतों को अपनाना, और धन जुटाने की रणनीति। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी के श्री नीरज काकतेय ने प्रकृति को जोड़ने पर जोर दिया और सुझाव दिया कि संभावित दाताओं और भागीदारों के साथ धन जुटाने परामर्श को एसीएचएल के दृष्टिकोण को साझा करने और इसके लिए संसाधन जुटाने के लिए विचार किया जा सकता है। पहल को आगे बढ़ाने के लिए फॉलो-अप एक्सपर्ट पैनल बैठकें प्रस्तावित की गई हैं।

आईसीओएमओएस महासभा, सिडनी, 1-9 सितंबर 2023.

अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद जीए 2023 समग्र विषय, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में 1-9 सितंबर 2023 को आयोजित श्विरासत परिवर्तन था। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी के विश्व धरोहर सहायक, श्री अनुरंजन रॉय को आईसीओएमओएस जीए 2023 युवा मंच में भाग लेने के लिए चुना गया और उन्होंने 1-3 सितंबर 2023 को काकातुआ द्वीपध्वारेमेया के विश्व धरोहर स्थल पर आयोजित आईसीओएमओएस जीए 2023 युवा मंच में भाग लिया। युवा मंच ने समझा कि कैसे विरासत संरक्षण में युवा और उभरते पेशेवर नए विचारों में योगदान कर सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया और सऊदी अरब के सहयोगियों के साथ अंतिम प्रस्तुति के हिस्से के रूप में, उन्होंने प्रस्तुत किया कि काकातुआ द्वीप/वारमिया की साइट में इसके प्राकृतिक अतीत के अपर्याप्त प्रतिनिधित्व थे। 6 सितंबर 2023 को, श्री रॉय ने मुख्य जीए में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, सिडनी में अपने चयनित सारांश, 'विरासत के रूप में प्रकृति - निहित संवाद' प्रस्तुत किया, कि प्रकृति के मूल्यों को निहित रूप से समझा जाता है और कभी-कभी पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के



रूप में मात्रा में मापा जाता है। फिर भी, विरासत की अवधारणा (विशेष रूप से शहरी निर्वाचन क्षेत्रों के लिए) के रूप में इसकी स्वीकृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, जो प्रबल रूप से निर्मित धरोहर, कलाकृतियों, शिल्प और रीति-रिवाजों के रूप में सांस्कृतिक वस्तुओं से जुड़ी हुई है। जीए फील्ड टूर के हिस्से के रूप में, श्री राय ने तीन आदिवासी बस्ती के स्थानों में ग्रेटर ब्लू माउंटेंस क्षेत्र के विश्व धरोहर स्थल पर अपनाई गई अनुकरणीय स्थल प्रबंधन का अध्ययन भी किया।

संरक्षण रिपोर्टों की स्थिति और नामांकन डोजियर की समीक्षा 45वीं विश्व धरोहर समिति सत्र, रियाद, 10-25 सितंबर 2023.

45वीं विश्व धरोहर समिति सत्र रियाद, सऊदी अरब में 10-25 सितंबर 2023 को आयोजित किया गया था। चूंकि भारत विश्व धरोहर समिति का सदस्य है, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल को भारतीय और विश्व प्राकृतिक धरोहर स्थलों से संबंधित मामलों पर समीक्षा और इनपुट प्रदान करके तकनीकी सहायता प्रदान की। विश्व धरोहर संपत्तियों की 25 संरक्षण रिपोर्टों की समीक्षा और प्रस्तुत करने की निरंतरता में, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने समिति के 45वें सत्र में विचार के लिए 7 नए स्थलों के नामांकन डोजियर और तीन स्थलों के सीमा संशोधन प्रस्तावों पर टिप्पणी की। इनमें शामिल थे बाले पर्वत राष्ट्रीय उद्यान (इथियोपिया), न्यंग्वे राष्ट्रीय उद्यान (रवांडा), शुरुक बनी मारिद (सऊदी अरब), तुरीन की टंडी सर्दियों की रेगिस्तान (कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान), तुगाय जंगल तिग्रोवाया बाल्का प्रकृति रिजर्व (ताजिकिस्तान), जागोरी सांस्कृतिक परिदृश्य (यूनान), उत्तरी एपिनिन्स (इटली) में वाष्पील कार्स्ट और गुफाएं, हिकानियन जंगल (अजरबैजान), हा लॉन्ग बे - कैट बा द्वीपसमूह (वियतनाम), अजरबैजानधईरान, कार्पाथियन और यूरोप के जंगल। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी को वेनेजुएला और मंगोलिया में विशिष्ट स्थलों पर विशेषज्ञ राय देने के लिए भी बुलाया गया था।

आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची बैठक - ऑनलाइन, 6 दिसंबर 2023.

16 अगस्त 2023 को जकार्ता में आसियान सचिवालय में आयोजित आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची के विकास में व्यावहारिकता पर पहली विशेषज्ञ पैनल बैठक के बाद, भारत सरकार के समर्थन के साथ, 06 दिसंबर 2023 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आसियान सांस्कृतिक धरोहर सूची के विकास में व्यावहारिकता पर दूसरी विशेषज्ञ पैनल बैठक आयोजित की गई। दूसरी बैठक का

उद्देश्य पहली विशेषज्ञ पैनल बैठक में चर्चाओं पर निर्माण करना था ताकि प्रस्तावित सिफारिशों और उचित विचारों पर पहुंचा जा सके, विशेष रूप से प्रस्तावित आसियान सांस्कृतिक धरोहर को सुझाए गए विषयों/विषयों/धकहानियों के माध्यम से परिभाषित करने और उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोण और मानदंडों को विकसित करने पर। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी से श्री नीरज काकोटी द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया, बैठक की चर्चाओं से उभरने वाले प्रमुख परिणामों में शामिल थे कि एसीएचएल का दायरा मूर्त और अमूर्त धरोहर दोनों को शामिल करता है। विरासत का विकास और बदलता चरित्र जीवित धरोहर की एक आवश्यक गुणवत्ता है। अन्य धरोहर श्रेणियों में सीमा पार धरोहर, जोखिम में धरोहर आदि शामिल हो सकते हैं, संस्कृति - प्रकृति का योग महत्वपूर्ण है। एसीएचएल के कार्यान्वयन के दृष्टिकोण में समावेशिता का महत्व एसीएचएल की पहचान और कार्यान्वयन में बहु-हितधारक परामर्श की आवश्यकताय प्रतिस्पर्धात्मक के बजाय सहयोगात्मक दृष्टिकोण और क्षेत्र की साझा धरोहर का प्रतिनिधित्व एसीएचएल के दृष्टिकोण और उपयोग किए जाने वाले मानदंडों पर आसियान देशों के विचारों को समझने की आवश्यकता। विशेषज्ञ पैनल और एसओएमसीए कार्य समूह की फॉलोअप बैठकें 2024 के लिए प्रस्तावित हैं।

आईयूसीएन एशिया संरक्षित क्षेत्र साझेदारी, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 27-29 अप्रैल 2023.

एशिया संरक्षित क्षेत्र साझेदारी के 7वें तकनीकी कार्यशाला और 8वीं संचालन समिति की बैठक का आयोजन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार ने आईयूसीएन एशिया



क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकॉक के सहयोग से किया और इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून द्वारा 27 से 29 अप्रैल 2023 तक आयोजित किया गया। एशिया संरक्षित क्षेत्र साझेदारी, जो 2014 में स्थापित हुई, एक क्षेत्रीय मंच है जिसका उद्देश्य एशिया में संरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन और शासन को मजबूत करना है। एपीएपी संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों और जैव विविधता सम्मेलन के पोस्ट-2020 वैश्विक जैव विविधता ढांचे की प्रगति को बढ़ाने में साझेदारियों की शक्ति को दिखाते हुए क्षेत्रीय सहयोग का एक मॉडल है। एपीएपी एजेंडा में एपीएपी संदर्भ, कंट्री अपडेट, ओईसीएमएस, आईयूसीएन ग्रीन लिस्टिंग, संरक्षित क्षेत्र, और पोस्ट-2020 जीबीएफ के लक्ष्य 3 को प्राप्त करने के लिए रणनीति पर विभिन्न तकनीकी सत्र शामिल थे। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने एपीएपी बैठक के संचालन के लिए तकनीकी समर्थन प्रदान किया और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में प्राकृतिक धरोहर स्थलों पर एक सत्र प्रस्तुत किया, जिसमें विश्व धरोहर सम्मेलन की मुख्य बातें दी गईं, जो विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर संपत्तियों की सुरक्षा से संबंधित सबसे अधिक पुष्टि किए गए सम्मेलनों में से एक है और एशिया-प्रशांत उप-क्षेत्रों में विश्व धरोहर संपत्तियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों में सदस्य देशों के 30 प्रतिनिधि, आईयूसीएन के 10, एमओईएफसीसी के चार और भारतीय वन्यजीव संस्थान के 20 वैज्ञानिक और कर्मचारी शामिल थे।

8वीं वार्षिक सी2सी समन्वय बैठक, सेजोंग, कोरिया, 31 मई – 2 जून 2023.

भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने 31 मई से 2 जून 2023 तक सेजोंग, दक्षिण कोरिया में विश्व धरोहर स्थलों की व्याख्या और प्रस्तुति के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में आयोजित यूनेस्को विश्व धरोहर-संबंधित श्रेणी 2 केंद्रों और संस्थानों की 8वीं वार्षिक समन्वय बैठक में भाग लिया, जिसमें 10 विश्व धरोहर-संबंधित सी2सी के प्रतिनिधि शामिल थे। डॉ. गौतम तालुकदार, वैज्ञानिक-एफ ने भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी के ध्येय और गतिविधियों पर प्रस्तुतियां दीं और समुदाय की धारणाओं का सारांश प्रस्तुत करते हुए विश्व धरोहर स्थलों के चयन का प्रदर्शन किया। बैठक ने विभिन्न विषयों पर रचनात्मक संवाद को बढ़ावा दिया, जिसमें विश्व धरोहर संपत्तियों की व्याख्या और प्रस्तुति के महत्व और प्रमुख गतिविधियों पर अनुभवों को साझा करना शामिल था, जिनमें सी2सी को योगदान देना और समर्थन करना चाहिए, जैसे आवधिक रिपोर्टिंग और विश्व धरोहर क्षमता निर्माण रणनीति। बैठक के प्रतिभागियों ने 'यूनेस्को विश्व धरोहर-संबंधित श्रेणी 2 केंद्रों के बीच समझ और सहयोग पर घोषणा' को अपनाया, जिसे 'सेजोंग घोषणा' भी कहा जाता है। इस घोषणा में सी2सी से विश्व धरोहर संपत्तियों के संरक्षण और प्रबंधन में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की प्रतिबद्धता थी। इसके प्रमुख उद्देश्यों में सभी स्तरों पर हितधारकों को क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्रदान करना, क्षेत्रीय विशेषताओं को समझना, श्रेणी 2 केंद्रों के योगदान की दृश्यता में सुधार करना, और श्रेणी 2 केंद्रों की विशेषज्ञता को मजबूत और विकसित करना शामिल था। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए श्रेणी 2 केंद्रों के भौगोलिक स्थानों का लाभ उठाने और वार्षिक संगोष्ठियों जैसी संयुक्त क्षमता निर्माण गतिविधियों को लागू करने की संभावना का पता लगाने का सुझाव दिया गया।

आईसीसीआरओएम एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय सूचना बैठक – ऑनलाइन, 26 जून 2023.

सांस्कृतिक संपत्ति के संरक्षण और पुनर्स्थापन का अध्ययन करने

के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, एक अंतर सरकारी संगठन है जो संरक्षण प्रशिक्षण, सूचना, अनुसंधान, सहयोग और वकालत की पहल के माध्यम से विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में सभी रूपों की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए अपने सदस्य राज्यों की सेवा में काम करता है। यह छह दशकों से अधिक समय से वैज्ञानिकों, संरक्षकों, संग्रहालय क्यूरेटों, स्थल प्रबंधकों, अभिलेखागारों, शोधकर्ताओं और पुरातत्वविदों के साथ काम कर रहा है और विश्व धरोहर स्थलों के नामांकन पर यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के तीन परामर्श निकायों में से एक है। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी ने 26 जून 2023 को ऑनलाइन आयोजित आईसीसीआरओएम एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय सूचना बैठक में भाग लिया, जहां धरोहर से संबंधित विभिन्न एजेंडों पर चर्चा की गई। प्रस्तुतियों ने जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण, पर्यटन की तेजी से बदलते युग में धरोहर के महत्व और संबंधित चुनौतियों पर केंद्रित किया। प्रतिभागियों ने समावेशी, जनता-केंद्रित और सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर चर्चा की, जिसमें प्रभावी उपकरणों, सर्वोत्तम प्रथाओं के विकास और धरोहर संरक्षण और विकास दोनों को संतुष्ट करने के लिए समाधान खोजने के तरीकों को अपनाने पर जोर दिया गया। बैठक में यह महत्वपूर्ण पहचाना गया कि जमीन पर चुनौतियों को समझने, पहचाने गए विषयों और कार्यप्रणालियों पर अनुसंधान करने, लचीला तकनीकी सामग्री विकसित करने, शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम स्थापित करने और उसकी मूल्यांकन और सुधार की आवश्यकता है। प्राप्त शिक्षाओं ने संरक्षण दृष्टिकोणों, जलवायु कार्रवाई, आपदा जोखिम न्यूनीकरण और शांति को मजबूत करने के माध्यम से धरोहर की रक्षा करने के तरीकों को बढ़ावा दिया, विश्व धरोहर सम्मेलन द्वारा समर्थित प्रबंधन क्षमताओं को मजबूत किया, और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में प्रशिक्षण साझेदारियों की सराहना की।

जैव विविधता-संबंधी सम्मेलनों के बीच सहयोग के लिए कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के कार्यान्वयन के लिए बर्न III सम्मेलन, बर्न, स्विट्जरलैंड, 22-26 जनवरी 2024.

डॉ. नेहरू प्रभाकरण, सहायक नोडल अधिकारी, भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी, 22-26 जनवरी 2024 को बर्न, स्विट्जरलैंड में यूनिवर्सल पोस्टल यूनिशन में आयोजित कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के कार्यान्वयन के लिए जैव विविधता-संबंधी सम्मेलनों के बीच सहयोग पर बर्न III सम्मेलन में भाग लिया। डॉ. नेहरू ने इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर के खिलाड़ियों जैसे भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी राष्ट्रीय और जमीनी स्तर पर जैव विविधता-संबंधी नीतियों के तालमेल का समर्थन / कार्यान्वयन में क्या भूमिका निभा सकते हैं। 70 देशों के 150 से अधिक प्रतिभागियों ने सम्मेलन में भाग लिया, जो 18 से अधिक बहुपक्षीय पर्यावरणीय समझौतों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। यह संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के कुशल और प्रभावी कार्यान्वयन में योगदान देना है। इसका उद्देश्य ढांचे के कार्यान्वयन में एक समावेशी, सहयोगात्मक दृष्टिकोण को संचालित करने और समन्वित करने के अवसरों की पहचान करके जैव विविधता-संबंधी सम्मेलनों, अन्य प्रासंगिक बहुपक्षीय समझौतों और संयुक्त राष्ट्र संगठनों के संबंधित जनादेश का सम्मान करते हुए योगदान देना है। बर्न सम्मेलन का लाभ उठाते हुए, 25 जनवरी 2024 को सम्मेलन के बाद विश्व धरोहर सम्मेलन टीम के लिए एक संक्षिप्त बैठक आयोजित की गई, जिसमें पांच राज्य पक्षों और सचिवालय के तीन प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी के लिए यूनेस्को और

भारत सरकार के बीच समझौते के नवीनीकरण मूल्यांकन के लिए यूनेस्को मिशन की यात्रा, 5-10 मार्च 2024.

यूनेस्को के तत्वावधान में 'एशिया और प्रशांत क्षेत्र के लिए विश्व प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन और प्रशिक्षण' के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान - श्रेणी 2 केंद्र की स्थापना के लिए भारत सरकार और यूनेस्को के बीच समझौता 2 सितंबर 2015 को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के महानिदेशक, वन द्वारा औपचारिक रूप से हस्ताक्षरित किया गया था।

अक्टूबर 2018 के समझौते की प्रवर्तन-में-प्रवर्तन खंड की अधिसूचना के अनुसार, केंद्र का कार्यकाल 2024 तक आठ वर्षों की अवधि के लिए नवीनीकरण के लिए है। इसके तहत, डॉ. रॉबिन कॉनिंघम, डुरहम विश्वविद्यालय और श्री राजेंद्र सुवाल, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-नेपाल, ने केंद्र के उद्देश्यों को प्राप्त करने की सीमा और यूनेस्को के कार्यक्रम की उपलब्धियों में केंद्र की गतिविधियों के योगदान की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी परिसर, देहरादून का दौरा किया।

उनकी 5-दिवसीय यात्रा नई दिल्ली में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधिकारियों और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ बैठकों के साथ शुरू हुई, जो विश्व धरोहर स्थलों के लिए नोडल प्राधिकरण है। देहरादून में भारतीय वन्यजीव संस्थान परिसर में पहुंचने के बाद, टीम ने भारतीय वन्यजीव संस्थान के निदेशक, रजिस्ट्रार, डीन, संकाय सदस्यों और भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी कर्मचारियों के साथ बातचीत की। इसके अलावा, उन्होंने भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी कार्यक्रमों का हिस्सा रहे अन्य हितधारकों के साथ भी बैठकें कीं, जिसमें केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के डीएफओ और प्राकृतिक धरोहर प्रबंधन में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी शामिल थे, जो वहां फील्ड ट्रिप पर थे। भारतीय वन्यजीव संस्थान-सी2सी के मिशन के दौरे के बाद, मूल्यांकन टीम अब रिपोर्ट को तैयार करेगी और विचार के लिए प्रस्तुत करेगी।

सैकोन

(भा.व.सं. का दक्षिण भारत केन्द्र)

व्यावसायिक समर्थन

रिमोट सेंसिंग और भू-स्थानिक सूचना प्रणाली प्रकोष्ठ

रिमोट सेंसिंग और भू-स्थानिक सूचना प्रणाली सुविधा लगभग सभी क्षेत्र-आधारित अनुसंधान परियोजनाओं, साथ ही शिक्षा और प्रशिक्षण का हिस्सा है। यह सुविधा संस्थान के साथ काम करने वाले संकाय सदस्यों, प्रशिक्षुओं, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए उपलब्ध है। प्रयोगशाला में उच्च श्रेणी के वर्कस्टेशन, एकीकृत डेस्कटॉप और सॉफ्टवेयर पैकेज हैं। स्थानिक विश्लेषण के लिए आर्कजीआईएस, ईआरडीएस इमेजिन सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है।

डेटा संग्रह में 2500 से अधिक सर्वे ऑफ इंडिया टोपोशीट्स, उपग्रह छवियां, और विभिन्न विषयगत परतें जैसे प्रशासनिक, सड़क नेटवर्क, जल निकासी नेटवर्क और आर्द्रभूमि,





सेकान में राष्ट्रीय पक्षी विष विज्ञान केंद्र

भूमि-उपयोग/भूमि-आवरण, और देश के विभिन्न जैवभौगोलिक क्षेत्रों से वनस्पति मानचित्र शामिल हैं। एम.एससी. वन्यजीव विज्ञान (पक्षीविज्ञान) के छात्रों के लिए केंद्र द्वारा रिमोट सेंसिंग और जीआईएस मॉड्यूल संचालित किया गया था। अन्य छात्रों और इंटरन को भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर, जैसे क्यूजीआईएस का भी उपयोग किया गया। अनुसंधान और संरक्षण के लिए संस्थान की अधिकांश अनुसंधान परियोजनाओं में भू-सूचना विज्ञान प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय पक्षी विषविज्ञान केंद्र

सेकान के राष्ट्रीय पक्षी विष विज्ञान केंद्र में एक अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला है जिसमें महत्वपूर्ण उपकरण हैं, जैसे एल सी-एमएसएमएस, जी सी-एमएसएमएस और आईसीपी-एमएस जो विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय संपदकों जैसे कीटनाशक, धातु, पीसीबी, पीएच, और गैर-स्टेरॉयडल एंटी-इंफ्लेमेटरी ड्रग्स को विभिन्न जैविक और गैर-जैविक मैट्रिक्स में मापने और प्रमाणित करने के लिए हैं। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, 'सिवारी-नावा समुद्री परिदृश्य, मुंबई' के दीर्घकालिक विष विज्ञान निगरानी परियोजना के तहत और अन्य एजेंसियों द्वारा जमा किए गए कई नमूनों का प्रयोगशाला में विश्लेषण किया गया। इसके अतिरिक्त, पूरे देश में वन्यजीव विषाक्तता के कई मामलों की भी जांच की गई। बाघ, तेंदुए और हाथी वन्यजीव विषाक्तता से प्रभावित प्रमुख प्रजातियां थीं। संदर्भित अवधि के दौरान, विभिन्न संस्थानों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और विभागों के हजारों छात्रों, संकायों और अधिकारियों ने सुविधाओं का दौरा किया।

राष्ट्रीय पक्षी फॉरेंसिक प्रयोगशाला

राष्ट्रीय पक्षी फॉरेंसिक प्रयोगशाला सेकान में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के वित्तीय समर्थन से 2018 में स्थापित की गई थी। सुविधा में परिष्कृत उपकरण हैं, जैसे नेक्स्ट जेनरेशन

डीएनए सीक्वेंसर, सेंगर डीएनए सीक्वेंसर, कोवारिस, फ्रेगमेंट एनालाइजर, होमोजेनाइजर, क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर जैल इलेक्ट्रोफोरेसिस, सेंट्रीफ्यूज, जैल-डॉक्यूमेंटेशन सिस्टम, डीप फ्रीजर (-80°C), क्रायोकैन्स, बायोसपटी कैबिनेट, थर्मल साइक्लर्स, आदि। वर्तमान वित्तीय अवधि के दौरान, तीन और उपकरण, यानी बीओआरएडी टी100 थर्मल साइक्लर, लैबोमेड एलएक्स400 लाइट माइक्रोस्कोप, और लेंस के साथ कैमन डीएसएलआर ईओएस 90डी कैमरा, चल रही परियोजना के तहत खरीदे गए।

वन विभाग, भारतीय वायुसेना और राजस्व खुफिया विभाग से प्राप्त चार फॉरेंसिक मामलों को मापविज्ञान/डीएनए-आधारित विश्लेषण का उपयोग करके सफलतापूर्वक हल किया गया। तमिलनाडु वन अकादमी के सहयोग से, एनएएफएल ने तमिलनाडु वन बल के आधुनिकीकरण पाठ्यक्रम के तहत तमिलनाडु के वन अधिकारियों के लिए 'पक्षी पहचान और फॉरेंसिक्स' पर 5-दिवसीय लघु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया। मॉक क्राइम सीन जांच, नमूना संग्रह, संरक्षण और दस्तावेजीकरण पर एक व्यावहारिक सत्र संचालित किया गया। इसके अलावा, उन्हें डीएनए-आधारित विश्लेषण, पंख मापविज्ञान, और पारिस्थितिक विष विज्ञान विश्लेषण जैसी प्रयोगशाला प्रथाओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया ताकि वन्यजीव अपराध मामलों को हल करने में शामिल प्रक्रिया को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

एनएएफएल ने अपनी क्षमता निर्माण के हिस्से के रूप में विभिन्न क्षेत्रों (सरकारी अधिकारी, शिक्षक, एनजीओ, वानिकी, जैव प्रौद्योगिकी और वन्यजीव विज्ञान के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्र) से संबंधित लगभग 300 व्यक्तियों को विभिन्न वन्यजीव व्यापार और प्रथाओं पर संवेदनशील बनाया। वर्तमान में, 02 पीएचडी शोध छात्र और 03 एम.एससी. थीसिस उम्मीदवार एनएएफएल प्रयोगशाला से अपना कार्य कर रहे हैं।

प्रकृति शिक्षा और विस्तार सेल

2023-24 के दौरान, सेकान ने प्रकृति शिक्षा, विस्तार कार्यक्रमों और आउटरीच घटनाओं की एक व्यापक श्रृंखला की व्यवस्था की, जिसमें पर्यावरण शिक्षा और वन्यजीव संरक्षण के प्रति अपनी अडिग प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। इन पहलों ने कई स्कूलों, छात्रों और प्रशिक्षुओं को जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन के प्रति गहरी सराहना को बढ़ावा दिया।

वर्ष की शुरुआत 9 अप्रैल 2023 को कोयंबटूर बर्ड एटलस बैठक के साथ हुई, जिसमें 30 सदस्य पक्षियों की जैव विविधता पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए। इसके बाद 12 और 13 अप्रैल को श्री जयेंद्र सरस्वती विद्यालय में शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें 77 छात्रों और सात स्टाफ ने पक्षी और पर्यावरणीय गतिविधियों में भाग लिया। वर्ष के प्रमुख आकर्षणों में से एक 24 से 28 जुलाई तक भारतीय वायुसेना अधिकारियों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम था, जो विमान को पक्षियों और वन्यजीव खतरों के प्रबंधन पर केंद्रित था। इस व्यापक प्रशिक्षण में तकनीकी सत्र और व्यावहारिक फील्ड ट्रिप शामिल थीं, जिसमें प्रतिभागियों को वन्यजीव खतरों को कम करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया गया। 10 अगस्त को, टीएनएफए प्रशिक्षण कार्यक्रम ने वन्यजीव प्रबंधन पर 50 वन रक्षकों को पक्षी पहचान और फॉरेंसिक तकनीकों पर शिक्षित किया, जिससे उनकी संरक्षण क्षमताओं को और बढ़ाया गया। 14 सितंबर से 31 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा अभियान ने पर्यावरण स्वच्छता और कचरा

प्रबंधन पर जोर दिया, जिसमें छात्रों, शोधकर्ताओं और संकायों ने पर्यावरण प्रबंधन गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अक्टूबर में वन्यजीव सप्ताह में महिलाओं के वन्यजीव संरक्षण में योगदान को उजागर करते हुए वेबिनार की एक श्रृंखला शामिल थी, जो पक्षीविज्ञान से पारिस्थितिकी तंत्र पुनर्संस्थापन तक के विषयों को कवर करती थी। इन वेबिनारों को ऑन-कैंपस गतिविधियों और छात्र यात्राओं द्वारा पूरक किया गया, जिससे प्रतिभागियों को वन्यजीव संरक्षण की समझ बढ़ी। 18 नवंबर को कोयंबटूर शहर के पुलिस आयुक्त का दौरा और 26 नवंबर को भारतीय संविधान दिवस का उत्सव शामिल था। दिसंबर में कई शैक्षिक यात्राओं का आयोजन किया गया, जिसमें ईशा होम स्कूल, असम के कैसफोस प्रशिक्षु, और झांसी और महाराष्ट्र के वानिकी छात्रों के समूह शामिल थे। इन यात्राओं ने छात्रों को सेकान की अनुसंधान गतिविधियों और अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं से अवगत कराया।

जनवरी में तमिलनाडु वन अधिकारियों के लिए पक्षी पहचान और फॉरेंसिक्स पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण सत्र देखा गया, इसके बाद विभिन्न सेवाओं के 'क' वर्ग कर्मियों के लिए वन्यजीव संरक्षण पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में तकनीकी सत्र और फील्ड यात्राएं शामिल थीं, जिसमें वन्यजीव संरक्षण प्रथाओं और कानूनी संरक्षण के महत्व पर जोर दिया गया था। फरवरी और मार्च में, सेकान ने विभिन्न कॉलेजों के छात्रों के लिए एक-दिवसीय और आधे-दिवसीय कार्यक्रमों के साथ आउटरीच जारी रखा, जिसमें पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, वन्यजीव अनुसंधान और संरक्षण प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। इन पहलों ने 16 से अधिक स्कूलों और कॉलेजों, 641 छात्रों और 180 अधिकारी प्रशिक्षुओं (कैसफोस, टीएनएफए, आईजीएनएफए) के साथ जुड़ाव किया, जिससे पर्यावरण संरक्षकों की अगली पीढ़ी को पोषित करने के लिए सेकान की प्रतिबद्धता को उजागर किया गया।

कुल मिलाकर, 2023-24 के दौरान सेकान के व्यापक कार्यक्रमों ने पर्यावरण चेतना को उत्पन्न करने और लोगों को हमारे ग्रह के कीमती पारिस्थितिकी तंत्रों के संरक्षण में योगदान देने के लिए सशक्त बनाने के अपने मिशन को दर्शाया। इन प्रयासों के माध्यम से, सेकान सक्रिय परिवर्तन को प्रेरित करना और सभी के लिए एक स्थायी भविष्य को बढ़ावा देता है।

इनलैंड आर्द्रभूमि सहित आर्द्रभूमि पर पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम

पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम के उद्देश्य हैं: (i) आर्द्रभूमि, जिसमें अंतर्देशीय आर्द्रभूमि भी शामिल है, पर जानकारी एकत्र करना, संकलित करना, और प्रसारित करना और (ii) भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के निर्णय-निर्माण प्रणाली में योगदान देना।

वित्तीय वर्ष 2023-2024 के दौरान, सेकान पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम केंद्र ने कई पर्यावरणीय दिवसों को मनाया, जिसमें 22 अप्रैल 2023 को पृथ्वी दिवस, 22 मई 2023 को जैव विविधता के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस, 5 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस, 1-7 जुलाई 2023 को वन महोत्सव, 26 जुलाई 2023 को मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस, 16 सितंबर 2023 को ओजोन परत के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस, 24 सितंबर 2023 को विश्व नदियाँ दिवस, 27 सितंबर 2023 को विश्व पर्यटन दिवस, 2-8 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय वन्यजीव सप्ताह, 27 नवंबर 2023 को विश्व

मत्स्य दिवस, 11 दिसंबर 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस, 2 फरवरी 2024 को विश्व आर्द्रभूमि दिवस, 3 मार्च 2024 को विश्व वन्यजीव दिवस, 21 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस, 22 मार्च 2024 को विश्व जल दिवस और 8 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस शामिल हैं।

प्रत्येक दिवस को, जागरूकता पोस्टर और वीडियो प्रकाशित किए गए और व्यापक प्रसार के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर साझा किए गए। सेकान पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम कार्यक्रम केंद्र ने एमओईएफसीसी प्रमुख योजनाओं को भी बढ़ावा दिया, जैसे सेव आर्द्रभूमि अभियान, स्वच्छता ही सेवा और मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवनशैली), जो पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्यों में से हैं। केंद्र ने कोयंबटूर शहर और इसके आसपास के पर्यावरण से संबंधित मुद्दों और मिशन लाइफ अभियान पर ऑनलाइन गतिविधियों, घटनाओं, वेबिनार और जन मोबाइल वैन जागरूकता अभियानों को अंजाम दिया, जिसमें हितधारकों, आम जनता, स्कूल बच्चों और कॉलेज छात्रों को लक्षित किया गया। सेकान पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम टीम ने 9 अक्टूबर 2023 को तिरुवनंतपुरम में दक्षिणी क्षेत्र के लिए मूल्यांकन कार्यशाला में भाग लिया, जहां टीम ने 2019 से केंद्र द्वारा की गई गतिविधियों को प्रस्तुत किया।

पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्यों में से एक के रूप में, मिशन लाइफ की गतिविधियों/कार्य योजना को लागू करने के लिए, सेकान पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम टीम ने मिशन लाइफ के अभियान 'सिंगल-यूज प्लास्टिक्स को ना बोले' के हिस्से के रूप में लोगों को 1,000 कपड़े के बैग वितरित किए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने स्कूल बच्चों और कॉलेज छात्रों को पेड़ लगाने को बढ़ावा देने के लिए 1,400 सीडबॉल पेन-पेंसिल किट प्रदान की। मिशन लाइफ के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए, सेकान पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम टीम ने सेकान परिसर के अंदर एक मिशन लाइफ फोटो बूथ स्थापित किया। इसे 2 सितंबर 2023 को श्री चंद्र प्रकाश गोयल, आईएफएस, डीजीएफ और विशेष सचिव, एमओईएफसीसी, गोआई द्वारा आधिकारिक रूप से उद्घाटन किया गया।

सेकान पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम कार्यक्रम केंद्र ने 9-10 फरवरी 2024 को नई दिल्ली में इंडिया गेट पर आयोजित राष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-जागरूकता कार्यक्रम में भी भाग लिया। टीम ने आर्द्रभूमि और संबंधित प्रजातियों, कपड़े के बैग, स्पीडबॉल पेन और पेंसिल किट, और मिशन लाइफ जागरूकता सामग्री पर जानकारी सहित ज्ञान उत्पादों को प्रदर्शित किया ताकि पर्यावरणीय मुद्दों पर आगंतुकों को शामिल किया जा सके और स्थायी जीवन को बढ़ावा दिया जा सके। प्रदर्शनी ने लगभग 5,000 आगंतुकों को आकर्षित किया, जिसमें स्कूल बच्चे, शिक्षक, कॉलेज छात्र, शोधकर्ता, एमओईएफ एंड सीसी अधिकारी, एनजीओ, और आम लोग शामिल थे।

रिपोर्टिंग अवधि के दौरान प्रकाशित पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम के चार न्यूजलेटर अंक प्रकाशित किये गए:

पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम न्यूजलेटर सरोवर सौरभ वॉल. 19(2) अप्रैल - जून 2023

पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम न्यूजलेटर सरोवर सौरभ वॉल. 19(3) जुलाई - सितंबर 2023

पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम न्यूजलेटर सरोवर सौरभ वॉल. 19(4) अक्टूबर – दिसंबर 2023

पर्यावरण सूचना, जागरूकता और संचार कार्यक्रम न्यूजलेटर सरोवर सौरभ वॉल. 20(1) जनवरी – मार्च 2024

चित्ररू पंचायती संघ प्राथमिक विद्यालय, जंबुकांडी, अनैकट्टी में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस 2024 की जागरूकता

लघु प्रयोगशाला परियोजनाएं

सेकान विष विज्ञान प्रयोगशाला को विभिन्न एजेंसियों जैसे राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों से नमूना विश्लेषण के लिए नियमित अनुरोध प्राप्त होते हैं। इन विश्लेषणात्मक कार्यों को लघु प्रयोगशाला परियोजना माना जाता है, जिनका मुख्य उद्देश्य प्रयोगशाला में प्राप्त नमूनों का विष विज्ञान विश्लेषण करना और परिणामों को उपयोगकर्ता एजेंसियों को प्रस्तुत करना है।

सेकान विष विज्ञान प्रयोगशाला विभिन्न एजेंसियों से कीटनाशकों और धातुओं के नमूनों का विश्लेषण करने के अनुरोध प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, बीएनएचएस 2020 से 2030 तक मुंबई में सिवरी नवा समुद्री परिदृश्य की दीर्घकालिक पारिस्थितिकी निगरानी कर रहा है। इस अध्ययन के हिस्से के रूप में, बीएनएचएस सालाना 150 नमूनों के लिए धातु विश्लेषण और 100 नमूनों के लिए पीएचएच विश्लेषण के लिए सेकान के साथ सहयोग कर रहा है, और बीएनएचएस प्रति वर्ष सेकान को 15,31,248 रुपये (केवल पंद्रह लाख इकतीस हजार दो सौ अड़तालीस रुपये) का भुगतान करता है।

सेकान और बीएनएचएस के बीच मौजूदा समझौता ज्ञापन दिसंबर 2024 तक वैध है और दोनों साझेदार संस्थानों के समझौते से इसकी समाप्ति के बाद इसे नवीनीकृत किया जा सकता है। सेकान डब्ल्यूआईआई परियोजना 'एक मानव सहयोगी – हाउस स्पैरो, पासर डोमेस्टिकस की पारिस्थितिकी और जनसंख्या स्थिति पर एक व्यापक अध्ययन' के लिए नमूनों का विश्लेषण भी कर रहा है। उपरोक्त के अलावा, केंद्र ने राज्य वन विभागों और अन्य संस्थानों द्वारा प्रस्तुत नमूनों का भी विश्लेषण किया।

असम में सत्रह सामूहिक मृत्यु घटनाओं से प्राप्त हिमालयन गिद्ध नमूनों का विष विज्ञान जांच के लिए सेकान को बीएनएचएस से प्राप्त हुआ। इसे एलसी-एमएसएमएस और जीसी-एमएसएमएस का उपयोग करके कीटनाशक अवशेषों के लिए विश्लेषित किया गया और परिणाम एजेंसी को प्रस्तुत किए गए।

संदिग्ध वन्यजीव विषाक्तता के बारह मामलों में पांच प्रजातियों के वन्य जीव शामिल थे, अर्थात् हाथी, बाघ, तेंदुआ, भारतीय गौर और जंगली कुत्ता, और दो प्रजातियों के वन्य पक्षी, अर्थात् हिमालयन गिद्ध और भारतीय मोर, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल से, की जांच की गई और रिपोर्ट संबंधित वन विभागों को प्रस्तुत की गई।

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर से प्राप्त दवा विश्लेषण के लिए मिट्टी के नमूनों और फाइटोकेमिकल कार्य के लिए प्राप्त केंद्र बायोसाइंस और नैनोसाइंस, कोयंबटूर से प्राप्त पौध नमूनों का एलसी-एमएसएमएस का उपयोग करके विश्लेषण किया गया और परिणाम संबंधित संस्थानों को प्रस्तुत किए गए।

वर्ष के दौरान विश्लेषण के लिए प्राप्त सभी नमूनों का कार्य पूरा किया गया और रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

पुस्तकालय और दस्तावेजीकरण केंद्र

सेकान में पुस्तकालय और दस्तावेजीकरण केंद्र अपने संग्रह को बढ़ाता और सुधार करता है, जिससे संस्थान के शैक्षणिक और अनुसंधान उद्देश्यों में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। वर्ष 2023-2024 में 38 नई पुस्तकें, 32 तकनीकी रिपोर्टें, 3 शोध प्रबंध और 450 पिछले संस्करणों को जोड़ा गया। इस संग्रह में कुल 3,868 पुस्तकें, 4,190 पिछले संस्करण, 2,668 सर्वेक्षण मानचित्र, 117 सीडी/डीवीडी, 267 परियोजना तकनीकी रिपोर्टें, और 103 शोध प्रबंध और थीसिस शामिल हैं, जिनमें 80 पीएचडी, 14 एम.फिल. और 9 एम.एससी. कार्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय 10 राष्ट्रीय पत्रिकाओं की सदस्यता लेता है, जिससे इसके उपयोगकर्ताओं को नवीनतम वैज्ञानिक साहित्य की जानकारी मिलती रहती है। पुस्तकालय न केवल सेकान में बल्कि भारत भर के संस्थानों के विद्वानों और वैज्ञानिकों के लिए अनुसंधान गतिविधियों में सहायक भूमिका निभाता है।

अपने व्यापक भौतिक संग्रह को पूरक करने के लिए, सेकान पुस्तकालय ऑनलाइन संदर्भ सेवाएं प्रदान करता है। यह बायोवन डेटाबेस तक पहुंच प्रदान करता है, जिसमें जीवविज्ञान, पारिस्थितिकी, और पर्यावरण विज्ञान में महत्वपूर्ण, सहकर्मी-समीक्षित ई-जर्नल शामिल हैं। डब्ल्यूआईआई पुस्तकालय के सहयोग से, सेकान विले प्रकाशकों से चयनित 30 ऑनलाइन पत्रिकाओं की सेवाएं प्रदान करता है, जिससे जैविक और पारिस्थितिकी अनुशासन में अनुसंधान के अवसरों का विस्तार होता है। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (जेबीएनएचएस) का जर्नल, जो 1886 से मूल अनुसंधान प्रकाशित कर रहा है, एक और मूल्यवान संसाधन है। सेकान के स्वयं के तकनीकी रिपोर्टें, जो संकाय सदस्यों द्वारा लिखी गई हैं, संदर्भ के लिए ऑनलाइन उपलब्ध हैं। पुस्तकालय शोधकर्ताओं को वाई-फाई कनेक्टिविटी, पीएचडी विद्वानों के लिए एक समर्पित कक्ष, और साहित्य खोज सेवाओं को प्रदान करता है, जिससे यह शैक्षणिक और वैज्ञानिक समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन केंद्र के रूप में अपनी भूमिका निभाता है।

हॉस्टल और अन्य बुनियादी ढांचा सुविधा

सेकान अपने शोधकर्ताओं, इंटरन, एम.एससी. थीसिस उम्मीदवारों और फील्ड सहायकों के लिए उत्तम हॉस्टल सुविधाएं प्रदान करता है। परिसर में तीन मुख्य हॉस्टल ब्लॉक हैं। ब्लॉक I और ब्लॉक II में प्रत्येक में चार दोहरे-आक्यूपेंसी वाले कमरे हैं, जो विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं और शैक्षणिक कार्यक्रमों में शामिल व्यक्तियों के लिए आरामदायक जीवन व्यवस्था प्रदान करते हैं। ब्लॉक III, जिसे स्नातकोत्तर (पीजी) हॉस्टल भी कहा जाता है, में चार कमरे हैं, जिनमें से प्रत्येक तीन छात्रों को समायोजित करने के लिए डिजाइन किया गया है, विशेष रूप से एम.एससी. वन्यजीव विज्ञान (पक्षीविज्ञान) पाठ्यक्रम में दाखिल छात्रों के लिए।

इन ब्लॉकों के अलावा, सेकान के पास दो परिशिष्ट हैं, हॉस्टल परिशिष्ट I और II, जो सामूहिक रूप से 12 अतिरिक्त छात्रों को समायोजित कर सकते हैं। कुल मिलाकर, सेकान के हॉस्टल में 40 व्यक्ति रह सकते हैं। सभी हॉस्टल आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित हैं, जिसमें वाई-फाई शामिल है, ताकि निवासियों को शैक्षणिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुंच हो सके। हॉस्टल का वातावरण छात्रों, विद्वानों, और शोधकर्ताओं के लिए एक उत्पादक और आरामदायक प्रवास का समर्थन करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे सेकान में एक जीवंत शैक्षणिक समुदाय का निर्माण होता है।



© आरती जे

आपंतुक

आगतुक

- बागवानी और वानिकी कॉलेज, झालावाड़ के 50 छात्र, 5 अप्रैल 2023.
- दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के 50 छात्र, 6 अप्रैल 2023.
- मुकेश लाल राष्ट्रीय कॉलेज, यमुनानगर, हरियाणा के 54 छात्र, 11 अप्रैल 2023.
- हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, मंडी के 45 प्रशिक्षु, 11 अप्रैल 2023.
- अनुप्रयुक्त और जीवन विज्ञान, उत्तरांचल विश्वविद्यालय, देहरादून के 45 छात्र, 24 अप्रैल 2023.
- बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, रांची के 42 छात्र, 28 अप्रैल 2023.
- कर्नाटक वन अकादमी, धारवाड़ के 45 आरएफओ, 28 अप्रैल 2023.
- एम.एस.सी. प्राणी विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के 66 छात्र, 3 मई 2023.
- कोलासीब वन प्रभाग, ईएफ एंड सीसी और मिजोरम के पत्रकारों के 11 डीएफओ, 9 मई 2023.
- वन संस्थान, पोखरा, नेपाल के 38 छात्र, 12 मई 2023.
- भारतीय इंजीनियरिंग विज्ञान और प्रौद्योगिकी नवाचार विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश के 11 छात्र, 17 मई 2023.
- वन संस्थान, पोखरा, नेपाल के 38 छात्र, 19 मई 2023.
- माया समूह कॉलेज, सेलाकुई, देहरादून के 30 छात्र, 25 मई 2023.
- राज्य वन सेवा कॉलेज, कोयम्बटूर के 60 अधिकारी प्रशिक्षु, 31 मई 2023.
- कॉर्बेट वन्यजीव प्रशिक्षण केंद्र, कालागढ़ के 50 प्रशिक्षु, 1 जून 2023.
- कुंडल प्रशासन और प्रबंधन अकादमी के 56 छात्र, 2 जून 2023.
- त्रिभुवन वन संस्थान, हेटौडा, नेपाल के 47 छात्र, 5 जून 2023.
- कृषि और बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवमोगा, कोडागु, कर्नाटक के 80 बी.एससी. वन छात्र, 5 जून 2023.
- एआईएसईसीटी, विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड के 35 छात्र, 5 जून 2023.
- त्रिभुवन वन संस्थान, हेटौडा, नेपाल के 47 छात्र, 5 जून 2023.
- काठमांडू वन कॉलेज, कोटेश्वर, नेपाल के 45 छात्र, 13 जून 2023.
- एम.एस.सी. वनस्पति विज्ञान के छात्र, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी के 54 छात्र, 20 जून 2023.
- बागवानी और वानिकी कॉलेज, रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के 15 छात्र, 22 जून 2023.
- भूगोल विभाग (जीआईएस और रिमोट सेंसिंग), विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के 34 छात्र, 28 जून 2023.
- प्रशिक्षण प्रभाग, वन विभाग, हरियाणा सरकार, पिनजौर के 30 प्रशिक्षु, 10 जुलाई 2023.
- जीसस एंड मैरी कॉन्वेंट, देहरादून के 43 छात्र, 9 अगस्त 2023.
- क्लास कारमन रेजिडेंशियल एंड डे स्कूल, प्रेमनगर के 24 छात्र, 10 अगस्त 2023.
- केंद्रीय राज्य वन सेवा अकादमी, बर्नीहाट, असम के 48 अधिकारी प्रशिक्षु, 10 अगस्त 2023.
- वन्यजीव गार्ड वन प्रशिक्षण केंद्र, सोहना, हरियाणा के 53 प्रशिक्षु, 21 अगस्त 2023.
- बीएफआईटी समूह संस्थान, सुधोवाला, देहरादून के 60 यूजी और पीजी छात्र, 22 अगस्त 2023.
- उत्तराखंड वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी के 41 वन रक्षक, 23 अगस्त 2023.
- उत्तराखंड वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी के 42 वन रक्षक, 25 अगस्त 2023.
- उत्तराखंड वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी के 27 वन रक्षक, 29 अगस्त 2023.
- केंद्रीय राज्य वन सेवा अकादमी, देहरादून के 45 अधिकारी प्रशिक्षु, 1 सितंबर 2023.
- लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग के 18 पीजी छात्र और एक प्रोफेसर, 8 सितंबर 2023.
- केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, सेल्सी, आइजोल, मिजोरम के बीवीएससी और एएच के 64 छात्र, 8 सितंबर 2023.
- प्रशासन, विकास और प्रबंधन चंद्रपुर वन अकादमी, चंद्रपुर (महाराष्ट्र) के 49 एफआरओ प्रशिक्षु, 19 सितंबर 2023.
- ओडिशा के वन रेंज अधिकारी प्रशिक्षु के 31 छात्र, 9 अक्टूबर 2023.
- तमिलनाडु वन अकादमी के 45 वन रेंज अधिकारी प्रशिक्षु, 9 अक्टूबर 2023.
- पशु चिकित्सा और पशुपालन विज्ञान कॉलेज, मानुथी, त्रिशूर, केरल के 99 बीवीएससी और एएच के छात्र, 26 अक्टूबर 2023.
- ग्रेस अकादमी के 70 छात्र, 27 अक्टूबर 2023.
- सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज के 26 बी.एससी. (ऑनर्स) वन छात्र, 6 नवंबर 2023.
- कॉर्बेट वन्यजीव प्रशिक्षण केंद्र, कालागढ़ (गढ़वाल) उत्तराखंड के 45 छात्र, 24 नवंबर 2023.
- वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी, उत्तराखंड के 27 प्रशिक्षु, 28 नवंबर 2023.
- वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी, उत्तराखंड के 30 प्रशिक्षु, 29 नवंबर 2023.

- वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी, उत्तराखंड के 38 प्रशिक्षु, 1 दिसंबर 2023.
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून के 115 अधिकारी प्रशिक्षु, 1 दिसंबर 2023.
- राजस्थान वानिकी और वन्यजीव प्रशिक्षण संस्थान के 58 फॉरेस्टर प्रशिक्षु, 5 दिसंबर 2023.
- वन संस्थान, हेटौडा कैम्पस, मकवानपुर के 39 स्नातक स्तर के छात्र, 7 दिसंबर 2023.
- वन संस्थान, हेटौडा कैम्पस, मकवानपुर के 48 स्नातक स्तर के छात्र, 8 दिसंबर 2023.
- राजस्थान वानिकी और वन्यजीव प्रशिक्षण संस्थान के 57 फॉरेस्टर प्रशिक्षु, 8 दिसंबर 2023.
- महाराजा कॉलेज, एर्नाकुलम केरल के एम.एस.सी. वनस्पति विज्ञान के 11 छात्र, 11 दिसंबर 2023.
- वन रक्षक प्रशिक्षु प्रभाग, होशियारपुर के 29 छात्र, 4 जनवरी 2024.
- वन रक्षक प्रशिक्षु प्रभाग, होशियारपुर के 40 छात्र, 18 जनवरी 2024.
- हरियाणा वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, सोहना के 38 छात्र, 31 जनवरी 2024.
- आईसीएफआरई – वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, कौलागढ़ के 38 छात्र, 1 फरवरी 2024.
- बागवानी और वानिकी केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पासीघाट के 23 छात्र, 2 फरवरी 2024.
- वन प्रशिक्षण संस्थान, चोल के 46 वन रक्षक प्रशिक्षु, 6 फरवरी 2024.
- आईटीबीपी अकादमी, मसूरी के 25 अधिकारी प्रशिक्षु, 8 फरवरी 2024.
- हरियाणा वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, सोहना के 24 छात्र, 8 फरवरी 2024.
- समाज विज्ञान स्कूल के मनोविज्ञान विभाग के 20 छात्र, 9 फरवरी 2024.
- त्रिभुवन विश्वविद्यालय वन संस्थान, पोखरा कैम्पस के 40 छात्र, 15 फरवरी 2024.
- हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, मंडी के 10 छात्र, 21 फरवरी 2024.
- अध्ययन यात्रा पर काठमांडू वन कॉलेज के 48 बी.एस.सी. (फोरेस्ट्री) के छात्र, 22 फरवरी 2024.
- त्रिभुवन विश्वविद्यालय, वन संस्थान, पोखरा कैम्पस के 40 छात्र, 22 फरवरी 2024.
- वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के 115 छात्र, 23 फरवरी 2024.
- भारतीय रिमोट सेंसिंग संस्थान के पीजी डिप्लोमा और एम. टेक. पाठ्यक्रम के 12 छात्र, 26 फरवरी 2024.
- वन कॉलेज और अनुसंधान संस्थान बी.एस.सी. (फॉरेस्ट्री), तेलंगाना के 60 छात्र, 28 फरवरी 2024.
- केरल कृषि विश्वविद्यालय कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री के 33 छात्र, 6 मार्च 2024.
- कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वन कॉलेज के 47 छात्र, 13 मार्च 2024.
- इमायम कृषि और प्रौद्योगिकी संस्थान, ओडिशा, तमिलनाडु के 114 छात्र, 13 मार्च 2024.
- जया कृषि कॉलेज बी.एस.सी. ऑनर्स (कृषि), तमिलनाडु के 48 छात्र, 20 मार्च 2024.
- राजीव गांधी पशु चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान कुरुम्बापेट, पुडुचेरी के 41 छात्र, 20 मार्च 2024.
- जे.के.के. मुनिराजा कॉलेज कृषि विज्ञान, तमिलनाडु के 199 बी.एस.सी. छात्र, 21 मार्च 2024.
- वुडस्टॉक स्कूल, मसूरी के 74 छात्र, 22 मार्च 2024.

सैकोन

(भा.व.स. का दक्षिण भारत केन्द्र)

डॉ. ट्रेवर प्राइस, प्रोफेसर, शिकागो विश्वविद्यालय। **हिमालयन पक्षियों का भूभौगोलिक अध्ययन उनके प्रजनन और सर्दियों के स्थान पर: प्रतिस्पर्धा का महत्व।** 4 जुलाई, 2023। तमिलनाडु वन विभाग के प्रशिक्षुओं के लिए 9 अगस्त, 2023।

नेहरू मेमोरियल कॉलेज, तिरुचिरापल्ली (त्रिची) के **पीजी (स्नातकोत्तर) (जूलॉजी)** छात्रों के लिए 1 मार्च, 2024।

अन्य संस्थानों को प्रदान की गई शिक्षण इनपुट / वार्ताएं

डॉ. महेंद्रन माइलस्वामी (20 मई, 2023)। **मिशन लाइफ – पर्यावरण के लिए जीवनशैली।** क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, मैसूर का 28वां स्थापना दिवस।

डॉ. अशुतोष सिंह (23 मई, 2023)। **फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के दौरान संसाधन व्यक्ति।** एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा।

डॉ. अशुतोष सिंह (7 अक्टूबर, 2023)। **होलोसीन युग में हिमालयन पक्षी।** सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु।

डॉ. ए. मुखर्जी (27 फरवरी, 2024)। **भूमि पर जीवन में सामंजस्य को बढ़ावा देना – मानव और पारिस्थितिक आवश्यकताओं का एकीकरण।** कुमारगु: कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर।

वार्ताएं और बैठकें

डॉ. विद्याधर अटकोरे (23 अप्रैल, 2023)। **वन्यजीव, वानिकी और पर्यावरण विज्ञान में करियर।** भारतीय युवा विज्ञान अकादमी की पहल 'प्रयोजन' के लिए (ऑनलाइन)।

डॉ. विद्याधर अटकोरे (6 जून, 2023)। **मीठे पानी की पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा/असुरक्षा**। हिमालय के मीठे पानी की पारिस्थितिकी तंत्र का आकलन और उनकी सेवा और असुरक्षा पर एक दिवसीय कार्यशाला में पैनल चर्चा। आईआईटी रुड़की, उत्तराखंड।

डॉ. विद्याधर अटकोरे (19 जुलाई, 2023)। **आर्द्रभूमि प्रबंधन में भागीदारों की भागीदारी का महत्व**। तमिलनाडु में तीन दिवसीय आर्द्रभूमि संरक्षण और प्रबंधन कार्यशाला के तहत, टीएनएफए और जीआईजेड इंडिया द्वारा आयोजित, कोयंबटूर।

जयपाल आर (24-28 जुलाई, 2023)। **भारतीय हवाई अड्डों के सामान्य पक्षी एक परिचय**। भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के लिए पक्षी/वन्यजीव से जुड़ी चुनौतियों के प्रबंधन पर सैकोन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।

जयपाल आर (1 अगस्त, 2023)। **वन्यजीव पारिस्थितिकी और संरक्षण में अध्ययन और करियर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य**। सैकोन ने भारतियार विश्वविद्यालय के लिए यूजीसी-एचआरडीसी फैकल्टी प्रेरण कार्यक्रम आयोजित किया।

जयपाल आर (6 अक्टूबर, 2023)। **भारत में पारिस्थितिकी और वन्यजीव अध्ययन**। भारतियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर ने पर्यावरण शिक्षा में यूजीसी-एचआरडीसी लघु कोर्स आयोजित किया।

डॉ. विद्याधर अटकोरे (26 अक्टूबर, 2023)। **वन्यजीव प्रबंधन में संरक्षण संगठन की भूमिका**। (ऑनलाइन), बांदा विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश।

जयपाल आर (20-21 दिसंबर, 2023)। **भारत के पक्षियों की स्थिति: नागरिक विज्ञान डेटा का उपयोग करके संरक्षण आकलन**। सैकोन ने जू आउटरीच संगठन के लिए राम हत्तीखुदुर उन्नत प्रशिक्षण आयोजित किया।

कुमार एचएन (11 दिसंबर, 2023)। **भारत के प्राइमेट और संबंधित संघर्ष**। सेंट्रल एकेडमी फॉर स्टेट फॉरेस्ट सर्विस, कोयंबटूर की सैकोन यात्रा के दौरान।

जयपाल आर (7 जनवरी, 2024)। **पक्षी संरक्षण में पक्षी गणना कैसे मदद करती है?** तमिल बर्डर्स एनुअल मीट 2024, बर्ड काउंट इंडिया और ईबर्ड इंडिया कार्यक्रम द्वारा बिशप हेबर कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, तिरुचिरापल्ली में आयोजित।

जयपाल आर (22-24 जनवरी 2024): **भारत की वन्यजीव विरासत: यह क्यों महत्वपूर्ण है?** कक्षा-1/गुप-ए अधिकारियों के लिए सैकोन द्वारा आयोजित वन्यजीव संरक्षण पर प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रस्तुत।

जयपाल आर (22-24 जनवरी 2024): **नागरिक विज्ञान और नागरिक आंदोलनों के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण**। सैकोन द्वारा कक्षा-पुष्प-ए अधिकारियों के लिए वन्यजीव संरक्षण पर प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रस्तुत।

डॉ. एस. मुखर्जी ने 2 फरवरी 2024 को 'फिशिंग कैट्स / भारत में आर्द्रभूमि के राजदूत' विषय पर व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान ग्लोबल टाइगर फोरम द्वारा आयोजित विश्व आर्द्रभूमि दिवस वेबिनार का हिस्सा था।

डॉ. करुणाकरण पीवी ने 20-24 फरवरी 2024 को 'तमिलनाडु में आर्द्रभूमि पक्षियों का प्रबंधन और संरक्षण प्राथमिकताएं' विषय पर व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान कोयंबटूर में आयोजित 'आर्द्रभूमि के निगरानी और प्रबंधन' पर भारतीय वन सेवा (आईएफएस) कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत किया गया।

डॉ. एम. महेंद्रन ने 20-24 फरवरी 2024 के दौरान 'आर्द्रभूमि पक्षियों की जनगणना और निगरानी' पर व्याख्यान दिया। यह भी कोयंबटूर में आयोजित 'आर्द्रभूमि का निगरानी और प्रबंधन' आईएफएस प्रशिक्षण कार्यशाला का हिस्सा था।

डॉ. आर. जयपाल ने 20-24 फरवरी 2024 के दौरान 'भारत की आर्द्रभूमि पक्षी: स्थिति और संरक्षण' पर अपनी प्रस्तुति दी। सैकोन ने यह कार्यशाला आईएफएस अधिकारियों के लिए आयोजित की।

डॉ. एस. मुखर्जी ने 29 फरवरी 2024 को 'जैव विविधता संरक्षण में आणविक उपकरण' विषय पर चर्चा की। यह चर्चा बायोकाॅनकोरेन्जा'24 में आयोजित एक आमंत्रित व्याख्यान के दौरान हुई, जो तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय (टीएनएयू) परिसर, कोयंबटूर में आयोजित की गई थी।

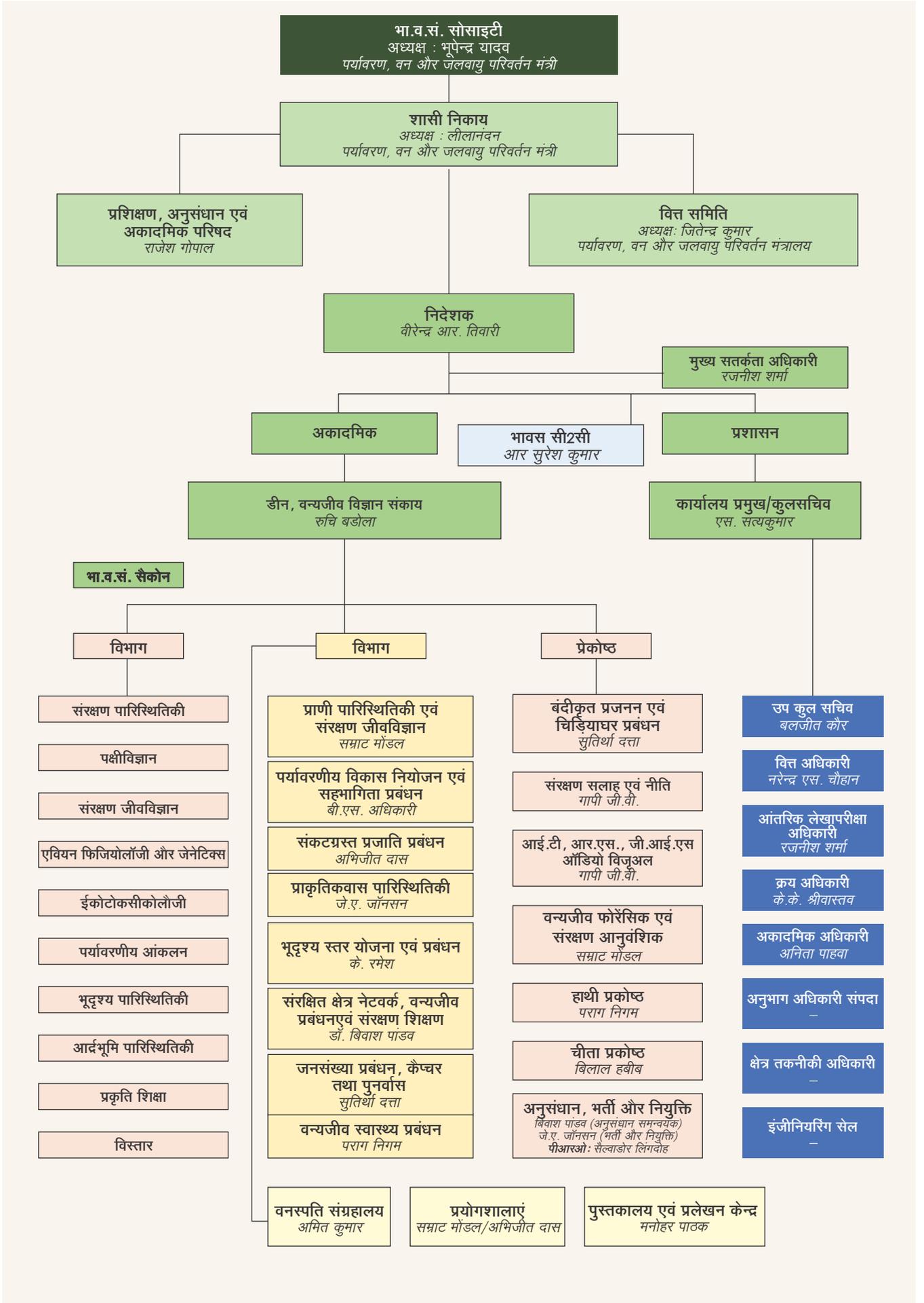
डॉ. विद्याधर अटकोरे ने 20-21 मार्च 2024 को 'मीठे पानी के विज्ञान की खोज' पर चर्चा की। यह व्याख्यान 'द न्यू होराइजन्स इन लाइफ साइंसेज-2024' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन रयंत शिक्षण संथा के यशवंतराव चव्हाण विज्ञान संस्थान, सतारा (करमवीर भवराव पाटिल विश्वविद्यालय, सतारा का अग्रणी कॉलेज), महाराष्ट्र द्वारा किया गया।



© विवेक चरका

भारत





भा.व.सं.—सोसाइटी

अध्यक्ष, भावसं —सोसायटी

1. श्री भूपेन्द्र यादव,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री
भारत सरकार,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली — 110 003
2. श्री अश्विनी कुमार चौबे,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री,
भारत सरकार,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली — 110 003
3. श्री नरेश बंसल,
माननीय संसद सदस्य,
राज्य सभा,
नई दिल्ली
4. प्रधान मुख्य वन संरक्षक और मुख्य वन्यजीव वार्डन,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग,
मिज़ोरम सरकार,
पर्यावरण वन परिसर, तुईखुआहत्लांग,
पो.ऑ. आइजोल,
आइजोल — 796 001 (मिज़ोरम)
5. प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन प्रमुख) और मुख्य वन्यजीव वार्डन,
वन विभाग, मणिपुर सरकार,
वन मुख्यालय, संजेनथोंग,
इंफाल — 795 001 (मणिपुर)
6. मुख्य वन्यजीव वार्डन और प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव),
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग,
नागालैंड सरकार,
कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
कोहिमा — 797 001 (नागालैंड)
7. प्रधान मुख्य वन संरक्षक और मुख्य वन्यजीव वार्डन,
वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन विभाग,
उड़ीसा सरकार,
राज्य वन्यजीव मुख्यालय,
पीसीसीएफ और मुख्य वन्यजीव वार्डन का कार्यालय,
प्रकृति भवन, प्लॉट नंबर 1459,
शहीद नगर,
भुवनेश्वर — 751 007
8. प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यजीव
एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन,
वन विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार,
विकास भवन, नॉर्थ ब्लॉक,
तीसरी मंजिल, साल्टलेक,
कोलकाता — 700 091 (पश्चिम बंगाल)
9. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन,
महाराष्ट्र वन विभाग, महाराष्ट्र सरकार,
तीसरी मंजिल, वन भवन,
सिविल लाइंस, रामगिरि रोड,
नागपुर — 440 001 (महाराष्ट्र)
10. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन,
वन मंडल,
राजस्थान सरकार,
वन भवन, वाणिकी पथ,
जयपुर — 302 005 (राजस्थान)
11. प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) और मुख्य वन्यजीव वार्डन,
केरल वन और वन्यजीव विभाग,
केरल सरकार,
वन लक्ष्मी वन मुख्यालय,
तिरुवनंतपुरम — 695 014
12. प्रधान मुख्य वन संरक्षक और मुख्य वन्यजीव वार्डन,
तमिलनाडु सरकार,
नंबर 1 जेनिस रोड,
पनागल बिल्डिंग,
सैदापेट, चेन्नई — 600 015
13. मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन,
हिमाचल प्रदेश वन विभाग,
हिमाचल प्रदेश सरकार,
शिमला
14. प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वनप्रमुख) एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन,
वन्यजीव संरक्षण विभाग,
जम्मू और कश्मीर यू.टी.,
मंदा हिल्स, होटल अशोक के पास,
जम्मू (जम्मू और कश्मीर)
15. मुख्य वन्यजीव वार्डन,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग,
उत्तर प्रदेश सरकार, 17, राणा प्रताप मार्ग,
लखनऊ — 226001 (उत्तर प्रदेश)
16. मुख्य वन्यजीव वार्डन,
वन विभाग,
उत्तराखंड सरकार,
85, राजपुर रोड,
देहरादून (उत्तराखंड)
17. प्रोफेसर एम.एच. फुलेकर,
प्रोफेसर एवं डीन,
स्कूल ऑफ एनवायरनमेंट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट,
केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर (गुजरात)
18. डॉ. पायल मागो,
प्रधानाचार्य,
शहीद राजगुरु महिला एप्लाइड साइंसेज महाविद्यालय
(डीयू),
नई दिल्ली — 110 096

19. डॉ. रामकृष्ण,
जेडएसआई से सेवानिवृत्त,
बेंगलुरु
20. डॉ. हिम्मत सिंह नेगी,
मप्र के सेवानिवृत्त वन अधिकारी,
शिमला (हिमाचल प्रदेश)
21. डॉ. गोपाल सिंह रावत,
सेवानिवृत्त डीन,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
दून ऑफिसर्स एन्क्लेव,
देहरादून (उत्तराखंड)
22. श्री किशन सिंह सुगार,
पीसीसीएफ और
एचओएफएफ, (सेवानिवृत्त)
कर्नाटक
23. डॉ. रंजना गुप्ता, आईएफएस (सेवानिवृत्त),
फ्लैट नंबर ए - 203, प्लॉट - सी - 58/20,
पीएमओ सहकारी आवास सोसायटी,
सेक्टर 62, नोएडा,
गौतम बुद्ध नगर - 201 309 (उत्तर प्रदेश)
24. प्रो. संजीव पुरी,
जैव प्रौद्योगिकी शाखा,
यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी
(यूआईईटी),
पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़ - 160 014
25. प्रो. के शिवाकुमार,
पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान विभाग,
पांडिचेरी विश्वविद्यालय,
पुदुचेरी
26. डॉ. एच.एस सिंह,
पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
गुजरात सरकार,
प्लॉट 44, सैक्टर - 8,
गांधीनगर - 382 010 (गुजरात)
27. बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस),
हॉर्नबिल हाउस,
डॉ. सलीम अली चौक,
शहीद भगत सिंह रोड,
मुंबई - 400 023
28. वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर-भारत (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ),
"सचिवालय"
172 - लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली - 110 003
29. भारतीय वन्यजीव संरक्षण सोसायटी,
7, एस्ले हॉल,
देहरादून - 248 001
30. पर्यावरण शिक्षा केंद्र,
नेहरू फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट,
थलतेज टेकरा,
अहमदाबाद (गुजरात)
31. डॉ. रवि सिंह
महासचिव एवं सीईओ,
डब्ल्यूडब्ल्यूएफ भारत, 172 बी, लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली - 110 003
32. सचिव, भारत सरकार,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड,
नई दिल्ली - 110 003
33. सचिव,
भारत सरकार,
वित्त मंत्रालय,
नॉर्थ ब्लॉक,
नई दिल्ली - 110 001
34. सचिव,
भारत सरकार,
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, प्रौद्योगिकी भवन,
न्यू महारौली रोड,
नई दिल्ली - 110 001
35. सचिव,
भारत सरकार,
शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली - 110 001
36. नीति आयोग के प्रतिनिधि,
योजना भवन, संसद मार्ग,
नई दिल्ली
37. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के प्रतिनिधि
बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली
38. प्रमुख सचिव,
उत्तराखंड सरकार, "सचिवालय"
देहरादून
39. वन महानिदेशक एवं सदस्य
भारत सरकार के विशेष सचिव,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड,
नई दिल्ली - 110 003
40. वन्यजीव संरक्षण निदेशक,
भारत सरकार,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
इंदिरा पर्यावरण भवन
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली - 110 003

41. अतिरिक्त सचिव (वित्त सलाहकार),
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली — 110 003
42. महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद,
पो.ऑ. न्यू फॉरेस्ट,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
43. निदेशक,
भारतीय प्राणी सर्वेक्षण,
एम-ब्लॉक, न्यू अलीपुर,
कोलकाता — 700 053 (पश्चिम बंगाल)
44. निदेशक
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण,
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, 3 एमएसओ बिल्डिंग,
ब्लॉक एफ, 5वीं और 6वीं मंजिल, डीएफ ब्लॉक,
सैक्टर-1, साल्ट लेक सिटी
कोलकाता — 700 064 (पश्चिम बंगाल)
45. डीन,
वन्यजीव विज्ञान संकाय,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
46. कुलसचिव,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
47. निदेशक,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
48. वन महानिरीक्षक (डब्ल्यूएल),
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड, अली गंज,
नई दिल्ली — 110 003
49. सदस्य-सचिव,
राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण,
बी — 1 विंग, 7वीं मंजिल,
पर्यावरण भवन,
सीजीओ कॉम्प्लेक्स,
नई दिल्ली — 110 003
50. निदेशक (परियोजना हाथी),
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड, अली गंज,
नई दिल्ली — 110 003

भा.व.सं. — शासी निकाय

1. सचिव,
भारत सरकार,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अली गंज,
नई दिल्ली — 110 003
2. वन महानिदेशक एवं
भारत सरकार के विशेष सचिव,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अली गंज,
नई दिल्ली — 110 003
3. डॉ. एच.एस सिंह,
पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक,
गुजरात सरकार,
प्लॉट 44, सैक्टर — 8,
गांधीनगर — 382 010 (गुजरात)
4. प्रोफेसर एम.एच. फुलेकर,
प्रोफेसर एवं डीन, पर्यावरण एवं पर्यावरण विद्यालय,
सतत विकास केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर (गुजरात)
5. डॉ. पायल मागो,
प्रधानाचार्य,
शहीद राजगुरु महिला एप्लाइड साइंसेज महाविद्यालय (डीयू),
नई दिल्ली — 110 096
6. डॉ. रामकृष्ण,
जेडएसआई से सेवानिवृत्त,
बेंगलुरु (कर्नाटक)
7. डॉ. हिममत सिंह नेगी,
मप्र के सेवानिवृत्त वन अधिकारी,
शिमला (हिमाचल प्रदेश)
8. डॉ. गोपाल सिंह रावत,
सेवानिवृत्त डीन,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
दून ऑफिसर्स एन्क्लेव,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
9. वित्तीय सलाहकार एवं अतिरिक्त सचिव,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड, अली गंज,
नई दिल्ली—110003
10. प्रमुख सचिव,
उत्तराखंड सरकार,
"सचिवालय",
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
11. उत्तर पूर्वी क्षेत्र — मणिपुर
12. पूर्वी क्षेत्र — ओडिशा
13. उत्तरी क्षेत्र — हिमाचल प्रदेश
14. पश्चिमी क्षेत्र — गुजरात
15. दक्षिणी क्षेत्र — कर्नाटक

16. स्थायी सदस्य — उत्तराखंड
17. निदेशक
वन्यजीव संरक्षण,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली-110003
18. महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद,
पो.ऑ. न्यू फॉरेस्ट,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
19. डॉ. राजेश गोपाल
अध्यक्ष, भारतीय वन्यजीव संस्थान — प्रशिक्षण,
अनुसंधान एवं अकादमिक परिषद, एवं
महासचिव, ग्लोबल टाइगर फोरम
नई दिल्ली
20. कुलसचिव,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)
21. निदेशक,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
देहरादून — 248001 (उत्तराखंड)
22. वन महानिरीक्षक (डब्ल्यूएल)
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड, अली गंज,
नई दिल्ली — 110 003
23. सदस्य सचिव,
राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण,
बी - 1 विंग, 7वीं मंजिल,
पर्यावरण भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स,
नई दिल्ली — 110 003
24. निदेशक (परियोजना हाथी),
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली 110 003

भा.व.सं.— वित्त समिति

अध्यक्ष

1. वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली — 110 003

सदस्यगण

2. अपर महानिदेशक वन एवं
निदेशक (वन्यजीव संरक्षण),
भारत सरकार,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली — 110 003
3. अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
इंदिरा पर्यावरण भवन,
जोर बाग रोड,
नई दिल्ली — 110 003
4. श्री. पी.आर. सिन्हा
(पूर्व निदेशक, भावसं)
देश प्रतिनिधि, भारत देश कार्यालय,
IUCN (प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ),
बी - 88, नीति बाग,
नई दिल्ली — 110 049
5. डॉ. बिस्वजीत मोहंती,
शांतिकुंज, लिंक रोड
कटक (उड़ीसा)
6. डॉ. रुचि बडोला,
डीन, वन्यजीव विज्ञान संकाय,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)

सदस्य-सचिव

7. श्री. वीरेंद्र आर. तिवारी,
निदेशक,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
पो.बॉ. 18, चंद्रबनी,
देहरादून — 248 001 (उत्तराखंड)

भा.व.सं. — प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं अकादमिक परिषद

अध्यक्ष

1. डॉ. राजेश गोपाल,
महासचिव, ग्लोबल टाइगर फोरम
नई दिल्ली

सदस्यगण

2. निदेशक (वन्यजीव संरक्षण)/
अतिरिक्त महानिदेशक (वन्यजीव),
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार,
इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड,
नई दिल्ली-110003

तीन साल की अवधि के लिए क्षेत्रीय-रोटेशन के आधार पर
3-14 मुख्य वन्यजीव वार्डन

3. उत्तरी क्षेत्र (2 प्रतिनिधि) दिल्ली, हिमाचल प्रदेश
4. पूर्वी क्षेत्र (1 प्रतिनिधि) बिहार
5. मध्य भारत (1 प्रतिनिधि) उत्तर प्रदेश
6. पश्चिमी क्षेत्र (2 प्रतिनिधि) राजस्थान, गोवा
7. दक्षिणी क्षेत्र (2 प्रतिनिधि) आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु
8. उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (3 प्रतिनिधि) असम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश
9. स्थायी आमंत्रित उत्तराखंड

15-17 संगठन/संस्थानों से तीन का प्रतिनिधित्व

15. निदेशक,
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण,
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, 3 एम.एस.ओ बिल्डिंग,
ब्लॉक - एफ, 5वीं और 6वीं मंजिल, डीएफ ब्लॉक,
सैक्टर - 1, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

16. निदेशक,
भारतीय प्राणी सर्वेक्षण,
प्राणी विज्ञान भवन,
एम - ब्लॉक, न्यू अलीपुर,
कोलकाता - 700 053 (पश्चिम बंगाल)

17. सदस्य-सचिव,
केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण,
बी - 1 विंग, 6वीं मंजिल,
पं. - दीनदयाल अंत्योदय भवन,
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110 003

(18-19) विश्वविद्यालयों के दो प्रतिनिधि, जो भावसं-
-सोसाइटी 18 के सदस्य हैं।

18. प्रोफेसर संजीव पुरी,
जैव प्रौद्योगिकी शाखा,
विश्वविद्यालय संस्थान,
इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी (यूआईईटी),
पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़ 160 014

19. प्रो. के. शिवाकुमार,
पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान विभाग,
पांडिचेरी विश्वविद्यालय,
पुदुचेरी

वन्यजीव विज्ञान से संबंधित अनुभव वाले तीन प्रख्यात
वैज्ञानिक/संरक्षणवादी/सामाजिक-अर्थशास्त्री/व्यावसायिक
वन्यजीव

20. डॉ गोपाल सिंह रावत,
सेवानिवृत्त डीन,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
दून ऑफिसर्स एन्क्लेव,
देहरादून - 248 001 (उत्तराखंड)

21. डॉ. हिम्मत सिंह नेगी,
ई3/20 मंजिल,
डीएलएफ वैली,
पंचकुला,
हरियाणा - 134 103

22. प्रोफेसर मधुसूदन हीराराम फुलेकर,
प्रोफेसर एवं डीन,
पर्यावरण एवं सतत विकास स्कूल
केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर, गुजरात

23. भारतीय वन, अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद
(आईसीएफआरई) का एक प्रतिनिधि,
पी.ओ. न्यू फॉरेस्ट,
देहरादून - 248 006 (उत्तराखंड)

24. डीन,
वन्यजीव विज्ञान संकाय
भारतीय वन्यजीव संस्थान
चन्द्रबनी,
देहरादून - 248 001 (उत्तराखंड)

25-26 दो वरिष्ठतम विभागाध्यक्ष

25. डॉ रुचि बडोला,
विभागाध्यक्ष, पारिस्थितिकी विकास योजना एवं सहभागी
प्रबंधन,
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी,
देहरादून - 248001 (उत्तराखंड)

26. डॉ बी एस अधिकारी,
विभागाध्यक्ष, पर्यावास पारिस्थितिकी,
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी
देहरादून - 248 001 (उत्तराखंड)

27. संकाय सदस्य (अनुसंधान समन्वयक प्रभारी)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी,
देहरादून - 248001 (उत्तराखंड)

सदस्य-सचिव

28. निदेशक,
भारतीय वन्यजीव संस्थान,
चन्द्रबनी,
देहरादून - 248001 (उत्तराखंड)





© ଅନୁସୀମା ନଶିମ୍‌ବେକେଟ୍

ମାକାମାକା

भा.व.सं.

पीयर रिव्यूड राष्ट्रीय शोध पत्रिकाएं

अबिनेश ए, सीएस विष्णु और रमेश, सी. (2023)। **भारतीय ताड़ गिलहरी में आटो-फेलेशीयो व्यवहार का अवलोकन**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(8), 23817–23818. doi:10.11609/jott-8370.15.8.23817–23818

अहमद एम, सईद यू, रंजन वी, हुसैन एसए, बदोला आर, एस कुमारसामी (2023)। **कैमूर वन्यजीव अभ्यारण्य, बिहार, भारत में भारतीय पैंगोलिन का फोटोग्राफिक प्रमाण**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(5), 23270–23272. doi:10.11609/jott-8248.15.5.23270–23272

अंकित के, अहमद एम, रंजन वी, कुमार एस, हुसैन एसए और गोपी जीवी (2024)। **मध्य गंगा क्षेत्र में भारतीय रिक्मर के प्रजनन कॉलोनियों का अवलोकन**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 16(2), 24737–24745. doi:10.11609/jott-8593.16.2.24737–24745

भट्ट एस, कुमार ए, अरुणाचलम ए और अरुणाचलम के (2024)। **उत्तराखंड, पश्चिमी हिमालय में जौनसारी जनजाति की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली और एथनोमेडिसिनल विविधता**। प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेस, इंडिया. सेक्शन बी, 94(1), 177–192. doi:10.1007/40011-023-01514-ल

भट्ट यू, हबीब बी और लिंगदोह एस (2023)। **मानस राष्ट्रीय उद्यान, असम, भारत में एशियाटिक ब्रश-टैल्ड पोर्क्यूपाइन के और फोटोग्राफिक रिकॉर्ड**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(6), 23446–23448. doi:10.11609/jott-5591.15.6.23446–23448

कुमार आर और अधिकारी बीएस (2024)। **प्राकृतिक हिम पिघलने के समय का अल्पाइन घासभूमि की समुदाय संरचना और मौसमी पैटर्न पर प्रभाव**। प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेस, इंडिया. सेक्शन बी, 94(1): 107–119. doi:10.1007/s40011-023-01509-9

पीएन अनुप राज, एडी वेलांकर और पी प्रमोद (2023)। **केरल, भारत में भरतापुझा नदी बेसिन में पक्षियों की विविधता और वितरण**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(11), 24169/24183. doi:10.11609/jott-8573.15.11.24169–24183

पटेल डी, रमेश सी, घोषाल एस और रैना पी (2023)। **लद्दाख, भारत में फ्रंटियर बो-फिंगर्ड गेको द्वारा समूह अंडा-प्रवृत्ति**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(8): 23763–23770. doi:10.11609/jott-8250.15.8.23763–23770

रातौर एचएस, पति जे, पांडव बी और मोंडोल एस (2024)। **जंगली उत्तरी लाल मंटजाक में पहला रिकॉर्डेड पारस्परिक ऑलोग्रुमिंग**। एक्टा एथोलॉजिका 10. 1007/s10211-024-00441-z

साधुखान एस, खान एस और हबीब बी (2024)। **भेड़िये की आवाज को चुप कराना – भेड़ियों के चिल्लाने का व्यवहार एवं भारत में मानव प्रभाव के प्रति उनकी प्रतिक्रिया**। एनिमल कंजर्वेशन, 27(1)रू 98दृ111. कवपरू10.1111ध्वअ.12881

सईद यू, अहम्मद एम, रंजन वी, हुसैन एसए और बदोला आर (2023)। **गौतम बुद्ध वन्यजीव अभ्यारण्य, बिहार और झारखंड, भारत में पक्षी समुदाय संरचना में विविधता और चारा गिल्ड का विश्लेषण**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(12): 24331–24344. doi:10.11609/रवजज.8357.15.12.24331–24344

साह आर, खंडुरी एम, चौधरी पी, थॉमस पॉल के, गुरुरानी एस, बनवाला के, ... हुसैन एसए (2024)। **गंगा नदी बेसिन, भारत में ताजे पानी के स्तनधारियों के लिए संभावित विषाक्त तत्वों का आहार जोखिम**। एनवायरमेंटल पॉल्यूशन (बाकिंग, एसेक्स: 1987), 351(123928), 1कवप:10.1016/j-envpol-2024.123928

साहू एस, कुमार ए, राय जे और गुप्ता एसके (2023)। **कछुओं और कछुवे के माइटोजीनोम पर सकारात्मक चयन दबाव**। ऑर्गनिज्म, डाइवर्सिटी एंड एवोल्यूशन, 23(4), 953–965 |10.1007/s13127-023-00625-8

साहू के और गुप्ता एसके (2024)। **उत्तराखंड के शहरी जिलों में सुअर पालन प्रथाओं की स्थिति**। इंडियन जर्नल ऑफ एनिमल प्रोडक्शन एंड मैनेजमेंट, 40(2), 100–106 |10.48165/ijapm-2024.40.2.6

सैनी डी, यादव पी, कोलिपाकम वी, सथ्यकुमार एस और गुप्ता एसके (2023)। **भारतीय हिमालयन क्षेत्र से ब्लू शीप का पूर्ण माइटोजीनोम और अन्य संबंधित प्रजातियों के साथ तुलनात्मक संबंध**। एनिमल जीन, 29(200155), 200155.

सरकार डी और तालुकदार जी (2023)। **भारतीय हॉर्नबिल्स (परिवार: बुसरोटिडे) पर भविष्य के जलवायु परिवर्तन और क्षेत्र-स्थानांतरण का प्रभाव**। इकोलॉजिकल इंपॉर्मेंटिक्स, 74(101987), 101987 |10.1016/j-ecoinf-2023.101987

सरकार डी, जगन्निवासन एच, देबनाथ ए और तालुकदार जी (2024)। **प्रजाति वितरण मॉडल का प्रयोग करके भारत की जैव विविधता पर भविष्य के जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभावों पर एक व्यवस्थित समीक्षा रूप्रवित्तियां, और आंकड़ों में अंतराल**। बायोडायवर्सिटी एंड कंजर्वेशन doi:10.1007/s10531-024-02785-1

सरकार डी, तोमर बी, कुमार आरएस, सरन एस और तालुकदार जी (2023)। **भारत में पाइंड कुक्कू (क्लामटोर जाको बिनौस) के वितरण पर मौसमी चर का प्रभाव**। जर्नल ऑफ द इंडियन सोसाइटी ऑफ रिमोट सेंसिंग doi:10.1007/s12524-023-01771-4

शर्मा ए, एस नूरुन्निसा बेगम, जीएस गोराया, रावत जीएस और जिष्टू वी (2023)। **हिमाचल प्रदेश, भारत की वनस्पति में तीन नई प्रजातियों का समावेश**। जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा, 15(12): 24402-24408 doi:10.11609/jott-8647.15.12.

पीयर रिव्यूड अन्तराष्ट्रीय शोध पत्र

अधिकारी बीएस और कुमार आर (2023)। **वृक्षरेखा इकोटोन में प्राकृतिक हिम पिघलने के संबंध में शाकीय वनस्पति संरचना और मौसमी अवलोकन**। इकोलॉजी ऑफ हिमालयन ट्रीलाइन इकोटोन, (पृष्ठ 411-437) doi:10.1007/978-981-19-4476-5_17

अहमद ए और गोपी जीवी (2024)। **पूर्वी हिमालय के उष्णकटिबंधीय वनों में कुछ चयनित स्तनधारियों की साइट उपस्थिति**। फ्रंटियर्स इन इकोलॉजी एंड एवोल्यूशन, 11कवप:10.3389/fevo-2023.1106329

अहमद के, मिरेली एम, चारु एस, निगम पी, कुरैशी क्यू, नकाश आरवाई और फोकर्डी एस (2023)। **क्या हैंगुल, सर्वस हंगलू हंगलू, कश्मीर में विलुप्ति की ओर बढ़ रहा है? 19 वर्षों की निगरानी के प्रमाण**। ओरिक्स: द जर्नल ऑफ द फौना प्रिजर्वेशन सोसाइटी, 57(5): 585/591. कवपरू10.1017/s003060532300068

अहमद के, शंकर पाचा ए, यहया नक्श आर, कुमार पेडम्मा एस, येल्लापु एस, हडसन एस, ... मॉडोल एस (2023)। **माइटोजीनोमिक दृष्टिकोण से गंभीर रूप से संकटग्रस्त कश्मीर लाल हिरण या हैंगुल, सर्वस हंगलू हंगलू, पर विकासशील अंतर्दृष्टि**। पीयर जे, 11, ई15746doi:10.7717/peerj-15746

अंग्मो के, अधिकारी बीएस, बस्समन आरडब्ल्यू और रावत जीएस (2024)। **प्रकृति में सामंजस्य: लद्दाख में पौधों के उपयोग के सांस्कृतिक और पारिस्थितिक पहलुओं को समझना**। जर्नल ऑफ एथनोबायोलॉजी एंड एथनोमेडिसिन, 20(1): 34doi:10.1186/s13002-024-00670-3

बाला आर, कुमार आरएस, गोकले पी, मोहन डी और बरवे एस (2024)। **हिमालयी ऊंचाई के साथ घरेलू गौरैया (पासर डोमेस्टिकस) के शरीर के आकार और पीठ के पंखों के इन्सुलेशन में वृद्धि**। जर्नल ऑफ फील्ड ऑर्निथोलॉजी, 95(2)। doi:10.5751/jfo-00469-950210

बंदोपाध्याय के, बनर्जी के, विटोरिया मज्जामुटो एम, कोले एस, कोप्रोव्सकी जेएल, कुरैशी क्यू और झाला वार्ड (2024)। **भारत में छोटे बिल्ली प्रजातियों की पारिस्थितिकी और स्थिति की समीक्षा**। मैमल रिव्यू, 54(4), 341-356 doi:10.1111/mam-12348

बर्गली एच, भट्ट डी, सुंदरियाल आरसी, उनियाल वीपी, पांडे ए और रंजन आर (2023)। **उत्तराखंड, पश्चिमी हिमालय के जंगलों में वनाग्नि का वृक्ष विविधता और पुनर्जनन पर प्रभाव**। फ्रंटियर्स इन फॉरेस्ट्स एंड ग्लोबल चेंज, 6 doi:10.3389/ffgc-2023.1198143

बर्गली एच, पांडे ए, भट्ट डी, सुंदरियाल आरसी और उन्नीयाल वीपी (2024)। **'वन अग्नि प्रबंधन, वित्त पोषण की गतिशीलता, और जलते क्षेत्र में अनुसंधान: एक व्यापक समीक्षा'**। ट्रीज, फॉरेस्ट्स एंड पीपल, 16(100526), 100526। डीओआई: 10.1016/j-tp-2024.100526।

भाटिया डी, शर्मा सीपी, शर्मा एस और सिंह आर (2024)। **बालों का उपयोग कर प्रजातियों का भेदभाव: वन्यजीव फोरेंसिक्स में अनुप्रयोग**। साइंस एंड जस्टिस: जर्नल ऑफ द फॉरेंसिक साइंस सोसाइटी, 64(3), 314-321doi:10.1016/j-scijus-2024.04.002

भटनागर वाईवी, माथुर वीवी, सत्यकुमार एस, पाल आर, घोषाल ए, शर्मा आरके, ... लाल पी (2024)। **भारत के हिम तेंदुओं की सुरक्षारू स्थिति, खतरे और संरक्षण**। स्नो लेपर्ड्स, (पृष्ठ 513-529)। doi:10.1016/b978-0-323-85775-8.00003-0

भट्ट यू और लिंगदोह एस (2023)। **क्या धोले अपने सहजीवियों से खुद को अलग करते हैं?** उष्णकटिबंधीय वन में आवास उपयोग और मांसाहारी सह-अस्तित्व। जीत्सत्रिफ्ट फर सौजेटियरकुंडे (मैमलियन बायोलॉजी), 103(6), 591-601।

भट्ट यू और लिंगदोह एस (2023b)। **क्लाउडेड तेंदुए के रहस्यरू मानस राष्ट्रीय उद्यान, असम, भारत के उष्णकटिबंधीय वन में प्रचुरता, आवास उपयोग और मांसाहारी सह-अस्तित्व**। ओरिक्स: द जर्नल ऑफ द फौना प्रिजर्वेशन सोसाइटी, 57(6), 757-768 doi:10.1007/s42991-023-00378-z

भट्टाचार्य डी, साव एस, दास जे और भद्र ए (2024)। **क्या नवीनता एक स्कैवेंजर के भोजन की तलाश करने के निर्णयों को प्रभावित करती है?** पीयर जे, 12, bZ17121 doi:10.7717/peerj-17121

बिष्ट एस, बर्गली एसएस, बर्गली के, रावत वायएस और रावत जीएस (2023)। **गोरी घाटी, पश्चिमी हिमालय की नदीय जंगलों में शुष्क पदार्थ गतिशीलता और कार्बन प्रवाह**। फ्रंटियर्स इन फॉरेस्ट्स एंड ग्लोबल चेंज, 6 doi:10.3389/ffgc-2023.1206677

- बिस्वास जे, शिल जे, सासी आर, अहमद एमयू, बर्मन के, दास एन, ... कुमार एचएन (2024)। **स्वर्ण लंगूर, ट्रेकीपिथेकस गी** के आवास के पारिस्थितिक निर्धारक और इसकी जनसंख्या विशेषताएँ। ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन, 53(bZ03003), bZ03003 doi:10.1016/j-gecco-2024-e03003
- बिस्वास एस, कुमार एस, बंधोपाध्याय एम, पटेल एसके, लिंगदोह एस, पांडव बी और मोंडोल एस (2023)। **शिकार चयन को क्या प्रेरित करता है? तराई-आर्क परिदृश्य, भारत में बाघ, पेंथेरा टाइग्रिस की भोजन आदतों का आकलन**। जर्नल ऑफ मैमलॉजी, 104(6), 1302–1316 doi:10.1093/jmammal/gyad069
- बोरा जेके, वर्धन वी, विज आरके, देशमुख एवी, श्रीनिवास वाय, मुंगी एनए, ... झाला वाई (2024)। **कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, मध्य भारत में संकटग्रस्त जंगली जल भैंस, बुबैलस अर्नी के पुनर्स्थापन करने की संभावना का मूल्यांकन**। रेस्टोरेशन इकोलॉजी, 32(3)। doi:10.1111/rec-14079
- बोरुआ बी, दीपक वी, पटेल एनजी, जितिन वी, योमचा टी और दास ए (2023)। **पूर्वोत्तर भारत के सदाबहार जंगलों से हरे पेड़ मेंढक की नई प्रजाति ग्रासिक्सालस (ऐन्कुरा: रेकोफोरिडे)**। वर्टिब्रेट जूलॉजी, 73, 557–574
- बोरुआ बी, नारायणन एस, अरविंद एनए, लालरोनुंगा एस, दीपक वी और दास ए (2024)। **पूर्वोत्तर भारत से सायडोडैक्टाइलस ग्रे (स्क्वामाटा: गेक्कोनिडे) की छह नई प्रजातियों का वर्णन**। वर्टिब्रेट जूलॉजी, 74, 453–486।
- चंद्रा एन, कुमार ए, मिश्रा एपी, सिंह जी और रावत जीएस (2023)। **विगांडिया यूरेस (#bt io-) कुंथ : पश्चिमी हिमालय में एक नया उभरता हुआ आक्रामक विदेशी प्रजाति**। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायर्नमेंटल स्टडीज, 80(5), 1259–1272। doi:10.1080/00207233.2023.2194157
- चक्रवर्ती एस, कोलिपाकम वी, बम्प जेके और झाला वाईवी (2024)। **लेखक सुधार: नर शेरों में सहयोग को आकार देने में संबंध और जनसांख्यिकी की भूमिका**। साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 14(1): 3744। doi:10.1038/s41598-024-54226-2
- चक्रवर्ती एस, विकेनरोस सी, बॉर्ग बी, झाला वाई और बम्प जे (2023)। **संपादकीय: नई सदी में भेड़िया संरक्षण और संघर्ष प्रबंधन**। फ्रंटियर्स इन इकोलॉजी एंड एवोल्यूशन, 11। कवप:10.3389/fevo-2023.1174661
- चटर्जी एन, मुखोपाध्याय आई, निगम पी और हबीब बी (2023)। **शिकार घनत्व से एक बड़े मांसाहारी की वहन क्षमता की भविष्यवाणी: एक नया दृष्टिकोण**। पीयरजे, 11, e15914। doi:10.7717/peerj-15914
- दास जीसी, उस्मानी एए, शर्मा एसपी, गुहा एस, अली एसजेड, बार्थवाल एस, ३ हुसैन एसए (2024)। **गंगा नदी बेसिन, भारत की छोटी नदियों में गॅंगेटिक डॉल्फिन, प्लैटनिस्टा गॅंगेटिका के लिए संरक्षण योजना**। ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन, 51(e02900), e02900। doi:10.1016/j-gecco-2024-e02900
- दास पी, गोयल एसपी और लिंगदोह एस (2023)। **पूर्वोत्तर भारत के बराक घाटी के ग्रामीण हिस्सों में भारतीय पलाइंग फॉक्स के अधिभोग की स्थानिक सतर्कता संरचना**। बिहेवियरल इकोलॉजी एंड सोशियोबायोलॉजी, 77(6)। doi:10.1007/s00265-023-03329-3
- डे आर, शर्मा आर, निगम पी, विलियम्स एसी, हबीब बी और गोयल एसपी (2023)। **एशियाई हाथी की जनसंख्या निगरानी के लिए एकल मल्टीप्लेक्स पीसीआर का उपयोग करके मल डीएनए से लिंग और व्यक्ति की पहचान**। कंजर्वेशन जेनेटिक्स रिसेसर्स, 15(4): 163–173। doi:10.1007/s12686-023-01316-4
- डे आर, शर्मा आर, सिंह एसके, रास्टीरो आर, भास्कर आर, खान आई, ३ गोयल एसपी (2024)। **उत्तर-पश्चिमी भारत में सतत उपयुक्त आवास द्वारा समर्थित हाथियों में उच्च जीन प्रवाह और स्पष्ट स्थानिक आनुवंशिक संरचना की अनुपस्थिति के संरक्षण निहितार्थ**। कंजर्वेशन साइंस एंड प्रैक्टिस, 6(2)। doi:10-1111/csp2-13075
- दत्ता एस और कृष्णमूर्ति आर (2024)। **सफल संरक्षण पुनर्वास: पन्ना टाइगर रिजर्व, मध्य भारत में बाघों की पुनर्प्राप्ति की जनसंख्या गतिकी**। इकोलॉजिकल सॉल्यूशंस एंड एविडेंस, 5(2)। doi:10.1002/2688-8319.12337
- गोल एस, प्रभाकरण एन, प्रजापति एस, दुधट एस, दास एच, कुप्पुसामी एस और जॉनसन जेए (2024)। **अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, भारत में सुनामी के बाद समुद्री घास समुदायों में अक्षांशीय भिन्नता**। प्लॉस वन, 19(3): m0300654। doi:10.1371/journal-pone-0300654
- गोल एस, प्रजापति एस, प्रभाकरण एन, दास एच, कुप्पुसामी एस और जॉनसन जेए (2023)। **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, भारत में समुद्री घास के मैदानों की स्थानिक विविधता और प्रबंधन अनुशासनाएँ**। फ्रंटियर्स इन मरीन साइंस, 10A doi:10.3389/fmars-2023.1251887
- गोम्स एल, मोदी एस, निगम पी और हबीब बी (2024)। **भालू की सच्चाई: विदर्भ परिदृश्य में स्लाॅथ भालू की आनुवंशिक विविधता और जनसंख्या संरचना का माइक्रोसेटेलाइट मार्कर का उपयोग कर विश्लेषण**। डाइवर्सिटी, 16(2): 74। doi:10.3390/d16020074
- गोवर डीजे, दास एस, दीपक वी, जेरार्ड जेडी और नारायणन एस (2024)। **दक्षिणी पश्चिमी घाट, भारत के पूर्वी**

- पर्वतीय ढाल से यूरोपेलिटिस (सर्पेंटेस: यूरोपेलिटिडी) की एक नई प्रजाति। जूटाक्सा, 5477(3), 333–357। doi:10.11646/zoota-5477.3.4
- जैन ए, अक्षय वीए, दीपक वी, दास ए, बार्न्स पी, टैपले बी और कावाडा-ब्लांको एफ (2024)। **केरल, भारत में कैंटर के विशाल सॉफ्टशेल कछुए पेलोचेलिस कैंटोरी की स्थिति का निर्धारण करने के लिए स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान का उपयोग।** ओरिकसरू द जर्नल ऑफ द फौना प्रिजर्वेशन सोसाइटी, 58(3): 300–309। doi:10.1017/s0030605323001370
- कनगारेज आर, जोशी बीडी, दे आर, प्रेडिट एमए, सिंह एसके, पांडे पी, ३ गोयल एसपी (2023)। **पश्चिमी घाट, भारत में संकटग्रस्त स्थानिक नीलगिरि तहर (नीलगिरिट्रागस हाइलोक्रियस) की श्रेणी और आनुवंशिक विविधता पैटर्न पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की भविष्यवाणी।** लैंडस्केप इकोलॉजी, 38(8): 2085–2101। doi:10.1007/s10980-023-01681-3
- खंडूरी एम, साह आर, रामचंद्रन ए, हुसैन एसए, बडोला आर, कैंडोलिन यू और होल्कर एफ (2023)। **भारत के नदी तटवर्ती आवासों में प्रकाश प्रदूषण के स्थानिक-कालिक विस्तार और निर्धारक।** एनवायरनमेंटल इम्पैक्ट असेसमेंट रिव्यू, 98(106952)। doi:10.1016/j-eiar-2022.
- कुमार आर और अधिकारी बीएस (2023)। **पश्चिमी हिमालय के अल्पाइन क्षेत्र में शाकीय पौधों की ऋतु संबंधी घटनाओं पर हिम पिघलने का प्रभाव।** रिविस्टा ब्रासिलेइरा डी बोटानिका (ब्राजीलियन जर्नल ऑफ बोटनी), 46(4): 1041–1054। doi:10.1007/s40415-023-00939-z
- गोम्स एल, मोदी एस, निगम पी और हबीब बी (2024)। **स्लॉथ बियर में आनुवंशिक विविधता और जनसंख्या संरचना का विश्लेषण: विदर्भ परिदृश्य में माइक्रोसेटेलाइट मार्करों का उपयोग।** डाइवर्सिटी, 16(2): 74।
- गोवर डीजे, दास एस, दीपक वी, जेराड जेडी और नारायणन एस (2024)। **दक्षिणी पश्चिमी घाट के पूर्वी एस्कार्पमेंट से उरोपेलिटिस क्युवियर, 1829 (सर्पेंटेस: उरोपेलिटिडे) की नई प्रजाति।** जूटाक्सा, 5477(3), 333–357।
- जैन ए, अक्षय वीए, दीपक वी, दास ए, बार्न्स पी, टैपले बी और कावाडा-ब्लांको एफ (2024)। **स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान का उपयोग करके केरल, भारत में कैंटर के विशाल सॉफ्टशेल कछुए, पेलोशेलिस कैंटोरीआई की स्थिति का निर्धारण।** ओरिकस: द जर्नल ऑफ द फौना प्रिजर्वेशन सोसाइटी, 58(3): 300–309।
- कनगराज आर, जोशी बीडी, डे आर, प्रेडिट एमए, सिंह एसके, पांडे पी, ... गोयल एसपी (2023)। **पश्चिमी घाट, भारत में संकटग्रस्त स्थानिक नीलगिरि तहर (नीलगिरिट्रागस हाइलोक्रियस) की सीमा और आनुवंशिक विविधता पैटर्न पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की भविष्यवाणी।** लैंडस्केप इकोलॉजी, 38(8): 2085–2101
- खंडूरी एम, साह आर, रामचंद्रन ए, हुसैन एसए, बडोला आर, कैंडोलिन यू और होल्कर एफ (2023)। **भारत के नदी तटीय आवासों में प्रकाश प्रदूषण के स्थानिक-कालिक विस्तार और निर्धारक।** एनवायरनमेंटल इम्पैक्ट असेसमेंट रिव्यू, 98(106952)
- कुमार ए, नेगी एन, यादव एन, बडोला आर, हुसैन एसए और गुप्ता एसके (2024)। **गंगा नदी प्रणाली में एशियाई सिलुरिड कैटफिश, वाल्लागो अट्टू (ब्लॉक और शनाइडर, 1801) की आनुवंशिक विविधता, स्थानिक संपर्कता, और जनसंख्या संरचना माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए विश्लेषण से अंतर्दृष्टि।** मोलिक्यूलर बायोलॉजी रिपोर्ट्स, 51(1): 378
- कुमार ए, पांडा एके, उस्मानी एए, यादव पी, पनवार ए, बडोला आर, ... गुप्ता एसके (2024)। **गंगा नदी प्रणाली से गंभीर रूप से संकटग्रस्त तीन-धारीदार कछुए, बाटागुर धोंगोका की जनसंख्या आनुवंशिकी: माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए और माइक्रोसेटेलाइट विश्लेषण का उपयोग।** साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 14(1), 5920।
- कुमार आर और अधिकारी बीएस (2023)। **पश्चिमी हिमालय के अल्पाइन क्षेत्र में शाकीय पौधों की मौसमी घटनाओं पर हिम पिघलने का प्रभाव।** रिविस्टा ब्रासिलेइरा डे बोटानिका. ब्राजीलियन जर्नल ऑफ बोटनी, 46(4): 1041–1054।
- महार एन, डोबरियाल पी, बडोला आर और हुसैन एसए (2024)। **दुनिया की छत पर पर्यटन: भारतीय ट्रांस-हिमालय में पर्यटन के सामाजिक-पारिस्थितिक प्रभाव।** लैंड यूज पॉलिसी, 138(107031), 107031।
- महार एन, हबीब बी और हुसैन एसए (2024)। **क्या हमें कुछ दोस्तों से दूरी बनाने की आवश्यकता है? स्वतंत्र रूप से घूमने वाले कुत्ते भारतीय ट्रांस-हिमालय में वन्यजीवों और चरवाहों को प्रभावित करते हैं।** एनिमल कंजर्वेशन, 27(1): 53–64।
- महार एन, हबीब बी, हुसैन एसए, शॉल टी और ताकपा जे (2023)। **ट्रांस-हिमालयन आर्द्रभूमियों में जलपक्षियों पर मानवीय कारकों का प्रभाव।** ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन, 46(bZ02567), bZ02567।
- मल्ला जी, रे पी, श्रीनिवास वाय, मल्ला एस, रेड्डी टीबी, हेयवर्ड एम और शिवकुमार के (2024)। **थाली में**

- मछली! भारत के गोदावरी डेल्टा में मछली पकड़ने वाली बिल्लियों (*प्रायोनाइलुरस विवेरिनस*) की आहार आदतें। मैमल रिसर्च, 69(2): 221–230।
- मिश्रा एपी, चंद्रा एन, मेंडी जेजे, द्विवेदी एसके, अलरुजुक ए और पांडे सीबी (2023)। एक संकटग्रस्त अल्पाइन औषधीय पौधे एकोनिटम हेटेरोफायलम के स्थानिक मूल्यांकन पर आधारित विश्लेषणात्मक श्रेणी प्रक्रिया (एएचपी)। स्प्रिंगर क्लाइमेट, (पृष्ठ 579–594)।
- मिश्रा एपी, कुमार ए और यादव एसएन (2023)। नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व, पश्चिमी हिमालय के ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में संकटग्रस्त औषधीय पौधों का पारिस्थितिकी और संरक्षण। ट्रीज, फॉरेस्ट्स एंड पीपल, 14(100451), 100451।
- मिश्रा एपी, कुमार एस, पात्रा आर, कुमार ए, साहू एच, चंद्रा एन, ... अलशेहरी एफ (2023)। पानी के भौतिक-रासायनिक मापदंड और उनका पक्षियों और आवास गुणवत्ता पर प्रभाव। सस्टेनेबिलिटी, 15(12): 9494
- मुंगी एनए, झाला वाईवी, कुरैशी क्यू, ले रुक्स ई और स्वेनिंग जे-सी (2023)। बड़े शाकाहारी जानवर विदेशी पौधों के प्रभुत्व के खिलाफ जैविक प्रतिरोध प्रदान करते हैं। नेचर इकोलॉजी एंड एवोल्यूशन, 7(10): 1645–1653
- मुंगी एनए, कुरैशी क्यू और झाला वाईवी (2023)। भारत में पौधों के आक्रमण का वितरण, झाड़व और बहाली प्राथमिकताएँ। द जर्नल ऑफ एप्लाइड इकोलॉजी, 60(11): 2400–2412।
- नैपर आईई, बारोथ ए, बैरेट एसी, भोला एस, चौधरी जीडब्ल्यू, डेविस बीएफआर, ... कोलडवे एच (2023)। एक प्रमुख नदी प्रणाली में वायु, सतही जल और तलछट में माइक्रोप्लास्टिक का वितरण और विशेषताएँ। द साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट, 901(166640)।
- नाथ ए, लाहकर बीपी, ब्रह्मा एन, सरमा पी, केआर दास ए, दास एस, ... स्वार्गोवरी ए (2023)। ब्रेकिंग डॉनरू सामाजिक-राजनीतिक अस्थिरता के बाद पश्चिमी असम में स्तनधारी आवास उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक। जर्नल फॉर नेचर कंजर्वेशन, 72(126357), 126357।
- नाथ त्रिपाठी आर, गजानफारुल्लाह गाजी एम, बदोला आर और ऐनुल हुसैन एस (2024)। मणिपुर, भारत के केइबुल लामजाओ नेशनल पार्क की तैरती घासभूमियों में सेर्विड्स के पारिस्थितिक निगरानी और आवास मूल्यांकन के लिए यूएवी आधारित अध्ययन। मेजरमेंट: जर्नल ऑफ द इंटरनेशनल मेजरमेंट कंफेडरेशन, 229(114411), 114411।
- नानीवडेकर आर, तनेजा वाई, पेज एन, गोपाल ए और घुमन एस (2024)। क्या नारकोंडम हॉर्नबिल को अंडमान द्वीपसमूह के अन्य द्वीपों पर स्थानांतरित किया जाना चाहिए? ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन, 51(bZ02928), bZ02928।
- पाचा एएस, पांडे ए, आर्य एस, सैनी एस, शिवकुमार के और मोंडोल एस (2023)। पूर्वी अंटार्कटिका से एक अत्यधिक गतिशील समुद्री पक्षी की वंशावली और आनुवंशिक स्थिति पर नई अंतर्दृष्टि। पोलर साइंस, 38(100972), 100972।
- पांडा एके, वर्मा वी, श्रीवास्तव ए, बदोला आर और हुसैन एसए (2024)। डिजिटल इमेज प्रोसेसिंग: पुनर्वास के अंतर्गत मीठे पानी के कछुओं के आकृति संबंधी माप के लिए एक नया उपकरण। प्लस वन, 19(3): ई0300253।
- पगे एन (2023)। उत्तर-पूर्व भारत के पूर्वी हिमालय से मेयोजाइन (एनोनासिए) की एक नई प्रजाति। एडिनबर्ग जर्नल ऑफ बोटनी, 80, 1–8।
- पांडा एके, कटारे एस, गवन एस, शर्मा एसपी, बदोला आर और हुसैन एसए (2023)। भारत में एक विनियमित असुरक्षित नदी प्रणाली में गंभीर रूप से संकटग्रस्त घड़ियाल, *गैवियलिस गैंगोटिकस* के वितरण को प्रभावित करने वाले जनसंख्या स्थिति और कारक। ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन, 46(bZ02547), bZ02547।
- पांडे आरके, यादव एसपी, सेलवन केएम, नटराजन एल और निगम पी (2024)। भारत में हाथी संरक्षण: सह-अस्तित्व और संघर्षों के बीच संतुलन बनाना। इंटीग्रेटिव कंजर्वेशन।
- पॉल एस, साहा एस, निगम पी, पांडे जी, हबीब बी, मोहन डी, ... मोंडोल एस (2024)। उत्तरी दलदली हिरण, रुसेर्वस दुवाउसेली दुवाउसेली की आबादी में कार्यात्मक कनेक्टिविटी: गंगा के मैदानी क्षेत्र में मानव-प्रभावित विखंडित परिदृश्य में संरक्षण के प्रभाव। कंजर्वेशन जेनेटिक्स, 25(1): 17–31
- पॉल एस, साहा एस, निगम पी, अली एसजेड, पेज एन, खान एएस, ... मोंडोल एस (2023)। मानव-प्रभावित ऊपरी गंगा मैदानी इलाकों में दलदली हिरण संरक्षण के लिए घासभूमि आवासों का स्थानिक-कालिक मूल्यांकन। एनवायरनमेंटल कंजर्वेशन, 50(3): 169–178।
- पाल एम, अहमद टी, हुसैन एसए और बदोला आर (2024)। वन गलियारे के संरक्षण के लिए भुगतान करने की इच्छारू ओडिशा, भारत में खनन से प्रभावित सिमिलिपाल-सतकोसिया गलियारे का एक आकस्मिक मूल्यांकन अध्ययन। ट्रीज, फॉरेस्ट्स एंड पीपल, 16(100564): 100564।
- रैना आरएच, कुमार के, पर्रे एएच, शर्मा आई, उनियाल वीपी और सैनी एमएस (2024)। बॉम्बस क्रिप्टारम

- (फ़ैब्रिशियस, 1775), भारत में नई दुर्लभ भौरा प्रजाति (*हाइमेनोप्टेरा, एपिडे*)। जर्नल ऑफ़ इन्सेक्ट बायोलॉजी एंड सिस्टमैटिक्स, 10(1): 51–58।
- राणा एसके, डंगवाल बी, रावत जीएस और प्राइस टीडी (2024)। विविधता संरचना पैटर्न का परीक्षण करने के लिए हिमालय में विदेशी पौधों का डेटाबेस तैयार करना। इकोलॉजी एंड एवोल्यूशन, 14(2), bZ10884।
- रस्तोगी आर, कुरैशी क्यू, श्रीवास्तव ए और झाला वाईवी (2023)। एकाधिक आक्रमण पौधों, मूल पौधों, मिट्टी के पोषक तत्वों पर संयुक्त रूप से बढ़े हुए प्रभाव डालते हैं और शुष्क उष्णकटिबंधीय वन में पौधा-शाकाहारी परस्पर क्रिया को परिवर्तित करते हैं। फॉरेस्ट इकोलॉजी एंड मैनेजमेंट, 531(120781): 120781।
- रीड डीजे और हबीब बी (2022)। हाइब्रिड हिलटॉप्स: उपनिवेशी मध्य भारत में चयापचय और श्रम व पूंजी की पारिस्थितिकी। द जर्नल ऑफ़ पीजेंट स्टडीज, 1–25।
- साहू एस, कुमार ए, राय जे और गुप्ता एसके (2024)। भारतीय स्टार कछुआ, *जियोचेलोन एलेगंस* के संरक्षण की दिशा में साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण। बायोलॉजिकल कंजर्वेशन, 290(110421): 110421।
- सावन एस, मंडल टी, विलियम्स एसी, यादव एसपी और कृष्णमूर्ति आर (2023)। जटिल परिदृश्यों में नदी आवास और मगरमच्छों का हाइब्रिड ड्रोन-आधारित सर्वेक्षण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायरनमेंटल साइंस एंड टेक्नोलॉजी: आईजेईएसटी।
- सील एस, बय्याना एस, पांडे ए, घाणेकर सी, हातकर पीएस, पठान एस, ... जॉनसन जेए (2024)। भारत में डुगोंग आवासों की स्थानिक प्राथमिकता वैश्विक जैव विविधता लक्ष्य 30 x 30 प्राप्त करने में योगदान दे सकती है। साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 14(1), 13984।
- शरीफ ए, कुमार वी, जोशी बीडी, सिंह एच, भट्टाचार्य एस, दत्ता आर, ... शर्मा एलके (2023)। प्रभावी संरक्षण योजना की ओर: भूमि उपयोग परिवर्तन के मद्देनजर कश्मीर मस्क डियर के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए परिदृश्य मॉडलिंग का एकीकरण। फ्रंटियर्स इन इकोलॉजी एंड एवोल्यूशन, 11।
- शर्मा एसपी, गाजी एमजी, कटारे एस, बदोला आर और हुसैन एसए (2024)। एक उष्णकटिबंधीय विनियमित नदी प्रणाली में मगर, *क्रोकोडायलस पल्पत्सिस* की जनसंख्या स्थिति और आनुवंशिक मूल्यांकन। साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 14(1): 7438।
- शर्मा सीपी, शर्मा एस और सिंह आर (2023)। एटीआर एफटी-आईआर स्पेक्ट्रोस्कोपी और केमोमेट्रिक्स का उपयोग करके रक्त के निशानों से प्रजातियों का भेदभारु वन्यजीव फोरेंसिक्स में अनुप्रयोग। फॉरेंसिक साइंस इंटरनेशनल. एनिमल्स एंड एनवायरनमेंट्स, 3(100060): 100060।
- शर्मा एम, देवी ए, बदोला आर, शर्मा आरके और हुसैन एसए (2023)। ब्रह्मपुत्र के बाढ़ क्षेत्रों की उष्णकटिबंधीय नदी घासभूमियों पर प्रबंधन प्रथाओं का प्रभाव: संरक्षण के लिए निहितार्थ। इकोलॉजिकल इंडिकेटर्स, 151(110265): 110265।
- सिल्वा जेपी, मार्क्स एटी, बर्नार्डिनो जे, एलिसन टी, एंड्रियुशचेंको वाई, दत्ता एस, ... कॉलर एनजे (2023)। गोडावण पर पावरलाइनों के प्रभावरु सर्वोत्तम शमन और निगरानी कैसे करें? बर्ड कंजर्वेशन इंटरनेशनल, 33(bZ30), 1दृ14।
- सिंह एपी, डे के, उनियाल वीपी और सत्यकुमार एस (2024)। जम्मू और कश्मीर के पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में बड़े मांसाहारी द्वारा पशुधन शिकार: शिकारी की पसंद में समयबद्धता। ट्रॉपिकल इकोलॉजी, 65(1)रु 26दृ31।
- सिंह एपी, डे के, उनियाल वीपी और सत्यकुमार एस (2024इ)। जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालयी भौरों के उपयुक्त आवास की कमी को उजागर करना। साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 14(1): 4983।
- सिंह एआर, तिरुमुरुगन वी और प्रभाकरन एन (2024)। अंडमान और निकोबार द्वीपों में एविसेनिया प्रजातियों का वितरणरु नई वितरणात्मक रिपोर्ट और सुनामी के बाद उपनिवेशीकरण पैटर्न पर विशेष ध्यान। जर्नल ऑफ़ द मरीन बायोलॉजिकल एसोसिएशन ऑफ़ द यूनाइटेड किंगडम, 104(ई43)।
- सिंह एआर, तिरुमुरुगन वी और प्रभाकरन एन (2024इ)। उत्तर अंडमान द्वीप, भारत में उठे हुए चट्टानी क्षेत्रों पर मैंग्रोव उपनिवेशीकरण की निगरानी। ओशन साइंस जर्नलरु ओएसजे, 59(3)।
- सिंह एआर, तिरुमुरुगन वी, भोमिया आरके और प्रभाकरन एन (2024ब)। अंडमान द्वीप समूह, भारत में भूकंप के बाद तटीय भू-आकृति विज्ञान में परिवर्तन पर मैंग्रोव वनस्पति प्रतिक्रिया। रीजनल स्टडीज इन मरीन साइंस, 76(103583), 103583।
- श्रीनिवास वाई और झाला वाई (2024)। भारत में अद्वितीय और प्राचीन भेड़िया वंशों का आनुवंशिक विविधता, संरचना और जनसांख्यिकीय इतिहास। कंजर्वेशन जेनेटिक्स, 25(1): 33–48।
- सुप्रतीम डी और कृष्णमूर्ति आर (2023)। भारत में पन्ना टाइगर रिजर्व में मांगे रोग के प्रकटीकरण का पहला फोटोग्राफिक प्रमाण। जर्नल ऑफ़ श्रेटन्ड टैक्सा, 15(10): 24116–24119।

त्रिपाठी आरएन, रामचंद्रन ए, अग्रवाल के, त्रिपाठी वी, बदोला आर और हुसैन एसए (2024)। **यूएवी और डीप लर्निंगरू गंगा नदी के किनारे चयनित तटीय प्रजातियों का पता लगाना**। आईएसपीआरएस – इंटरनेशनल आर्काइव्स ऑफ द फोटोग्रामेट्री रिमोट सेंसिंग एंड स्पेशियल इंफॉर्मेशन साइंसेज, गस्टप्प-1-2024, 637-642।

टॉर्डिफ एएसडब्ल्यू, झाला वाईवी, बोइटानी एल, क्रिस्टेस्कू बी, कॉक आरए, मेयर एलआरसी, ... मार्कर एल (2023)। **भारत में चीता पुनःस्थापन का मामला**। नेचर इकोलॉजी एंड एवोल्यूशन, 7(4): 480-481।

विश्वकर्मा आर, शर्मा सीपी, मोंडोल एस, हबीब बी, भंडारी बी, मिश्रा आर, ... निगम पी (2024)। **गौर, बोस गॉरस गॉरस (स्मिथ 1827) की खोपड़ी की हड्डियों में प्रारंभिक अध्ययन और लिंगात्मक द्विरूपता**। एनाटोमिया, हिस्टोलोजिया, एम्ब्रियोलोजिया, 53(3), ई13031।

वांग के, दीपक वी, दास ए, ग्रिसमर एलएल, लियू एस और चे जे (2024)। **कैलोत्स जर्डोंनी परिसर (रेप्टीलिया: स्क्वामाटा: अगामिडे) का पैन-हिमालय में व्यवस्थित पुनरीक्षण**। वर्टिब्रेट जूलॉजी, 74, 169-192।

पुस्तकें

नौटियाल जेपी, लोन एएम, घोष टी, शर्मा एम, मलिक ए, यादव एसपी, रमेश सी, रमेश के (2023)। **भारत में टाइगर रिजर्व की एक चित्रात्मक प्रोफाइल**। ईआईएसीपी सेंटर (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय), भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत, पृष्ठ 20: 314।

नौटियाल जेपी, लोन एएम, घोष टी, शर्मा, तिवारी वीरेन्द्र आर, रमेश सी, रमेश के (2023)। **भारत के मिलेट्स**। ईआईएसीपी सेंटर (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय), भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

श्रीवास्तव एबी, निगम पी (2023)। **सीखें मृत से: बड़े फेलिड्स के लिए नेक्रॉप्सी आवश्यकताएँ**। नित्य पब्लिकेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत, ISBN 978-93-5857-422-7, पृष्ठ 41।

निगम पी, चक्रवर्ती ए, करिकलन एम, श्रीवास्तव एबी, मल्लापुर जी, पांडे आर (संपादक) (2023)। **एशियाई हाथी के नेक्रॉप्सी और शव निपटान, अनुशासित संचालन प्रक्रिया**। परियोजना हाथी डिवीजन, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार और भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 120।

भारतीय वन्यजीव संस्थान – गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र (2024)। **गंगा का सफर, गौमुख से**

गंगा सागर तक। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत, पृष्ठ 56।

भारतीय वन्यजीव संस्थान – गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र (2024)। **कहानी उड़दू उदबिलाव की**। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत, पृष्ठ 40।

भारतीय वन्यजीव संस्थान – गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र (2024)। **नदी किनारे चिड़ियों का डेरा**। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत, पृष्ठ 52।

भारतीय वन्यजीव संस्थान – गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र (2024)। **विंग्स ऑफ गंगा- IV**। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत, पृष्ठ 74।

भारतीय वन्यजीव संस्थान – गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र (2024)। **हाइड्रोफाइट्स: गंगा के हरित फेफड़े**। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत, पृष्ठ 124।

पुस्तक अध्याय

अधिकारी बीएस, लिंगदोह एस, चटर्जी डी (2023)। **वनाग्नि के कारण प्राणी विविधता का आर्थिक नुकसान आकलन**। अध्याय 6, 239-382 पृष्ठ। आईसीएफआरई (2023)। उत्तराखंड और मध्य प्रदेश में वनाग्नि के कारण प्रति हेक्टेयर वास्तविक आर्थिक नुकसान का अनुमान। अंतिम रिपोर्ट।

अधिकारी बीएस, लिंगदोह एस, चटर्जी डी (2023)। **वन्यजीवों को वनाग्नि से हुए आर्थिक नुकसान**। अध्याय 4, 45-58 पृष्ठ। आईसीएफआरई (2023)। उत्तराखंड और मध्य प्रदेश में वनाग्नि के कारण प्रति हेक्टेयर वास्तविक आर्थिक नुकसान का अनुमान (एक पुस्तिका)।

बाला आर, कौर ए, कुमार आरएस, मोहन डी (2023)। **पवित्र पर्वतों की गौरैया – उत्तराखंड, हिमालय में घरेलू गौरैया का एक व्यापक अध्ययन**। भारतीय वन्यजीव संस्थान। पीएम की मन की बात दृ वन्यजीव संरक्षण का संदर्भ, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। ISBN: 81-85496-84-6। पृष्ठ 18-23।

भटनागर वाईवी, माथुर वीबी, सत्यकुमार एस, पाल आर, घोषाल ए, शर्मा आरके, बिजूर ए, रघुनाथ आर, टिंभाडिया आर, लाल पी (2024)। **भारत के हिम तेंदुओं की सुरक्षा: स्थिति, खतरे, और संरक्षण**। स्नो लेपर्ड्स, अकादमिक प्रेस। पृष्ठ 513-529।

दे जवान, बर्गस एजी, अल्टामिरानो टीए, असेफा ए, गोकले पी, कुमार आरएस, ली एस, लिन आरएस,

- सेविलानो-रियोस, वेस्टन के (2023)। **अल्पाइन और निवार आवासों के वैश्विक पक्षी समुदाय। चेम्बरलेन डी, लेहिकोइनन ए, मार्टिन के (संपादक)।** पर्वतीय पक्षियों की पारिस्थितिकी और संरक्षण। पारिस्थितिकी, जैव विविधता और संरक्षण। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 90-136।
- झा आशीष (2023)। **स्क्वायर-टेल्ड बुलबुल, हाइप्सिपेट्स गनीसा, संस्करण 2.0। बर्ड्स ऑफ द वर्ल्ड (एस.एम. बिलरमैन, संपादक)।** कॉर्नेल लैब ऑफ ऑर्निथोलॉजी, इथाका, एनवाई, यूएसए।
- झा आशीष (2023)। **येलो-ब्रोड बुलबुल, आयोल इंडिका, संस्करण 2.0।** बर्ड्स ऑफ द वर्ल्ड (एस.एम. बिलरमैन, संपादक)। कॉर्नेल लैब ऑफ ऑर्निथोलॉजी, इथाका, एनवाई, यूएसए।
- नटराजन एल, निगम पी, पांडव बी (2023)। **छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में हाथियों की बढ़ती सीमा: एक दृष्टिकोण।** जॉन्सिंग ए और पांडे एन (संपादक) (2023)। ट्राम्पल्ड बाउंड्रीज: भारतीय उपमहाद्वीप में हाथियों की समझ। द कॉर्बेट फाउंडेशन, भारत। पृष्ठ 60-64।
- नाथ ए, इस्लाम एन, डार एसए, सिन्हा ए, लाहकर बीपी और घोष एस (2023)। **मानस राष्ट्रीय उद्यान में पूर्वी दलदली हिरण (रुसेर्वस दुवाउसेली रंजीतसिंही) के आवास उपयुक्तता को प्रभावित करने वाले कारक और तराई घासभूमि बहाली के निहितार्थ।** इकोसिस्टम एंड स्पीशीज हैबिटेट मॉडलिंग फॉर कंजर्वेशन एंड रेस्टोरेशन, पृष्ठ 291-308।
- शर्मा ए, दुबे वीके, जॉनसन जेए, रावल वाईके, शिवकुमार के (2023)। **तेजी से बदलती दुनिया में हिमालयरु पर्वतीय मीठे पानी की जीवों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और संरक्षण के निहितार्थ।** सोबती, आदि। (संपादक)। पर्यावरण अध्ययन और जलवायु परिवर्तन। सीआरसी प्रेस, टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप, फ्लोरिडा। पृष्ठ 321-345।
- प्रस्तुत।
- झा आरआरएस, गोपी जीवी (2023)। **उत्तर सिक्किम में चार सड़क अवसंरचना से संबंधित वन विचलन प्रस्तावों के लिए जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन योजनाओं की समीक्षा।** भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून।
- झा आरआरएस, गोपी जीवी (2024)। **राजाजी टाइगर रिजर्व के 10 किलोमीटर दायरे में उत्तर प्रदेश में वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों को चिह्नित करने के संबंध में अनुपूरक रिपोर्ट।** भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। पृष्ठ 11।
- कृष्णन ए, लाहिरी एस, खेर वी, मोहन आर, सांगवान टी (2023)। **द'एरिंग वन्यजीव अभ्यारण्य, ईस्ट सियांग जिला, अरुणाचल प्रदेश में घासभूमि पक्षियों की ध्वनिक निगरानी।** अरुणाचल वन विभाग को सितंबर 2023 में प्रस्तुत परियोजना पूर्णता रिपोर्ट।
- महाजन पी (2023)। **गीर संरक्षित क्षेत्र, गुजरात में मध्यम मांसाहारी जीवों की पारिस्थितिकी और संरक्षण।** रिपोर्ट इनलैक्स फाउंडेशन को प्रस्तुत।
- मोंडोल एस, कुमार एस, सौन जे, शर्मा ए (2024)। **भारत में गैंडे के शिकार के खतरे को रोकने और गैंडा आबादी प्रबंधन में सहायता के लिए राइनो डीएनए इंडेक्सिंग सिस्टम (रोडिस) का कार्यान्वयन - चरण II (2023-2024)।** भारतीय वन्यजीव संस्थान। पृष्ठ 39। (रिपोर्ट)
- रमेश के, महाजन पी, सिंह ए (2023)। **तिरुमला, तिरुपति, आंध्र प्रदेश में मानव पर तेंदुए के हमले की त्वरित मूल्यांकन रिपोर्ट।** भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान (2024)। **गंगा बेसिन की चयनित नदियों की जल गुणवत्ता: प्रदूषण खतरों और हॉटस्पॉट आकलन।** गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत। पृष्ठ 54।

रिपोर्ट्स

- फूड एंड एग्रीकल्चरल ऑर्गनाइजेशन (एफएओ) (2024): **सूचना विवरण: वन्यजीव-जीविका-स्वास्थ्य संपर्क: एशिया और प्रशांत में चुनौतियाँ और प्राथमिकताएँ।** बैंकॉक।
- गोपी जीवी और अभिजीत दास (2023)। **मिपी अंद्राला सड़क निर्माण के लिए दिबांग वन्यजीव अभ्यारण्य से 103.95 हेक्टेयर वन भूमि के उपयोग के प्रस्ताव पर सिफारिशों के लिए स्थल यात्रा रिपोर्ट।** भारतीय वन्यजीव संस्थान, दिबांग घाटी जिला, अरुणाचल प्रदेश। रिपोर्ट राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को

तकनीकी रिपोर्ट्स

- गोपी जीवी और अमित कुमार (2023)। **शिकारी देवी वन्यजीव अभ्यारण्य से 2.753 हेक्टेयर वन भूमि के उपयोग और थुनाग-पंजोट-लंबाशफर-चिल्मगढ़-शिकारी माता मंदिर सड़क के उन्नयन तथा 1.59 हेक्टेयर वन भूमि के उपयोग पर स्थल यात्रा रिपोर्ट और सिफारिशें।** भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। TR No/2023/10। पृष्ठ 20।
- गोपी जीवी और अभिजीत दास (2023)। **मिपी अंद्राला सड़क निर्माण के लिए दिबांग वन्यजीव अभ्यारण्य**

से 103.95 हेक्टेयर वन भूमि के उपयोग के प्रस्ताव पर सिफारिशों के लिए स्थल यात्रा रिपोर्ट। राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की स्थायी समिति को प्रस्तुत।

गोपी जीवी, आर्या एस, यादव ए, जांगमो एस, सैनी एस, लाहा डीआर और बनर्जी के (2023)। जामरानी बहुउद्देश्यीय परियोजना, नैनीताल जिला, उत्तराखंड के पर्यावरणीय प्रभावों पर स्थल निरीक्षण रिपोर्ट। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। TR/No/2023/12A पृष्ठ 74।

गोपी जीवी, फ्रैंक एसजेडी, कार्थी एस और सुंदरराज एस (2023)। छेदीपाड़ा, जरपाड़ा, कनीहा रेंज (अंगुल वन प्रभाग) और रेमल रेंज (देवगढ़ वन प्रभाग), ओडिशा में प्रस्तावित नैनी ओपन-कास्ट कोयला खदान (एससीसीएल) परियोजना के लिए वन्यजीवध्वाथी प्रबंधन योजना। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। TR- No- 2023/20। पृष्ठ 372।

झा आरआरएस, गोपी जीवी (2024)। राजाजी टाइगर रिजर्व के 10 किलोमीटर दायरे में उत्तर प्रदेश में वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों के चिह्नंकन के संबंध में अनुपूरक रिपोर्ट। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। पृष्ठ 11।

झा आरआरएस, जांगमो एस और गोपी जीवी (2023)। पश्चिमी हूलाक गिबन (हूलाक हूलाक) के लिए होलोंगापार गिबन अभ्यारण्य, असम में मरियानी-डिब्रूगढ़ ब्रॉड-गेज सिंगल-ट्रैक रेलवे लाइन पर क्रॉसिंग के लिए कृत्रिम छत्र पुल डिजाइन। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। TR No/2023/07। पृष्ठ 30।

झा आरआरएस, जांगमो एस, दास पी और गोपी जीवी (2023)। रणथंभौर टाइगर रिजर्व के 10 किलोमीटर क्षेत्र के आसपास के परिदृश्य का संचयी प्रभाव अध्ययन। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। TR No/2023/02। पृष्ठ 70।

काल्नी एल, गोगोई ए, कोलिपाकम वी, कुरैशी क्यू, सत्यकुमार एस (2024)। मिजोरम के संरक्षित क्षेत्रों में खुरदार प्रजातियों में रोग प्रसार का आकलन। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। पृष्ठ 283। TR- No-/2024/11।

खेर वी, पांडे डी, जाधव एम, दत्ता एस, कृष्णन ए (2024)। थार रेगिस्तान में संकटग्रस्त पक्षियों की निगरानी: ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के लिए आवास बहाली का संबंधित पक्षी प्रजातियों पर प्रभाव। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून और रफॉर्ड फाउंडेशन, यूके को प्रस्तुत अंतिम परियोजना रिपोर्ट। तकनीकी रिपोर्ट :2024/08।

कुमार आरएस, बरैया एच, मित्रा आर, शाक्यवाल जीपी, चालानी एस, गौर एस, मुत्थैया आई (2023)। ओखी-

बचाए गए सिनेरियस वल्वर (एजिपियस मोनाचस) का पुनर्वन्यकरण। भारतीय वन्यजीव संस्थान। पृष्ठ 45।

लक्ष्मीनारायणन एन, कार्थी एस, डे एस, नवानी एस, बालाजी वी, क्रि एसके, नाथ ए, दास ए, निगम पी, गोपी जीवी (2024)। लोअर सुबनसिरी जलविद्युत परियोजना के डाउनस्ट्रीम में पनीर और दुलुंग आरक्षित वन के बीच हाथियों के लिए सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करने की योजना। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। TR- No-2024/01। पृष्ठ 83।

मित्रा आर, नेगी एस, कुमार ए, मोहन डी, कुमार आरएस (2023)। जॉली ग्रांट एयरपोर्ट, देहरादून के आसपास वन्यजीव खतरे का आकलन और शमन उपायों का सुझाव। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। तकनीकी रिपोर्ट नंबर 2023/13। पृष्ठ 69।

मुदलियार एमएम, कुमार आरएस (2023)। महाराष्ट्र के तटीय जल में पाए जाने वाले ओलिव रिडले समुद्री कछुओं की तटीय और प्रवासी गतिविधियों का ट्रैकिंग। भारतीय वन्यजीव संस्थान। पृष्ठ 50।

भारतीय वन्यजीव संस्थान (2024)। केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, मणिपुर में संगई और हॉग हिरण की जनसंख्या का आकलन। भारतीय वन्यजीव संस्थान और मणिपुर वन विभाग। पृष्ठ 68।

स्थिति सर्वेक्षण : लघु अध्ययन रिपोर्ट / एन्विस अध्याय

बाला आर, मोहन डी, कुमार आरएस (2024)। मानव सहजीवी - घरेलू गौरैया (पासर डोमेस्टिकस) की पारिस्थितिकी और जनसंख्या स्थिति पर एक व्यापक अध्ययन, उत्तराखंड राज्य। उत्तराखंड वन विभाग को प्रस्तुत प्रगति रिपोर्ट। पृष्ठ 71।

कौर ए, सत्यकुमार एस, मोहन डी, कुमार आरएस (2024)। बदलती दुनिया में सामान्य पक्षियों की निगरानी: हिमालय में बार्न स्वैलोज की पारिस्थितिकी और वंशावली के पहलू। उत्तराखंड वन विभाग को प्रस्तुत प्रगति स्थिति रिपोर्ट। पृष्ठ 51।

कुमार आरएस (2023)। भारत में कैप्टिव-ब्रीड गिद्धों की रिहाई के लिए मानक संचालन प्रक्रिया। पर्यावरण, वन एवं जलवायु मंत्रालय को प्रस्तुत रिपोर्ट। पृष्ठ 13।

मोंडोल एस, अरोड़ा बी, शर्मा के, सिंह एम, कुमार आरएस (2024)। दिल्ली-गुरुग्राम-रेवाड़ी-अलवर क्षेत्रीय रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम की टनलिंग परियोजना के कारण नई दिल्ली के नेशनल जूलॉजिकल पार्क में कैद वन्यजीवों पर प्रभाव का आकलन। नेशनल कैपिटल रीजनल ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन, नई दिल्ली, भारत को प्रस्तुत। पृष्ठ 69।

मुदलियार एम, महारी बी, प्रभाकरन एन, कुमार आरएस, पांडव बी (2024)। दक्षिणी ओडिशा के रुशिकुल्या मास-नेस्टिंग बीच पर रात में प्रकाश का आकलन। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। स्थिति रिपोर्ट, पृष्ठ 13।

प्रस्तुत किए गए शोध पत्र

भोमिया आरके, सिंह एआर, तिरुमुरुगन वी, प्रभाकरन एन, मैकेंजी आर (2023)। अंडमान द्वीपों के मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र में कार्बन गतिकी: प्राकृतिक व्यवधान और पारिस्थितिक उत्तराधिकार का अध्ययन करने के लिए एक जीवित प्रयोगशाला। एमएमएम6, कोलंबिया, 24–28 जुलाई।

पोटी एम, प्रभाकरन एन, ह्यूगे जे, कोएडम एन, शंकर के, दहदोह-ग्यूबस एफ (2023)। निकोबार द्वीपसमूह में सुनामी के बाद मैंग्रोव सामाजिक-पारिस्थितिक तंत्र की पुनर्प्राप्ति को अनुकूली चक्र अनुरूपता के माध्यम से समझना। एमएमएम6, कोलंबिया, 24–28 जुलाई 2023।

सिंह एआर, तिरुमुरुगन टी, प्रभाकरन एन (2023)। उत्तर अंडमान द्वीप समूह, भारत में तटीय उठान के कारण समुद्र स्तर में कमी के लिए मैंग्रोव वनस्पति की प्रतिक्रिया। एमएमएम6, कोलंबिया, 24–28 जुलाई 2023।

सिंह एआर, तिरुमुरुगन वी, प्रभाकरन एन (2023)। उत्तर अंडमान द्वीप समूह, भारत में तटीय उठान के कारण समुद्र स्तर में कमी के लिए मैंग्रोव वनस्पति की प्रतिक्रिया। एटीबीसी, भारत, 2–6 जुलाई 2023।

तिरुमुरुगन वी, सिंह एआर, गनासेकरन जी, प्रभाकरन एन (2023)। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के नए ज्वार वाले आवासों में मैंग्रोव उपनिवेशीकरण में दशकीय परिवर्तन – सुनामी और अवतलन परिदृश्य। एमएमएम6, कोलंबिया, 24–28 जुलाई 2023।

तिरुमुरुगन वी, सिंह एआर, गनासेकरन जी, प्रभाकरन एन (2023)। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के नए ज्वार वाले आवासों में मैंग्रोव उपनिवेशीकरण में दशकीय परिवर्तन। एटीबीसी, भारत, 2–6 जुलाई 2023।

मैनुअल्स

खेर वी, ठक्कर एस, जांगिड ए के, दत्ता एस (2024)। ऐनीप्रिडिक्टर वर्जन 1.0: कैमरा ट्रैप डेटा की स्वचालित प्रोसेसिंग के लिए एक संपूर्ण पाइपलाइन। तकनीकी मैनुअल #TR/2024/10। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत को प्रस्तुत।

तिवारी वीआर, तालुकदार जीएच, नरयाल ए (2023)। 2023–24 के दौरान भारत में 116 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों के प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन के लिए तकनीकी मैनुअल। (तकनीकी मैनुअल नंबर या आईएसबीएन नंबर), भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून।

कार्यशाला विवरण

निगम पी (2023)। अंतःमंत्रालय कार्यशाला की कार्यवाही: हाथियों और अन्य वन्यजीवों पर रेलमार्गों के प्रभाव को कम करना। भारतीय रेलवे के अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशाला, भारतीय वन्यजीव संस्थान, 23–25 नवंबर 2023।

निगम पी (2023)। सलाहकार कार्यशाला की कार्यवाही: हाथी आरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन को मुख्यधारा में लाना। हाथी आरक्षित प्रबंधकों के लिए आयोजित कार्यशाला, भारतीय वन्यजीव संस्थान, 28–29 नवंबर 2023।

निगम पी (2023)। अंतःमंत्रालय कार्यशाला की कार्यवाही: विद्युत प्रवाह जोखिम को कम करने और भारत में विद्युत बुनियादी ढांचे में वन्यजीव सुरक्षा को बढ़ावा देने के समाधान तलाशना। विद्युत मंत्रालय के चयनित वितरण एजेंसियों और वन अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशाला, भारतीय वन्यजीव संस्थान, 11–13 जनवरी 2024।

निगम पी (2023)। कार्यशाला आरंभ/हितधारक परामर्श कार्यशाला की कार्यवाही: हाथी संरक्षण योजना (ईसीपी) की तैयारी के लिए रूपरेखा। हाथी आरक्षित क्षेत्रों के लिए आयोजित कार्यशाला, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, 13 अक्टूबर 2023।

तकनीकी मैनुअल्स

प्रोजेक्ट एलीफेंट, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार (2023)। भारत के हाथी गलियारे 2023 (संस्करण – 1/2023)।

प्रोजेक्ट एलीफेंट, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार (2024)। प्रोजेक्ट एलीफेंट – 20 विशाल कदम – 2024।

भारतीय वन्यजीव संस्थान दृष्ट प्रोजेक्ट एलीफेंट, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (2023)। भारत के हाथी आरक्षित क्षेत्र: एक एटलस (संस्करण – 2/2023)। पृष्ठ: 99 (WII&TR NO/2023/19)।

चित्रात्मक गाइड्स

दास ए और बोरुआ बी (2023)। नामदाफा बाघ रिजर्व के उभयचरों के लिए एक पॉकेट गाइड। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। पृष्ठ 16।

दास ए और बोरुआ बी (2023)। कामलांग बाघ रिजर्व के उभयचरों और सरीसृपों के लिए एक पॉकेट गाइड। भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून। पृष्ठ 24।

लोकप्रिय लेख

धनैश पोनु, ज्योति नागरकोटी, चिन्नासामी रमेश (2023)। तेरेसा द्वीप का पारंपरिक अग्नि उत्सव: द्वीप को नया जीवन देने की एक अनसुनी कहानी। भारतीय वन्यजीव संस्थान की ई-न्यूजलेटर, मानसून, 17।

झा आरआरएस और गोपी जीवी (2023)। कोने में और टूटा हुआ दृष्ट होलोंगापार गिबन अभ्यारण्य भारत के संरक्षण दर्शन का एक निर्णायक परीक्षण है। भारतीय वन्यजीव संस्थान की ई-न्यूजलेटर (मानसून संस्करण)। 13–15।

झा आरआरएस, गोपी जीवी (2023)। कोने में और टूटा हुआ— होलोंगापार गिबन अभ्यारण्य भारत के संरक्षण दर्शन का एक निर्णायक परीक्षण है। भारतीय वन्यजीव संस्थान की ई-न्यूजलेटर, मानसून 2023: 13–15।

निगम पी (2023)। ट्रम्पेट, 3: (1–2)। एक त्रैमासिक न्यूजलेटर, प्रोजेक्ट एलीफेंट डिवीजन और एलीफेंट सेल, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा प्रकाशित।

निगम पी (2023)। ट्रम्पेट, 3: (3)। एक त्रैमासिक न्यूजलेटर, प्रोजेक्ट एलीफेंट डिवीजन और एलीफेंट सेल, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा प्रकाशित।

निगम पी (2023)। ट्रम्पेट, 4: (1)। एक त्रैमासिक न्यूजलेटर, प्रोजेक्ट एलीफेंट डिवीजन और एलीफेंट सेल, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा प्रकाशित।

ब्रोशर

बागमती नदी। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत।

महानंदा नदी। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत।

राप्ती नदी। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत।

शाारदा नदी। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत।

घाघरा नदी की सहायक नदियाँ। गंगा एक्वालाइफ संरक्षण निगरानी केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत। (द्विभाषीय)।

ब्लॉग

हिमालयी धाराओं में जलवायु परिवर्तन निगरानी के लिए पहली बार गहन डेटा लॉगर तैनाती पर फील्ड वर्क 'जर्नल ऑफ एप्लाइड इकोलॉजी' के ब्लॉग 'द एप्लाइड इकोलॉजिस्ट: फील्डवर्क इनसाइट्स' में प्रकाशित हुआ। ब्लॉग का शीर्षक: हिमालयी पहाड़ी धाराएं और डेटा लॉगर्स। पढ़ें: <https://appliedecologistsblog.com/2023/09/07/fieldwork&insights&himalayan&hill&streams&and&data&loggers/>

अन्य संस्थानों में दी गई शैक्षणिक इनपुट

डॉ. गोपी जी.वी. (11 अप्रैल 2023): ने सम्मलेन उपरांत एक कार्यशाला का संचालन मुख्य वक्ता के रूप में किया जिसका शीर्षक था 'समेकित आर्द्रभूमि संरक्षण और प्रबंधन'। इंडियन कंजर्वेशन कॉन्फ्रेंस, मैसूर।

डॉ. गोपी जी.वी. (4 मई 2023): भारतीय आर्द्रभूमि, उनका संरक्षण और प्रबंधन। सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (सीएएफ प्रतिनिधियों के लिए)।

डॉ. गोपी जी.वी. (14 जून 2023): पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन और भू-स्थानिक तकनीकों का अनुप्रयोग। भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, देहरादून।

डॉ. अमित कुमार (1–2 अगस्त 2023) 'आक्रामक पौधों की प्रजातियों की पारिस्थितिकी' और 'भारतीय हिमालयी क्षेत्र में आवास विविधता और संरक्षण के लिए चुनौतियाँ' (02 सत्र)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. पराग निगम (14–16 अगस्त 2023): हाथी पकड़ने की तकनीकें, कैद हाथियों का स्वास्थ्य प्रबंधन और हाथियों में पशु चिकित्सा हस्तक्षेप की विभिन्न तकनीकों का क्षेत्रीय प्रदर्शन। गुरुवायूर मंदिर हाथी शिविर, त्रिशूर।

डॉ. सुतिर्था दत्ता (अगस्त 2023): व्यवहार पारिस्थितिकी, जनसंख्या पारिस्थितिकी। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. पराग निगम (28–30 अगस्त 2023): वन्यजीव स्वास्थ्य प्रबंधन और संकटग्रस्त जानवरों के प्रबंधन एवं पुनर्वास का परिचय। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. गोपी जी.वी. (7 अक्टूबर 2023): 'राष्ट्रीय वन्यजीव सप्ताह - 2023- के दौरान भारतीय आर्द्रभूमि का जश्न। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

देहरादून में अन्य संस्थानों को प्रदान किए गए शैक्षणिक इनपुट

डॉ. गोपी जी.वी. (7 अक्टूबर 2023): -राष्ट्रीय वन्यजीव सप्ताह दृ 2023' के दौरान भारतीय आर्द्रभूमि का उत्सव। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

डॉ. अमित कुमार (22 नवंबर 2023): 'अवैध वन्यजीव व्यापार में पौधे' (02 सत्र)। सेंट्रल एकेडमी फॉर स्टेट फॉरेस्ट सर्विस, देहरादून।

डॉ. अमित कुमार (नवंबर-दिसंबर 2023): 'प्राथमिक जीव विज्ञान' मॉड्यूल (15 सत्र)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. अमित कुमार (13-14 दिसंबर 2023): बॉटनाइजेशन के लिए फील्ड इनपुट्स (बॉटनिकल गार्डन, बैबूसेटम और अर्बोरेटम एफआरआई)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. नेहरू प्रभाकरन (13-15 दिसंबर 2023): 'वन पारिस्थितिकी' (सत्र)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. गोपी जी.वी. (19 दिसंबर 2023): पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन कैसे संचालित करें। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी।

डॉ. गोपी जी.वी. (8 जनवरी 2024): 'समेकित आर्द्रभूमि प्रबंधन योजना, संरक्षण और प्रबंधन: परिचय, अवलोकन और संभावनाएँ'। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. आशीष झा (9 जनवरी 2024): असन बैराज आर्द्रभूमि संरक्षण रिजर्व की फील्ड यात्रा के दौरान इनपुट (प्रशिक्षण कार्यक्रम 'समेकित आर्द्रभूमि संरक्षण और प्रबंधन' के तहत)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. अमित कुमार (1 फरवरी 2024): नरेन्द्रनगर एफ डी में बॉटनाइजेशन ट्रेक के लिए फील्ड इनपुट। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून।

डॉ. अमित कुमार (24 फरवरी 2024): लैंसडाउन एफ डी में कार्य योजना अभ्यास के लिए फील्ड इनपुट।

पुरस्कार

डॉ. पराग निगम (वैज्ञानिक-जी): 4 अगस्त 2023 को जयपुर में सरिस्का टाइगर फाउंडेशन और वर्ल्ड वाइल्डरनेस कांग्रेस ट्रस्ट, भारत द्वारा 'वन और वन्यजीवों के संरक्षण और हमारे प्राकृतिक धरोहर के लिए बहुमूल्य योगदान' के लिए उत्कृष्टता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

डॉ. आशीष झा (वैज्ञानिक-सी): प्रतिष्ठित फुलब्राइट-नेहरू पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप 2024-2025 से सम्मानित, जिसमें वे 9 महीने के लिए लुइसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी, बैटन रूज में छात्र विनिमय कार्यक्रम में भाग लेंगे।

श्री प्रशांत महाजन (वैज्ञानिक-सी): प्रतिष्ठित फुलब्राइट-नेहरू डॉक्टरल रिसर्च फेलोशिप 2024-2025 से सम्मानित, जिसमें वे 9 महीने के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन, सिएटल में छात्र विनिमय कार्यक्रम में भाग लेंगे।

भा.व.सं. सैकोन

पीयर रिव्यू जर्नल: राष्ट्रीय

कासबेककर एसपी, कदम जी, भोर एसएस, कुमारा एचएन, बाबू एस, करुणाकरण पीवी (2023)। **हिमालयी जल छछूंदर, विमारोगल हिमालयिका (ग्रे, 1842) सोरिकोमोफा: सोरिकिडे का नया वितरण रिकॉर्ड और जयंतिया हिल्स, मेघालय, भारत में एक कैस्केड्स में मंडक अमोलोप्स प्रजाति को खाने का प्रयास।** राष्ट्रीय अकादमी विज्ञान पत्र, 1-5।

कुमारा एचएन, महतो एस, सिंह एम, मोलूर एस, वेलंकर एडी (2023)। **पश्चिमी घाट में स्तनधारी विविधता, वितरण और संभावित प्रमुख संरक्षण क्षेत्र।** वर्तमान विज्ञान, 124: 38-49।

प्रफुल जी, कुमारा एचएन (2023)। **भारत के दक्षिणी राज्य कर्नाटक में गिद्धों की स्थिति की समीक्षा।** जर्नल ऑफ थ्रेटनड टैक्सा, 15: 24184-24200।

प्रवीण जे और जयपाल आर (2024)। **भारत और दक्षिण एशियाई क्षेत्र की पक्षी सूची में वर्गीकरण का अद्यतन कृ2024।** इंडियन बर्ड्स, 19 (5): 155-158।

राज पीएनए, वेलंकर एडी, प्रमोद पी (2023)। **भरतपुझा नदी बेसिन, केरल, भारत में पक्षियों की विविधता और वितरण।** जर्नल ऑफ थ्रेटनड टैक्सा, 15(11): 24169-24183।

राज पीएनए, वेलंकर एडी, प्रमोद पी (2024)। **भरतपुझा नदी बेसिन, केरल, भारत में पक्षी समुदाय पैटर्न।** जर्नल ऑफ थ्रेटनड टैक्सा, 16(2): 24646-24657।

तेजा वी, मनु एस, कुमारा एचएन, उमापति जी (2023)। **दक्षिणी भारत में ग्रे स्लेंडर लॉरिस लोरिस लिडेकरियनस के मैसूर और मालाबार उपप्रजातियों के विभाजन पर फिलोजेनेटिक अंतर्दृष्टि।** जर्नल ऑफ थ्रेटनड टैक्सा, 15: 23827-23835।

थापा ए, प्रधान ए, चटर्जी पी, सिंह ए (2023)। **भारतीय खरगोश लेपस निग्रिकोलिस पर एक नोट : हिमालय में आईयूसीएन वितरण के परे उपस्थिति।** ऐकेडमी बायोलॉजी, 1(2): 1-4 | <https://doi-org/10-20935/AcadBiol6023>

वेलंकर एडी, कुमारा एचएन, पाल ए, मिश्रा पीएस, सिंह एम (2023)। **ए टफ नट टू क्रैक? निकोबार लंबे-पूंछ वाले मकाक मकाका फेसिकुलारिस अम्ब्रोसस में नारियल प्रसंस्करण की प्रवीणता।** जर्नल ऑफ बायोसाइंसेज, 48:28।

पीयर रिव्यू जर्नल: अंतरराष्ट्रीय

आशीष के, अरोरा बी, कर्णे डी, कुमार वी, खान एएस, उमापति जी, रमेश टी, काले आर (2023)। **दक्षिणी भारत में एक जंगली धारीदार लकड़बग्घा, हाइना हाइना जनसंख्या में ग्लुकोकोर्टिकोइड सांद्रता और परजीवी भार।** थेरियोजेनोलॉजी वाइल्ड, 3: 1-8।

आशीष के, रमेश टी, काले आर, जियोर्डानो एजे (2024)। **स्थानिक विषमता धारीदार लकड़बग्घा और अन्य सहअस्तित्व मांसाहारियों के सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है।** जर्नल ऑफ बायोग्राफी, 51: 173-184।

अर्जुन एमएस, पांडा बीपी, अरुण पीआर (2023)। **रेत खनन: सैंडबार नेस्टिंग बर्ड्स के लिए एक समकालीन खतरा: एक समीक्षा।** समकालीन पारिस्थितिकी समस्याएं, 16, 189-204।

अर्जुन एमएस, पांडा बीपी, अरुण पीआर, भारोस, एएमके (2023)। **छत्तीसगढ़ राज्य में पक्षी विज्ञान कार्यों की स्थिति और संरक्षण निहितार्थ: एक समीक्षा।** जर्नल ऑफ नेचर कंजर्वेशन, 75, 1-27।

अश्विन सीपी, अल्बी जेएम, अर्जुन एमएस, अरुण पीआर, नंदु वीएस (2023)। **छत्तीसगढ़, भारत में रेप्टर्स और रेखीय संरचना: प्रजाति संरचना और संरक्षण चिंता।** ऑर्निस हंगारिका, 31, 1-12।

अश्विन सीपी, क्लिंस पी जोसे, अरुण पीआर (2023)। **पक्षियों पर रेखीय संरचना के प्रभाव: एक समीक्षा।** इराक नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम बुलेटिन, 17, 481-498।

बेहरा एके, कुमार पीआर, प्रिया एएमएम, जोल्नर पीए, रमेश टी, काले आर (2024)। **बहुउपयोगी परिदृश्य में सह-अस्तित्वरू दक्षिणी भारत में मानव गतिविधियों के साथ जंगली स्तनधारियों के क्रियात्मक लक्षणों को जोड़ना।** परिदृश्य पारिस्थितिकी, 39: 1-9।

भट्टाचार्य एम, अधिकारी बीएस, गोपी जीवी (2021)। **तावनी मछली-उल्लू, केटुपा फ्लैविप्स हॉजसन, 1836 (एक्स: स्ट्रिगिफोर्मस रू स्ट्रिगिडे): अरुणाचल प्रदेश, भारत से हालिया रिकॉर्ड।** जर्नल ऑफ थ्रेटनड टैक्सा, 13(2): 17837-17840।

क्लेमेंट्स एचएस, डू लिन्ह सैन ई, हेम्पसन जी, लिंडेन बी, मारिट्ज बी, रमेश टी३३ (2024)। **अफ्रीका के प्रमुख भूमि उपयोगों के पार फ्लोरा और फॉना जनसंख्या की अखंडता के अनुमान का bii4afric डेटा सेट।** साइंटिफिक डेटा, 11:191।

दीपक डी, बाबू एस, कुमारा एचएन, नवीन आरएस (2023)। **भारत के कर्नाटक से भारतीय स्मूथ स्नेक वालोफिस ब्रैच्युरा का पहला रिकॉर्ड।** हर्पेटोलॉजिकल बुलेटिन, 163: 37-38

देय पी, रे एसडी, प्रमोद पी, सिंह आरपी (2023)। **बर्ड-बटन क्वेल, टरनिकस सुसीटेटर में जीनोम अनुक्रमण, असेंबली और माइक्रोसैटेलाइट मार्करों के डेटा सेट।** डेटा इन ब्रीफ, 1-8: 109288।

धनुषा कवलकर, शिरीष एस मांची, रजत पारब, प्रीतीश लाड (2024)। **एक गुफा के स्थायी निवासी के तौर पर ताजे पानी के कछुए प्रजाति पर पहली रिपोर्ट।** हर्पेटोलॉजिकल बुलेटिन, 167: 34-36

कवलकर डी, मांची एस (2023)। **दक्षिणी पश्चिमी घाट में ब्लिथ के स्विपट आपस लेउकोनिक्स ब्लिथ, 1845 (आपोडिफोर्मस: आपोडिडे: आपस) के प्रथम प्रजनन रिकॉर्ड की पुष्टि।** इराक नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम बुलेटिन, 17(3): 469-480

लिंगडोह ए.डब्ल्यू. कुमारा एच.एन., बाबू एस, करुणाकरण पीवी (2023)। सामुदायिक भंडार: मेघालय, उत्तरपूर्वी भारत में समुदाय द्वारा प्रबंधित विविध भूमि परिदृश्य में स्तनधारियों के संरक्षण के लिए उनका महत्व। पीएलओएस वन, 18(1): m0280994

महेंद्रन एम, पार्थिवन एम और अजीज पीए (2022)। जंगली पक्षियों में स्थानीय बायोक्लाइमेट-चालित इकोमॉर्फोलॉजिकल परिवर्तनों के संकेत। वैज्ञानिक रिपोर्ट, 12(1): 15815

मोंडल टी, देय पी, कुमारी डी, रे एसडी, क्वाड्रोस जी, कोचिंगंती वीएचएस, सिंह आरपी (2023)। पीले-चोंच वाली चुरमुर्, टरडॉइड्स अफिनिस में जीनोम-विस्तृत माइक्रोसैटेलाइट मार्करों की जीनोम सर्वेक्षण अनुक्रमण और निष्कर्षण। हेलीऑन वॉल: 9 (1). e12735 <https://doi.org/10-1016/j-heliyon-2022-e12735>

नवीन आर, टपले बी, चंद्रमौली एस, जर्विस पीए, बाबू एस, मीतेई ए, करुणाकरण पी वी (2023)। एक नई प्रजाति बुफोइड्स पिल्लई और यजदानी 1973 (एम्फिबियारु बुफोनिडे) मिजोरम (भारत) से और बुफोइड्स मेघालयनस (यजदानी और चंदा 1971) के वितरण सीमा का खासी हिल्स, मेघालय, भारत तक सीमांकन। जैव विविधता जर्नल, 24(9): 4617-4627

नवीन आरएस, लियू एस, चंद्रमौली एसआर, बाबू एस, करुणाकरण पीवी, कुमारा एचएन (2023)। रैकॉफोरस ट्यूबरकुलाटस (एंडरसन, 1871) और रैकॉफोरस वेरुकोपस हुआंग, 1983 की वैधता का पुनः वर्णन। हर्पेटोजोआ, 36: 325-333

रमेश कुमार पी, दीपक डी, कुमारा एचएन, बाबू एस (2023)। आर्डेओटिस निग्रिसेप्स ज्ञान का उपयोग करते हुए ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की अधिभोगिता, कर्नाटक, भारत। जैव विविधता, 24: 1400-1407

राव जीबी, बाबू एस, क्वाड्रोस जी (2023)। पर्यावरणीय कारक और शिकार की उपलब्धता भारत के पश्चिमी तट के साथ शोरबर्ड्स द्वारा शीतकालीन आवास उपयोग को निर्धारित करती है। रिजनल स्टडीज इन मरिन साइंस, 67 (2023): 103219, आईएसएसएन 2352-4855

रे एसडी, देय पी, सरकार आई, शर्मा एसके, क्वाड्रोस जी, प्रमोद पी, कोचिंगंती वीएचएस, सिंह आरपी (2023)। मैना, एक्रिडोथेरस ट्रिस्टिस का पूर्ण माइटोजीनोम दृ विशेषता और फिलोजेनेटिक निहितार्थ। बायोलॉजिया, 78(4), 1079-1091

रे एसडी, ओल्गा एस, क्वाड्रोस जी, देय पी, प्रमोद पी, सिंह आरपी (2023)। चार कोलंबिडे प्रजातियों के पंखों की मैक्रो-और माइक्रोस्ट्रक्चरल विशेषताएँ। बायोलॉजी बुलेटिन, 1-16

रे एसडी, क्वाड्रोस जी, देय पी, प्रमोद पी, और सिंह आरपी (2023)। असम, उत्तर-पूर्व भारत के दो राष्ट्रीय उद्यानों के पास सड़क से वन्यजीव दुर्घटनाएँ। एशियाई संरक्षण जीवविज्ञान जर्नल, 12(2): 314-325

सरकार ए, सैलास एसएस, बाबू एस, करुणाकरण पीवी, कुमारा एचएन, शनमुगेवल एस, प्रमोद पी (2023) सामुदायिक भंडार उत्तर-पूर्व भारत में कैविटी-नेस्टिंग उल्लुओं के लिए शरण स्थल के रूप में कार्य करते हैं। जर्नल ऑफ रैप्टर रिसर्च, 57(1): 22-29

सिंह ए, कुमारा एचएन, महतो एस (2023) मायूरझरना हाथी रिजर्व केवल हाथियों के लिए एक प्रवेश द्वार है : सात दशकों में एशियाई हाथियों द्वारा रेंज उपयोग पैटर्न में परिवर्तन। मामल्स स्टडीज, 48(4): 283-288

सिंह ए, कुमारा एचएन, महतो एस, वेलंकर एडी (2023)। एक कृषि परिदृश्य में एशियाई हाथी, एलेफस मैक्सिमस का मानवजनित संचालित रेंज विस्तार और इसके परिणाम दक्षिण पश्चिम बंगाल, भारत। जर्नल ऑफ नेचर कंजर्वेशन, 73: 126374

सिंह एम, एडगांवकर ए, रमेश टी (2024)। केंद्रीय भारत में पचमढ़ी वन्यजीव अभ्यारण्य में रसीले फलों के बीज अंकुरण पर आम ताड़ की नीविवर आंत के माध्यम से जाने का प्रभाव। नॉर्डिक जर्नल ऑफ बोटनी, 2023: m03981

स्ट्रेइचर जेपी, रमेश टी, डाउन्स सीटी (2024)। सभी छोटे स्तनधारी मांसाहारी एक समान नहीं होते: शहरी क्षेत्रों में अनुसंधान प्रयास की एक वैश्विक समीक्षा। अफ्रीकन वाइल्डलाइफ रिसर्च जर्नल, 53: 72-102

सुरेशमरिमुथु एस, बाबू एस, कुमारा एचएन, राजेशकुमार एन (2023)। उष्णकटिबंधीय उल्लू कहाँ रहते हैं: मल्टीस्केल आवास चर अंडमान द्वीपसमूह, भारत में दो सहानुभूति ओटस प्रजातियों द्वारा बसेरा स्थल चयन की व्याख्या करते हैं। एक्टा ऑर्निथोलॉजिका, 57: 181-196

थापा ए, प्रधान ए, चटर्जी पी, सिंह ए (2023)। भारतीय खरगोश लेपस निग्रिकोलिस पर एक नोट: हिमालय में आईयूसीएन वितरण से परे उपस्थिति। अकादमी जीवविज्ञान, 1(2): 1-4

पुस्तक अध्याय

अटकोरे विद्याधर (2024)। लकपा तामांग: एक असाधारण मत्स्य वैज्ञानिक। फुटनोट से अधिक - वन्यजीव अनुसंधान और संरक्षण में फील्ड सहायक। अंबिका अय्यादुरई और ममता पांड्या द्वारा संपादित। बुकवेल प्रकाशन। 172-182

बिस्वास जे, चुटिया डी, दास जे, शिल जे, कुमारा एचएन (2023)। ऊपरी असम, भारत में एक सामुदायिक संरक्षित गांव जनसंख्या में पश्चिमी हूलाक गिबन्स, हूलाक हूलाक की जनसांख्यिकी और समूह गतिकी। गिबन्स संरक्षण एंथ्रोपोसीन में (संपादक: चयने एसएम, थॉम्पसन सी, फैन पी और चटर्जी एच)। कैब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस: यूनाइटेड किंगडम। (आईएसबीएन 978-1108429023)। पृ. 131-146

थापा ए, सिंह ए (2023)। **दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल के नगरपालिका और आसन्न हरे क्षेत्रों में देखे गए पक्षियों का एक विवरण**। कुशवाहा एस और खरे, पी। जैव विविधता, संरक्षण और इसका अनुप्रयोग। आर्यन प्रेस, राठौर अकादमिक अनुसंधान प्रकाशन, नई दिल्ली। आईएसबीएन नंबर 978-93-90648-87-0। - 62-104

पुस्तक

प्रकाश एल, सुरेशमरिमुथु एस, किरुबनंधिनी वी, जयपाल आर, बाबू एस (2023)। **वडुवूर पक्षी अभ्यारण्य के फूल वाले पौधे : एक चित्रात्मक फील्ड गाइड**। सेकान द्वारा प्रकाशित। आईएसबीएन 978-93-340-0580-6।

रिपोर्ट्स

अरुण पीआर, अर्जुन एमएस, बिभु प्रसाद पांडा (2023)। **छत्तीसगढ़ में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सेकान, कोयंबटूर। परियोजना रिपोर्ट, पृ. 151।

अरुण पीआर, बाबू एस, बाबू राव जी (2023)। **ठाणे क्रीक फ्लेमिंगो अभ्यारण्य के संदर्भ में 110 केवी खोपोली-मांखुर्द और खोपोली-चेंबूर ट्रांसमिशन लाइनों के प्रस्तावित प्रतिस्थापन के लिए पक्षी अध्ययन जिससे उपयुक्त पक्षी डाइवर्टर्स का सुझाव दिया जा सके**। सेकान परियोजना रिपोर्ट, पृ. 66।

अरुण पीआर, बाबू एस, बाबू राव जी (2023)। **सिवरी, ठाणे क्रीक और आसपास के क्षेत्र के लिए पक्षी निगरानी पर्यावरणीय निगरानी कार्यक्रम का हिस्सा**। सेकान परियोजना रिपोर्ट, पृ. 69।

अरुण पीआर, बाबू एस, हरीफ पी (2023)। **रंगानाथिडू पक्षी अभ्यारण्य के पास कामाकुरा पुल के निर्माण का प्रवासी पक्षियों और उनके आवास पर प्रभाव**। सेकान परियोजना रिपोर्ट, पृ. 100।

अरुण पीआर, जयपाल आर, बाबू एस, अश्विन सीपी, अल्बी जेएम (2023)। **छत्तीसगढ़ में पांच विकासात्मक परियोजनाओं के लिए संशोधित पक्षी संरक्षण योजनाएं**। सेकान, कोयंबटूर। परियोजना रिपोर्ट, पृ. 126।

अरुण पीआर, जयपाल आर, करुणाकरण पीवी, ऋतिका एससी, राजन पी (2023)। **फूडम पक्षी अभ्यारण्य, दीव (2023-24 से 2027-28) के लिए प्रबंधन योजना**। सेकान, कोयंबटूर। परियोजना रिपोर्ट, पृ. 117।

अरुण पीआर, करुणाकरण पीवी (2024)। **साइट निरीक्षण की रिपोर्ट 16 जनवरी 2024 को प्रस्तावित आवासीय**

परियोजना स्थल 'मरीन व्यू' एमधएस पुरवांकरा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड द्वारा मरीन ड्राइव, कोचीन, एर्नाकुलम पर। सेकान, कोयंबटूर। साइट निरीक्षण रिपोर्ट। पृ. 5।

अटकुरे वी, प्रकाश एच, भट्टाचार्य ए (2023)। **देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सेकान की दूरदर्शी परिप्रेक्ष्य योजना को लागू करने के लिए उत्तराखंड राज्य स्तरीय कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र (सेकान), दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, कोयंबटूर। पृ. 226।

बाबू एस, जयपाल आर, किरुबनंधिनी वी (2023)। **वडुवूर पक्षी अभ्यारण्य, तमिलनाडु में प्रवासी पक्षियों की जनसंख्या स्थिति और समयबद्ध पैटर्न का आकलन**। सेकान परियोजना रिपोर्ट। पृ. 100।

बाबू एस, प्रसाथ एस (2023)। **तमिलनाडु में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सेकान परियोजना रिपोर्ट। पृ. 217।

हरिनी वी, रमेश के, लक्ष्मीनारायणन एन, करुणाकरण पीवी, बाबू एस (2024)। **वायनाड जिला, केरल और गुडालूर जिला, तमिलनाडु में मानव-वन्यजीव संघर्ष**। साइट मूल्यांकन रिपोर्ट एमओईएफसीसी को प्रस्तुत की गई। पृ. 14।

जयपाल आर, बाबू एस, अरुण पीआर, करुणाकरण पीवी, संधोसीनी आर (2023)। **सेकान परिसर में एक पक्षी वेधशाला स्थापित करना पक्षी प्रवास और प्रजनन की फेनोलॉजी का अध्ययन करने के लिए जलवायु परिवर्तन और अन्य पारिस्थितिकी तंत्र प्रक्रियाओं के संदर्भ में**। परियोजना समापन रिपोर्ट। सेकान, कोयंबटूर। परियोजना समापन रिपोर्ट, पृ. 30।

काले आर, सलीवन ए (2023)। **आंध्र प्रदेश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र (दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान), कोयंबटूर, एमओईएफसीसी, भारत सरकार (पीआररु251)। पृ. 216।

करुणाकरण पीवी, अंजिथा देवराजन, रिजू पीएन (2023)। **केरल में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सेकान, कोयंबटूर, परियोजना रिपोर्ट। पृ. 191।

करुणाकरण पीवी, नंदु वीएस (2023)। **मथिकेट्टन शोला राष्ट्रीय उद्यान का स्थानिक मानचित्रण**। सेकान, कोयंबटूर परियोजना रिपोर्ट। पृ. 51।

महेंद्रन एम, दिव्या पी, अंकिता बी (2023)। **देश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए सेकान की दूरदर्शी परिप्रेक्ष्य योजना को लागू करने के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजनाएं एनसीआर दिल्ली**। अंतिम रिपोर्ट। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, कोयंबटूर। पृ. 1-167।

प्रमोद पी, करुणाकरण पीवी, अनूप राज पीएन, अर्जुन एमएस, असीक पीपी (2024)। **चयनित भारतीय नागरिक हवाई क्षेत्रों के लिए पक्षी वन्यजीव खतरों का अध्ययन**। परियोजना रिपोर्ट लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश को प्रस्तुत की गई। पृ. 136

प्रमोद पी, करुणाकरण पीवी, अनूप राज पीएन, लीनी के, असीक पीपी (2023)। **चयनित भारतीय नागरिक हवाई क्षेत्र: कोझिकोड अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, मलप्पुरम, केरल में विमान के लिए पक्षी और वन्यजीव खतरों का अध्ययन**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान

रमेश टी, रचावीलपुला एस, पांडा बीपी (2023)। **तेलंगाना में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, कोयंबटूर, एमओईएफसीसी, भारत सरकार (पीआर 245)। पृ. 161।

सिंह ए, नारायणप्पा वाई, अमरुत के, गौतम ए (2023)। **भारत के चयनित परिदृश्यों में हाउस स्पैरो, पासर डोमेस्टिकस की जेनेटिक विविधता और फाइलोजियोग्राफिक पैटर्न (पीआर241)**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, एमओईएफ एंड सीसी, जीओआई, कोयंबटूर। पृ. 34

बाचेर ३ अटकुरे वी३ (2023)। **वाह्य विदेशी प्रजातियों का प्रकृति पर प्रभाव, प्रकृति का लोगों में योगदान और जीवन की अच्छी गुणवत्ता**। आईपीबीईएस रिपोर्ट। योगदान देने वाले लेखक: यहाँ क्लिक कर

तकनीकी रिपोर्ट्स

जयपाल आर, गुप्ता डी, पांडा बीपी (2023)। **मध्य प्रदेश में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, कोयंबटूर। पृ. 146। तकनीकी रिपोर्ट नंबर पीआर-262।

कुमारा एचएन, बाबू एस, किशोर आर, अरविंदन बीके (2024)। **मानव-मौर संघर्ष का आकलन और तमिलनाडु के चयनित क्षेत्रों में संघर्ष को कम करने के लिए कार्य योजना विकसित करना**। सेकान। वन विभाग, तमिलनाडु को प्रस्तुत। रिपोर्ट नंबर: पीआर-269।

कुमारा एचएन, प्रफुल जी (2023)। **राज्य कार्य योजना – कर्नाटक। सेकान, कोयंबटूर**। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-263।

कुमारा एचएन, वेणुगोपाल एन (2023)। **हिमाचल प्रदेश में रीसस मकाक, मकाका मुल्टा की जनसंख्या स्थिति और नसबंदी के बाद का व्यवहार**। सेकान। रिपोर्ट वन विभाग,

हिमाचल प्रदेश को प्रस्तुत की गई। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-242।

मुखर्जी ए, सिंह जीएस, बिस्वास एस (2023)। **राजस्थान में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, कोयंबटूर, एमओईएफसीसी, भारत सरकार। पृ. 187। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-256।

मुखर्जी एस, बिस्वास एस और चौककर एम (2023)। **महाराष्ट्र में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र (दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय)। पृ. 211। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-259।

मुखर्जी एस, बिस्वास एस और नीमा ए (2023)। **गुजरात में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र (दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय)। पृ. 187। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-260।

मुखर्जी एस, नंदिनी आर. और खानोलकर एन. (2023)। **धब्बेदार बिल्ली का जीनोमिक अध्ययन**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, कोयंबटूर, तमिलनाडु। पृ. 20। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-246।

सिंह ए, नारायणप्पा वाई, अमरुत के, गौतम ए (2023)। **भारत के चयनित परिदृश्यों से हाउस स्पैरो, पासर डोमेस्टिकस की जेनेटिक विविधता और फाइलोजियोग्राफिक पैटर्न**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, एमओईएफ एंड सीसी, जीओआई, कोयंबटूर। पृ. 34। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-241।

सिंह ए, थापा ए (2023)। **मेघालय में पक्षियों की विविधता, उनके पारिस्थितिकी तंत्र, आवास और परिदृश्यों के संरक्षण के लिए राज्य कार्य योजना**। सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, दक्षिण भारत वन्यजीव संस्थान, एमओईएफ एंड सीसी, जीओआई, कोयंबटूर – पृ. 201। तकनीकी रिपोर्ट नंबर: पीआर-244।

कार्यशाला / सेमिनार कार्यवाही

अटकुरे वी, काविन डी, चौधरी के, जॉनसन जेए (2023)। **पश्चिमी घाट की मोयार नदी में ताजे पानी की मछली जनसंख्या की निगरानी: दीर्घकालिक पारिस्थितिक वेधशाला परियोजना पहल**। द्वितीय वार्षिक अनुसंधान सम्मेलन की कार्यवाही (ए उदयन, निहार रंजन, एमजी गणेशन, ए

मणिमोजी, के शंकर, ए प्रदीप, डी वसान्थकुमारी, जी गेब्रियल पॉलराज और टीटी शमीर, संपादक)। एडवांस इंस्टीट्यूट ऑफ वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन (अनुसंधान, प्रशिक्षण और शिक्षा), तमिलनाडु वन विभाग, वांडलूर, चेन्नई द्वारा होस्ट किया गया। पृ 62–76।

गौतम ए, कुशवाहा एस, दुबे एस, सिंह ए, रमेश आर (2023)। **भारत में पक्षियों के पारिस्थितिकी अध्ययन में रिमोट सेंसिंग अनुप्रयोगों के तीन दशक: एक समीक्षा और पक्षी निगरानी का भविष्य**। उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक, कोयंबटूर, 2–6 जुलाई 2023

सिंह ए, नारायणप्पा वाई, अमरुत के, गौतम ए, रमेश आर (2023)। **हाउस स्पैरो के लिए शहरी पारिस्थितिकी तंत्र में घटनाओं और अस्तित्व की चुनौतियां**।

बर्नाट-पॉस, एस., बर्नाट-पॉस, ई और गिल-डेलगाडो, जे.ए. (संपादक)। **बुक ऑफ एक्सट्रैक्ट्स वर्किंग ग्रुप अर्बन स्पैरोस मीटिंग, वेलेंसिया, स्पेन**। 27–28 अक्टूबर 2023।

सबत बी, होलेयाची बीएस, कंवर ए, प्रदीशवर आरजे, रिद्धिका आर, सिंह ए (2024)। **भारतीय मोर, पावो क्रिस्टेटस के पंख और आणविक विशेषताएं फॉरेंसिक प्रभावों के लिए**। पक्षी जीवविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और भारत में पक्षी जीवविज्ञानी संघ की 5वीं वार्षिक बैठक। ग्राफिक एरा (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), देहरादून। 23–25 फरवरी 2024।

गौतम ए, कुशवाहा एस, भट्ट जी, दुबे एस, सिंह ए, रमेश आर (2024)। **पक्षी निगरानी में रिमोट सेंसिंग के अनुप्रयोग, पारिस्थितिकी को समझना और भविष्य की दिशा की योजना बनाना: तीन दशक के भारतीय अध्ययन की समीक्षा**। पक्षी जीवविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और भारत में पक्षी जीवविज्ञानी संघ की 5वीं वार्षिक बैठक। ग्राफिक एरा (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), देहरादून। 23–25 फरवरी 2024।

प्रकाशित सारांश

गौतम ए, कुशवाहा एस, दुबे एस, सिंह ए, रमेश आर (2023)। **भारत में पक्षियों के पारिस्थितिकी अध्ययन में रिमोट सेंसिंग अनुप्रयोगों के तीन दशक: एक समीक्षा और पक्षी निगरानी में भविष्य की दिशा**। उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक, कोयंबटूर, 2–6 जुलाई 2023।

वासुदेवा वी, अटकुरे वी, इनस जे, कृष्णमूर्ति आर (2023)। **उष्णकटिबंधीय जलधारा में रिपेरियन अखंडता को सूचित करने के लिए बहु-टैक्सा आधारित पारिस्थितिकी संकेतकों का अन्वेषण**। अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकीविदों संघ (आईएएलई), 11वीं विश्व कांग्रेस, नैरोबी, केन्या। 10–15 जुलाई 2023।

सबत बी, होलेयाची बीएस, कंवर ए, प्रदीशवर आरजे, रिद्धिका आर, सिंह ए (2024)। **भारतीय मोर, पावो क्रिस्टेटस के पंख**

और आणविक विशेषताएं फॉरेंसिक निहितार्थ के लिए। पक्षी जीवविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और भारत में पक्षी जीवविज्ञानी संघ की 5वीं वार्षिक बैठक। ग्राफिक एरा (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), देहरादून। 23–25 फरवरी 2024।

गौतम ए, कुशवाहा एस, भट्ट जी, दुबे एस, सिंह ए, रमेश आर (2024)। **पक्षी निगरानी में रिमोट सेंसिंग के अनुप्रयोग, पारिस्थितिकी को समझना और भविष्य की दिशा की योजना बनाना: तीन दशक के भारतीय अध्ययन की समीक्षा**। पक्षी जीवविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और भारत में पक्षी जीवविज्ञानी संघ की 5वीं वार्षिक बैठक। ग्राफिक एरा (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), देहरादून। 23–25 फरवरी 2024।

अटकुरे वी, काविन डी, फ्रांसिस एपी (2024)। **पूर्वी हिमालय जैव विविधता हॉटस्पॉट, भारत में स्ट्रीम मछली समूहों के पर्यावरणीय सहसंबंध**। 9वां विश्व मत्स्य कांग्रेस, सिपेटल, यूएसए। (सारांश ऑनलाइन प्रकाशित)। 3–7 मार्च 2024।

नीमा ए, अमरुत आर, मीरा एमआर, मुखर्जी एस और रॉबिन वीवी (2023)। **‘लुप्तप्राय वन्य उल्लू का पता लगाने और पुनः सर्वेक्षण के लिए जैव-ध्वनिकी का उपयोग’** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक, कोयंबटूर, 2–6 जुलाई 2023।

खान जेडजेड, सुषमा एचएस, एंटनी पीबी, कोली के, नीमा ए, मीरा एमआर, अरासुमानी एम, रॉबिन वीवी, जयपाल आर, मुखर्जी एस (2023)। **‘उल्लुओं के बीच प्रजातियों के अधिभोग और निवास स्थान विभाजन के निर्धारक: लुप्तप्राय वन्य उल्लू के लिए कृषि भूमि की भूमिका’** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक, कोयंबटूर, 2–6 जुलाई 2023।

कविता यूकेके, उदयराज एस, रेव टी, कदम डी, भुजवाला जे, डीसूजा एस, आशीर्था एस, मुखर्जी एस, नंदिनी आर. (2023)। **‘आवास प्रकारों के एक मैट्रिक्स में मांसाहारियों की सह-घटना’** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक, कोयंबटूर, 2–6 जुलाई 2023।

प्रस्तुत पत्र

कुमार एच, रमेश टी, काले आर (2023)। **हरियाणा के पश्चिमी अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में कशेरु की सफाईकर्मियों की कार्यात्मक भूमिका को सुलझाना**। भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, कोलकाता में 27–30 जून 2023 को आयोजित ‘इंडरस्टैंडिंग बिहेवियर’ सम्मेलन में पोस्टर प्रस्तुति।

अथिरा एस, काले आर, रमेश टी (2023)। **आंध्र प्रदेश में पक्षी संरक्षण खतरों की पहचान**। उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक कोयंबटूर, भारत में आयोजित की गई और 2–6 जुलाई 2023 को उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ द्वारा आयोजित की गई।

बरिक एस, रमेश टी, काले आर, आशीष के, रमेश केपी (2023)।

बंदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक में वन आग और आक्रामक प्रजातियों के संदर्भ में गौर के आवास का आकलन।

उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक कोयंबटूर, भारत में आयोजित की गई और 2-6 जुलाई 2023 को उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ द्वारा आयोजित की गई।

बेहरा एके, कुमार पीआर, प्रिया एमएम, जोल्नर पीए, रमेश टी, काले आर (2023)। **भारत के बल्लारी जिले में जंगली स्तनधारियों के आवास उपयोग और गतिविधि पैटर्न को आकार देने वाले भूमि उपयोग में परिवर्तन।** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक कोयंबटूर, भारत में आयोजित की गई और 2-6 जुलाई 2023 को उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ द्वारा आयोजित की गई।

गौतम ए, कुशवाहा एस, दुबे एस, सिंह ए, रिद्धिका आर (2023)। **भारत में पक्षी पारिस्थितिकी अध्ययन में रिमोट सेंसिंग अनुप्रयोगों के तीन दशक: एक समीक्षा और भविष्य की दिशा पक्षी निगरानी में।** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक में मौखिक प्रस्तुति, 'विज्ञान, संरक्षण और समाज का संतुलन', कोयंबटूर, भारत, 2-6 जुलाई 2023।

काविन डी, अटकुरे वी (2023)। **अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग और लोहित जिलों के तीन स्वदेशी समुदायों के वर्तमान अभ्यास को समझना।** आईआईटी रुड़की, उत्तराखंड में 'हिमालय का मीठा जल: हिमालय के ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र की सेवा और संवेदनशीलता का आकलन' कार्यशाला। 6 जून 2023।

मिल्डा डी, आशीष के, रमेश टी, काले आर (2023)। **दक्षिणी भारत के पश्चिमी और पूर्वी घाट के मानवजनित ग्रेडिएंट्स के पार बड़े स्तनधारियों के अधिभोग पैटर्न।** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक कोयंबटूर, भारत में आयोजित की गई और 2-6 जुलाई 2023 को उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ द्वारा आयोजित की गई।

सलीवन ए, रिद्धिका आर, रमेश टी (2023)। **आंध्र प्रदेश में पक्षी संरक्षण खतरों की पहचान।** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक में मौखिक प्रस्तुति, 'विज्ञान, संरक्षण और समाज का संतुलन', कोयंबटूर, भारत, 2-6 जुलाई 2023।

संदीप पी, शरीफ एमयू, करुणाकरण पीवी, कुमारा एच एन और बाबू एस (2023)। **क्या सामुदायिक भंडार के पिछले प्रबंधन शासन का वनस्पति संरचना और संरचना पर प्रभाव पड़ता है? उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ की 59वीं वार्षिक बैठक 'विज्ञान, संरक्षण और समाज का संतुलन', कोयंबटूर, तमिलनाडु, भारत। 2-6 जुलाई 2023।**

रमेश के, परबीता बी, करुणाकरण पीवी (2023)। **भारत में वन्यजीव प्रबंधन के लिए परिदृश्य दृष्टिकोण: एक समीक्षा और आगे की राह ?** नैरोबी, केन्या में 10-15 जुलाई 2023 को

केन्याटा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 11वीं आईएएलई 2023 विश्व कांग्रेस में पैनल चर्चा।

डेविड एम, आशीष के, रमेश टी, काले आर, थनिकोडी एम (2023)। **मानवजनित दबाव के बीच रहना: बड़े स्तनधारियों के संरक्षण दृष्टिकोण।** 13वें अंतरराष्ट्रीय स्तनधारी विज्ञान कांग्रेस और अमेरिकी स्तनधारियों सोसाइटी की 102वीं वार्षिक बैठक, डेनाशइना सम्मेलन केंद्र, एंकोरेज, अलास्का, 14-20 जुलाई 2023 के तहत तकनीकी सत्र 17 (वन्यजीव प्रबंधन) में मौखिक प्रस्तुति।

आशीष के, रमेश टी, काले आर, अरुमुगम आर (2023)। **डिसिशन ट्री आधारित मॉडल एक गैर-शत्रुतापूर्ण प्रजाति की संवेदनशीलता का आकलन करने के लिए प्रभावी उपकरण हैं जो अधिक सामान्यीकरण के खतरों के प्रति संवेदनशील होते हैं।** बिहेवियर कांफ्रेंस 2023, बिलेफेल्ड विश्वविद्यालय, जर्मनी में षष्ठ्य व्यवहार और संरक्षण में सामुदायिक सहभागिता सत्र के तहत मौखिक प्रस्तुति। 18 अगस्त 2023।

संयुक्ता पी, कासबेकर, भोर एसएस, हन्नावल्ली एनके, बाबू एस, करुणाकरण पीवी (2023)। **मेघालय, भारत में पश्चिमी हूलॉक गिबबन, हूलॉक हूलॉक के संरक्षण में सामुदायिक रिजर्व का महत्व।** अंतर्राष्ट्रीय प्राइमेटोलॉजिकल सोसाइटी (आईपीएस) और मलेशियाई प्राइमेटोलॉजिकल सोसाइटी (एमपीएस) की संयुक्त बैठक में प्रस्तुत पोस्टर, सरवाक वन निगम (एसएफसी) द्वारा सह-आयोजित, कुचिंग, सरवाक, मलेशियाई बोर्नियो में आयोजित। 19-25 अगस्त 2023।

प्रस्तुत पेपर

काविन डी, अटकुरे वी (2023)। **पूर्वी अरुणाचल प्रदेश में सफेद पेट वाले बगुला, आर्डेया इंसिग्निस की आवास गुणवत्ता और शिकार की स्थिति।** 16वीं आंतरिक वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी (ऑनलाइन)। 12-14 सितंबर 2023।

अटकुरे वी, काविन डी, वैशाली वी (2023)। **मोयार नदी, तमिलनाडु में मछली विविधता का आकलन।** 16वीं आंतरिक वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी (ऑनलाइन)। 12-14 सितंबर 2023।

स्ट्रेइचर जेपी, रमेश टी, डाउन्स सीटी (2023)। **उत्तरी क्वाजुलु-नताल गेम पार्क, दक्षिण अफ्रीका में पर्यावरणीय और परिदृश्य चर के प्रति स्तनधारी समुदायों की प्रतिक्रिया।** 40वीं जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ साउथर्न अफ्रीका सम्मेलन में आयोजित। क्वाजुलु-नताल, दक्षिण अफ्रीका में। 25-29 सितंबर 2023।

सुरेश ए, भावे एस, गुर्जरपाध्ये पी, गुप्ता एसके, क्वाड्रोस जी (2023)। **नवी मुंबई के बेलापुर के तूफान के जल की संचित करने वाले तालाब में मेयोबेंथोस की प्रचुरता में मौसमी भिन्नता।** केएससीएसटीई-सीडब्ल्यूआरडीएम, कोलिकोड, केरल द्वारा आयोजित श्वेतलैंड्स को पुनर्जीवित

करनाश दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुति के लिए सारांश प्रस्तुत किया गया। पृ. 19। 11-13 अक्टूबर 2023।

भावे एस, सोमानी वी, क्वाड्रोस जी (2023)। **रॉकी ज्वार तालाब पारिस्थितिकी तंत्र, सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र में प्लवक भिन्नता की संरचना: एक मौसमी दृष्टिकोण।** 'वेटलैंड्स को पुनर्जीवित करना' राष्ट्रीय सम्मेलन, अद्रभूमि अनुसंधान में हालिया विकास। केएससीएसटीई-सीडब्ल्यूआरडीएम। पृ. 32। 11-13 अक्टूबर 2023

गुप्ता एसके, गुर्जरपाध्ये पी, भावे एस, तिवारी एम, क्वाड्रोस जी (2023)। **उदवा झील पक्षी अभ्यारण्य की पक्षी विविधता: झारखंड से संभावित रामसर स्थल।** केएससीएसटीई-सीडब्ल्यूआरडीएम, कोलिकोड, केरल द्वारा आयोजित 'वेटलैंड्स को पुनर्जीवित करना' दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुति के लिए सारांश प्रस्तुत किया गया। पृ. 33। 11-13 अक्टूबर 2023

गुर्जरपाध्ये पी, गुप्ता एसके, भावे एस, क्वाड्रोस जी (2023)। **निर्मित आर्द्रभूमि और इसकी पक्षी विविधता: बेलापुर सीबीडी, नवी मुंबई के तूफान जल धारण तालाब पर एक केस स्टडी।** केएससीएसटीई-सीडब्ल्यूआरडीएम, कोलिकोड, केरल द्वारा आयोजित 'वेटलैंड्स को पुनर्जीवित करना' दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुति के लिए सारांश प्रस्तुत किया गया। पृ. 64। 11-13 अक्टूबर 2023

सिंह ए, नारायणप्पा वाई, अमरुत के, गौतम ए, रमेश आर (2023)। **हाउस स्पैरो के लिए शहरी पारिस्थितिकी तंत्र में उपस्थिति और अस्तित्व की चुनौतियाँ। बर्नट-पॉन्से एस, बर्नट-पॉन्से, ई और गिल-डेलगाडो जेए (संपादक)।** 2023। अर्बन स्पैरो मीटिंग की वर्किंग ग्रुप की सारांश पुस्तक, वेलेंसिया, स्पेन। 27-28 अक्टूबर 2023

कुमारा एचएन (2024)। **लायन-टेल्ल मकाक और स्लेंडर लॉरिस के शरण स्थल: जनसंख्या, पारिस्थितिकी और संरक्षण की कहानियाँ।** एआईपी द्वितीय सम्मेलन, मैसूरु, 9-11 फरवरी 2024।

श्रीजा आर, रमेश टी, काले आर (2024)। **स्पॉट-बिल्ड पेलिकन की प्रजनन सीमा में आर्द्रभूमि आवास की विशेषता।** तमिलनाडु वन विभाग की तृतीय वार्षिक अनुसंधान सम्मेलन में, चेन्नई, तमिलनाडु में आयोजित और एडवांस्ड इंस्टीट्यूट ऑफ वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन द्वारा आयोजित। 15-16 फरवरी 2024।

बारिक एस, रमेश केपी, आशीष के रमेश टी, काले आर (2024)। **बंदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक में भारतीय गौर के आवास चयन पर आक्रामक पुष्प प्रजातियों का प्रभाव।** आईआरएएलई सम्मेलन मुर्ति, पश्चिम बंगाल, भारत में आयोजित किया गया और भारतीय क्षेत्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकी संघ द्वारा 21-23 फरवरी 2024 को आयोजित किया गया।

कुमारा एचएन, बाबू एस, किशोर आर, अरविंदन बीके (2024)। **मानव-मौर संघर्ष का आकलन और तमिलनाडु के चयनित क्षेत्रों में संघर्ष को कम करने के लिए कार्य योजना**

विकसित करना। वार्षिक अनुसंधान सम्मेलन 2024, एआईडब्ल्यूसी, चेन्नई, 15-16 फरवरी 2024।

श्रीजा आर, रमेश टी, रिद्धिका आर (2024)। **स्पॉट-बिल्ड पेलिकन की प्रजनन सीमा में आर्द्रभूमि आवास की विशेषता।** तमिलनाडु वन विभाग, वंडालूर, चेन्नई द्वारा एडवांस्ड इंस्टीट्यूट ऑफ वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन में तृतीय वार्षिक अनुसंधान सम्मेलन में मौखिक प्रस्तुति। 15-16 फरवरी 2024

बारिक एस, रमेश कुमार पी, कुमार ए, रमेश टी, काले आर (2024)। **बंदीपुर बाघ रिजर्व, कर्नाटक में भारतीय गौर के आवास चयन आक्रामक पुष्प प्रजातियों का प्रभाव।** भारतीय क्षेत्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकी संघ (आईआरएएलई) सम्मेलन 2024, षंथ्रोपोसीन में परिदृश्य को बनाए रखना, मुर्ति, पश्चिम बंगाल, 21-23 फरवरी 2024

एडम पेक-रिचर्डसन, एलेक्सा पिगोट ३ महेंद्रन एम३. रेचेल ऑर्बन (2024)। **कॉर्मोरेंट ओशनोग्राफी प्रोजेक्ट: कॉर्मोरेंट गतिविधि पारिस्थितिकी और महासागर अवलोकन अवसरों से अंतर्दृष्टि।** 51वीं वार्षिक बैठक पैसिफिक सीबर्ड समूह सम्मेलन, सिएटल डब्ल्यूए, यूएसए में 21-23 फरवरी 2024 को प्रस्तुत किया गया

सोमानी बी, क्वाड्रोस जी (2024)। **एक छोटे शहरी आवास, ठाणे, महाराष्ट्र में पक्षी विविधता।** राष्ट्रीय पक्षी जीवविज्ञान संगोष्ठी का आयोजन पर्यावरण विज्ञान विभाग, ग्राफिक एरा (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), देहरादून, उत्तराखंड, भारत द्वारा किया गया। पृ. 65। 23-25 फरवरी 2024।

भावे एस, सोमानी वी, क्वाड्रोस जी (2024)। **रॉकी तट के ज्वार तालाबों से दो विभिन्न समुद्री शैवाल में मैक्रोबेंथोस की विविधता और प्रचुरता में मौसमी भिन्नता।** 'द ब्लू वोज', तटीय और समुद्री संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत सारांश। जूलॉजी विभाग, मितिभाई कॉलेज, महाराष्ट्र के मैंग्रोव और समुद्री जैव विविधता संरक्षण फाउंडेशन के सहयोग से। पृ. 15। मार्च 2024।

वार्ता और पोस्टरों के सारांश

अटकुरे वी, मोहम्मद फरहान, काविन डी (2023)। **अरुणाचल प्रदेश के रंगनदी नदी का एक पारिस्थितिक जलविज्ञान मूल्यांकन।** आईआईटी रुड़की, उत्तराखंड में 'हिमालय का मीठा जल: हिमालय के ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र सेवा और संवेदनशीलता का आकलन' कार्यशाला। 6 जून 2023।

नीमा ए, अमरुथा आर, मीरा एमआर, मुखर्जी एस और रॉबिन वीवी (2023)। **'लुप्तप्राय वन उल्लू का पता लगाने और पुनः सर्वेक्षण के लिए जैव-ध्वनिकी का उपयोग'।** उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ के 59वीं वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पोस्टर। 2-6 जुलाई 2023।

खान जेडजेड, सुष्मा एचएस, एंटनी पीबी, कोली के, नीमा ए, मीरा एमआर, अरासुमनी एम, रॉबिन वीवी, जयपाल आर, मुखर्जी

एस (2023)। उल्लुओं के बीच प्रजाति अधिभोग और निकास विभाजन के निर्धारक: लुप्तप्राय वन उल्लू के लिए कृषि भूमि की भूमिका। उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ के 59वीं वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पोस्टर। 2–6 जुलाई 2023।

कविथा यूकेके, उदयराज एस, रेव त, कदम डी, भुजवाला जे, डीशसूजा एस, आशीर्था एस, मुखर्जी एस, नंदिनी आर (2023)। 'विभिन्न आवास प्रकारों के मेट्रिक्स में मांसाहारियों का सह-अस्तित्व'। उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ (एटीबीसी) के 59वीं वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पोस्टर। 2–6 जुलाई 2023।

कोडियन जेएक्स, थट्टे पी, वनक एटी, मुखर्जी एस, नंदिनी आर (2023)। 'मध्य भारत के संरक्षित क्षेत्रों के अंदर और बाहर जंगली बिल्ली, फेलिस चारुस के आहार का तुलनात्मक अध्ययन'। उष्णकटिबंधीय जीवविज्ञान और संरक्षण संघ (एटीबीसी) के 59वीं वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दी गई 'स्पीड टॉक'। 2–6 जुलाई 2023।

वैशाली वासुदेवा, विद्यार्थी अटकुरे, जॉन एल. इननेस और रमेश कृष्णमूर्ति (2023)। 'उष्णकटिबंधीय जलग्रहण क्षेत्र में रिपेरियन अखंडता को दर्शाने के लिए बहु-टैक्सा आधारित पारिस्थितिक संकेतकों का अन्वेषण'। अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पारिस्थितिकी संघ (आईएएलई) 2023 विश्व कांग्रेस के 11वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पोस्टर। 9–14 जुलाई 2023।

पुरस्कार

डॉ. टी. रमेश, को सितंबर 2023 में अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ), भारत सरकार द्वारा मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट ऑफ एनिमल बिहेवियर, जर्मनी में 11 सितंबर 2023 से 08 मार्च 2024 तक एस.आई.आर.ई. फेलो के रूप में सम्मानित किया गया।

डॉ. टी. रमेश को दिसंबर 2023 में क्वाजुलु-नताल विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 01 दिसंबर 2023 से 30 नवंबर 2023 तक स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, क्वाजुलु-नताल विश्वविद्यालय में मानद शोध फेलो के रूप में सम्मानित किया गया।





© सागर राजपुष्कर

बोरवा



भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून और सलीम अली पक्षी विज्ञान और प्राकृति विज्ञान केंद्र, कोयंबटूर के लेखों का पृथक लेखापरीक्षा रिपोर्ट, वर्ष 2023-24

- हमने 31 मार्च 2024 को समाप्त हुए वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक अधिनियम 1971 के धारा 20 (1) के तहत भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून की संलग्न बैलेंस शीट, आय और व्यय खाता और प्राप्ति एवं भुगतान खाता का लेखापरीक्षा किया है। इन वित्तीय विवरणों में सलीम अली पक्षी विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान केंद्र, कोयंबटूर के खाते शामिल हैं। हमारा दायित्व इन वित्तीय विवरणों के आधार पर एक राय व्यक्त करना है।
- यह पृथक लेखापरीक्षा रिपोर्ट केवल वर्गीकरण, सर्वश्रेष्ठ लेखांकन प्रथाओं के अनुरूपता, लेखांकन मानकों और प्रकटीकरण मानकों आदि के संबंध में लेखांकन पर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की टिप्पणियों को शामिल करती है। कानूनों, नियमों और विनियमों के अनुपालन (प्रमाणिकता और नियमितता) और दक्षता-सह-प्रदर्शन पहलुओं आदि के संबंध में वित्तीय लेन-देन पर लेखा परीक्षकों की टिप्पणियां निरीक्षण रिपोर्ट/सीएजी की लेखापरीक्षा रिपोर्टों के माध्यम से पृथक रूप से रिपोर्ट की जाती हैं।
- हमने भारत में सामान्य रूप से स्वीकार्य लेखांकन मानकों के अनुसार अपना लेखापरीक्षा किया है। इन मानकों के तहत, हम अपने लेखापरीक्षा को इस तरह से योजनाबद्ध और क्रियान्वित करते हैं कि हमें यह उचित विश्वास हो कि वित्तीय विवरणों में कोई महत्वपूर्ण त्रुटि नहीं है। लेखापरीक्षा में वित्तीय विवरणों में दिए गए रकम और प्रकटीकरण के समर्थन में प्रमाणों की परीक्षण के आधार पर जाँच शामिल होती है। इसमें लेखांकन सिद्धांतों और महत्वपूर्ण अनुमानों का मूल्यांकन भी शामिल होता है जो प्रबंधन द्वारा किए गए हैं, और वित्तीय विवरणों की समग्र प्रस्तुति का मूल्यांकन है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखापरीक्षा हमारे राय देने के लिए एक उचित आधार प्रदान करता है।
- हमारे लेखापरीक्षा के आधार पर, हम यह रिपोर्ट करते हैं कि:
 - हमने वह सभी जानकारी और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं, जो हमारे ज्ञान और विश्वास के अनुसार हमारे लेखापरीक्षा के उद्देश्यों के लिए आवश्यक थे।
 - इस रिपोर्ट द्वारा बैलेंस शीट, आय और व्यय खाता और प्राप्ति और भुगतान खाता वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित प्रारूप में तैयार किए गए हैं।
 - हमारे अनुसार, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा सही खाते और अन्य प्रासंगिक रिकॉर्ड बनाए गए हैं, जैसा कि ऐसे खातों की हमारी परीक्षा से प्रतीत होता है
 - हम यह भी रिपोर्ट करते हैं कि:

क. बैलेंस शीट

ख. आय और व्यय खाता

1. व्यय: ₹6693.79 लाख

1.1 अन्य प्रशासनिक व्यय (अनुसूची-21): ₹1557.58 लाख

1.1.1 व्यय की अधिकता

भारतीय वन्यजीव संस्थान ने अपनी विभिन्न परियोजनाओं से अनुदान के तहत खर्चों को पूरा करने के लिए 2019-23 की अवधि के दौरान निम्नलिखित ऋण लिए थे। हालांकि, परियोजनाओं से ऋण के रूप में इन्हें दिखाने के बजाय, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने इन खर्चों को 2023-24 के वित्तीय वर्ष के दौरान ऋण लौटाते समय खर्चों के रूप में बुक किया। इससे ₹116.39 लाख की व्यय की अधिकता और ₹116.39 लाख की पूर्व अवधि व्यय की कमता उत्पन्न हुई।

(राशि रु में)							
क्र. स.	वाउचर नं/ तारीख	राशि	परियोजना से लिया गया ऋण	ऋण लिया गया	व्यय	व्यय किया गया	बुक किया गया
1	717 (08.02.2024)	7,11,613.89	खाता संख्या 55293	खाता संख्या 0001 -अनुदान	2022-23 कैंपा डॉल्फिन परियोजना	2023-24	
2	83 (05.06.2023)	20,15,625.00	-उपरोक्त-	-उपरोक्त-	2019-22	2019-22	2023-24
3	84 (05.06.2023)	23,11,354.00	खाता संख्या 55292	-उपरोक्त-	2022-23- कैंपा जीआईबी परियोजना	2023-24	
4	869 (12.03.2024)	25,00,000.00	खाता संख्या 54159-	-उपरोक्त-	2019-20 गेस्ट हाउस	2023-24	
5	870 (12.03.2024)	10,00,000.00	खाता संख्या 53911	-उपरोक्त-	2019-20 फोरेंसिक सेल	2023-24	
6	941 (26.03.2024)	31,00,000.00	खाता संख्या 59568-	-उपरोक्त-	2019-20 एमएससी कोर्स	2023-24	
कुल		116,38,592.89					

ग. प्राप्ति और भुगतान खाता

घ. लेखांकन नीतियां

ङ . सामान्य

स्थिर शेष राशियाँ

क्र.सं.	अनुसूची / शीर्षक	शेष राशि 31.03.2024 को	राशि लंबित वर्ष से
1	अनुसूची 7 – वर्तमान देनदारियां और प्राक्धान – छात्रावास जमानत राशि	22,000.00	2020–21
2	अनुसूची 11 – वर्तमान परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम – पर्यावरण दिवस के लिए ऋण (पर्यावरण मंत्रालय)	2,80,984.00	2011–12
3	अनुसूची 11 – वर्तमान परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम – टीडीएस (पेंशन कोष) के द्वारा लौटाया जाना	43,89,787.00	2017–18
4	अनुसूची 11 – चालू परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम – टीडीएस (जीपीएफ) के द्वारा लौटाया जाना	22,77,757.00	2017–18
5	अनुसूची 11 – चालू परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम – टीडीएस (निधि कोष) के द्वारा लौटाया जाना	31,76,544.00	2017–18

ये स्थिर शेष राशियाँ खातों में लम्बे समय से लंबित हैं। जैसा कि इन राशियों को जारी/वसूल किया जाना चाहिए था (जैसा कि मामला हो सकता है), संस्थान को इन्हें निपटाने के प्रयास करने चाहिए जो बिना किसी उचित कारण के लंबित रखी गई थीं। पिछली वर्षों की रिपोर्टों में भी इसी प्रकार का अवलोकन किया गया था, लेकिन कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई।

2. विविध प्राप्तियों और विविध व्ययों के रूप में भारतीय वन्यजीव संस्थान ने अपने खातों में वर्ष 2023–24 के लिए कई मदों को बुक किया है, जिन्हें उचित रूप से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए। इसके अलावा, नीचे दी गई तालिका से यह देखा जा सकता है कि विविध प्राप्तियों और विविध व्ययों के रूप में बुक की गई राशि बहुत अधिक है, इसलिए इसे संबंधित शीर्षक के तहत बुक किया जाना चाहिए।

क्रमांक	अनुसूची/शीर्षक	शीर्षक	विविध प्राप्तियाँ	विविध व्यय
1.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – पेंशन फंड	विविध प्राप्तियाँ	18,00,06,187.70	
2.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – कोर्पस फंड	विविध प्राप्तियाँ	13,39,21,129.86	
3.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – कोर्पस फंड	विविध व्यय		7,55,09,656.69
4.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – प्रशिक्षण खाता	विविध प्राप्तियाँ	6,30,000.00	
5.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – प्रशिक्षण खाता	विविध व्यय		3,46,728.00
6.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – परामर्श परियोजना	विविध व्यय		20,25,057.28
7.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – परामर्श परियोजना	विविध प्राप्ति		3,73,85,697.75
8.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – विविध प्राप्तियाँ खाता	विविध प्राप्ति		27,09,055.28
9.	प्राप्तियाँ और भुगतान खाते – विविध प्राप्तियाँ खाता	विविध व्यय		15,95,482.00
10.	अनुसूची 14	विविध प्राप्तियाँ (सहायता अनुदान)		29,000.00
11.	अनुसूची 18	विविध प्राप्तियाँ		3,83,39,055.28
12.	अनुसूची 21	विविध व्यय		15,95,689.49

कर्मचारी भविष्य निधि

प्राप्ति और भुगतान खाता (सामान्य भविष्य निधि) में, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने 2023-24 के वर्ष के लिए ₹176.85 लाख का जीपीएफ योगदान दिखाया है, हालांकि, यह पाया गया है कि इसमें ₹158.70 लाख का जीपीएफ योगदान और ₹18.15 लाख का कर्मचारी योगदान भविष्य निधि शामिल है। जीपीएफ योगदान और कर्मचारी भविष्य निधि योगदान को एक साथ जीपीएफ खाते में दिखाना उचित नहीं है। इसके अलावा, भारतीय वन्यजीव संस्थान 27 कर्मचारियों (31.03.24 तक) का कर्मचारी भविष्य निधि योगदान काट रही है, लेकिन इसे कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में जमा करने के बजाय अपने बैंक खाते में रख रही है।

च. सहायता अनुदान:

भारतीय वन्यजीव संस्थान ने ₹4510.00 लाख का सहायता अनुदान प्राप्त किया, इसके अलावा प्रारंभिक शेष ₹3.16 लाख और अन्य प्राप्तियाँ ₹425.22 लाख की थीं। कुल उपलब्ध राशि ₹4938.38 लाख में से, भारतीय वन्यजीव संस्थान ने ₹4937.59 लाख का भुगतान किया और 31 मार्च 2024 को समाप्त शेष राशि ₹0.79 लाख थी।

छ. खाते का पुनरीक्षण प्रभाव:

लेखापरीक्षा के परिणामस्वरूप खातों के पुनरीक्षण के कारण, संपत्तियों और देनदारियों की न्यूनता को ठीक किया गया और ₹2386.00 लाख [(₹19655.26 लाख (पुनरीक्षित खाता) – ₹17269.26 लाख (मूल खाता)] बढ़ गई।

- (v) उपरोक्त पैराग्राफों में हमारे टिप्पणियों के अधीन, हम रिपोर्ट करते हैं कि इस रिपोर्ट द्वारा बैलेंस शीट, आय और व्यय खाते और प्राप्ति एवं भुगतान खाता के खातों साथ मेल खाते हैं।
- (vi) हमारी राय में और हमें प्रदान की गई जानकारी और स्पष्टीकरणों के अनुसार, उक्त वित्तीय विवरण, लेखांकन नीतियों और लेखा पर टिप्पणियों के साथ पढ़े जाने पर, और महत्वपूर्ण विषयों के अधीन और इस लेखापरीक्षा रिपोर्ट के परिशिष्ट में उल्लिखित अन्य विषयों के अधीन, भारत में सामान्य रूप से स्वीकार्य लेखांकन सिद्धांतों के अनुसार सही और निष्पक्ष दृश्य देते हैं।
- क. जहां तक बैलेंस शीट का संबंध है, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून और सलीम अली पक्षी विज्ञान और प्रकृति विज्ञान केंद्र, कोयंबटूर की स्थिति का 31 मार्च 2024 तक और
- ख. जहां तक आय और व्यय खाते का संबंध है, वर्ष के लिए घाटे इस तिथि तक समाप्त हो गए हैं।

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के लिए एवं की ओर से

स्थान: नई दिल्ली

तिथि: 05.12.2024

महानिदेशक, लेखा परीक्षा, केंद्रीय व्यय
(पर्यावरण और वैज्ञानिक विभाग)

परिशिष्ट 1

1. आंतरिक लेखापरीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता

भारतीय वन्यजीव संस्थान और सेकॉन का आंतरिक लेखापरीक्षा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के आंतरिक लेखापरीक्षा विंग द्वारा किया जाता है। भारतीय वन्यजीव संस्थान का अंतिम आंतरिक लेखापरीक्षा अवधि 2021–24 के लिए किया गया था।

सेकॉन-भारतीय वन्यजीव संस्थान का अंतिम आंतरिक लेखापरीक्षा अवधि 2018–22 के लिए किया गया था और सेकॉन का आंतरिक लेखापरीक्षा अवधि 2022–2024 के लिए लंबित है।

2. आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की पर्याप्तता

भारतीय वन्यजीव संस्थान:

क. अग्रिम भुगतान से संबंधित नियमों और विनियमों का पालन नहीं होना

सामान्य वित्तीय नियम 2017 के नियम 322 के अनुसार, दैनिक आकस्मिक और आपातकालीन खर्चों को पूरा करने के लिए स्थायी अग्रिम या अग्रिम भुगतान विभाग प्रमुख द्वारा आंतरिक वित्त विंग के साथ परामर्श करके सरकारी कर्मचारी को दिया जा सकता है, जिसमें न्यूनतम राशि को सुचारू संचालन के लिए आवश्यक रखा जाए। स्थायी अग्रिम या अग्रिम भुगतान के रखरखाव के लिए प्रक्रियाएं नागरिक लेखा मैनुअल के पैरा 10.12 में उपलब्ध हैं। नागरिक लेखा मैनुअल के पैरा 10.12 के अनुसार स्थायी अग्रिम सामान्यतः उन अधिकारियों को दिया जाता है जिन्हें वेतन और लेखा कार्यालय से धन निकालने से पहले भुगतान करना होता है। भारतीय वन्यजीव संस्थान ने 2023–24 के दौरान अपने तीन कर्मचारियों (श्री महेश त्यागी ₹68.34 लाख (31.01.2024 को सेवानिवृत्त), सुश्री अनुष्का उनियाल ₹14.60 लाख और श्री महेश रावत ₹3.87 लाख) को मरम्मत और रखरखाव, छोटे सिविल कार्य आदि के लिए ₹86.81 लाख के वन अग्रिम की मंजूरी दी थी। इतने बड़े खर्च को अग्रिम भुगतान के माध्यम से करना इस संदर्भ में नियमों और विनियमों के अनुरूप नहीं है।

ख. नकद पुस्तिका में किसी भी प्रविष्टि पर कैशियर के हस्ताक्षर नहीं किए गए थे। यह पिछली वर्षों की रिपोर्टों में भी बताया गया था, हालांकि, संस्थान द्वारा कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई।

ग. स्थायी वस्तुओं पर पहचान चिह्न नहीं लगाना: उचित लेखांकन, सूचीबद्धता, भौतिक सत्यापन, स्थान, लिखना/नीलामी आदि के लिए प्रत्येक स्थायी वस्तु पर पहचान चिह्न आवश्यक है। हालांकि, यह देखा गया है कि भारतीय वन्यजीव संस्थान ने अपनी स्थायी संपत्तियों पर पहचान चिह्न नहीं लगाया है। यह पिछली वर्षों की रिपोर्टों में भी बताया गया था, हालांकि, संस्थान द्वारा कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई। इसके अलावा, कृपया स्पष्ट करें कि स्थायी संपत्तियों पर पहचान चिह्न की अनुपस्थिति में भारतीय वन्यजीव संस्थान ने इतनी बड़ी संख्या में स्थायी संपत्तियों का भौतिक सत्यापन कैसे किया।

सैकोन

नकद पुस्तिका में किसी भी प्रविष्टि पर कैशियर के हस्ताक्षर नहीं किए गए थे।

3. स्थायी संपत्तियों का भौतिक सत्यापन प्रणाली.

भारतीय वन्यजीव संस्थान

क. संस्थान की स्थायी संपत्तियों का भौतिक सत्यापन अवधि 2023–24 के लिए किया गया था।

ख. भारतीय वन्यजीव संस्थान ने सितंबर 2023 में 'हम्पबैक व्हेल परियोजना' के तहत ₹17.89 लाख के लैपटॉप और स्कैनर खरीदे। हालांकि, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा बनाए गए स्थायी संपत्ति रजिस्टर में इस संबंध में कोई प्रविष्टि नहीं मिली।

सैकोन

क. सेकॉन-भारतीय वन्यजीव संस्थान की स्थायी संपत्तियों का भौतिक सत्यापन अवधि 2022–23 के लिए किया गया था। अवधि 2023–24 के लिए भौतिक सत्यापन प्रक्रिया में है और अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

ख. सेकॉन-भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा स्थायी संपत्तियों का रजिस्टर सामान्य वित्तीय नियम निर्दिष्ट प्रारूप (फॉर्म सामान्य वित्तीय नियम – 22 खनियम 211 (ii)) में नहीं रखा गया।

4. वस्तुओं का भौतिक सत्यापन प्रणाली.

भारतीय वन्यजीव संस्थान

क. भारतीय वन्यजीव संस्थान की उपभोज्य वस्तुओं का भौतिक सत्यापन अवधि 2023–24 के लिए किया गया था।

ख. भारतीय वन्यजीव संस्थान ने फरवरी 2022 में 31 दिसंबर 2021 तक पुस्तकों का भौतिक सत्यापन किया।

सैकोन

क. सेकॉन-भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा उपभोज्य वस्तुओं का रजिस्टर फॉर्म सामान्य वित्तीय नियम 23 खनियम 211 (ii) (इ), के अनुसार नहीं रखा गया।

ख. सेकॉन-भारतीय वन्यजीव संस्थान की उपभोज्य वस्तुओं का भौतिक सत्यापन अवधि 2023–24 के लिए किया गया।

ग. सेकॉन-भारतीय वन्यजीव संस्थान की लाइब्रेरी का भौतिक सत्यापन अवधि 2023–24 के लिए किया गया।

5. सांविधिक देनदारियों के भुगतान में नियमितता

भारतीय वन्यजीव संस्थान

(i) स्रोत पर कर कटौती का आयकर प्राधिकरण से मिलान न होना

भारतीय वन्यजीव संस्थान के आयकर संबंधित दस्तावेजों से पता चला है कि मूल्यांकन वर्षों 2014-15, 2017-18 से 2019-20 के लिए आयकर प्राधिकरणों से ₹3465.42 लाख की बकाया मांग है।

(राशि ₹ में)

आकलन वर्ष	बकाया मांग राशि	ब्याज	कुल बकाया मांग	भा.व.सं. द्वारा अंतिम जवाब की तारीख
2019-20	145179240.00	220492265.00	167228505.00	17.06.2022
2018-19	4261760.00	—	4261760.00	17.06.2022
2017-18	1068800.00	—	1068800.00	17.06.2022
2014-15	86937920.00	87045505.00	173983425.00	03.07.2023
कुल	237447720.00	109094770.00	346542490.00	

ऊपर से यह देखा जा सकता है कि आयकर प्राधिकरणों के अनुसार ₹3465.42 लाख (मूल मांग ₹2374.48 लाख और ब्याज ₹1090.94 लाख) आयकर की मांग बकाया है। हालांकि, अपने वार्षिक खातों में भारतीय वन्यजीव संस्थान ने ₹117.94 लाख की राशि टीडीएस रिफंड के रूप में आयकर प्राधिकरण से प्राप्त होने योग्य दिखाया है। भारतीय वन्यजीव संस्थान को इस मामले को शीघ्र और दृढ़ता से सुलझाने की आवश्यकता है क्योंकि इस मामले में देरी से ब्याज भुगतान जो कि 31.03.2024 को ₹1090.94 लाख हो चुका है, से बचा जा सकता है। इस संबंध में की गई कार्रवाई और परिणाम की प्रतीक्षा लेखापरीक्षा में की जाएगी। इसके अलावा, यह बताया गया है कि भारतीय वन्यजीव संस्थान ने जून 2022 (तीन मामलों में) और जुलाई 2023 (एक मामले में) के बाद इस मामले का पालन नहीं किया। इसके अलावा, वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए कोई सांविधिक देनदारियां लंबित/बकाया नहीं हैं।

सैकोन

वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए कोई सांविधिक देनदारियां लंबित/बकाया नहीं हैं।



उप निदेशक (ईए)

परिशिष्ट ए

- i. भारतीय वन्यजीव संस्थानने अनुसूची 7 'चालू देनदारियां और प्रावधान' के तहत प्राप्त जमानत राशि जमा के खाते में ₹11.29 लाख दिखाया है, लाइन आइटम 'अन्य – जमानत राशि विविध प्राप्तियां', हालांकि, जमानत राशि जमा का विवरण से पता चला कि 31 मार्च 2024 तक संस्थान के पास विभिन्न एजेंसियों/फर्मों से ₹28.94 लाख की जमानत राशि / सुरक्षा जमा प्राप्त थी। इससे चालू देनदारियों की न्यूनता और नकद और बैंक शेष दोनों की अधिकता ₹17.65 लाख से हो गई।
- ii. भारतीय वन्यजीव संस्थानने अपने खातों में ₹2.69 लाख की चालू देनदारी जमानत राशि के खाते में दर्शाई है, हालांकि, जमानत राशि से संबंधित अभिलेखों से पता चला कि 2023–24 के लिए जमानत राशि का समापन शेष ₹7.21 लाख था। इससे चालू देनदारी की न्यूनता और बैंक शेष की अधिकता दोनों ₹4.52 लाख से हो गई।
- iii. भारतीय वन्यजीव संस्थानने 'भवन' लाइन आइटम पर ₹56.76 लाख की मूल्यहास राशि बुक की है जिसमें लाइन आइटम 'भवन परिसर (अनुसूची-8)' के तहत वर्ष 2023–24 के दौरान ₹4.02 लाख का व्यय शामिल है, हालांकि, सही मूल्यहास ₹54.95 लाख बनता है। इससे संपत्तियों की न्यूनता और व्यय की अधिकता दोनों ₹1.81 लाख से हो गई।
- iv. सेवा मामलों पर जारी कानूनी मामलों से संबंधित आकस्मिक देनदारी का प्रकटीकरण नहीं: भारतीय वन्यजीव संस्थान से संबंधित कानूनी मामलों से संबंधित दस्तावेजों से पता चला कि सेवा मामलों जैसे वेतन निर्धारण, सेवा का नियमितीकरण, परिणामी सेवा लाभ और वेतन निर्धारण का पुनरीक्षण सहित नौ मामले न्यायालय में लंबित हैं। हालांकि, भारतीय वन्यजीव संस्थानने इस संबंध में कोई आकस्मिक देनदारी नहीं दिखाई है।
- v. वार्षिक खाते में आयकर पंजीकरण संख्या 12AA का प्रकटीकरण नहीं:
आयकर पंजीकरण संख्या 12AA का वार्षिक खाते में प्रकटीकरण नहीं किया गया है। वित्तीय वक्तव्य के रूप में किसी भी आयकर पंजीकरण को अनुसूची 25 के तहत खाते के नोट में प्रकटीकरण करना चाहिए। आयकर प्रमाणपत्र आडिट के रिकॉर्ड की जांच के दौरान यह देखा गया कि संस्थान ने 2006 में आयकर पंजीकरण प्रमाणपत्र संख्या 12AA प्राप्त किया और 2022–23 में नवीनीकृत किया जो आकलन वर्ष 2026–2027 तक मान्य है। हालांकि, संस्थान ने उपर्युक्त पंजीकरण का अनुसूची 25 में प्रकटीकरण नहीं किया था।
- vi. सेकॉन: दो चोरी के मामलों में कैमरा ट्रैप मोल्ट्री का कुल मूल्य ₹29,500 (दो कैमरे) परियोजनाओं से शामिल था। सेकॉन ने इसकी सूचना दी थी। यह भी कहा गया है कि मामले अभी समिति द्वारा प्रक्रिया में हैं। उपरोक्त मामलों का निपटारा आडिट में प्रतीक्षित होगा।
- vii. तीन मामले लंबित हैं जिनमें विभिन्न सेवा मामलों जैसे कि मृत्यु के बाद वित्तीय लाभ, सीपीएफ और छुट्टी वेतन ग्रेच्युटी, और मासिक पेंशन से वसूली आदि शामिल हैं। हालांकि, सेकॉन ने इस संबंध में कोई आकस्मिक देयता का खुलासा नहीं किया है।
- viii. सेकॉन ने 'अनुसूची 7 वर्तमान देयताएँ और प्रावधान' के तहत 'अंशदायी भविष्य निधि' में ₹870.94 लाख की राशि दिखाई है, हालांकि सीपीएफ की अंकेक्षित रिपोर्ट में 31 मार्च 2024 तक समापन प्रगतिशील सदस्यता शेष में ₹24,955 का अंतर पाया गया। अतः इसकी पुष्टि की जानी चाहिए और आवश्यक सुधारात्मक प्रविष्टियाँ की जानी चाहिए।
- ix. सेकॉन ने अनुसूची 7-वर्तमान देयताएँ और प्रावधान में अर्नेस्ट मनी डिपॉजिट मिक्स्ड प्राप्तियाँ के तहत ₹43.84 लाख की राशि दिखाई है। हालांकि, इस राशि में विभिन्न शीर्षकों की राशि शामिल है जैसे कि अर्नेस्ट मनी डिपॉजिट, सुरक्षा जमा, प्रदर्शन सुरक्षा और सतर्कता राशि आदि। ये रिकॉर्ड केवल टैली सॉफ्टवेयर में बनाए रखे गए हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान- सेकॉन द्वारा इन आंकड़ों का कोई भौतिक रिकॉर्ड नहीं रखा गया है।

आइटम	वर्ष की शुरुआत में लागत	30 सितंबर तक जोड़	30 सितंबर के बाद जोड़	मूल्यहास दर	भा.व.सं. द्वारा चार्ज मूल्यहास	सही मूल्यहास अंतर की गणना
भवन परिसर	54752944.90	0		10%	4676312	5475294.49
			402036*	10% का आधा		2010180*
				कुल	5676312.00	5495396.29 180915.71

* '10% का आधा (30 सितंबर के बाद जोड़)

- x. भारतीय वन्यजीव संस्थान— सेकॉन ने अनुसूची 11में 'जीपीएफ खाता' के तहत ₹84.68 लाख की राशि दिखायी है, जबकि इसे 'सीपीएफ खाता' में होना चाहिए था।
- xi. भारतीय वन्यजीव संस्थान— सेकॉन ने अपने खातों में कई संक्षिप्त रूपों का उपयोग किया है, जैसे खर्चों को 'exp-', अग्रिम को 'Adv', रखरखाव को 'Maint', विविध को 'misc', वाहन बीमा को 'Veh- Ins-' और बिजली को 'Elect' आदि लिखा गया है।
- xii. सेकॉन अपने वार्षिक खातों को टैली सॉफ्टवेयर में बनाए रख रहा है और 2022-23 वित्तीय वर्ष तक सीधी रेखा पद्धति पर मूल्यहास कर रहा था। हालांकि, भा.व.सं. देहरादून के साथ विलय के बाद, सेकॉन ने 2023-24 के दौरान लिखित डाउन मूल्य पद्धति के अनुसार मूल्यहास किया। हालांकि सेकॉन ने अपने खातों में लिखित डाउन मूल्य के अनुसार मूल्यहास दिखाया है, टैली डेटा अभी भी सीधी रेखा पद्धति में मूल्यहास की गणना कर रहा है, इसे टैली सॉफ्टवेयर में ठीक करने की आवश्यकता है।
- xiii. पर्यावरण और वन मंत्रालय के निर्देश पर, भारतीय वन्यजीव संस्थान— सेकॉन ने 2022-23 में अपनी भूमि और भवन को मंत्रालय को हस्तांतरित कर दिया था। हालांकि, 2023-24 के दौरान सेकॉन ने अपने परिसर के भवनों की मरम्मत और रखरखाव पर ₹25.18 लाख का व्यय किया है। उपयोग, मरम्मत और रखरखाव आदि के संबंध में कोई कानूनी दस्तावेज जैसे समझौता ज्ञापन/अनुबंध आदि नहीं हुआ है।
- xiv. बंदोबस्ती निधि से प्राप्त स्थायी संपत्तियाँ (अनुसूची 3): संयंत्र मशीनरी और उपकरण के तहत, सेकॉन ने 2023-24 के दौरान बंदोबस्ती निधि से ₹25.65 लाख का अतिरिक्त दिखाया है (30 सितंबर से पहले ₹5.71 लाख और 30 सितंबर के बाद ₹19.94 लाख) और ₹9.73 लाख का मूल्यहास चार्ज किया है। हालांकि, सही मूल्यहास ₹10.21 लाख होना चाहिए, जैसा कि नीचे विस्तार से बताया गया है।

आइटम	वर्ष की शुरुआत में लागत	30 सितंबर तक जोड़	30 सितंबर के बाद जोड़	मूल्यहास दर	सेकॉन द्वारा चार्ज मूल्यहास	सही मूल्यहास की गणना	अंतर
संयंत्र मशीनरी और उपकरण	5241641	571165	1993901	15	973011	(52.41, 641+57, 116) का 15% = 8,71,920.90 7.5% of 19,93,901 (सितंबर के बाद खरीदे गए)= 1,49,542.58	48,452.48
						कुल = 10,21, 463.48	

- xv- विभिन्न बाहरी सहायता प्राप्त/प्रायोजित परियोजनाओं से संबंधित स्थैतिक शेष राशियाँ (अनुसूची 3—चिह्नित/बंदोबस्ती निधियों से संबंधित) लंबे समय से लंबित हैं, जैसा कि नीचे विस्तार से बताया गया है:

क्र.सं.	अनुसूची/शीर्षक	शेष राशि 31.03.2024 को	राशि लंबित वर्ष से
1	अनुसूची 11—चालू परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम (खर्च अग्रिम—शोध परियोजनाएं)	72857	2011
2	अनुसूची 11—चालू परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम (प्राप्तियां से)	84158	इसमें से 14155.00/- वर्ष 2011 से बकाया है
3.	अनुसूची 07—वर्तमान देनदारियां और प्रावधान (ईएमडी विविध प्राप्ति)	10110	2013

ये स्थैतिक शेष राशियाँ खातों में लम्बे समय से लंबित हैं। जैसा कि इन राशियों को जारी/वसूल किया जाना चाहिए था (जैसा कि मामला हो सकता है)

संस्थान को इन्हें निपटाने के प्रयास करने चाहिए जो बिना किसी उचित कारण के लंबित रखी गई थीं।

- xvi. निम्नलिखित स्थैतिक शेष राशियाँ ₹4.66 लाख की हैं जो सेकॉन द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं से संबंधित हैं और खातों में लंबे समय से लंबित हैं।

(राशि रु में)

क्र.सं.	परियोजना का नाम	विवरण	शेष राशि 31.03.2024 को	राशि लंबित वर्ष से
1	ईआईए-डायमंड हार्बर परियोजना	कार्यपालक अभियंता डायमंड हार्बर से प्राप्तियां	94968	2022
2	स्पैटियो टेम्पोरल बर्रो परियोजना	श्री एच.एन. कुमार को देय	118295	2016
3	विभिन्न परियोजनाओं से संबंधित	2010-11 और पिछले वर्षों से बैंक से प्राप्त ब्याज पर स्रोत पर कर कटौती	252721	2010
कुल			465984	

इन स्थैतिक शेष राशियों के कारण कृपया प्रदान करें, आगे, संस्थान को इन्हें निपटाने के प्रयास करने चाहिए जो बिना किसी उचित कारण के लंबित रखी गई थीं।


उप निदेशक (ईए)

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				(राशि रु में)
	योजना	गैर योजना	कुल योग	पिछले वर्ष	विवरण	योजना	गैर योजना	कुल योग	
(अ) अनुदान सहायता (सामान्य)	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में	खर्च	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में
शुरुआती शेष राशि					मानदेय	-	-	-	96,343.00
बैंक में नकद	3,16,406.67	-	3,16,406.67	802.32	छुट्टी नकदीकरण और ग्रेच्युटी	-	-	-	164,970.00
हाथ में नकद	-	-	-	-	वाहन बीमा	184,425.00	-	184,425.00	247,704.00
राजस्व अनुदान सहायता	1,40,000,000.00	-	1,40,000,000.00	-	संपदा प्रबंधन	32,056,155.00	-	32,056,155.00	31,613,349.00
बचत खाता में ब्याज	254,107.00	-	254,107.00	57,500,000.00	पीओएल, वाहन का किराया (अनुसन्धान परियोजना)	-	-	-	79,995.00
विविध प्राप्तियाँ	29,000.00	-	29,000.00	824.00	फेलोशिप और मजदूरी (अनुसन्धान परियोजना)	412,734.00	-	412,734.00	-
ऋण: विभाग/भावसं खाता संख्या 58146	-	-	-	-	आकस्मिक (अनुसन्धान परियोजना)	-	-	-	-
भूमि अधिग्रहण शुल्क-उच्च न्यायालय में जमा	-	-	-	25,000.00	यात्रा व्यय (अनुसन्धान परियोजना)	-	-	-	-
वन्यजीव संरक्षण निधि कार्यशालाएं ऋण	-	-	-	18,000,000.00	प्रयोगशाला खर्च-अनुवांशिक और वन्यजीव स्वास्थ्य	774,601.00	-	774,601.00	22,539.00
स्रोत पर कर कटौती	-	-	-	30,253.00	एमएससी व्यय	3,100,000.00	-	3,100,000.00	24,900.00
पूँजी लिए खर्च	1,015,973.00	-	1,015,973.00	616.00	बिजली और पानी शुल्क से	11,664,335.00	-	11,664,335.00	7,794,766.00
केंद्रीय लोक निर्माण विभाग को अग्रिम भुगतान	-	-	-	29,741.00	आतिथ्य/ मनोरंजन	3,208,225.00	-	3,208,225.00	437,570.00
केंद्रीय समन्वय इकाई को अग्रिम भुगतान	-	-	-	17,830,008.00	भारतीय वन्यजीव संस्थान वाहन पीओएल	339,177.00	-	339,177.00	363,376.00
वाहन बीमा लिए अग्रिम भुगतान	-	-	-	15,271,531.00	डाक और तार	-	-	-	91,206.00
लेखा अधिकारी, प्रधान लेखा परीक्षक- (ऑडिट), नई दिल्ली	299,163.00	-	299,163.00	31,574.00	वाहन की मरम्मत और रखरखाव	863,457.00	-	863,457.00	290,837.00
वस्तु और सेवा कर	818,422.00	-	818,422.00	-	खेल	85,874.00	-	85,874.00	79,030.00
चिकित्सा स्वास्थ्य बीमा - दावा	246,742.00	-	246,742.00	-	स्टेशनरी और उपभोग्य सामग्रियों पर	370,782.00	-	370,782.00	54,682.00
अचल संपत्ति की खरीद	-	-	-	-	टेलीफोन और ट्रंक कॉल	2,065,969.00	-	2,065,969.00	917,305.00
अनुसन्धान परियोजना खर्च लिए अग्रिम भुगतान	190,237.00	-	190,237.00	-	कानूनी खर्च	734,611.00	-	734,611.00	635,913.00
स्टाफ खर्च लिए अग्रिम भुगतान	7,528,125.00	-	7,528,125.00	-	परिचालन व्यय	-	-	-	4,468,487.65
स्रोत पर कर कटौती	-	-	-	-	प्रिंटिंग और बाइंडिंग	234,194.00	-	234,194.00	63,896.00
	-	-	-	-	कैपस रखरखाव	65,018.00	-	65,018.00	6,947.00
	-	-	-	-	कंप्यूटर एएमसी और उपभोग्य	2,092,224.85	-	2,092,224.85	995,331.00

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा

(राशि रु में)

प्राप्तियां				भुगतान			
विवरण	योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	विवरण	योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
भारतीय वन्यजीव संस्थान प्रकाशन/उत्पादलिए	298,412.00	298,412.00	-	सिविल कार्य का रखरखाव	6,891,618.00	6,891,618.00	508,068.00
विविध/ आकस्मिक	-	-	-	यात्रा व्यय	904,457.00	904,457.00	977,532.00
केंद्रीय सरकारी कर्मचारी समूह बीमा योजना	-	-	-	पुस्तकालय व्यय	791,537.00	791,537.00	287,560.00
				फॉरेंसिक प्रयोगशाला	1,000,000.00	1,000,000.00	-
				केंद्रीय सरकारी कर्मचारी समूह बीमा योजना	-	-	46.00
				स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग	920,046.00	920,046.00	-
				जीएसटी	807,022.00	807,022.00	1,172.00
				चिकित्सा स्वास्थ्य बीमा दावा	208,593.00	208,593.00	-
				विविध लेनदारों	4,141,041.00	4,141,041.00	15,548.00
				नए वेतन खाते (मजदूरी)	-	-	25,000.00
				लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर एएमसी	-	-	226,265.00
				वन और टूर एडवांस-जीआईए	-	-	204,000.00
				कें.तो.नि. विभाग को सिविल कार्यलिए अग्रिम रुम	18,181,290.00	18,181,290.00	4,975,303.00
				पुस्तकालय की पुस्तकों से	711,613.89	711,613.89	279,394.00
				फर्नीचर और फिक्स्चर	62,540.00	62,540.00	28,968.00
				कंप्यूटर/बाह्य उपकरण	8,431,987.00	8,431,987.00	508,221.00
				संयंत्र और मशीनरी उपकरण	4,658,018.00	4,658,018.00	7,104,729.00

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा

विवरण	प्राप्तियां		भुगतान		पिछले वर्ष राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
	योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में		
कार्यालय भवन	-	-	-	-	-	25,019,016.00
देय व्यय	-	-	-	-	-	1,495,841.00
आंतरिक ऋण	-	-	-	-	-	298,133.00
पूर्व अवधि व्यय के अनुसार	-	-	-	-	-	18,000,000.00
अन्य विशिष्ट प्रावधान	787,991.00	-	787,991.00	-	787,991.00	-
व्यय के लिए अग्रिम -स्टाफ	9,525,000.00	-	9,525,000.00	-	9,525,000.00	-
वीईएच अग्रिम बीमा प्रीमियम	84,556.00	-	84,556.00	-	84,556.00	-
ऋण डी / डब्ल्यूआईखाता संख्या 8	100,000.00	-	100,000.00	-	100,000.00	-
रिपोर्ट मुद्रण	567,309.00	-	567,309.00	-	567,309.00	-
सेकोंन को अनुदान जारी	28,900,000.00	-	28,900,000.00	-	28,900,000.00	-
वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी-एआरएस	2,110,352.00	-	2,110,352.00	-	2,110,352.00	-
भारत अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली	116,820.00	-	116,820.00	-	116,820.00	-
कार्यालय फर्नीचर और उपकरण की मरम्मत	1,262,038.00	-	1,262,038.00	-	1,262,038.00	-
विज्ञापन	195,144.00	-	195,144.00	-	195,144.00	-
विविध आकास्मिक	986,758.24	-	986,758.24	-	986,758.24	-
इंडियन स्टोर	123,426.00	-	123,426.00	-	123,426.00	-
बिजली कनेक्शन के लिए सुरक्षा जमा	243,766.00	-	243,766.00	-	243,766.00	-
बैंक में	31,882.69	-	31,882.69	-	31,882.69	316,406.67
हाथ में	-	-	-	-	-	-
ए. कुल	150,996,587.67	-150,996,587.67	150,996,587.67	-	150,996,587.67	108,720,349.32
						108,720,349.32

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा

(राशि रु में)

विवरण	प्राप्तियां			भुगतान		
	योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
(क) सहायता अनुदान (पूँजी)						
प्रारंभिक राशि	-	-	-	-	-	2,294,527.00
बैंक में नकदी	-	-	-	-	-	966,778.00
हाथ में नकदी	-	-	-	-	-	837,729.00
						1,539,332.00
				1.49	1.49	-
सहायता अनुदान (पूँजी)	25,000,000.00	25,000,000.00	2,500,000.00	24,952,258.00	24,952,258.00	-
ब्याजलिए (बचत खाता)	32,251.00	32,251.00	-	-	-	1,696,857.00
केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के लिए अग्रिम	-	-	4,829,113.00	32,250.00	32,250.00	7,890.00
निदेशक डबल्यूआई खाता सं. 01	-	-	14,000.00	-	-	-
				47,741.51	47,741.51	-
				-	-	-
ए. कुल	25,032,251.00	25,032,251.00	7,343,113.00	25,032,251.00	25,032,251.00	7,343,113.00

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				(राशि रु में)
	योजना	गैर योजना	कुल योग	पिछले वर्ष	विवरण	योजना	गैर योजना	कुल योग	
	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में		राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में	राशि रु. में
(क) सहायता अनुदान (वेतन)					वेतन से	165,739,373.00	—	165,739,373.00	175,842,941.00
प्रारंभिक राशि					वेतन(सेकॉन)	68,310,000.00	—	68,310,000.00	—
बैंक में नकदी	—	—	—	—	अवकाश यात्रा रियायत	1,043,535.00	—	1,043,535.00	2,774,942.00
हाथ में नकदी	—	—	—	—	चिकित्सा	5,205,312.00	—	5,205,312.00	7,094,889.00
	—	—	—	—	ग्रेच्युटी	32,216,263.00	—	32,216,263.00	26,912,661.00
सहायता अनुदान (वेतन)	286,000,000.00	—	286,000,000.00	246,000,000.00	मानदेय	28,500.00	—	28,500.00	53,000.00
बस शुल्क	267,882.00	—	267,882.00	97,250.00	जीपीएफ	16,128,612.00	—	16,128,612.00	—
बिजली और पानी	761,195.00	—	761,195.00	519,742.00	विविध व्यय (बैंक शुल्क)	206.00	—	206.00	538.00
यूबीआई (फ्लेक्सी) ब्याजलिए	133,058.00	—	133,058.00	—	देय वेतन से	14,916,674.00	—	14,916,674.00	12,566,177.00
आवास लाइसेंस शुल्क (एचएलएफ)लिए	700,628.00	—	700,628.00	611,864.00	राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली खर्च	14,023,561.00	—	14,023,561.00	—
ऋण निदेशक खाता सं. 4032	—	—	—	69,000,000.00	ऋण निदेशक खाता सं. 4032	—	—	—	91,021,918.00
अवकाश यात्रा रियायत अग्रिम	9,313.00	—	9,313.00	—	अवकाश यात्रा रियायत अग्रिम	75,284.00	—	75,284.00	—
सामान्य भविष्य निधि में	15,886,930.00	—	15,886,930.00	—	केंद्रीय सरकारी कर्मचारी समूह बीमा योजना	122,590.00	—	122,590.00	—
राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली	13,933,779.00	—	13,933,779.00	32,625.00	बैंक में	—	—	—	—
केंद्रीय सरकारी कर्मचारी समूह	117,125.00	—	117,125.00	5,585.00	हाथ में	—	—	—	—
बीमा योजना को									
ए. कुल	317,809,910.00	—	317,809,910.00	316,267,066.00	ए. कुल	317,809,910.00	—	317,809,910.00	316,267,066.00

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा (सामान्य भविष्य निधि)

(राशि रु में)

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				
	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	विवरण	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
प्रारंभिक राशि (बैंक)	5,443,480.00	-	5,443,480.00	5,766,203.00	अंतिम भुगतान	34,047,942.00	-	34,047,942.00	32,608,039.00
ऑटो स्वीप में निवेश करना	3,000,000.00	-	3,000,000.00	3,500,000.00	अग्रिम/निकासी	7,830,000.00	-	7,830,000.00	21,176,524.00
सामान्य भविष्य निधि अंशदान	17,684,966.00	-	17,684,966.00	19,795,292.00	एफडीआर निवेश	60,000,000.00	-	60,000,000.00	-
एफडीआर/नकदीकरण	75,487,628.00	-	75,487,628.00	26,499,586.00	ऑटो स्वीप निवेश	-	-	-	3,500,000.00
बचत खाते पर ब्याज	237,520.00	-	237,520.00	213,888.00	विविध व्यय	1.19	-	1.19	-
एफडीआर पर ब्याज	1,194,330.00	-	1,194,330.00	1,997,548.00					
उपचित ब्याज	-	-	-	4,955,526.00					
बी कुल	103,047,924.00	103,047,924.00	103,047,924.00	62,728,043.00	अंतिम शेष (बैंक)	1,169,980.81	1,169,980.81	1,169,980.81	5,443,480.00
					एफ कुल	103,047,924.00	103,047,924.00	103,047,924.00	62,728,043.00

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा (पेंशन निधि)

(राशि रु में)

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				
	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	विवरण	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
प्रारंभिक राशि	18,111,801.28	-	18,111,801.28	6,188,212.00	एफडीआर में निवेश	120,000,000.00	-	120,000,000.00	533,050,647.00
बैंक में नकद राशि	13,599,227.00	-	13,599,227.00	202,816,939.00	पेंशनरूपान्तरित मूल्य	17,530,327.00	-	17,530,327.00	19,316,170.00
एफडीआर नकदीकरण	597,083.00	-	597,083.00	2,647,434.00	पेंशन/पारिवारिक पेंशन	59,543,617.00	-	59,543,617.00	46,006,388.00
भारतीय वन्यजीव संस्थान योगदान	-	-	-	289,854,992.00	ऑटो स्वीप एफडी	-	-	-	-
एफडीआर पर ब्याज	309,942.00	-	309,942.00	5,267,214.00	विविध व्यय	5.92	-	5.92	-
ऑटो स्वीप एफडी	-	-	-	-	बैंक में नकदी	15,550,291.06	-	15,550,291.06	18,111,801.28
विविध प्राप्ति	180,006,187.70	-	180,006,187.70	109,710,215.28					
सी कुल	212,624,240.98	212,624,240.98	212,624,240.98	616,485,006.28	डी कुल	212,624,240.98	212,624,240.98	212,624,240.98	616,485,006.28

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा (प्रशिक्षण खाता)

(राशि रु में)

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				
	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	विवरण खर्च	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
प्रारंभिक राशि	8,208,499.94	-	8,208,499.94	20,628,667.85	कार्यालय उपकरण	19,774.00	-	19,774.00	24,780.00
प्राप्त अनुदान	-	-	-	-	आकस्मिक / विविध	346,728.00	-	346,728.00	559,854.00
प्राप्त ब्याज	129,860.00	-	129,860.00	441,130.00	कैपिंग गियर	-	-	-	-
अन्य प्राप्तियां	-	-	-	-	यात्रा व्यय	5,055,043.00	-	5,055,043.00	12,933,194.91
एडवोकेट व्यय	53,078.00	-	53,078.00	-	टीए/डीए और मानदेय	339,864.00	-	339,864.00	237,500.00
विविध प्राप्तियां	630,000.00	-	630,000.00	3,000,000.00	पीओएल और वाहन	203,092.00	-	203,092.00	634,889.00
ऋण डी/भा.व.सं.-54272-	-	-	-	-	बोर्डिंग और लॉजिंग	2,085,075.00	-	2,085,075.00	8,830,605.00
प्रोपेड वाहन बीमा	-	-	-	-	पुस्तकों और लेखन सामग्री	32,385.00	-	32,385.00	500,008.00
अर्जित लेकिन प्राप्त नहीं हुई प्रशिक्षण लागत	-	-	-	-	वेतन और मजदूरी	-	-	-	-
पाठ्यक्रम शुल्क	387,200.00	-	387,200.00	13,355,000.00	अन्य अग्रिम	2,667,514.00	-	2,667,514.00	223,941.00
अन्य अग्रिम	3,234,001.00	-	3,234,001.00	147,632.00	कॉर्पास फंड	-	-	-	2,863,820.00
					वाहन रखरखाव	-	-	-	-
					खेल मद	8,625.00	-	8,625.00	27,591.00
					व्यय के लिए अग्रिम	-	-	-	755,002.00
					जनशक्ति व्यय	318,404.00	-	318,404.00	-
					ट्यूशन शुल्क	1,225,000.00	-	1,225,000.00	-
					फर्नीचर और फिक्स्चर	-	-	-	-
					फील्ड सहायता	20,001.48	-	20,001.48	134,550.00
					ट्यूशन फीस	-	-	-	1,148,000.00
					प्रशिक्षण सामग्री और भत्ता	276,300.00	-	276,300.00	488,195.00
					बैंक में अंतिम राशि	44,833.46	-	44,833.46	8,208,499.94
ई कुल	12,642,638.94	-	12,642,638.94	37,570,429.85	सी कुल	12,642,638.94	-	12,642,638.94	37,570,429.85

(राशि रु में)

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा (विविध प्राप्तियां खाता सं. 518502010058146)

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				
	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	विवरण	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
प्रारंभिक राशि	34,143,857.07	-	34,143,857.07	31,553,284.57	आकस्मिक / विविध खर्चों	1,595,482.00	-	1,595,482.00	18,113.00
सुरक्षा राशि	410,000.00	-	410,000.00	867,000.00	ईएमडी	1,540,000.00	-	1,540,000.00	596,000.00
विविध प्राप्तियां	2,709,055.28	-	2,709,055.28	1,153,310.50	सुरक्षा राशि	484,000.00	-	484,000.00	546,000.00
बचत खाते पर ब्याज	1,353,031.00	-	1,353,031.00	932,170.00	आतिथ्य और मनोरंजन	-	-	-	16,020.00
प्रवेश शुल्क	114,000.00	-	114,000.00	537,000.00	भूमि	-	-	-	645,575.00
ईएमडी को	2,394,400.00	-	2,394,400.00	870,800.00	एफडीआर	20,000,000.00	-	20,000,000.00	-
प्रशिक्षुता शुल्क	-	-	-	52,000.00	एलसीजीएस लाइफ साइंस एलएलपी (अग्रिम)	9,439,769.00	-	9,439,769.00	-
एनजीएस अनुदान	35,000,000.00	-	35,000,000.00	-	बैंक खाता सं. 58146	43,065,092.35	-	43,065,092.35	34,143,857.07
	76,124,343.35	76,124,343.35	76,124,343.35	35,965,565.07	अंतिम शेष	76,124,343.35	76,124,343.35	76,124,343.35	35,965,565.07

(राशि रु में)

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्तियां और भुगतान लेखा (ग्रेच्युटी खाता संख्या का भारतीय वन्यजीव संस्थान अंशदान 518502010055326)

विवरण	प्राप्तियां				भुगतान				
	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में	विवरण	योजना राशि रु. में	गैर योजना राशि रु. में	कुल योग राशि रु. में	पिछले वर्ष राशि रु. में
प्रारंभिक स्प्रारंभिक राशि	7,013,981.31	-	7,013,981.31	5,659,599.47	विविध व्यय	17.12	-	17.12	70.16
भा.व.सं परियोजना अधिकारियों का योगदान	2,847,023.00	-	2,847,023.00	1,178,340.00	अंतिम भुगतान	1,800,154.00	-	1,800,154.00	-
बचत खाते पर ब्याज	318,892.00	-	318,892.00	176,112.00	एफडीआर में निवेश	21,000,000.00	-	21,000,000.00	-
एफडीआर नकदीकरण	16,993,074.00	-	16,993,074.00	-		-	-	-	-
	-	-	-	-		-	-	-	-
	-	-	-	-	बैंक खाता सं. 58146	4,372,799.19	-	4,372,799.19	7,013,981.31
	27,172,970.31	27,172,970.31	27,172,970.31	7,014,051.47	अंतिम शेष	27,172,970.31	27,172,970.31	27,172,970.31	7,014,051.47

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
31 मार्च 2024 को भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून तुलन पत्र**

कॉर्पस/पूंजी निधि और देयताएं	अनुसूची	चालू वर्ष	राशि रुपए में
			पिछले वर्ष
कॉर्पस / पूंजी निधि	1	(1,278,309,026)	(1,108,994,358)
आरक्षित और अधिशेष	2	43,050,626	61,320,913
बंदोबस्ती/निर्धारित निधि	3	506,025,965	1,022,459,359
प्राप्त ऋण और उधार	4	—	—
अप्रतिभूत ऋण और उधार	5	—	—
आस्थगित ऋण देयताएं	6	389,579	2,413
चालू देयताएं और प्रावधान	7	2,694,368,713	2,322,585,362
कुल (क)		1,965,525,857	2,297,373,689
परिसंपत्तियां			
अचल आस्तियां	8	242,132,236	257,285,465
निवेश- निर्धारित/ बंदोबस्ती निधि से	9	3,131,016	2,900,000
निवेश-अन्य	10	955,837,043	857,377,024
वर्तमान परिसंपत्तियां, ऋण, अग्रिम आदि।	11	764,425,562	1,179,811,200
विविध व्यय (जितना न लिखा गया हो या समायोजित न हुआ हो)			
कुल (ख)		1,965,525,857	2,297,373,689
महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियां	23	—	—
आकस्मिक देयताएं और खातों पर टिप्पणियां	25	—	—

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ**

अनुसूची 1: कॉर्पस/पूंजी निधि	चालू वर्ष	राशि रुपए में
		पिछले वर्ष
वर्ष की शुरुआत में शेष	1,272,576,298.36	197,276,138.57
जोड़ा: कॉर्पस/पूंजी निधि में योगदान	—	31,553,284.57
जोड़ा: कॉर्पस/पूंजी निधि में योगदान	18,909,382.89	35,795,043.00
जोड़ा: सेकॉन संबंधित विलय रिजर्व		
जोड़ा/(कटौती): हस्तांतरित शुद्ध आय (व्यय) की शेष राशि	190,823,915.16	1,555,794,067.50
आय और व्यय खाता		
कुलक	— 1,444,490,830.63	—1,291,169,601.36
कार्पोरेट निधि		
ओपनिंग बैलेंस	182,175,243.51	434,156,900.31
जोड़ा: वर्ष के दौरान प्राप्त	63,779,419.21	35,325,355.00
जोड़ा: उपचित ब्याज	—	442,264.00
अर्जित ब्याज जोड़ा	6,167,543.00	7,305,895.20
इंट. एफडीआर पर	25,459,600.00	8,240,023.00
घटा: पेंशन (बीमांकिक मूल्यांकन रिपोर्ट 2023)	—	—
घटारू पेंशन निधि का भुगतान	—111,400,000.00	—303,295,194.00
कुल योगख.	166,181,805.72	182,175,243.51
कुल क+ख (वर्ष के अंत में शेष)	—1,278,309,024.91	—1,108,994,357.85

वित्तीय विवरणों के खाते का लेखों (गैर-लाभकारी संगठन)
 भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए तुलना पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 2: भंडार और अधिशेष	राशि रुपए में	
	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
1- पूंजी भंडार:		
पिछले खाते के अनुसार	33,221,080.00	32,898,064.00
वर्षके दौरान वृद्धि	—	—
कमरू वर्ष के दौरान कटौती	—	—
2- पुनर्मूल्यांकन भंडार:		
पिछले खाते के अनुसार	—	—
वर्ष के दौरान वृद्धि	—	—
कम: वर्ष के दौरान कटौती	—	—
3- विशेष भंडार:		
पिछले खाते के अनुसार	—	—
वर्ष के दौरान वृद्धि	—	—
कमरू वर्ष के दौरान कटौती	—	—
4- सामान्य भंडार:		
पिछले खाते के अनुसार	9,829,546.00	28,422,849.00
वर्ष के दौरान वृद्धि	—	—
कम: वर्ष के दौरान कटौती	—	—
कुल	43,050,626.00	61,320,913.00



(एन.एस. चौहान)
वित्त अधिकारी



(वीरेन्द्र आर. तिवारी)
निदेशक

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
 भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलना पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

	चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
अनुसूची 3: निर्धारित/बंदोबस्ती निधि		
क) निधि की प्रारंभिक राशी	1,019,572,009.00	780,083,511.71
परियोजना निधियों की प्रारंभिक राशि		
ख) राशी में बढ़ोत्तरी		
i- प्राप्त अनुदान	660,522,116.24	1,010,161,895.34
ii- प्राप्त ब्याज	23,880,978.50	31,459,026.59
iii- अन्य व्यय	101,607,249.30	36,598,032.47
iv- ऋण	42,263,573.00	7,367,473.00
v- अन्य आय	116,032,495.11	127,358,445.04
vi एफडीआर का नकदीकरण	2,900,000.00	31,522,260.00
कुल योग	947,206,412.15	1,244,467,132.44
कुल (क+ख)	1,966,778,421.15	2,026,784,859.68
निधियों का उद्देश्यों के लिए उपयोग/व्यय		
ग) पूंजीगत व्यय (अचल संपत्ति)	181,307,456.33	
कैप/फील्ड उपकरण कार्यालय उपकरण कंप्यूटर और सहायक उपकरण	57,165,838.09	56,842,188.77
फर्नीचर और फिक्सचर पोर्ट	6,974,734.00	21,748,593.00
केबिन	843,647.00	1,875,751.00
भवन	3,122,305.00	463,538.00
ii राजस्व व्यय	61,615,711.00	—
आकस्मिकताएं	163,976,663.44	76,088,572.82
अध्येतावृत्ति विविध और मजदूरी	294,024,992.40	286,890,704.00
यात्रा व्यय	83,819,320.71	67,406,546.46
पीओएल और वाहन व्यय	21,239,546.00	22,385,606.25
अग्रिम का रखरखाव	17,341,615.00	36,351,372.30
बोर्डिंग और लॉजिंग	25,736,243.08	10,830,794.00
विविध प्राप्ति – भुगतान (पिछला वर्ष)	219,301,650.19	109,535,378.37
रिपोर्ट लेखन कोष	—	169,270.00
कॉपर्स फण्ड	83,201,810.28	79,740,929.34
टीए/डीए और मानदेय प्रशिक्षण	2,915,107.00	2,308,528.00
पाठ्यक्रम सामग्री	6,326,909.94	614,740.00
निदेशक भा.व.सं. को ऋण अन्य परियोजना	34,615,819.00	21,648,000.00
अव्ययित राशि की वापसी	7,306,895.00	14,322,363.65

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 3: निर्धारित निधि	राशि रूप में	
	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
अन्य फर्म के लिए अग्रिम	10,928,829.00	62,416,047.87
स्थापना व्यय	21,447,981.00	30,302,700.00
परिचालन व्यय	151,753,507.28	98,829,063.20
मुद्रण और प्रकाशन	5,785,875.22	3,554,814.00
कुल सी	1,460,752,455.96	1,004,325,501.03
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी-सी)	506,025,965.19	1,022,459,358.65

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 4: अप्राप्त ऋण और उधार	राशि रूप में	
	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
(1) केन्द्रीय सरकार	—	—
(2) राज्य सरकार (निर्दिष्ट करें)	—	—
(3) वित्तीय संस्थान	—	—
(4) बैंक	—	—
(i) सावधि ऋण	—	—
(ii) अन्य (निर्दिष्ट करें)	—	—
(5) अन्य संस्थान और एजेंसियां	—	—
(6) डिबेंचर और बांड	—	—
(7) सावधि जमा	—	—
	—	—
	—	—
(8) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
कुल	—	—

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 6: अप्राप्त ऋण और उधार	राशि रूप में	
	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
(क) पूंजीगत उपकरण और अन्य संपत्तियों द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ		
(ख) अन्य	389,579.00	2,413.00
कुल	389,579.00	2,413.00

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलना पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ**

अनुसूची 7: वर्तमान देयताएं और प्रावधान		चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
(क) चालू देयताएं			
(1) स्वीकृतियाँ		—	—
(2) विविध लेनदार			
(1) माल के लिए		—	—
(2) अन्य के लिए			
अन्य बकाया भुगतान (सहायता अनुदान) (2022-23)		—	3,847,518.00
अन्य बकाया भुगतान(सहायता अनुदान में) (2023-24)		5,594,600.00	—
(3) अग्रिम			
छात्रावास की जमानत राशि (जीआईए खाता 22000-विविध खाता 74000)		269,000.00	343,000.00
ब्याज सहित सुरक्षा राशि की वापसी (उच्च न्यायालय)		19,648,610.00	19,648,610.00
ईएमडी विविध प्राप्तियाँ खाता संख्या 58146		1,129,200.00	274,800.00
(4) अर्जित ब्याज लेकिन देय नहीं			
(1) प्राप्त ऋण/उधार		—	—
(2) अप्रतिभूत ऋण/उधार		—	—
(5) सांविधिक देयताएं			
(1) अतिदेय		—	—
(2) अन्य (विनिर्दिष्ट करें)			
पेंशन निधि		684,470,687.06	—
सामान्य भविष्य निधि		118,581,660.81	536,581,361.28
डब्ल्यूआई-ग्रेच्युटी टियर-1 (राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली) का योगदान		25,372,799.19	134,505,722.00
सीपीएफ निधि		89,782.00	76,100,066.43
(6) अन्य (निर्दिष्ट)		4,384,175.00	5,665,430.00
ईएमडी विविध प्राप्ति ऋण:- डी/भा.व.सं. खाता सं. 57945 कल्याण निधि		46,625.00	46,625.00
कुल (क)		946,501,377.19	796,127,114.02

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलना पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 7: वर्तमान देयताएं और प्रावधान	चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
(ख) प्रावधान	—	—
(1) कराधान	—	—
टीडीएस- सहायता अनुदान	—	616.00
जीएसटी-सहायता अनुदान	11,400.00	11,688.00
(2) उपदान	—	—
(3) अधिवर्षिता/पेंशन	—	—
(4) संचित अवकाश नकदीकरण	—	—
(ए) सेवानिवृत्ति लाभ (रूपांतरण, ग्रेच्युटी)	82,224,396.00	81,105,573.00
(बी) लाभान्वित सेवानिवृत्ति (अवकाश नकदीकरण)	79,794,166.00	81,745,008.00
(सी) लाभान्वित सेवानिवृत्ति (पेंशन)	1,563,970,839.00	1,342,668,118.00
(5) व्यापार वारंटी/दावे	—	—
(6) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
जीपीएफ, पेंशन और कॉर्पसलिए टीडीएस रिफंड का भुगतान	—	—
केंद्रीय सरकारी कर्मचारी समूह बीमा योजना	74.00	5,539.00
जीपीएफ-सीडीएल	238,782.00	2,900.00
घटारु ईसीपीएफ	—	—
वेतन	21,664,062.00	19,829,423.00
अन्य देय	265,173.00	1,089,385.00
चिकित्सा स्वास्थ्य बीमा दावा-जीआईए	38,149.00	—
ईएनविस के तहत देय जीएसटी टीडीएस	137,859.00	—
फेलोशिप (बकाया)	—	—
कुल (ख)	1,747,867,336.00	1,526,458,250.00
कुल (ए. बी)	2,694,368,713.19	2,322,585,364.02



(एन.एस. चौहान)
वित्त अधिकारी



(वीरेन्द्र आर. तिवारी)
निदेशक

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां
अनुसूची 8: अचल परिसंपत्तियां

विवरण	निवल ब्लॉक				मूल्य ह्रास				रु. राशि में		
	वर्ष की शुरुआत में	30 सितंबर तक	30 सितंबर बाद	वर्ष के अंत में लागत	वर्ष की शुरुआत में	वर्ष के लिए	वर्ष 2023-24 दौरान कटौती	साल अंत में		जैसा की चालू वर्ष में	पिछले वर्ष अंत तक
भूमि											
ब्लॉक: 0%											
भूमि	16,252,789.58	—	—	16,252,789.58	—	—	—	—	16,252,789.58	16,252,789.58	
कुल	16,252,789.58	—	—	16,252,789.58	—	—	—	—	16,252,789.58	16,252,789.58	
भवन											
ब्लॉक: 10%											
मेहराब एसपीआरसीएस शुल्क	980,719.41	—	—	980,719.41	230,046.00	0.10	98,072.00	—	98,072.00	882,647.41	
सभागार	1,468,598.47	—	—	1,468,598.47	344,486.00	0.10	146,860.00	—	146,860.00	1,321,738.47	
सीमा बाड़	89,497.23	—	—	89,497.23	20,993.00	0.10	8,950.00	—	8,950.00	80,547.23	
चारदीवारी	158,242.79	—	—	158,242.79	37,118.00	0.10	15,824.00	—	15,824.00	142,418.79	
चारदीवारी पूंजीगत	3,873,843.00	—	—	3,873,843.00	763,886.00	0.10	387,384.00	—	387,384.00	3,486,459.00	
भवन परिसर	54,752,944.86	—	402,036.00	55,154,980.86	16,105,369.00	0.10	5,676,312.00	—	5,676,312.00	49,478,668.86	
परिसर का विकास	38,010,343.70	—	—	38,010,343.70	9,156,350.00	0.10	3,801,034.00	—	3,801,034.00	34,209,309.70	
परिसर में पूंजी का विकास	1,612,014.00	—	—	1,612,014.00	84,843.00	0.10	161,201.00	—	161,201.00	1,450,813.00	
टोनिंस कोर्ट	58,084.51	—	—	58,084.51	13,625.00	0.10	5,808.00	—	5,808.00	52,276.51	
खेल परिसर	80,198.46	—	—	80,198.46	18,812.00	0.10	8,020.00	—	8,020.00	72,178.46	
सड़क और पुलिया	1,427,735.48	—	—	1,427,735.48	797,897.00	0.10	142,774.00	—	142,774.00	1,284,961.48	
कुल	102,512,221.91	—	402,036.00	102,914,257.91	27,573,425.00	—	10,452,239.00	—	10,452,239.00	92,462,018.91	102,512,221.91
ब्लॉक: 5%											
स्टाफ क्वार्टर	5,339,769.71	—	—	5,339,769.71	796,172.00	0.05	266,988.00	—	266,988.00	5,072,781.71	5,339,769.71
कुल	5,339,769.71	—	—	5,339,769.71	796,172.00	—	266,988.00	—	266,988.00	5,072,781.71	5,339,769.71

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां
अनुसूची 8: अवल परिसंपत्तियां

रु. राशि में

विवरण	निवल ब्लॉक				मूल्य हास				नेट ब्लॉक	
	वर्ष की शुरुआत में	30 सितम्बर तक	30 सितम्बर बाद	वर्ष के अंत में लागत	वर्ष की शुरुआत में	वर्ष के लिए	वर्ष 2023-24 दौरान कटौती	साल अंत में	जैसा की चालू वर्ष में	पिछले वर्ष अंत तक
ब्लॉकरू 15:										
गाड़ियाँ	5,291,850.10	-	-	5,291,850.10	5,983,435.00	0.15	793,777.00	-	4,498,073.10	5,291,850.10
विजली उपकरण	3,230,003.00	-	107,876.00	3,337,879.00	3,228,832.00	0.15	492,591.00	-	2,845,288.00	3,230,003.00
फॉरेंसिक प्रयोगशाला	8,274,538.66	-	1,216,870.00	9,491,408.66	3,174,754.00	0.15	1,332,446.00	-	8,158,962.66	8,274,538.66
प्रशिक्षण उपकरण	710,769.80	-	-	710,769.80	272,995.00	0.15	106,615.00	-	604,154.80	710,769.80
कंप उपकरण (परियोजना)	53,786.80	-	-	53,786.80	20,659.00	0.15	8,068.00	-	45,718.80	53,786.80
डीजी सेट	4,656,098.39	-	-	4,656,098.39	3,295,861.00	0.15	698,415.00	-	3,957,683.39	4,656,098.39
ईपी एबी एक्स	23,219.86	-	221,000.00	244,219.86	8,919.00	0.15	20,058.00	-	224,161.86	23,219.86
प्रयोगशाला उपकरण	1,201,242.98	-	878,168.00	2,079,410.98	461,377.00	0.15	246,049.00	-	1,833,361.98	1,201,242.98
कार्यालय उपकरण	88,894,457.07	167,850.00	5,395,046.00	94,457,353.07	47,612,064.00	0.15	13,763,975.00	-	80,693,378.07	88,894,457.07
टीआरजी उपकरण (टीआरजी खाता)	702,236.01	-	-	702,236.01	289,717.00	0.15	105,335.00	-	596,901.01	702,236.01
कार्यालय उपकरण	1,281,229.99	19,774.00	-	1,301,003.99	485,154.00	0.15	195,151.00	-	1,105,852.99	1,281,229.99
कार्यालय उपकरण (परियोजना)	2,626.97	323,016.00	-	325,642.97	1,008.00	0.15	48,846.00	-	276,796.97	2,626.97
कार्यालय उपकरण (आरप्रोज)	1,554,567.62	-	-	1,554,567.62	597,082.00	0.15	233,185.00	-	1,321,382.62	1,554,567.62
गैस अग्नि दमन										
प्रणाली	2,819,290.00	-	-	2,819,290.00	1,542,180.00	0.15	422,894.00	-	2,396,396.00	2,819,290.00
कंप उपकरण (आरप्रोज)	3,008,253.85	-	-	3,008,253.85	1,155,419.00	0.15	451,238.00	-	2,557,015.85	3,008,253.85
कुल	121,704,171.10	510,640.00	7,818,960.00	130,033,771.10	68,109,456.00		18,918,643.00		111,115,128.10	121,704,171.10

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां
अनुसूची 8: अचल परिसंपत्तियां

विवरण	निवल ब्लॉक				मूल्य ह्रास				नेट ब्लॉक	
	वर्ष की शुरुआत में	30 सितम्बर तक	30 सितम्बर बाद	वर्ष के अंत में लागत	वर्ष की शुरुआत में	वर्ष के लिए	वर्ष 2023-24 दौरान कटौती	साल अंत में		जैसा की चालू वर्ष में
एसी प्लॉट: ब्लॉक: 10%										
एसी प्लॉट	295,183.46	—	—	295,183.46	69,240.00	0.10	29,518.00	29,518.00	265,665.46	295,183.46
कुल	295,183.46	—	—	295,183.46	69,240.00	—	29,518.00	29,518.00	265,665.46	295,183.46
फर्नीचर, फिक्स्चर: ब्लॉक: 10%										
फर्नीचर और फिक्स्चर-जीआईए	6,869,561.73	—	129,740.00	6,999,301.73	6,092,373.00	0.10	693,443.00	—	6,305,858.73	6,869,561.73
फर्नीचर और फिक्स्चर—										
पूजी खाता	393,043.00	—	—	393,043.00	92,195.00	0.10	39,304.00	—	353,739.00	393,043.00
फर्नीचर और फिक्स्चर (टीआरजी)	220,377.59	—	—	220,377.59	50,638.00	0.10	22,038.00	—	198,339.59	220,377.59
कुल	7,482,982.32	—	129,740.00	7,612,722.32	6,235,206.00	—	754,785.00	—	6,857,937.32	7,482,982.32
कंप्यूटर/बाह्य उपकरण: ब्लॉक: 40%										
कंप्यूटर और अन्य	458,588.73	757,499.00	8,402,817.00	9,618,904.73	10,341,367.00	0.40	2,166,999.00	—	7,451,905.73	458,588.73
कंप्यूटर और सहायक उपकरण	1,633,693.71	—	—	1,633,693.71	2,392,174.00	0.40	653,477.00	—	980,216.71	1,633,693.71
ई-शासन	49.42	—	—	49.42	2,014,141.00	0.40	20.00	—	29.42	48.42
कुल	2,092,331.86	757,499.00	8,402,817.00	11,252,647.86	14,747,682.00	—	2,820,496.00	—	8,432,151.86	2,092,330.86
पुस्तकें: ब्लॉक: 40%										
पत्रिकाएं और पत्रिकाएं	774,153.26	—	—	774,153.26	1,376,273.00	0.40	309,661.00	—	464,492.26	774,153.26
लाइब्रेरी बुक— ब्लॉक: 40%										
पुस्तकालय पुस्तकें	831,863.19	—	887,690.89	1,719,554.08	16,208,955.00	0.40	510,283.00	—	1,209,271.08	831,863.19
कुल	1,606,016.45	—	887,690.89	2,493,707.34	17,585,228.00	0.80	819,944.00	—	1,673,763.34	1,606,016.45
कुल योग	257,285,466.38	1,268,139.00	17,641,243.89	276,194,849.27	135,116,409.00	—	34,062,613.00	—	242,132,236.29	257,285,465.38

रु. राशि में

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 9: निर्धारित/बंदोबस्ती निधि से निवेश	चालू वर्ष	राशि रुपए में
		पिछले वर्ष
(1) सरकारी प्रतिभूति	—	—
(2) अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियाँ	—	—
(3) शेयर	—	—
(4) डिबेंचर और बांड	—	—
(5) सहायक और संयुक्त उद्यम	—	—
(6) अन्य (विनिर्दिष्ट) सावधि जमा – छात्रावास	3,131,016.00	2,900,000.00
कुल	3,131,016.00	2,900,000.00

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ

अनुसूची 10: निवेश – अन्य	चालू वर्ष	राशि रुपए में
		पिछले वर्ष
(1) सरकारी प्रतिभूति	—	—
(2) अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियाँ	—	—
(3) शेयर	—	—
(4) डिबेंचर और बांड	—	—
आरबीआई बॉन्ड (कॉर्पस फंड) में निवेश	—	42,000,000.00
(5) सहायक और संयुक्त उद्यम	—	—
(6) अन्य (निर्दिष्ट)		
एफडीआर (जीपीएफ) में निवेश	107,796,857.00	118,328,959.00
एफडीआर (सीपीएफ) में निवेश—सैकोन	72,881,333.00	59,995,388.00
ऑटो स्वीप एफडीआर—जीपीएफ	500,000.00	3,500,000.00
एफडीआर (पेंशन फंड) में निवेश	620,480,546.00	510,119,655.00
एफडीआर कॉर्पस फंड	107,602,000.00	104,779,299.00
एफडीआर (डब्ल्यूआई—ग्रेच्युटी का योगदान)	21,000,000.00	12,100,000.00
विविध प्राप्तियाँ एफडीआर	25,576,307.00	6,553,723.00
कुल	955,837,043.00	857,377,024.00

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए तुलना पत्र का हिस्सा बनने वाले अनुसूचियाँ**

	चा लू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
अनुसूची 11: वर्तमान संपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि		
(क) वर्तमान सम्पत्ति		
(1) इन्वेंट्री		
अंतिम शेष (सहायता अनुदान)	349,922.63	16,464.56
भारतीय वन्यजीव संस्थान प्रकाशन का अंतिम शेष	—	298,412.00
(2) विविध देनदार	—	—
(1) छह महीने से अधिक की अवधि के बकाया ऋण	29,851.00	—
(2) अन्य (निर्दिष्ट) – डॉ. टी. रमेश को बकाया अग्रिम		
(3) हाथ में नकद शेष (चेक/ड्राफ्ट और अग्रिम सहित)		
अनुदान सहायता खाता	—	—
प्रशिक्षण खाता	—	—
पेंशन निधि खाता	—	—
सामान्य भविष्य निधि खाता	—	—
कार्पोरेट निधि	—	—
(4) बैंक शेष		
(1) अनुसूचित बैंकों के पास	47,741.51	2,393,606.88
पूंजी खाता अनुदान	112,822.93	8,208,499.94
सहायता खाता	44,833.46	18,111,801.28
प्रशिक्षण खाता	15,550,291.06	16,723,056.43
पेंशन निधि खाता	1,169,980.81	27,850,627.51
सामान्य भविष्य निधि खाता	8,468,178.13	—
जीपीएफ खाता-सैकॉन कॉर्पस फंड नंबर 4032	52,545,287.72	27,850,627.51
बंदोबस्ती फंड	503,002,956.84	1,019,559,358.65
डब्ल्यू II- ग्रेच्युटी खाता संख्या का योगदान 518502010055326	4,372,799.19	7,013,981.31
विविध प्राप्तियाँ खाता संख्या 518502010058146	43,324,703.02	34,522,851.13
कुल (क)	629,019,368.30	1,134,698,659.69
(बी) ऋण, अग्रिम और अन्य संपत्तियां		
(1) ऋण		
(1) स्टाफ को व्यय के लिए अग्रिम	315,296.00	235,434.00
व्यय के लिए अग्रिम (अनुसंधान परियोजनाएं)	72,857.00	256,570.00
अवकाश यात्रा रियायत अग्रिम (वेतन)	75,284.00	—
आईआईटी कानपुर के लिए व्यय के लिए अग्रिम (प्रशिक्षणखाता)	2,000.00	880,000.00
वाहन बीमा के लिए पूंजी खाता अग्रिम	—	1,239,000.00
(2) समान गतिविधियों/उद्देश्यों में लगी अन्य संस्थाएं	920,046.00	—
(3) अन्य (निर्दिष्ट)	84,556.00	74,091.00
केंद्रीय लोक निर्माणविभाग को सिविल कार्य के लिए अग्रिम	19,730,110.00	—
सैकॉन कॉन्फ्रेंस खाते में ऋण	4,975,303.00	—
विश्व पर्यावरण दिवस (एमओईएफ) लिए ऋण	200,000.00	—
सीसीयू और अन्य को अग्रिम भुगतान	280,984.00	280,984.00

ऋण:- डी/भा.व.सं. खाता सं. 54189	940,000.00	—
ऋण:- डी/डब्ल्यूआईखाता सं. 58146	—	—
ऋण:- डी/भारतीय वन्यजीव संस्थानए/सी नं. 08	1,318,436.00	1,318,436.00
इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली	100,000.00	—
द इंडियन स्टोर, देहरादून	116,820.00	—
एलसीजीएस लाइफ साइंस एलएलपी (अग्रिम) अग्रिम भुगतान-प्रशिक्षण खाता	123,426.00	—
सीड-II सीसीयू एफआरआई	9,439,769.00	—
सीड-II सीसीयू, नई दिल्ली	—	563,089.00
पूर्ववर्ती इंजीनियर सिविल- II केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, देहरादून	24,952,258.00	—
	47,083.00	966,778.00
	1,589,920.00	2,823,487.00
(बी) ऋण, अग्रिम और अन्य संपत्तियां		
(2) अग्रिम और अन्य राशि नकद या वस्तु या		
(1) पूंजी खातों पर	1,399,205.00	1,143,139.00
(2) प्रीपेड	1,390,944.00	1,147,178.00
(3) अन्य (निर्दिष्ट)	4,389,787.00	4,389,787.00
बिजली कनेक्शन के लिए सुरक्षा जमा	2,277,757.00	2,277,757.00
आईटीओ द्वारा टीडीएस वापस (पेंशन फंड)	3,379,432.00	3,286,330.00
आईटीओ द्वारा टीडीएस वापस (जीपीएफ)	2,097,740.00	1,751,569.00
आईटीओ द्वारा टीडीएस वापस (कोष निधि)	1,950,010.64	—
कर्मचारियों को अग्रिम - सीपीएफ		
वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए वापस किया जाने वाला टीडीएस		
(3) उपार्जित आय		
(1) निर्धारित/बंदोबस्ती निधियों में निवेश	—	—
(2) निवेश - अन्य	—	—
एफडीआर (जीआईए) से अर्जित ब्याज	4,144,677.00	3,260,559.00
एफडीआर (जीपीएफ) से अर्जित ब्याज	6,837,666.00	4,955,526.00
एफडीआर (पेंशन फंड) से अर्जित ब्याज	44,050,063.00	3,960,118.00
एफडीआर (कॉर्पस फंड) से अर्जित ब्याज	2,557,243	4,305,792
(3) ऋणों और अग्रिमों		
(4) अन्य (निर्दिष्ट)		
(४) पूंजी/अचल संपत्तियों पर देय व्यय		
(4) पूंजीकृत देय व्यय (2022-23)	—	732,599.00
(5) देय व्यय (2022-23)	—	283,374.00
(6) सहायता अनुदान (2023-24)	623,424.00	—
(7) सहायता अनुदान (2020-21)	—	5,640.00
कुल (ख)	135,406,193.64	45,112,540.00
कुल (कख)	764,425,561.94	1,179,811,199.69

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां**

	अनुसूची	चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
आय	13	—	—
विक्रय/सेवा से आय	12	432,090,617.11	360,204,957.00
अनुदान/सब्सिडी	14.	864,310.00	14,175,054.00
शुल्क/सदस्यता	15	—	—
निवेश से आय(निर्दिष्ट/परंपरागत निधियों से निधियों में स्थानांतरित)	16	—	—
रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	17	1,729,705.00	1,228,856.00
अर्जित ब्याज	17	2,127,565.00	1,951,629.00
अन्य आय	18	41,743,110.92	4,796,691.50
तैयार माल और कार्य-प्रगति में स्टॉक में वृद्धि/कमी	19	—	—
कुल (क)		478,555,308.03	382,357,187.50
व्यय			
स्थापना व्यय (योजना और गैर योजना)	20	513,620,244.00	1,665,901,948.00
अन्य प्रशासनिक व्यय (योजना और गैर योजना)	21	155,758,979.19	144,250,471.00
अनुदानों, सब्सिडी आदि पर व्यय	22	—	—
अनुदानों, सब्सिडी आदि पर व्यय	23	—	—
महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियां (खातों पर टिप्पणी)	24	—	—
आकस्मिक देयताएं और खातों पर नोट	25	—	—
कुल (ख)		669,379,223.19	1,810,152,419.00
आय पर व्यय की अधिकता (A-B)		190,823,915.16	1,427,795,231.50
पूर्व अवधि मदें (मूल्यहास एवं उच्च न्यायालय सुरक्षा वापसी ब्याज सहित)		—	37,998,836.00
कॉर्पोस/कैपिटल फंड में भेजा गया शेष अधिशेष (घाटा)		190,823,915.16	1,465,794,067.50

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां**

	चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
अनुसूची: 12 बिक्री/सेवाओं से आय		
(1) बिक्रीआय		
(क) तैयार माल की बिक्री		
(ख) कच्चे माल की बिक्री	—	—
(सी) स्क्रेप की बिक्री	—	—
(2) सेवाओंआय		
(क) श्रम और प्रसंस्करण शुल्क	—	—
(बी) पेशेवर/परामर्श सेवाएं	—	—
(सी) एजेंसी कमीशन और ब्रोकरेज	—	—
(डी) रखरखाव सेवाएं (उपकरण/संपत्ति)	—	—
(ड) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
कुल	—	—

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 13 अनुदान/सब्सिडी	चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
(1) केन्द्रीय सरकार		
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से सहायता अनुदान	451,000,000.00	396,000,000.00
पूँजीकृत राशि (-)	18,909,382.89	35,795,043.00
कुल योग	432,090,617.11	360,204,957.00
(2) राज्य सरकारें	—	—
(3) सरकारी एजेंसियां	—	—
(4) संस्थाएं/कल्याण निकाय	—	—
(5) अंतर्राष्ट्रीय संगठन	—	—
(6) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
भारतीय वन्यजीव संस्थान अंशदान (पेंशन खाता)	—	—
कुल	432,090,617.11	360,204,957.00

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 14 शुल्क/सदस्यता	चालू वर्ष	राशि रुपए में पिछले वर्ष
(1) प्रवेश शुल्क	—	—
एम.एस.सी. पाठ्यक्रम शुल्क	—	—
(2) वार्षिक शुल्क/अभिदान	—	—
(3) संगोष्ठी/कार्यक्रम शुल्क	—	—
संगोष्ठी/कार्यशाला शुल्क	—	—
(4) परामर्श शुल्क	—	—
परामर्श रिफंड	—	—
(5) अन्य (निर्दिष्ट)		13,355,000.00
अन्य प्राप्ति (प्रशिक्षण)	677,200.00	194,554.00
विविध प्राप्ति (जीआईए)	29,110.00	—
अन्य परियोजना अनुदान	—	—
प्री-प्राप्ति बिल जारी किया गया लेकिन प्राप्त नहीं हुआ	—	88,500.00
इंटरनेट शुल्क	44,000.00	537,000.00
प्रवेश शुल्क	114,000.00	—
कुल	864,310.00	14,175,054.00

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां**

अनुसूची: 15 निवेश से आय (निधियों में ट्रान्सफर निर्धारित/विन्यास निधियों के निवेश पर आय)	राशि रु. में			
	निर्धारित निधि से निवेश		निवेश-अन्य	
	चालू वर्ष	पिछले वर्ष	पिछले वर्ष	चालू वर्ष
(1) ब्याज				
(ए) सरकारी प्रतिभूतियों पर	—	—	—	—
(बी) अन्य बांड/डिबेंचर	—	—	—	—
(2) लाभांश:				
(ए) शेयरों पर	—	—	—	—
(बी) म्यूचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	—	—	—	—
(3) किराया	—	—	—	—
(4) अन्य (निर्दिष्ट करें)	—	—	—	—
कुल	—	—	—	—

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां**

अनुसूची: 16 रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	राशि रु. में	
	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
(1) रॉयल्टी से आय	—	—
(2) प्रकाशनों से आय	—	—
(3) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
अनुवांशिक प्रयोगशाला	—	—
विविध प्राप्तियाँ	—	—
यूबीआई बिल्डिंग किराया	—	—
विविध आय	—	—
भारतीय वन्यजीव संस्थान उत्पाद	—	—
मकान लाइसेंस शुल्क	700,628.00	611,864.00
बस शुल्क	267,882.00	97,250.00
बिजली और पानी का शुल्क	761,195.00	519,742.00
(क) टेलीफोन:	—	—
कुल	1,729,705.00	1,228,856.00

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 17 ब्याज अर्जित	चालू वर्ष	राशि रु में पिछले वर्ष
(1) अनुसूचित बैंकों से		
बैंक जमा पर ब्याज	—	—
एफडीआर पर ब्याज	—	—
(2) गैर-अनुसूचित बैंकों से	—	—
(3) संस्थानों साथ	—	—
(4) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
इंट. निवेश पर (प्रशिक्षण)	—	—
ब्याज (प्रशिक्षण)	—	—
एचबीए पर ब्याज	—	—
(2) बचत खाते में	1,594,350.00	1,242,521.00
(1) अनुसूचित बैंकों के पास	403,355.00	—
बैंक जमा पर ब्याज एफडीआर पर ब्याज	—	—
बचत खाते पर ब्याज (प्रशिक्षण खाता)	—	—
(2) गैर-अनुसूचित बैंकों के पास	—	—
(3) डाकघर बचत खाता	—	—
(4) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—
(3) ऋण पर	—	—
(1) ऋण और अग्रिम पर ब्याज	—	—
(2) अन्य	—	—
(4) देनदारों और अन्य प्राप्य, राशियों पर ब्याज	—	—
कुल	2,127,565.00	1,951,629.00

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 18 अन्य आय	चालू वर्ष	राशि रु में पिछले वर्ष
(1) परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान पर लाभ		
(1) स्वामित्व वाली आस्तियां	—	—
(2) अनुदान से अर्जित संपत्ति, यानि: शुल्कप्राप्त	—	—
(2) वसूल किए गए निर्यात प्रोत्साहन	—	—
(3) विविध के लिए शुल्क सेवाएं	—	—
(4) अन्य (निर्दिष्ट)		
विविध प्राप्तियां	39,793,100.28	4,796,691.50
टीडीएस संबंधित विविध आय	1,950,010.64	—
कुल	41,743,110.92	4,796,691.50

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां**

अनुसूची: 19 तैयार माल के स्टॉक में वृद्धि/कमी	चालू वर्ष	राशि रु में	
		पिछले वर्ष	
(1) क्लोजिंग स्टॉक			
(1) तैयार माल			
भा0व0सं0 प्रकाशन का समापन स्टॉक	—		—
(2) कार्य प्रगति पर	—		—
(2) कम: स्टॉक खोलना			
(1) तैयार माल	—		—
(2) कार्य प्रगति पर	—		—
कुल निवल वृद्धि/कमी (1-2)	—		—

**वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां**

अनुसूची: 20 स्थापना व्यय	चालू वर्ष		राशि रु में	
	योजना	गैर योजना	योजना	गैर योजना
(1) वेतन और मजदूरी	282,018,329.00	—	181,326,219.00	—
वेतन और मजदूरी (प्रशिक्षण खाता)	—	—	—	—
मानदेय	28,500.00	—	149,343.00	—
चिकित्सा	4,597,227.00	—	7,702,974.00	—
अध्येतावृत्ति और मजदूरी	412,734.00	—	25,000.00	—
(2) भत्ते और बोनस	—	—	—	—
अवकाश यात्रा रियायत	1,041,668.00	—	10,210,685.00	—
(3) अन्य (निर्दिष्ट)				
विविध व्यय	—	—	2,540,447.00	—
(4) अन्य निधि में अंशदान (निर्दिष्ट करें)	—	—	7,231,692.00	—
(5) कर्मचारी कल्याण व्यय				
वर्दी	—	—		
(6) कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और टर्मिनल लाभों पर व्यय				
छुट्टी नकदीकरण और ग्रेच्युटी	—	—	164,970.00	—
छुट्टी नकदीकरण	1,100,242.00	—	54,667,510.00	—
उपदान	3,118,823.00	—	59,214,990.00	—
पेंशन	221,302,721.00	—	1,342,668,118.00	—
(7) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—	—	—
कैप व्यय (अनुसंधान परियोजना)	—	—	—	—
कुल	513,620,244.00	—	1,665,901,948.00	—

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 21 अन्य प्रशासनिक व्यय	आर एंड पी	प्रतिबद्ध	राशि रु			
			चालू वर्ष		पिछले वर्ष	
			योजना	गैर योजना	योजना	गैर योजना
कंप्यूटर की एएमसी	—	2,933,819.85	—	995,331.00	—	
खरीद	—	—	—	366,655.00	—	
वार्षिक अनुसंधान संगोष्ठी	—	2,110,352.00	—	—	—	
आकस्मिकताएं/विविध (प्रशिक्षण खाता)	—	594,638.48	—	—	—	
आकस्मिकताएं/विविध	—	1,765,787.40	—	578,505.00	—	
पुस्तकालयलिए व्यय	—	1,231,895.29	—	513,825.00	—	
बिजली और पानी का शुल्क	—	13,883,180.00	—	10,082,971.00	—	
भारतीय वन्यजीव संस्थान कैंपस का रखरखाव	—	2,942,109.00	—	6,947.00	—	
सम्पदा सुरक्षा	—	34,587,881.00	—	33,434,667.00	—	
प्रयोगशाला व्यय (भारतीय वन्यजीव संस्थान स्वास्थ्य)	—	183,680.00	—	16,963.00	—	
प्रयोगशाला व्यय (फोरेंसिक एल)	—	—	—	22,539.00	—	
प्रयोगशाला व्यय (अनुवांशिक प्रयोगशाला)	—	590,921.00	—	—	—	
कानूनी खर्च	—	1,031,749.00	—	1,677,735.00	—	
एम.एस.सी. पाठ्यक्रम व्यय	—	3,100,000.00	—	24,900.00	—	
परिचालन व्यय	—	4,989,731.24	—	22,914,997.65	—	
कॉर्पस फंड ट्रांसफर (प्रशिक्षण खाता)	—	—	—	2,863,820.00	—	
पीओएल और वाहन का रखरखाव (प्रशिक्षण खाता)	—	329,309.00	—	634,889.00	—	
वाहनों के लिए पीओएल	—	1,277,299.00	—	403,415.00	—	
डाक और तार	—	92,438.00	—	1,211,943.00	—	
मुद्रण और बाइंडिंग	—	1,714,307.00	—	263,981.00	—	
बोर्डिंग और लॉजिंग (प्रशिक्षण खाता)	—	2,384,813.00	—	8,830,605.00	—	
वाहनों की मरम्मत और रखरखाव	—	894,707.00	—	1,381,719.00	—	
वाहन बीमा	—	338,349.00	—	343,157.00	—	
वाहन की मरम्मत (प्रशिक्षण खाता)	—	242,382.00	—	23,773.00	—	
मरम्मत और रखरखाव फर्नीचर और फिक्स्चर	—	2,570,371.00	—	—	—	
खेल	—	85,874.00	—	79,030.00	—	
आतिथ्य/मनोरंजन	—	3,418,161.00	—	5,110,209.00	—	
खेलसामान (प्रशिक्षण खाता)	—	103,125.00	—	27,591.00	—	
लेखन सामग्री	—	821,841.93	—	717,795.44	—	
प्रशिक्षण भत्ता	—	144,000.00	—	488,345.00	—	
टेलीफोन और टीसी	—	3,492,301.00	—	1,079,525.00	—	
लेखन सामग्री (प्रशिक्षण खाता)	—	4,845.00	—	167,455.00	—	
सैकोन लागत व्यय	—	—	—	—	—	
यात्रा व्यय (सहायता अनुदान	—	1,901,111.00	—	2,818,755.00	—	
यात्रा व्यय (अनुसंधान परियोजना)	—	1,239,000.00	—	79,995.00	—	
यात्रा व्यय (प्रशिक्षण खाता)	—	5,178,303.00	—	12,933,194.91	—	
सिविल कार्य का रखरखाव	—	13,428,581.00	—	2,978,095.00	—	
टीए/डीए और मानदेय (प्रशिक्षण खाता)	—	339,864.00	—	237,500.00	—	
पुस्तकें (प्रशिक्षण खाता)	—	27,540.00	—	332,553.00	—	
फील्ड सहायता (प्रशिक्षण खाता)	—	176,700.00	—	341,050.00	—	
श्रमशक्ति	—	9,483,127.00	—	—	—	
विज्ञापन व्यय	—	365,567.00	—	—	—	
शिक्षण शुल्क (प्रशिक्षण खाता)	—	1,225,000.00	—	1,148,000.00	—	
अव्ययित राशिध्व्याज की वापसी	—	471,706.00	—	291,925.00	—	
पीवाई आय का बट्टे खाते में डाला जाना (प्रशिक्षण खाता)	—	—	—	660,000.00	—	
वर्ष के दौरान मूल्यहास	—	34,062,613.00	—	28,166,115.00	—	
कुल		-155,758,979.19		144,250,471.00		

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 22 अनुदानों, सब्सिडी आदि पर व्यय	राशि रु			
	चालू वर्ष		पिछले वर्ष	
	योजना	गैर योजना	योजना	गैर योजना
(अ) संस्थानों/संगठनों को दिया गया अनुदान	—	—	—	—
(ब) संस्था को दी गई सब्सिडी	—	—	—	—
कुल	—	—	—	—

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

अनुसूची: 23 – ब्याज	राशि रु			
	चालू वर्ष		पिछले वर्ष	
	योजना	गैर योजना	योजना	गैर योजना
((ए) फिक्स्ड लोन पर	—	—	—	—
(बी) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सहित)	—	—	—	—
(सी) अन्य (निर्दिष्ट)	—	—	—	—
कुल	—	—	—	—

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)

भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाते का हिस्सा बनने वाली अनुसूचियां

1. लेखांकन परंपरा

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत परंपरा के आधार पर तैयार किए जाते हैं, जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, और लेखांकन की उपाजित पद्धति पर आधारित होते हैं।

2. भंडार मूल्यांकन

- 2.1. भंडार और स्पेयर (जिसमें मशीनरी स्पेयर भी शामिल हैं) लागत पर मूल्यांकित किए जाते हैं।
- 2.2. शून्य

3. निवेश

- 3.1. दीर्घकालिक निवेश के रूप में वर्गीकृत निवेशों को लागत पर रखा जाता है। ऐसे निवेशों की वहन लागत में अस्थायी नहीं बल्कि स्थायी गिरावट होने पर प्रावधान किया जाता है।
- 3.2. अल्पकालिक निवेश के रूप में वर्गीकृत निवेशों को उनकी लागत और उचित मूल्य में से जो भी कम हो, उस पर रखा जाता है। ऐसे निवेशों के मूल्य में गिरावट के लिए प्रत्येक निवेश को व्यक्तिगत रूप से और न कि समग्र रूप से विचार करते हुए प्रावधान किया जाता है।
- 3.3. लागत में अधिग्रहण खर्च जैसे दलाली, हस्तांतरण स्टांप आदि शामिल होते हैं।

4. पिछले वर्ष की प्रस्तुति का पुनर्वर्गीकरण

पिछले वर्ष की राशि को वर्तमान वर्ष की प्रस्तुति के साथ संगति बनाए रखने के लिए पुनर्वर्गीकृत किया गया है। इन पुनर्वर्गीकरणों का संचालन के रिपोर्ट किए गए परिणामों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक समायोजन किया गया है क्योंकि सालिम अली पक्षीविज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान केंद्र का भारतीय वन्यजीव संस्थान में 01.04.2023 से विलय हो गया है, जो कि दिनांक 25.04.2023 को जारी आदेश संख्या एफ. नंबर एफसी-11 / 172 / 2022-डीजीएफ के अनुसार किया गया।

5. स्थिर परिसंपत्तियां

- 5.1. स्थिर परिसंपत्तियों को उनकी अधिग्रहण लागत पर मूल्यांकित किया जाता है, जिसमें आंतरिक माल भाड़ा, कर एवं शुल्क तथा अधिग्रहण से संबंधित आकस्मिक एवं प्रत्यक्ष खर्च शामिल होते हैं। जिन परियोजनाओं में निर्माण कार्य शामिल होता है, उनके पूर्व-परिचालन खर्च (जिसमें परियोजना के पूरा होने से पूर्व लिए गए ऋण पर ब्याज भी शामिल है) परिसंपत्तियों के मूल्य का हिस्सा बनते हैं।
- 5.2. गैर-नकद अनुदानों के रूप में प्राप्त स्थिर परिसंपत्तियों (कोष निधि के अलावा) को पूंजी आरक्षित निधि के समकक्ष क्रेडिट के रूप में दर्ज की गई मूल्य पर पूंजीकृत किया जाता है।
- 5.3. परिसंपत्ति को उस तिथि को मान्यता दी जाती है जब आपूर्तिकर्ता को भुगतान किया जाता है।

6. मूल्यहास

6.1. मूल्यहास षलिखित अवशेष मूल्य विधि के आधार पर आयकर अधिनियम, 1961 के अनुसार प्रदान किया जाता है, सिवाय उन लागत समायोजनों पर होने वाले मूल्यहास के, जो विदेशी मुद्रा रूपांतरण के कारण निश्चित परिसंपत्तियों के अधिग्रहण की देनदारियों से उत्पन्न होते हैं। इन समायोजनों को संबंधित परिसंपत्तियों के शेष जीवनकाल में विभाजित कर दिया जाता है। हालांकि, सालिम अली पक्षीविज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान केन्द्र द्वारा 'सीधी रेखा विधि' का पालन किया गया था और इसे वित्तीय विवरणों में सम्मिलित किया गया है।

6.2. वर्ष के दौरान स्थिर परिसंपत्तियों में जोड़ने/घटाने की स्थिति में, मूल्यहास को आनुपातिक आधार पर प्रदान किया जाता है।

6.3. शून्य

7. विविध व्यय

शून्य

8. राजस्व की मान्यता

8.1. केंद्र की आय को लेखा पुस्तकों में नकद आधार पर मान्यता दी जाती है।

8.2. सावधि जमा पर ब्याज आय को उपाजित आधार पर मान्यता दी जाती है, जिसमें बकाया राशि और लागू दरों को ध्यान में रखा जाता है।

9. सरकारी अनुदान/सब्सिडी

9.1. परियोजनाओं की स्थापना की पूंजी लागत में योगदान के रूप में प्राप्त सरकारी अनुदान को पूंजी आरक्षित निधि के रूप में माना जाता है।

9.2. विशिष्ट परिसंपत्तियों के अधिग्रहण के संबंध में प्राप्त सरकारी अनुदान को संबंधित परिसंपत्तियों की लागत में कटौती के रूप में दर्शाया जाता है।

9.3. सरकारी अनुदानसब्सिडी को प्राप्ति के आधार पर लेखाबद्ध किया जाता है।

10. विदेशी मुद्रा लेन-देन

10.1. विदेशी मुद्रा में नामित लेन-देन को लेन-देन की तिथि पर प्रचलित विनिमय दर पर लेखाबद्ध किया जाता है।

10.2. चालू परिसंपत्तियां, विदेशी मुद्रा ऋण और चालू देनदारियों को वर्ष समाप्ति पर प्रचलित विनिमय दर पर बदला जाता है और परिणामी लाभ/हानि को, यदि विदेशी मुद्रा देनदारी निश्चित परिसंपत्तियों से संबंधित हो, तो परिसंपत्ति लागत में समायोजित किया जाता है अन्य मामलों में इसे राजस्व में समायोजित किया जाता है।

11. पट्टा (लीज)

पट्टा किराया पट्टा शर्तों के संदर्भ में व्यय के रूप में दर्ज किया जाता है।

12. सेवानिवृत्ति लाभ

संस्थान में पेंशन योजना उन कर्मचारियों के लिए केंद्रीय सिविल सेवा पेंशन नियमों पर आधारित है जो 01 जनवरी 2004 से पहले नियुक्त हुए थे। 01 जनवरी 2004 या उसके बाद नियुक्त कर्मचारियों के लिए नई पेंशन योजना लागू है।

(क) संस्थान सामान्य भविष्य निधि, पेंशन योजना के लिए (नियोक्ता और कर्मचारी के योगदानधस्तदस्यता) हेतु एक अलग बैंक खाता बनाए रखता है।

तदनुसार, सामान्य भविष्य निधि खाते से की गई कुल निधि शेष, सावधि जमाधनिवेशधैंक शेष राशि को संस्थान की बैलेंस शीट में 31 मार्च 2024 को पृथक रूप से जोड़ा गया है।

(ख) ग्रेच्युटी:ग्रेच्युटी के प्रति देनदारी को 'लेखांकन मानक-15' के प्रावधानों के अनुसार मान्यता दी जाती है। हालांकि, सालिम अली पक्षीविज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान केंद्रने वर्ष 31.03.2024 को समाप्त होने पर 60,18,249/- रुपये की संचित ग्रेच्युटी देनदारी का प्रावधान अपने लेखा पुस्तकों में किया है।

(ग) पेंशन: पेंशन के प्रति देनदारी को 'लेखांकन मानक-15' के प्रावधानों के अनुसार मान्यता दी जाती है।

(घ) अवकाश नकदीकरण: अवकाश नकदीकरण की देनदारी को 'लेखांकन मानक-15' के प्रावधानों के अनुसार मान्यता दी जाती है। हालांकि, सालिम अली पक्षीविज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान केंद्र ने 31.03.2024 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए 58,68,702/- रुपये की संचित अवकाश नकदीकरण देनदारी का प्रावधान अपने लेखा पुस्तकों में किया है।

(ङ) कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति उपरांत लाभ: 'लेखांकन मानक-15' के प्रावधानों के अनुसार, कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति उपरांत लाभ संबंधी दायित्वों को उपाजित आधार पर एवं अंकीय गणना तकनीकों के आधार पर वित्तीय विवरणों में मान्यता दी जाती है।

चालू वर्ष के प्रभार की देनदारी को कोष निधि खाते में डेबिट किया गया है, जैसा कि 'लेखांकन मानक-15' के प्रावधानों के अनुसार आवश्यक है।

13. पिछले वर्षों के मर्दे

13.1. पिछले वर्षों की मर्दे, असाधारण मर्दे एवं लेखांकन नीतियों में परिवर्तन को 'लेखांकन मानक-5' के अनुसार लेखाबद्ध किया जाता है।

13.2. पिछले वर्षों की मर्दे, असाधारण मर्दे एवं लेखांकन नीतियों में परिवर्तन को 'लेखांकन मानक-5' के अनुसार लेखाबद्ध किया जाता है।

13.3. पिछले वर्षों की मर्दे, असाधारण मर्दे एवं लेखांकन नीतियों में परिवर्तन को 'लेखांकन मानक-5' के अनुसार लेखाबद्ध किया जाता है।

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रबनी, देहरादून 31 मार्च 2024 को
समाप्त वर्ष के लिए का तुलन पत्र का हिस्सा बनने वाले शेड्यूल

आकस्मिक देयताएं और लेखों पर टिप्पणियां – अनुसूची-25

	चालू वर्ष		पिछले वर्ष	
	योजना	गैर योजना	योजना	गैर योजना
1. संभावित देनदारियाँ				
1.1 संस्था के विरुद्ध ऐसे दावे जिन्हें ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है।				
1.2 निम्नलिखित के संदर्भ में:				
• संस्था द्वारा अथवा उसकी ओर से दी गई बैंक गारंटी				
• संस्था की ओर से बैंक द्वारा खोले गए साख-पत्र				
• बैंकों के साथ छूट पर दिए गए बिल				
1.3 विवादित माँगें:				
आयकर से संबंधित (सैकॉन संस्थान): आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 270ए के अंतर्गत संस्थान के विरुद्ध एक दंडात्मक आदेश पारित किया गया, जिसके अनुसार रु. 70,79,364 की माँग की गई। संस्थान ने इस आदेश के विरुद्ध आयकर आयुक्त (अपील), राष्ट्रीय फेसलेस अपील केन्द्र के समक्ष अपील दायर की है। यह मामला अभी अपीलीय प्राधिकारी के समक्ष लंबित है तथा इस संदर्भ में कोई देनदारी लेखा पुस्तकों में नहीं दर्शायी गई है।				
वन्यजीव संस्थान की आयकर देनदारी:				
आयकर पोर्टल के अनुसार संस्थान पर आयकर की देनदारी है।				
मूल्यांकन वर्ष		राशि रुपये में		
2014-15		173,983,425.00		
2017-18		1,068,800.00		
2018-19		4,261,760.00		
2019-20		167,228,505.00		
विक्रय कर				
नगर पालिका कर				
• 1.4 आदेशों के निष्पादन न होने के संबंध में पक्षों द्वारा किए गए दावों के संबंध में, परंतु वे विवादित हैं।				
प्राप्त दावों के संबंध में, लेकिन संस्था द्वारा विरोध किया गया			—	—
2. पूंजी प्रतिबद्धताएं				
पूंजीगत खाते पर निष्पादित किए जाने वाले अनुबंधों का अनुमानित मूल्य और (अग्रिम का शुद्ध) लिए प्रदान नहीं किया गया है			—	—
3 पट्टा दायित्व				
संयंत्र और मशीनरी लिए वित्त पट्टा व्यवस्थातहत किराए लिए भविष्यदायित्व				
4 चालू आस्तियां, ऋण और अग्रिम				
प्रबंधन की राय में वर्तमान परिसंपत्तियों ऋणों और अग्रिमों का मूल्य			—	—
5 कराधान				
आयकर अधिनियम 1961 तहत कोई कर योग्य आय नहीं होने के कारण, आयकर के लिए कोई प्रावधान आवश्यक नहीं माना गया है।			—	—
विदेशी मुद्रा लेन-देन				
6.1. सी.आई.एफ. (लागत, बीमा और माल भाड़ा) आधार पर आयात का मूल्यांकन:				
• तैयार वस्तुओं की खरीद			—	—
• कच्चा माल और घटक (परिवहनाधीन सहित)			—	—
• पूंजीगत वस्तुएं			—	—
• भंडार, स्पेयर एवं उपभोग्य सामग्री			—	—
6.2. विदेशी मुद्रा में किया गया व्यय:				
(क) यात्रा			—	—
(ख) वित्तीय संस्थानों/बैंकों को विदेशी मुद्रा में प्रेषण एवं ब्याज भुगतान			—	—
(ग) अन्य व्यय:				
• बिक्री पर कमीशन			—	—
• कानूनी एवं व्यावसायिक शुल्क			—	—
• विविध व्यय			—	—
6.3. अर्जित आय:				
• एफ.ओ.बी. (मालवाहन मुक्त बोर्ड) आधार पर निर्यात का मूल्यांकन			—	—
6.4. लेखा परीक्षकों को पारिश्रमिक:				
• लेखा परीक्षक के रूप में			—	—
• कराधान मामलों हेतु			—	—
• प्रबंधन सेवाओं हेतु			—	—
• प्रमाणन हेतु			—	—
• अन्य			—	—

अन्य महत्वपूर्ण विवरण

7. पिछले वर्ष की तुलनात्मक संख्याओं को आवश्यकतानुसार पुनर्गठित/पुनर्व्यवस्थित किया गया है।	-	-	-
8. अनुसूची 1 से 25 को 31 मार्च 2024 की बैलेंस शीट तथा उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए आय एवं व्यय खाते का अभिन्न अंग माना गया है।	-	-	-

सामान्य भविष्य निधि खाता संख्या 518502010001297
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाता

राशि रु में

आय			व्यय		
विवरण	वर्तमान वर्ष राशि	पिछले वर्ष	विवरण	वर्तमान वर्ष राशि	पिछले वर्ष
प्रारंभिक राशि	5,443,480.00	5,766,203.00	सामान्य भविष्य निधि का अंतिम भुगतान	34,047,942.00	32,608,039.00
बचत खाते में प्राप्त ब्याज	237,520.00	213,888.00	अग्रिम / निकासी का भुगतान	7,830,000.00	21,176,524.00
सामान्य भविष्य निधि अंशदान	17,684,966.00	19,795,292.00	ऑटो स्वीप बैंक बैलेंस	-	3,500,000.00
एफ.डी. आर. का नकदीकरण	75,487,628.00	26,499,586.00	एफडीआर में निवेश	60,000,000.00	-
एफ.डी. आर. पर ब्याज	1,194,330.00	1,997,548.00		1.19	-
अर्जित ब्याज	-	4,955,526.00			
ऑटो स्वीप बैंक बैलेंस	3,000,000.00	3,500,000.00	बैंक शेष	1,169,980.81	5,443,480.00
कुल	103,047,924.00	62,728,043.00	कुल	103,047,924.00	62,728,043.00

पेंशन निधि लेखा संख्या 518502010000018
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रबनी, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए आय एवं व्यय लेखा

राशि रु में

आय			व्यय		
विवरण	वर्तमान वर्ष राशि	पिछले वर्ष	विवरण	वर्तमान वर्ष राशि	पिछले वर्ष
प्रारंभिक राशि	18,111,801.28	6,188,212.00	एफडीआर में निवेश	120,000,000.00	533,050,647.00
बचत खाते में प्राप्त ब्याज	597,083.00	2,647,434.00	पेंशन का रूपान्तरित मूल्य	17,530,327.00	19,316,170.00
एफडीआर पर अर्जित ब्याज	309,942.00	5,267,214.00	पारिवारिक पेंशन/पेंशन	59,543,617.00	46,006,388.00
भारतीय वन्यजीव संस्थान योगदान	-	289,854,992.00	मिस खर्च	5.92	-
एफडीआर का नकदीकरण	13,599,227.00	202,816,939.00			
विविध प्राप्ति	180,006,187.70	109,710,215.28			
			बैंक शेष	15,550,291.06	18,111,801.28
कुल	212,624,240.98	616,485,006.28	कुल	212,624,240.98	616,485,006.28

ग्रेच्युटी खाता संख्या का भा.व.सं. अंशदान 518502010055326
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चंद्रबनी, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय खाता

राशि रु में

आय			व्यय		
विवरण	वर्तमान वर्ष राशि	पिछले वर्ष	विवरण	वर्तमान वर्ष राशि	पिछले वर्ष
प्रारंभिक शेष	7,013,981.31	5,659,599.47	विविध व्यय	17.12	70.16
बचत खाते में प्राप्त ब्याज	318,892.00	176,112.00	अंतिम भुगतान	1,800,154.00	-
भा.व.सं. अधिकारियों का योगदान	2,847,023.00	1,178,340.00	एफडीआर में निवेश	21,000,000.00	-
एफडीआर पर प्राप्त ब्याज	16,993,074.00	-			
			बैंक शेष	4,372,799.19	7,013,981.31
कुल योग	27,172,970.31	7,014,051.47	कुल	27,172,970.31	7,014,051.47

संलग्नक - 1

वित्तीय विवरणों का प्रपत्र (गैर-लाभकारी संगठन)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रबनी, देहरादून
2023-24 को समाप्त वर्ष के लिए अनुसूची -3
खाते में परिलक्षित निधियों से खरीदी गई अवल संपत्तियां

विवरण	कुल ब्लॉक वर्ष के दौरान वृद्धि				वर्ष के अंत में लागत	वर्ष के दौरान कटौती	वर्ष के लिए कटौती	वर्ष के दौरान कटौती	मूल्यहास साल के अंत में	जैसा कि चालू वर्ष के अंत में	पिछले वर्ष के अंत तक	राशि रु में
	वर्ष की शुरुआत मिलागत	30 सितम्बर तक	30 सितम्बर के बाद	वर्ष की शुरुआत में								नेट ब्लॉक
भवन		61,615,711.00			61,615,711.00		4,621,178.33	4,621,178.33	56,994,532.68			-
पोर्टा केबिन	2,087,105.00	1,035,200.00			3,122,305.00		390,705.75	390,705.75	2,731,599.25			-
कुल	-	2,087,105.00	62,650,911.00		64,738,016.00		5,011,884.08	5,011,884.08	59,726,131.93			-
संयंत्र मशीनरी और ईक्यूपी												
ब्लॉक:15%												
कार्यालय उपकरण	27,536,217.00	13,055,183.50	43,898,660.59		84,490,061.09		9,381,109.62	9,381,109.62	75,108,951.47			27,536,217.00
कैप उपकरण	59,447,030.67	-	-		59,447,030.67		8,917,054.60	8,917,054.60	50,529,976.07			59,447,030.67
फील्ड उपकरण	102,281,456.78	76,309,149.55	178,590,606.33		357,180,211.66		21,065,404.73	21,065,404.73	157,525,201.60			102,281,456.78
कुल	86,983,247.67	115,336,640.28	322,527,698.09		624,907,546.04		39,363,568.95	39,363,568.95	283,164,129.14			86,983,247.67
फर्नीचर और फिक्स्चर												
ब्लॉक:10%												
फर्नीचर और फिक्स्चर	443,697.81	120,655.00	722,992.00		1,287,344.81		92,584.88	92,584.88	1,194,759.93			443,697.81
कुल	443,697.81	120,655.00	722,992.00		1,287,344.81		92,584.88	92,584.88	1,194,759.93			443,697.81
पुस्तकें/बाह्य उपकरण: ब्लॉक: 40%												
पुस्तकें	961.28	-	-		961.28		384.51	384.51	576.77			961.28
कुल	961.28	-	-		961.28		384.51	384.51	576.77			961.28
कंप्यूटर / बाह्य उपकरण: ब्लॉक: 40%												
कंप्यूटर और सहायक उपकरण	1,875,751.00	4,063,042.00	2,911,692.00		8,850,485.00		2,957,855.60	2,957,855.60	5,892,629.40			1,875,751.00
कुल योग	89,303,657.76	121,607,442.28	186,493,405.14		397,404,505.18		47,426,278.02	47,426,278.02	349,978,227.16			89,303,657.76



(एन.एस. चौहान)
वित्त अधिकारी



(वीरेन्द्र आर. तिवारी)
निदेशक

भा.व.सं. के स्थायी अधिकारियों की सूची

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पद
1.	श्री वीरेन्द्र आर. तिवारी, आईएफएस	निदेशक
2.	डॉ. रुचि बडोला	वैज्ञानिक-जी
3.	डॉ. एस. सत्यकुमार	वैज्ञानिक-जी
4.	डॉ. कमर कुरैशी	वैज्ञानिक-जी
5.	डॉ. बी.एस. अधिकारी	वैज्ञानिक-जी
6.	डॉ. बिवाश पाण्डव	वैज्ञानिक-जी
7.	डॉ. पराग निगम	वैज्ञानिक-जी
8.	डॉ. बिलाल हबीब	वैज्ञानिक-एफ
9.	डॉ. के. रमेश	वैज्ञानिक-एफ
10.	डॉ. जी.एच. तालुकदार	वैज्ञानिक-एफ
11.	डॉ. गोपी जी.वी.	वैज्ञानिक-एफ
12.	डॉ. जे.ए. जॉनसन	वैज्ञानिक-एफ
13.	डॉ. एस.के. गुप्ता	वैज्ञानिक-एफ
14.	डॉ. आर. सुरेश कुमार	वैज्ञानिक-एफ
15.	डॉ. सम्राट मोण्डल	वैज्ञानिक-एफ
16.	डॉ. सुतिर्था दत्ता	वैज्ञानिक-ई
17.	डॉ. सल्लाडोर लिंगदोह	वैज्ञानिक-ई
18.	डॉ. अभिजीत दास	वैज्ञानिक-ई
19.	डॉ. सी. रमेश	वैज्ञानिक-ई
20.	डॉ. मालविका ओनियाल	वैज्ञानिक-डी
21.	डॉ. विष्णुप्रिया कोलिपाकम	वैज्ञानिक-डी
22.	डॉ. अमित कुमार	वैज्ञानिक-डी
23.	डॉ. नवेन्दु पगे	वैज्ञानिक-डी
24.	डॉ. लल्लियनपुई काव्ली	वैज्ञानिक-डी
25.	डॉ. नेहरू प्रभाकरन	वैज्ञानिक-डी
26.	डॉ. अनुकुल नाथ	वैज्ञानिक-सी
27.	कु. चिन्मया दीपक घाणेकर	वैज्ञानिक-सी
28.	श्री वरुण श्रीनिवास खेर	वैज्ञानिक-सी
29.	श्री रितेश कुमार गौतम	वैज्ञानिक-सी
30.	श्री आशीष झा	वैज्ञानिक-सी
31.	श्री प्रशांत महाजन	वैज्ञानिक-सी
32.	श्री के.के. श्रीवास्तव	प्रधान तकनीकी अधिकारी
33.	डॉ. पन्ना लाल	प्रधान तकनीकी अधिकारी
34.	श्रीमती बलजीत कौर	उप कुलसचिव
35.	श्री रजनीश शर्मा	आईएओ (प्रतिनियुक्ति)
36.	श्री नरेन्द्र सिंह चौहान	वित्त अधिकारी (प्रतिनियुक्ति पर)
37.	श्री मोहित कुमार गुप्ता	सहायक निदेशक (राजभाषा)
38.	श्रीमती अनिता पाहवा	शैक्षणिक अधिकारी

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पद
39.	श्री एम.पी. अग्रवाल	प्रधान निजी सचिव
40.	डॉ. सी.पी. शर्मा	प्रधान तकनीकी अधिकारी
41.	श्री लेख नाथ शर्मा	वरि. तकनीकी अधिकारी (3)
42.	श्री दिनेश सिंह पुण्डरीर	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
43.	श्रीमती अल्का अग्रवाल	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
44.	श्री नरेन्द्र सिंह बिष्ट	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
45.	श्री हरेन्द्र कुमार	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
46.	श्रीमती सुनीता अग्रवाल	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
47.	श्री एम.एम. उनियाल	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
48.	श्रीमती विक्रेश्वरी डंगवाल	वरि. तकनीकी अधिकारी (2)
49.	श्री मनोहर पाठक	वरि. तकनीकी अधिकारी (2), लाइब्रेरियन
50.	श्री संजय कुमार भारती	अनुभाग अधिकारी
51.	श्रीमती साधना वर्मा	अनुभाग अधिकारी
52.	श्रीमती पद्मा रानी	अनुभाग अधिकारी
53.	श्री पदम सिंह धमांदा	अनुभाग अधिकारी
54.	श्री बलबीर सिंह चौहान	तकनीशियन (2)
55.	श्री ए. मधन राज	वरि. तकनीकी अधिकारी (1)
56.	श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा	तकनीकी अधिकारी
57.	श्रीमती शशिबाला उनियाल	तकनीकी अधिकारी
58.	श्री राकेश सुन्दियाल	वरि. तकनीशियन (2)
59.	कु. अनुष्का उनियाल	तकनीकी सहायक (फील्ड)
60.	श्री नितिन	तकनीशियन
61.	श्री दीपक कवि	तकनीशियन
62.	श्री गौरव उनियाल	तकनीशियन
63.	श्री ओमपाल सिंह	तकनीशियन
64.	श्री ज्ञानेश छिब्वर	जूनियर स्टेनोग्राफर
65.	श्री कुलदीप चौहान	जूनियर स्टेनोग्राफर
66.	श्री विनय कुमार शर्मा	स्टेनोग्राफर ग्रेड 2
67.	श्री नीरज कुमार गुप्ता	स्टेनोग्राफर ग्रेड 2
68.	श्री विजय प्रसाद	सहायक ग्रेड (1)
69.	श्री जी. मुथु वीरप्पन	सहायक ग्रेड (2)
70.	श्री प्यार चन्द सिंह असवाल	सहायक ग्रेड (2)
71.	श्री हरिकृष्ण गुप्ता	सहायक ग्रेड (2)
72.	श्री उम्मेद सिंह	सहायक ग्रेड (2)
73.	श्री सुनील सुन्दियाल	सहायक ग्रेड (3)
74.	श्री नावेद अली	सहायक ग्रेड (3)
75.	श्री आशु	सहायक ग्रेड (3)
76.	श्री राजीव कुमार गम्भीर	चालक (विशेष ग्रेड)
77.	श्री अनवर अली	चालक ग्रेड 1
78.	श्री विनोद सिंह बिष्ट	चालक ग्रेड 1
79.	श्री धर्म सिंह	चालक ग्रेड 1

क्र.सं.	अधिकारी / कर्मचारी	पद
80.	श्री खीमा नन्द भट्ट	बावर्ची
81.	श्री जब्बार सिंह रावत	बावर्ची
82.	श्री देवेन्द्र प्रसाद कोठारी	प्रयोगशाला सहायक
83.	श्री राजेन्द्र सिंह रावत	प्रयोगशाला सहायक
84.	श्री बीरेन्द्र सिंह रावत	प्रयोगशाला सहायक
85.	श्री किशन सिंह	प्रयोगशाला सहायक
86.	श्री नरेन्द्र सिंह असवाल	प्रयोगशाला सहायक
87.	श्री रामपाल मौर्य	प्रयोगशाला सहायक
88.	श्री रामू कुमार	प्रयोगशाला सहायक
89.	श्री डी.पी. चमोली	प्रयोगशाला सहायक
90.	श्री संजय चौनियाल	प्रयोगशाला सहायक
91.	श्रीमती सरिता रानी	एमटीएस
92.	श्री मुक्ति प्रसाद शर्मा	एमटीएस
93.	श्री जीतेन्द्र सिंह रावत	एमटीएस
94.	श्रीमती अंजु रावत	एमटीएस
95.	श्री हीरा लाल शर्मा	एमटीएस
96.	श्री ओम प्रकाश पुन	एमटीएस
97.	श्री ईश्वर बहादुर राणा	एमटीएस
98.	श्री निरंजन प्रसाद	एमटीएस
99.	श्री वासुदेव	एमटीएस
100.	श्री राम सिंह गुरुंग	एमटीएस
101.	श्री प्रकाश बरदेवा	एमटीएस
102.	श्रीमती अनिता देवी	एमटीएस
103.	श्री किशन सिंह बिष्ट	एमटीएस
104.	श्री पोरामो बोरो	एमटीएस
105.	श्री चित्रपाल सिंह बिष्ट	एमटीएस
106.	श्री ललित सिंह नेगी	एमटीएस
107.	श्रीमती गणेश्वरी	एमटीएस
108.	कु. श्रिचा पाठक	एमटीएस

सैकोन

1.	डॉ. एस. मुरलीधरन	वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक
2.	डॉ. पी. प्रमोद	वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक
3.	श्री वी. वैदीयानाथन	निदेशक के पी.ए.
4.	श्री एम. मनोहर	पुस्तकालय सहायक
5.	श्रीमती आर. राजालक्ष्मी	कार्यालय सहायक
6.	श्री एम. ईनामुथु	स्टेनोग्राफर
7.	श्रीमती एम. जयगीथा	लोअर डिविजन क्लर्क (रिसेप्शन)
8.	श्री आर. रवि	चालक
9.	श्रीमती वी. सांतालक्ष्मी	कार्यालय परिचर



भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

पो.ओ. बॉक्स #18, चन्द्रबनी,

देहरादून – 248001, उत्तराखण्ड

दूरभाष: 0135-2640114-115, फ़ैक्स: 0135-2640117

वेबसाइट: www.wii.gov.in, ईमेल: wii@wii.gov.in